भूमिका

जैनधर्म और उसके सिद्धान्तों का वर्णन कुन्दकुन्दादिक पूर्व महर्षियों ने बड़ी विस्तृतता के साथ प्रतिपादित किया है। जैनधर्म महान है उसके दिव्य सिद्धान्त विश्व को प्रकाश देते हैं। हम उसके अतीत पर गर्व करते हैं और यह ठीक भी है कि गौरवमय अतीत उज्ज्वल भविष्य के लिये स्फूर्ति और बल प्रदान करता है किन्तु जब हम आज समाज के धार्मिक जीवन पर दृष्टि डालते हैं तो हमें चारों ओर निराशा ही निराशा दिखाई पड़ती है। उन आर्ष ग्रन्थों का स्वाध्याय, पठन, पाठन जन साधारण से उठता ही जा रहा है। हो सकता है कि 'लक्ष्मीविलास' के रचयिता महोदय ने उन्हीं आर्ष ग्रंथों का संग्रह छन्दोबद्ध सरल लोक भाषा में इसीलिये किया हो कि जन साधारण इससे लाभ उठाये और धर्म के मार्मिक गूढ़ तत्त्वों को समझ सके। ग्रन्थकर्ता ने अपने त्यागमय पवित्र जीवन को आर्ष ग्रन्थों के अध्ययन में बिताया और जो कुछ उसमें मिला क्षयोपशम के अनुसार जन साधारण की जानकारी के लिए संग्रह किया। इस ग्रन्थ में चारों गतियों के दुःखों का वर्णन, २५ पृष्ठों में वर्णित—तीन लोक का विवेचन थोड़े से सरल पद्यों द्वारा किया जाना कवि की अपनी विशेषता है। भगवान् के पञ्च-कल्याणक का निरूपण कवि की अनोखी रचना है। इस संग्रह ग्रन्थ में कवि ने जैन सिद्धान्त के समस्त अंगों पर पहुँचने की कोशिश की है।

विज्ञ पाठक इस ग्रन्थ को आद्योपान्त पढ़ने की कृपा करेंगे।

विनयावनत:—

स० सि० रसवैद्य पं० भैया शास्त्री "कौछल्ल"

काव्यतीर्थ आयुर्वेदाचार्य,

गव० आयुर्वेदिक फार्मेसी लश्कर, मध्यभारत

लक्ष्मी विलास–

लक्ष्मी विलास ग्रन्थ के रचयिता अनेक उपाधि विभूषित

पं० लक्ष्मीचन्द्रजी जैन, लश्कर (ग्वालियर)

ग्रन्थकार का संक्षिप्त परिचय

आपका जन्म मध्यभारत की राजधानी लश्कर नगर में श्रावण शुक्ला चतुर्दशी सम्वत् १६०३ वि० में धर्मनिष्ठ श्रेष्ठिवर्य गिरधरवाल गोत्रीय मन्नालालजी खण्डेलवाल के घर हुआ था। कुशल पिता की भाँति कुशल पुत्र ने अपनी शैपवकाल की छटवीं वर्ष में ही कुशाग्र बुद्धि का परिचय दिया और इस अवस्था ही में भक्तामर, जिन सहस्र नाम, अमरकोष आदि संस्कृत के ग्रंथों को कण्ठस्थ कर लिया। पन्द्रह वर्ष की उम्र में आप लश्कर से अँग्रेजी भाषा के अध्यनार्थ आगरा चले गये और दशवीं श्रेणी पर्यन्त वहाँ पर अध्ययन किया। इसी बीच इनकी सुयोग्य पात्रता को देख सेठ पन्नालालजी गोधा ने अपनी सुपुत्री से विवाह कर दिया। २४ वर्ष की अवस्था पर्यन्त आपने धर्म ग्रंथों का अध्ययन किया। सम्वत् १६३० में आपको अपने पिताजी के अस्वस्थ होने के कारण लश्कर आना पड़ा और पिताजी के देहान्त होने के पश्चात् लश्कर में ही फिर निवास करने लगे। धर्म में इनकी अनन्य भक्ति को देख कर समाज ने शास्त्र-प्रवचन का भार इन्हें सौंप दिया। आपने अपने जीवन का लक्ष्य एक मात्र सरस्वति आराधन बनाया और अनेक आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन किया। आपने जैन सिद्धान्त के अनुसार लक्ष्मी विलास तथा जैनेतर शास्त्रानुसार अज्ञान तिमिरमार्तण्ड नामक ग्रन्थों का निर्माण किया। प्रस्तुत ग्रन्थ (लक्ष्मी विलास) पाठकों की सेवा में पहुँच रहा है जिससे पण्डित जी की कुशल योग्यता का परिचय स्वयं प्राप्त होगा।

पण्डितजी ने प्राय: भारतवर्ष के सभी नगरों में जैन समाज के प्रवक्ता होने के नाते धर्म का खूब प्रचार किया। आपका समस्त जीवन जैनधर्म की सेवा में व्यतीत हुआ। आप अपने पीछे एक-मात्र सुयोग्य पुत्र दशलाक्षण धर्म पद्यों के रचयिता पं० पद्मचन्द्रजी को छोड़कर माघ कृष्णा द्वादशी सम्वत् १६६३ में देह विसर्जन कर गये। यद्यपि पण्डितजी इस नश्वर संसार में नहीं हैं तो भी उनकी यह अमरकृति उनको सदैव जीवित रखने का प्रमाण है।

विनीतः—

पं० भैया शास्त्री "कौछल्ल" काव्यतीर्थ

आयुर्वेदाचार्य, लश्कर

श्री १०८ विमलसागर जी महाराज की संक्षिप्त जीवनी

ग्वालियर राज्य में पछार के समीप महायनों नामक एक छोटे से ग्राम में सेठ भीकमचन्द्रजी रहते थे। वे चार भाई थे उनसे तीन छोटे भाइयों के कोई सन्तान न थी। वे दि० जैन जैसवाल जाति के थे। उनकी धर्मपत्नी का नाम श्री मथुरादेवी था। उनके पौष शुक्ला २ सं० १९४८ के दिन एक पुत्र रत्न का जन्म हुआ, उसका नाम किशोरीलाल जी रक्खा गया।

बालक किशोरीलाल को उच्च शिक्षा प्राप्त करने का सुभीता इसलिए नहीं मिला कि उनका जन्मस्थान एक छोटा सा ग्राम था। फिर भी उनको स्वाध्याय करने का बचपन से ही प्रेम रहा है। आठ वर्ष की अवस्था में ही पिताजी का स्वर्गवास हो जाने से व्यापार की दृष्टि से माताजी के साथ पीरोंठ में गये। वहीं पर किशोरीलालजी के दो विवाह हुए। पहिला विवाह सं० १९६८ में हुआ और सं० १९७५ में प्रथम पत्नी का स्वर्गवास हो गया। पुनः दूसरा विवाह सं० १९७७ में हुआ और दूसरी पत्नी का भी संवत् १९९२ में स्वर्गवास हो गया।

युवावस्था में किशोरीलालजी न्यायोचित रीति से व्यापार करते हुए गृहस्थाश्रम के सभी आवश्यक कार्य करते रहे, तथा श्रावकाचार का अच्छी तरह पालन करते हुए संसार से विरक्त रहने लगे, आपने सं० १९९३ मे दूसरी प्रतिमा धारण की और क्रमशः ऊपर की प्रतिमायें धारण करते हुए सं० १९९७ में परम पूज्य श्री १०८ मुनिराज विजयसागर जी महाराज से ग्यारहवीं प्रतिमा धारण करके क्षुल्लक दीक्षा ली।

उसके तीन माह बाद ही आपने खण्ड वस्त्र का भी परित्याग कर दिया और ऐलक दीक्षा ग्रहण करली, सं० २००० में आपने अपने दीक्षा गुरू श्री विजयसागर जी महाराज के साथ कोटा में

लक्ष्मी विलास—

श्री १०८ मुनिराज विमलसागरजी महाराज

चातुर्मास किया और वहीं पर आपने एक मात्र लँगोटी का भी परित्याग करके दिगम्बरी दीक्षा धारण करली। उस समय आपका नाम श्री १०८ विमलसागरजी महाराज रक्खा गया। दीक्षा ग्रहण करने के बाद आप सर्वत्र विहार कर रहे है। आपने अपने धर्मोपदेश द्वारा अनेक प्राणियों को सन्मार्ग पर लगाया है, अनेकों को व्रत ग्रहण कराये तथा अनेक अजैनों तक से बीड़ी, सिगरेट, तमाखू, मद्य, मांस तथा जूआ आदि अनेक कुव्यसनों का त्याग कराया है। इसके अतिरिक्त जब सं० २००४ में आप सिद्धवर कूट पधारे तब श्री विशाल कीर्ति महाराज को आपने ऐलक दीक्षा दी तथा पंचकल्याणक के समय भोपाल पधारे। वहाँ पर श्री धर्मसागर जी महाराज को क्षुल्लक दीक्षा दी। इस प्रकार आपने अनेक प्राणियों को मोक्षमार्ग और सन्मार्ग पर लगाया है।

आपने इस वर्ष सं० (२००८) वर्तमान मध्यभारत की राजधानी लश्कर (ग्वालियर) में संघ सहित चातुर्मास किया, और सतत धर्मोपदेश देकर वहाँ की जैन जैनेतर जनता को कल्याण मार्ग पर लगाया, वहाँ की जनता आपकी चिरऋणी रहेगी।

इसी चातुर्मास के स्मरणार्थ यह ग्रन्थ प्रकाश मे आ रहा है।

प्रकाशक महोदय का परिचय

लश्कर नगर के सुप्रसिद्ध व्यवसायी सेठ कन्हैयालालजी गंगवाल ने जयपुर राज्यान्तरगत तूँगा नामक ग्राम में सम्वत् १६४२ चैत्र शुक्ला पूर्णिमा के दिन सेठ हीरालालजी के घर जन्म लिया था। एक वर्ष की आयु में ही माता ने इन्हें अकेला छोड़ दिया था, शैषवकाल ग्राम ही में व्यतीत हो रहा था कि सम्वत् १६५० मे लश्कर निवासी सेठ हीरालालजी गंगवाल ने इन्हें अपना दत्तकपुत्र बना लिया। श्री हीरालाल जी गंगवाल एक महान् धर्मनिष्ठ व्यक्ति थे इसलिए लोग इन्हें भगतजी के नाम से पुकारते थे, ये अपने निर्वाह के लिए चन्देरी तथा बनारसी जरी का व्यापार करते थे। सेठ हीरालालजी सं० १६५३ मे कार्तिक शुक्ला एकादशी के दिन अपने दत्तक पुत्र श्री कन्हैयालालजी को ग्रह का समस्त भार सौंपकर इस असार संसार से चल बसे, कुशल पुत्र ने भी अपने पितृ-व्यवसाय को चालू रखते हुए नगर में एक गोटा फैक्टरी भी स्थापित करदी जो अपनी ख्यातिपूर्ण सत्यता के लिए प्रसिद्ध है।

सेठ सा० पं० लक्ष्मीचन्दजी के मुख्य शिष्य हैं। व्यापारिक क्षेत्र में प्रवेश करने के पश्चात् श्री कन्हैयालाल जी की प्रतिभा दिनोंदिन बढ़ती गई। इनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर राज्य ने चेम्बर ऑफ-कामर्स के वायस प्रेसीडेन्ट के स्थान पर सम्मानित किया तथा कृष्णराव बल्देव बैंक के खजाञ्ची भी बना दिये गये, दूसरी ओर साहूकारान बोर्ड के सदस्य भी चुन लिये गये। आपकी धार्मिक वृत्तिमय परोपकारी जीवन का ही फल है कि आप नगर के ख्याति प्राप्त श्रीमानों में से एक हैं। आपके तीन पुत्र हैं.—

प्रथम श्री प्रकाशचन्द्रजी तथा तृतीय पुत्र श्री निरंजनलालजी पवित्र धार्मिकता के साथ साथ व्यवसाय क्षेत्र में कार्य कर रहे हैं और द्वितीय पुत्र श्री माणिकचन्द्रजी एम० ए०, एल०एल० बी० नगर के प्रसिद्ध एडवोकेट होने के साथ साथ सामाजिक क्षेत्र में कुशल सेनानी का कार्य कर रहे है। हम श्रीमान् सेठ कन्हैयालालजी के पारिवारिक जीवन के उज्ज्वल भविष्य की शुभ कामना करते हैं। इत्यलम्।

निवेदकः—
स० सिंघई रतनचन्द्र जैन
बामौर कलाँ (मध्यभारत)

लक्ष्मी विलास—
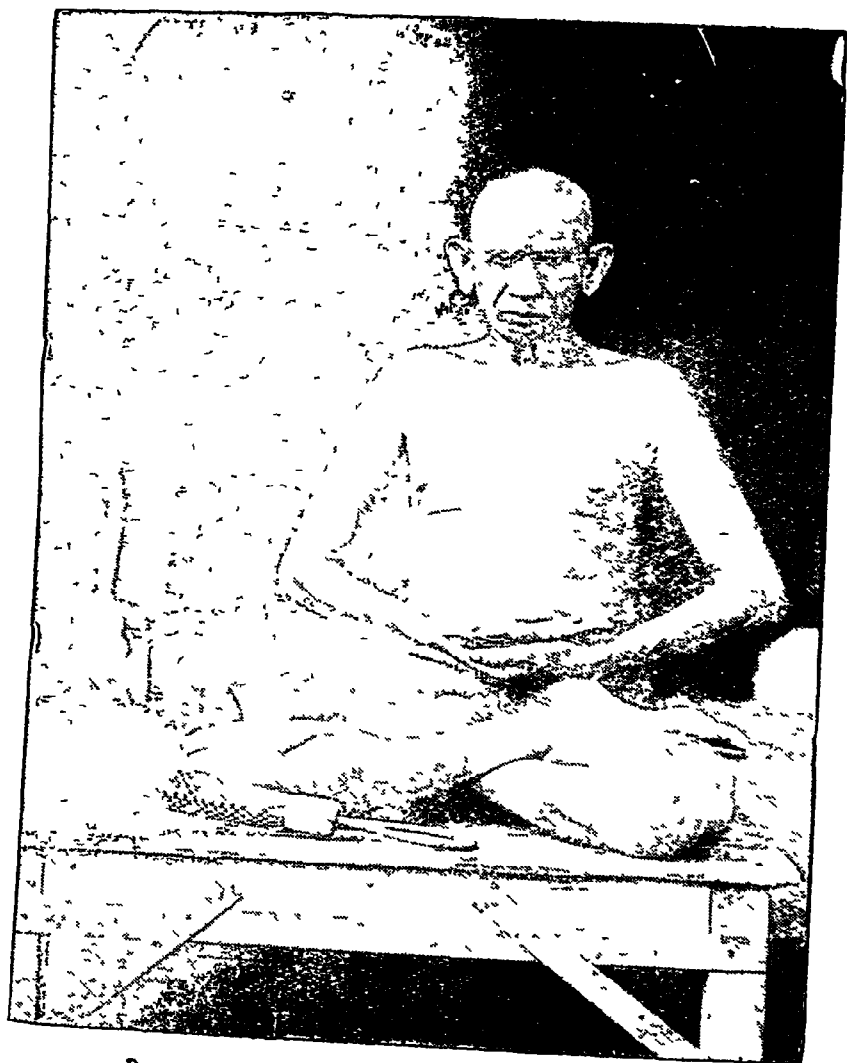
श्री १०८ मुनिराज विजयसागरजी महाराज

विषय सूची

सिद्धांत रत्न भूषण-व्याख्यान वाच-
स्पति-कारुण्य-रत्नाकर-वाणी
भूषण श्रीमान् लक्ष्मीचन्दजी साहब
कृत लक्ष्मी विलास लिख्यते ॥

ॐनमः सिद्धेभ्यः

अथ लक्ष्मी विलास ग्रन्थ लिख्यते

दोहा— प्रथम नमो अरहंत को, द्वितिये सिद्ध महाराज।
त्रतिय साधु को नमन कर, अरु जिन वचन जहाज ॥

अथ सरस्वती जिनवाणी की पूजा लिख्यते

दोहा—सकल वस्तु जाके उदर, है जो रही समाय।
ताही पद कूं नमत हूँ, मन वच तन सुधभाय ॥१
गिरा निरचर कूं नमो, अर्थ दैन गंभीर।
तालु होठ स परस विना, खिरी हरण जगपीर ॥२
फुनि गणधर मुख उच्चरी, साचर शब्द गंभीर।
स्यात्पद कर चिन्हित भई, सोषन भव दधि नीर ॥३
निरचरी अरु साचरी, दोनूं ही जिनवानि।
मन वच काय लगाय कैं, पूजूं अर्घ महान ॥४

— अथाष्टकम् गीताछन्द—

सुर निम्नगा को चीर, नीरहि पात्र कंचन मैं भरूं।
जन्मादि के दुख मेटने को धारत्रय आगै करूं ॥
मैं पंच परिवर्तन भ्रम्यो जग, नाहि चण साता लही।
संसार चार अपार कूँ तुम, मात तारक हो सही ॥५

ॐ ह्रीं सरस्वती भगवती द्वादशांग श्रुत ज्ञानेभ्योनमः जन्म जरा मृत्यु-विनाशनाय जलं ॥१

जगत की दुखदा धनंजय दह्यो तामें ज्यों वनं।
ता दहन के मैं नाश कारण लियो चंदन बावनं ॥
मैं पंच परिवर्तन भ्रम्यो जग नाहि चण साता लही।
संसार चार अपार कूं तुम मात तारक हो सही ॥६

ॐ ह्रीं संसार तापविनाश नाय ॥ चंदनं ॥२

जो प्राण धारक जीवते चय होत ज्यौं अंजुलि जलं।

ताके नशावन अक्षय पद कूं चच अक्षत उज्जलं ॥
मैं पंच परि० ॥ संसार क्षार अपार कूं० ॥७
ॐ ह्रीं अक्षय पद प्राप्ताय अक्षतम् ॥३

अन अंगनैं बहु अंगधारी पादतल मर्दन करैं ।
ता काम बाण नशाय वे कूं कुसुम तुम पद तल धरैं ॥
मैं पंच परि० ॥ संसार क्षार० ॥८
ॐ ह्रीं कामबाणविध्वंश नाय पुष्पं ॥४

जठ राग्नि नै या जगत में जो नाहि छोड़े देवता ।
ता क्षुधा रोगनशाय वे कूं सुधा चरु ले सेवता ॥
मैं पंच परिवर्तन० ॥ संसार क्षार अपार० ॥६
ॐ ह्रीं क्षुधा रोग विनाशनाय ॥ नैवेद्यं ॥५

मिथ्यात तम कर जगत प्राणी स्व पर भेदन जानही ।
ताभेदके मैं जानने कूं दीप पूजा ठानही ॥
मैं पंच परिवर्तन भ्रम्यो० ॥ संसार क्षार अपार कूं० ॥१०
ॐ ह्रीं मोहांधकार विनाशनाय ॥ दीपं ॥६

कर्म्मारि नें जो दुःखदीने कहा मैं अरजी करूं ।
ता कर्म काष्ठ जलायवे कूं धूप चरणन तल धरूं ॥
मैं पंच परिवर्तन० ॥ संसार क्षार अपार० ॥११
ॐ ह्रीं अष्ठ कर्म्म दहनाय ॥ धूपं ॥७

मोहारि नैं मग मोक्ष रोक्यो मोहि दुर्बल जानिकैं ।
ता मोक्षफल के प्राप्त कारण पूजि हूं फल आनिकैं ॥
मैं पंच परिवर्तन भ्रम्यो जग नाहि क्षण साता लही ।
संसार क्षार अपार कूँ तुम मात तारक हो सही ॥१२
ॐ ह्रीं मोक्षफल प्राप्ताय ॥ फलं ॥८

अति ही मनोहर महा अर्घित मृदुहि उज्जल लीजिये ।
नेत्र कूँ रमणीक वस्त्रहि गिरा चरण धरीजिये ॥
मैं पंच परिवर्तन० ॥ संसार क्षार० ॥१३॥ ॐ ह्रीं वस्त्रम् ।

की लाल मलय सुगन्ध अक्षत सुमन चरुले दीपही ।
धूप फलमिल अर्घ कीजे नाय कर मस्तक मही ॥
मैं पंच परिवर्तन भ्रम्यो० ॥ संसार वार० ॥१४
ॐ ह्रीं अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घं ॥१०

अथ जयमाल सारठा—हारणि दुख जिनवाणि, तारणभवदधि तरण हूँ । कारण शिव सुख जानि, धारण मन वच तन करूं ॥१५

चौपाई छंद—आचारांग मोक्ष आचारं, सहस अठारह पद सुविचारं ।
सूत्र कृतांग स्व पर मत कथनं, पद छत्तीस सहस उरधरनं ॥१६
स्थान अंग मैं वहुविधि स्थानं, पद व्यालीस सहस परमानं ।
समवायांग द्रव्य सामानं, चौसठ सहस लाख इक आनं ॥१७
व्याख्या प्रज्ञप्ती गणधर प्रश्नं, सहस अट्ठाइस दो लख वरनं ।
ज्ञात्र कथा फलधर्म सुभाषं, छप्पन सहस पांच है लाखं ॥१८
श्रावक धर्म उपासिक व्ययनं, सत्तर सहस ग्यारा लख वरनं ।
अंतकृत दश दश यति क्लेशं, सहस अट्ठाइस लाष तेईशं ॥१९
अन उत्तर दश दश मुनिभाषं, सहस चवालिस वावन लाखं ।
प्रश्न व्याकर्णहि लाभ विचारं, लाख तिरानवे सोल हजारं ॥२०
सूत्र विपाक उदय विधि कर्म, लख चौरासि कोडि पद समं ।
ग्यारह अंग के पद संकलनं, चार कोड पनरह लख वरनं ॥२१
दोय सहस पद ऊपर धरनं, एते पद जु कहै अरि हरनं ।
अर्घ करो इनके पद चरनं, जाकर होवे जग निस्तरनं ॥२२
ॐ ह्रीं ग्यारह अंग के चार कोड़ पन्द्रह लाख दो हजार पदतिनकों अर्घं ॥

दृष्टि वाद अंग के पणभेदं, है परि कर्म सूत्र शुभवेदं ।
अरु प्रथमानुयोग पुन्यांगं, पूर्व चूलिका पंचम भंगं ॥२३
अब इनके पदको व्याख्यानं, भाख्यौ गणधर वेद पुरानं ।
ताकूं भव्य सुनों मन आनं, जाके सुनें पदहोय निर्वाणं ॥२४
प्रथम भेदपरि कर्म प्रमाणं, पंचभेद ताके मन आनं ।

चन्द्र प्रज्ञप्ति चन्द्रविस्तारं, लाख छत्तीस पंचहज्जारं ॥२५
सूर्य प्रज्ञप्तिविभव परिवारं, पंच लाख अरु तीन हजारं।
जंबू द्वीप प्रज्ञप्ति सुभापं, सहस पचीस तीन है लाखं ॥२६
द्वीप उदधि प्रज्ञप्ति गिरीशं, बावन लाख सहस छत्तीसं।
पंचम व्याख्या प्रज्ञप्ति दर्सं, लाख चौरासी छत्तिस सहर्सं ॥२७
इस प्रकार परि कर्म्म प्रमाणं, सब मिल ताके पद जु बखानं।
एक कोड़ इक्यासी लाखं, ऊपर पांच सहस शुभभाषं ॥२८

ॐ ह्रां परिकर्म के पाँच भेद तिन के पद एक कोड इक्यासी लाख पाँच हजार पद तिन्हें अर्घम्।

दृष्टि वाद का द्वितीय विभेदं, ताको नाम सूत्र है वेदं।
पद ताके अट्ठासी लाखं, समकित मिथ्या भेद विभाषं ॥ २९

ॐ ह्रीं सूत्र श्रुतज्ञानेभ्यों नमः। याके पद अट्ठासी लाप तिन्हें अर्घम्।

तृतीयहि भेद दृष्टि वादांगं, है प्रथमानु योग सुकृतांगं।
ताके पद है पंच हजारं, तामें पुन्यरू पाप विचारं ॥ ३०

ॐ ह्रीं प्रथमानुयोग श्रुतज्ञानेभ्यो नमः अर्घम् ॥

चवथा भेद दृष्टि वादांगं, नाम तासको है पूर्वांगं।
ताके चौदह भेद विचारं, भिन्न भिन्न कहूँ ग्रंथ अनुसारं ॥ ३१
प्रथम भेद उत्पादहि लाखं, तामें द्रव्य भेद नो भाखं।
लच्च पचास दोय कर गुणिनं, एक कोड पद ताके भणिनं ॥ ३२
द्वितीय अग्रायणि पूर्व विचारं, द्रव्य पदार्थ तत्व नयसारं।
लख अठ चालिस दोकर गुणितं, लच्छानवै पद होय कथितं ॥३३
तृतीय पूर्ववीर्या अनुवादं, शक्ति वस्तु जीवादि अवादं।
गुणित दोयकर पैंतिस लाखं, लच्च जु सत्तर होय सुभाषं ॥ ३४
अस्ति नास्ति परवाद चतुर्थं, स्यात्पद सहित अस्तिनास्पर्थं।
दोकर गुणित करो लखतीसं, लच्चजु षष्टि कहै जगदीशं ॥ ३५
ज्ञान प्रवाद पंचमो भेदं, मति श्रुतादिफल विषयविभेदं।
लच्च पचासगुणित द्वितियांगं, शतलख होय घाट एकांकं ॥ ३६

सत्यप्रवाद षष्टमो सारं, जेती भाषा लोक मझारं ।
तिन भाषा को भेद विचारं, कोडि एक पद छह गणधारं ॥ ३७
आत्मप्रवाद सप्तमो जानं, शुद्धाशुद्ध आत्मा व्याख्यानं ।
लख शतत्रयोदश दोकरगुणितं, पद छब्बीसकोड जिनभणितं ॥३८
कर्म्म प्रवाद पूर्वक सुलीजे, कर्म प्रकृति दश वंधगिनीजे ।
गुणयद्विलक्षणवै गुणकारं, पद इककोडि असीगणधारं ॥ ३९
प्रत्याख्यांन नवम गुणराशं, चारनिक्षेपाविधि उपवासं ।
लक्ष चयालिस द्विगुणकरीजै, लखचौरासी पद गहिलीजै ॥ ४०
दशमपूर्व विद्या अनुवादन, क्षुद्रमहाविद्या को साधन ।
निमितभेद अष्टांग विचारं, एककोडि दशलख पद सारं ॥ ४१
पूर्व कल्याणवाद ग्यारम है, चंद्र सूर्य ग्रह शकुन कथन है ।
चक्रेशादिक पदवी धारं, कोडि छत्तीसहि पद विस्तारं ॥ ४२
प्राणवाद द्वादशमा पूर्वं, अष्ट प्रकार चिकित्साकूर्वं ।
भेद स्वरोदय के पद सारं, तेरहकोडि कहे गणधारं ॥ ४३
पूर्व तेरमांक्रिया विशालं, छंद शास्त्र संगीत रसालं ।
कला वहत्तर सालं कारं, पद नो कोड़ि कहे जिन सारं ॥ ४४
सार त्रिलोकबिंदु दश चारं, तीन लोक वर्णन विस्तारं ।
चार वीज अरु मोक्ष सुभाषं, बारहकोड पचासाह लाखं ॥ ४५
सब पूर्व न को करि संकलनं, एतेपदजु कहे शिव भरनं ।
कोडि पिच्याणवै लाख पचासं, सहित पंचपद ऊपरभाषं ॥ ४६

ॐ ह्रीं चौदह पूर्व श्रुतज्ञानेभ्यो नमः । चौदह पूर्व के पद पिच्याणवै पचास लाष पाँच पद तिन्हैं अर्घम् ॥

दृष्टि वाद का पंचम भेदं, ताको नाम चूलिका वेदं ।
पंच भेद ताके विस्तारं भाषे है श्री गुरुगण धारं ॥ ४७
जलगत स्थलगत माया काशं, रूपगता पंचम परकाशं ।
एक एक की संख्या जानौं, दो क्रिरोड़ अरु नोलख मानौं ॥ ४८
ऊपर सहस नवासी सारं, ताके ऊपर दोसै धारं ।

जलगतादि चूलिका जोडं, संख्या तिनकी दश जु करोडं ।। ४६
लख उनचास सहस छयालीसं, एते पद भाषे गुणईशं ।
चूलिकान के पद सम भागं, हीनअधिक नहिं धर उर रागं ।। ५०

ॐ ह्रीं चूलिका श्रुतज्ञानेभ्यो नमः। इन चूलिकान के पद दश करोड़ उनंचास लाप छयालीस हजार तिन्हें अर्घम् ।।

दृष्टिवाद अंग के पद जोडं, एक अरब अरु आठ करोडं ।
अड़सठ लाप छप्पन हज्जारं, ऊपर पांच कहे पद सारं ।। ५१

ॐ ह्रीं दृष्टि वादांग श्रुतज्ञानेभ्यो नमः। वारमां दृष्टिवादांग अंग के एक अरब आठ कोड अड़सठ लाप छप्पन हज्जार पांच पदतिन्हें अर्घम् ।।

सोलह सै चौंतीस करोड़ं, लाख तिरासी ऊपर जोड़ं ।
सात सहस वसुशत अट्ठासी, इक पद के अच्चर यह भांसी ।। ५२

ॐ ह्रीं सोलह अरब चौतीस किरोड़ तिरासी लास सात हजार आठ सै अट्ठासी अच्चर एक पदके तिन्हें अर्घम्। आगैं चौदह प्रकीर्णक वर्णनं ।।

आठकोड इकलख वसु सहसं, शतकपिचहत्तर अच्चर शेपं ।
जिन अच्चर के वनें प्रकीर्णं, चौदह भेद महाविस्तीर्णं ।। ५३
प्रथम सामायिक छहविधि वर्णं, द्वितिय चतुर्विंशतिहैं स्तवनं ।
तृतयि वंदना वंदन चारं, प्रतिक्रमण है सप्त प्रकारं ।। ५४
वैनेयिक मे विनय विधानं, कृतिकर्म्म मै क्रिया प्रधानं ।
दश वैकालिक काल विवर्णं, उत्तराध्ययन प्रश्नउत्तरणं ।। ५५
कल्प व्यवहार प्रायश्चित्पादी, कल्पाकल्प द्रव्य चेत्रादी ।
महाकल्प स्थावर जिन कल्पी, पुंडरीक भवन त्रिकजल्पी ।। ५६
पुंडरीक महाइंद्रोत्पत्तिं, अरु निषिद्धिका दोषानवृत्तं ।
इहविधि कहे प्रकीर्णकसारं, तिनकों मनवच तन उरधारं ।। ५७

ॐ ह्रीं प्रकीर्णक श्रुतज्ञानेभ्यो नमः। इन प्रकीर्णकन के आठ कोड़ एक लाख आठ हजार एक सौ पिचहत्तर अच्चर तिन्हें अर्घं ।।

द्वादशांग की संख्या जोड़, एक अरब द्वादशहि किरोड़ ।
लाख तिरासी अट्ठावन सहसं, और पांच पदको लख रहसं ।। ५८

द्वादशांग श्रुतज्ञानेभ्यो नमः। सर्व द्वादशांग के एक अरब बारह

कोड तिरासी लाख अट्ठाव हजार पांच पद और ८११०८१७५ अक्षर इन सबको अर्घम् ॥ ७

घत्ताछंद—यह श्रुतिशिवकारं जिनउच्चारं, गणधरधारं सुखकारं ।
निरुपमवचसारं विविध प्रकारं शुभ आचारं जगसारं ॥
एकांतनिवारं वस्तुविचारं स्यात्पदधारं नयद्वारं ।
अरि कृत संहारं गुणविस्तारं जगनिस्तारंशिवधारं ॥ ५६

ॐ ह्रीं सर्वश्रुत ज्ञानेभ्योनमः ॥ महार्घ्यम् ॥

पद संख्या श्रुत ज्ञानकी, वर्णनविविध प्रकार ।
कही जुहै संक्षेपसूं, लीजो भवि उरधार ॥६०
जाश्रुत के अभ्यासतैं, सूझै लोका लोक ।
श्रीमृगांक के भालपर, रहो देत हूँ धोक ॥६१

इति संपूर्णम् अथ सोलहकारण भावना लिख्यते। प्रथम दर्शन विशुद्धिभावनातिसमैं सम्यग्दर्शन का स्वरूपवर्णनं ॥

आप्तागमरु तपोभृत तिन का सत्यारथ श्रद्धान कराय ।
सोसम्यक्दर्शन जिन भाषित तीन मूढता रहित सुभाय ॥
अष्ट दोष वसु मद अनाय तन जामें नहीं प्रवेश कराय ।
सप्त तत्व नव पद जानन को ये ही कारण मूल कहाय ॥१

आप्तस्वरूप लिख्यते ॥

मुख्यधर्म की मूल आप्तहै ताके त्रय गुणको वर्णान ।
निर्दोषी सर्वज्ञ परम हित सोही शास्ता वसु गुणजांन ॥
परं ज्योति परमेष्ठिविरागी विमल कृतीसर्वज्ञ महांन ।
है अनादि मध्यांत सर्वगुण यही स्वरूप आप्त पहिचांन ॥२

अथ आगम स्वरूप वर्णनं ॥

वीतराग सर्वज्ञ कथित हो ताकूं आगमकहिए सोय ।
वादीकर उल्लंघन नांही दृष्टि अदृष्टि विरोध न होय ॥
तत्वस्वरूपहोय हित रूपी अरु कुमार्ग नाशक विधिजोय ।
शास्त्र विशेषण येहीषट्विधि इनविनशास्त्र कुशास्त्र जुहोय ॥३

गुरु लक्षण वर्णनं

आशा रहितविषय पण इंद्री आरंभ रहित स्वहित आचार।
वाह्याभ्यंतर रहितपरिग्रह ज्ञानध्यांन तप मैं व्यवहार ॥
इहविधि चारविशेषणधारक सोहीगुरु प्रशंसाकार।
इन गुण रहित भेषी पाखंडी लोभी कुगुरु जाननिरधार ॥४

दोहा—इहविधि आगमदेवगुरु, तालक्षण श्रद्धान।
सोसम्यग्दर्शन कह्यो, भेद अष्ट अंगान ॥ ५

अष्ट अंग वर्णन शंकित अंग ॥

सम्यक् दृष्टी देवधर्मगुरु द्रव्यपदार्थ तत्वविधि अंक।
सूक्ष्मांतरित दूरजेवस्तु सत्यजानिजिन वच निकलंक ॥
वस्तुनके गुणचमत्काररलखि चले न श्रद्धा रहै अटंक।
जानैं लोक स्वरूप हृदय मैं तातैं रहत सप्तभय शंक ॥६

सप्तभय मलनाम लक्षणवर्णनं। इस लोकभय ॥

दोहा—ज्ञानी कै इसलोकभय, सुख दुख को कुछ नांहि।
अज्ञानी तन धन स्वजन, नाश होत दुख पांहि ॥ ७

परलोकभय

सर्व लोक मुझमैं वसैं, मुझै नहीं परलोक।
नर्क स्वर्ग सुखदुःख को, अज्ञानी क शोक ॥८

मरणभय

दशप्राणनि के नाशकूं, मरणकहै सब लोय।
निश्चय प्राणवियोग नहि, किं ज्ञानीभय होय ॥९

वेदनाभय

ज्ञानीनिर्भय वेदना, वेदैहै निज रूप।
मोह जनित सुखदुःखको, जानै दुःख स्वरूप ॥१०

अगुप्तिभय

परम गुप्ति निज रूपमुझ, जहां प्रवेशन कोय।
यह अगुप्तिधन स्वजन को, मुझे न डर कुछ होय ॥११

२

अनक्षरभय

निज स्वरूप को नाश नहिं, किं अरक्षभय आहि।
अज्ञानी के सर्वभय, मम रक्षक कोउ नाहि ॥१२

अकस्मातभय

मैं अखंड चैतन्यगुण, द्वितीय नहीं मुझ मांहि।
अकस्मात कुछ नहिं तहां, ज्ञानी क्यों दुखपांहि ॥१३

दूसरा गुणनिःकांक्षित

विषयभोग ये पराधीन क्षणभंगुर अंत सहित दुख दाय।
पाप बीजनिजरूप भुलावनगति नारकतिर्यंच भ्रमाय ॥
रोग इलाजभोग इम जानैं ज्ञानी वृष कर क्यों ललचाय।
इंद्र खगेंद्र नरेंद्र राज्यसुख इनकी वांछा नहीं कराय ॥१४

तीसरा गुणनिर्विचिकित्सा

यह तन सप्तधातु मल मूत्तर वस्तुस्वभावदेख कहाग्लांन।
तथादरिद्र शीत वर्षा तप ग्रहगिरग्राम काल दुखथान ॥
साधु शरीरमलिन रोगादिक जरादेख मत कर उरग्लांन।
तिन गुणरतन त्रय चिंतवन कर निर्विचिकित्सा धरहु सुजांन ॥१५

चौथा गुण अमूढ दृष्टि

खोटे शास्त्र देव व्यंतर कृत वामणि औषधि मंत्र प्रभाव।
वा भेषी लोभी पाखंडी भस्म जटाधारी उर चाव ॥
इंद्र जाल रस कर्म तंत्र बहु चमत्कार गुण वस्तुदिखाव।
तोभी सम्यक्ती नहिंचिगते ज्यों रेवति लख तीर्थप्रभाव ॥१६

पंचम उपगूहन

कोइक धर्मी अज्ञ रोगभ्रम वा प्रमाद वृष दूषण लाय।
धर्मी को अपवाद जानकै ताहि छुपावै मन वच काय ॥
निज पर शंस पराई निंदा करै नहीं विधिकृत चिंताय।
कौन जीवविधि वसनै चूकै तातैं दोषाच्छादनभाय ॥१७

छट्ठा गुणस्थितिकरण

कोइक पुरुष सहित दृग चारित व्रत तप संयम सम्यक्ज्ञान।

फिरमिथ्यात्व कषाय कुसंगति रोग दरिद्र शोक अपमान ॥
ताकर चलित होय वृषसेती साधर्मी जनस्थिती करान ।
भोजन पान वस्त्र ग्रह औषधि वा उपदेश मधुरवचनान ॥१८
भोभाई यह नरभव दुर्लभ तामें भी वृष दुर्लभ जान ।
छूटै पीछें नंतकालमैं फिर नहिं मिलना सुलभ सुथान ॥
तातैं कर्म जनित दुखगदभय इष्टवियोग दरिद्रमहांन ।
इनतैं आर्त्त छोड़ धरधीरज भज भावन दुख चतुगतिथांन ॥१६

सप्तमगुण वात्सल्य

प्रवचन जो जिनदेव गुरू वृष तिन मैं जो वात्सल्य कराय ।
महा मुनीवा आर्या श्रावक तथा श्राविका धर्म सहाय ॥
दानी व्रती तपी धर्मी का वहु श्रुती उपदेशी दाय ।
त्यागी शील संयमी जिनकी प्रीति करो ज्यों वत्सागाय ॥२०

अष्टम प्रभावनांग

श्री जिनविंव प्रतिष्ठा करना वा जिनमंदिर धर्म स्थान ।
दर्शन पूजन स्तवन जागरन सामायक शास्त्र व्याख्यांन ॥
दुखित भुखित कौं दांन देनकर वा अभक्ष्य को त्याग करांन ।
ऐसी उत्कट करूं प्रभावना अन्य मती आश्चर्य लहान ॥२१

सम्यक्त के अष्ट अग जिन ने पाले तिनका नाम वर्णनं ॥

अंजन नैं निःशंकित पाल्या नंतमती निःकांक्षितधार ।
निर्विचिकित्सा उदायननैं त्रिक अमूढ़ता रेवनि नार ॥
उपगूहन जिनदत्त सेठनैं वारिषेण स्थिति करन विचार ।
विष्णुकुमार धरी वात्सल्यता अरु प्रभावना वज्रकुमार ॥ २२

अष्ट मद नाम लक्षण

दोहा—जाति लाभ कुल रूप तप, वल विद्या अधिकार ।
इनकौ गर्व न कीजिये, ये मद अष्ट प्रकार ॥ २३

जाति मद

लख चौरासि योनि के मांही भ्रमण करत पाई वहु जात ।

इग विगतिय चतुपन इंद्री की जल थल नभ विलनामधरात ॥
भील चमार खटीक चूहड़ा चांडाल रैगर कुटात ।
उल्लू काक स्वांन खर शूकर फिरैं भटकते विष्टा खात ॥ २४

कुल मद ।

कुल को मदतूं कहा करै अब मैं ब्राह्मण क्षत्री अब दात ।
पूर्व जन्म मैं नंत वारतूं गर्दभ स्वान चमार किरात ॥
कुल इकसौ साढ़े निन्यानवे लाख कोड धर जगत भ्रमात ।
अब उत्तम कुल पाया त्याग तूं व्यसन पाप अर पंच मिथ्यात ॥२५

धन मद ।

धन को मदतूं कहा करै अब यह धन अथिर दुःखमय जान ।
पूर्व पुण्य कृत फलित जानकैं दीन दुखित उपकार करांन ॥
दुखित मुझै धनवांन जानिकैं जांचै वस्तु छांड़ अभिमान ।
तातैं धन को दान भागकर यह संपति थिर नांहि रहान ॥ २६

रूप मद ।

रूप गर्व तूं कहा करै अब यह सरूप क्षण क्षण विनसात ।
जरा दरिद्र रोग भय वेदन भोजन पान विना नसिजात ॥
कांनअंध मुखवक्र नाशिका होठ छिदन लंबादर गात ।
इक दिन रूप होय भयकारक स्त्री सुत मात तात भयखात ॥ २७

तप मद ।

तप को मद तूं कहा करै अब अष्टकर्म रिपु नष्ट न होय ।
धन्य तपी ते ही जग में जिन विषय काम निद्रा मद खोय ॥
जब तक काम कषाय ईर्षा मूर्छा राग द्वेष मुझ होय ।
तब तक चतुः संसार दुःख को नाश नहीं यह निश्चय जोय ॥ २८

वल मद ।

वल को मद तूं कहा करै अब वड़े वड़े वलवान विख्यात ।
हरि हरादि कोटी भट शतभट सहस्रभट्ट मर जगत भ्रमात ॥
अब किंचितवल पाय शीलतप संयम नियम करो दिनरात ।
तथा दीन असमर्थ पशू नर देख दुखी दुख दूर करात ॥ २९

विद्या मद

विद्यामद तू कहा करै अब आत्मज्ञान रहित निस्सार ।
तर्क न्याय व्याकरण काव्य श्रुत वैद्यक कोष नाट्यालंकार ॥
इंद्री जनित ज्ञान इक चणमैं रोग वियोग शोक भ्रम भार ।
नाश होय तातैं सु ज्ञान को वा विद्या को मद मतधार ॥ ३०
वड़े वड़े आगम के पाठी च्यार ज्ञानधारी श्रुतकार ।
तिनकी कविता देख परसती नमन करै सुरमान विसार ॥
तेभी लघुता करै आपकी तू दो अच्चर पढ़ मद मतधार ।
तातैं छांडि ज्ञान मद कों शठ नातर इतर निगोद तैयार ॥ ३१

ऐश्वर्य मद

ऐश्वर्यमद तू कहा करै अब वड़े वड़े चक्री नाराण ।
मंडलेश नृप बहु धन बल युत आज्ञा विभव ऋद्धिसुखदांन ॥
सुर विद्याधर कोटी भट नर बहुजन तिनकी मानैं आंन ।
तेभी प्यासै हूंठ हाथ पर पौढ़े तिनका नांहि निसांन ॥ ३२

इति अष्टमद संपूर्णम् ॥

तीन मूढता लिख्यते ॥ लोक मूढता

विन विचार जो कार्य करै जन सोई लोक मूढता जान ।
तातैं नर भव पाय समझकर परखो धर्म देव-गुरु आंन ॥
क्यों पूजो तुम गर्दभकौ वा नीलकंठ अहि काला श्वान ।
परख न सीखी धर्म कर्म की तो नरभव यह पशू समान ॥ ३३
लौकिक जनकी रीति देखकर नदी उदधि के जलमैं स्नान ।
रेत पुंज पाषाण ढेरकर पर्वत पड़न अग्नि दग्धान ॥
ग्रहण दान संक्रांति छोकं गौ अहिधन पितर मृतक पूजान ।
मृत्युंजय तर्पण यज्ञादिक देव रूप तिर्यंच करान ॥ ३४
मृतक हाड गंगाजल उत्तम उदधि नदी पुष्कर मैं स्नान ।
सूर्य चंद्रमा पितर पातडी चांदी सोना के पहिरान ॥
संक्रांति सौमोति अमावस व्यतीपात अरु ग्रहण स्नान ।

रवि शशिदीपक देहली मूसल सोना चांदी छींक पुजांन ॥३५
वड़ पीपल महि तुलसी आंवल शस्त्र अग्नि गौ चाकी चूल।
ऊखड रोडी अन्न कूप अहि पूजै नीलकंठ जडमूल ॥
ग्रहन दान अरु डाभ शुद्ध अरु दंत चूड चोटी रुज डूल।
रात्री जगा पूज कुल देवी ये ही बड़ी मोह की भूल ॥३६
आजा पड़वा चंद्रदोज अरु गौरी कजली तीज बखान।
चौथ गणेश नागपांचे अरु चंदन छठ शियल सा तान ॥
बुधा और दूर्वाष्टिम दुर्गा अक्षय नौमी विजय दसान।
पांडव आंमलि ग्यारस उद्धव वच्छा वारसि धन त्रिदशान ॥३७
चौदस नंत सोमोतीमावस कार्तिक दीपमालिका जान।
पूनों शर्दरु फागुन होली कातिक माघ स्नान अरदांन ॥
गंगादशमी वट सावित्री देव पौढनी ग्यारस मान।
पूजन सांड शीतला माता चाक कुम्हार मृतक पूजान ॥३८

देव मूढता ॥

मलिन देव का सेवा करके इष्ट वस्तु चाहै कुशलात।
सो सुख देन समर्थ कोइ नहिं दई देवता जग विख्यात ॥
लक्ष्मी दुर्गा पितर शीतला व्यंतर क्षेत्रपाल दिगजात।
नवग्रह लंबोदर पद्मावति चक्रेश्वरी दिग्ज्वाला मात ॥३९

अनेक देवों के नाम ॥

अग्नि देवता वरुण अश्विनो ऊषा पूषा सोमोदेव।
ऋभवो रुद्रो सूर्यो वायु मित्रा वरुण बृहस्पति देव ॥
औषध्यो अप्रियो मंडुको सविता मित्रो वेणो देव।
पुरुषो मन्यूनद्योत्वाष्टा पर्जन्यो विष्णो महिदेव ॥४०

बड़े बड़े महान पुरुषों पर आफत आई जब देवी देवता कहाँ चले गये थे सो वर्णनं ॥

कहां गये थे देई देवता ऋषभ जिनेंद्र पार्श्व महावीर।
कृष्ण सुभूमि पांडु सुकमालरु कौसल शंबू लक्ष्मण धीर ॥

पूर्व पुन्य के उदय बिना सुख देत नहीं सुर दानव पीर।
तातैं छोड़ो देव मूढ़ता श्रीजिन देव भजो भवतीर ॥४१

गुरु मूढ़ता ॥

लोभी हिंसक असन लालची क्रोधी मानी धर मिथ्यात।
भस्म जटाधारी मृगछाला ऊर्ध्व वाहु मुख अग्नि तपात ॥
पीर फकीर कवीर सेवड़ा भोपा पंडा हीन कुजात।
ये कुगुरू संसार डुबोवत तातैं परखो गुरुकुल आत ॥४२

कुगुरुन का भेष वर्णनं। ऐसे लोभी भेषी पाखंडिन को नमस्कार सत्कार नहीं करना ॥

भस्म रमाली जटा बढ़ाली मृग के छाली शाल दुशालि।
मूंड़ मुड़ाली कान फडाली नखजु वढाली अग्नि प्रजालि ॥
गुण से खाली झांझ वजाली लिंगछिदाली हस्तकपालि।
वहु वाचाली भोग विशाली तिलक लगाली देते गालि ॥४३

षट् अनायतन ॥

कुगुरु कुदेव कुधर्म आयतन जहां होय मत कर सन्मान।
तिनके पूजक वा सेवक जन इनकी संगति छांडि सुजान॥
स्तुति प्रत्यक्ष परोक्ष प्रशंसा नमन करो मति हो बुधवान।
यह अनायतन षट् जग कारक ये ही मग रोकक निर्वाण॥४४
भय आशा वा स्नेह लोभतैं कुगुरू कुदेव कुधर्म प्रणाम।
सम्यक् दृष्टी नहीं करे उर जानै कोइ नहिं दे सुखधाम ॥
लोक कहै ये चंडी भैरव नाश करे वहुजन ग्रहग्राम।
वा भेषिन की करामात सुनि नहीं करे भयकर परणाम ॥४५

सम्यक्त में इकतालीस प्रकृति को वंध नहीं होय सो वर्णन ॥

वंध होय मिथ्यात्वभाव तैं हुंडक वेद नपुंस मिथ्यात।
स्फाटिक सूक्ष्म अरु साधारन स्थावरपन एकेंद्री जात ॥
अपर्याप्त आताप विकलत्रय आनुपूर्वी नारकपात।
नरकआयु नारक गति षोडश प्रकृति वंध मिथ्यातधरात ॥ ४६

अनंतानुबंधी प्रभावतै ये पच्चीस प्रकृति को बंध।
अनंतानु चतु संस्थान चतु संघनन चतुतिर्यगतिबंध॥
तिर्यगायुगत्यानुपूर्वी दुर्भग सुस्वर स्त्री भव बंध।
नीच गोत्र अप्रशस्त विहायोगति उद्योत अनादेय बंध॥ ४७

दोहा—निद्रा निद्रा स्थान ग्रदि, प्रचला प्रचला आंहि।
ये इकतालिस प्रकृति को, बंधन समकित मांहि॥ ४८

जे जीव सम्यक्दर्शन कर भ्रष्ट हैं तिन्हें कभी मोक्ष
प्राप्त नहीं होयगी सो वर्णन लिख्यते।

छंद—दर्शन भ्रष्ट भ्रष्ट तेई जन जिनको शिव नहि काल अनंत।
जे चारित से भ्रष्ट भये जन ते तीजे भव मोक्ष लहंत॥
दर्शन भ्रष्ट शास्त्र बहुज्ञाता रहित आराधन भव हिभ्रमंत।
कोड हजार वर्ष तक दुर्द्धरि रत्नत्रय नाहि लहंत॥ ४९
जे सम्यक्दर्शन कर भृष्टा तेई भ्रष्ट ज्ञानतैं जांन।
जे चारित सूं भ्रष्ट भये जन ते भ्रष्टा भ्रष्टाशिर मांन॥
जैसैं मूलनाश जिस तरु को शाक पत्र दल फल नहिं आंन।
तैसैं मूलभ्रष्ट दर्शन कर तिनके ज्ञान चरित्र न जांन॥ ५०
जे दर्शन कर आप भ्रष्ट हैं दर्शनीक कोंपगांपडाय।
ते परलोक होय इक इन्द्री काल अनंत तहाँ दुख पाय॥
जे लज्जा भयकर भेषिनकों वंदन नमन करैं हर्षाय।
तिन कैभी मिथ्या अनुमोदन तैं रतनत्रय दुर्लभ पाय॥ ५१
एक लिंग है श्रीजिनेंद्र को दूजो ग्यारम प्रतिमा धार।
तीजो लिंग आर्य का उत्तम जिन मत चौथो लिंगनसार॥
सम्यक् रहित देह मुनि श्रावक वंदनीक नहिं नर अरु नारि।
सम्यक्सहित देह अपिमातंग पूज्य होय यों कहि गणधार॥ ५२
सम्यक् समत्रय काल जगतत्रय कोई नहीं कारक कल्याण।
तीर्थ इंद्र अहिमिंद्र नरेंद्ररु विद्या विभव रिद्धि सुखदांन॥

वंध नहीं चालीस एक को प्रथम वंध उत अपकरषाण।
कौंन कहै या समकित महिमां जिनधारातैं मौन रहान ॥ ५३
इस संसार में सम्यक्त के समान कोई सुख का देने वाला नहीं है॥ उक्तंच ॥

गजरथ हय अनेकधा पैदल पुत्र मित्र वांधव परिवारा।
मनवांछित अरकनक कामिनी पाय महासुख आपनभारा॥
पाप उदय आवै प्रांणीकै सब खिर जैहै काल विदारा।
तातैं यहै ठीक जिय कीनी शिवदैनी समकित की धारा॥ ५४
कामधेनु चिंतामणि पारस कल्पवृक्ष अरुपारद मारा।
चित्रावेल रसायन गुटिका अंजन आदि और सबसारा॥
ये सब नीरस ज्ञाता लागत निजसुख ते सब दूर निकारा।
तातैं यहै ठीक जिय कीनी शिवदैनी समकित की धारा॥ ५५
नरक निगोद वास जब कीनों छेदन भेदन सहे अपारा।
गति तिर्यंच आय जब उपज्यो भूख तृषादिक नांहि सहारा॥
मानुज जोनि उदय पापनिके पायन पनही शिरपर भारा।
तातैं यहै ठीक जिय कीनी शिवदैनी समकित की धारा॥ ५६
समकित दुर्लभ तीनलोक मैं सुरनर नागनि मैं पै सारा।
और रिद्ध बहुवार भई जग इंद्रादिकसम अपरंपारा॥
इस अनादि संसार भवन मैं समकित कवहूं लह्यो न सारा।
तातैं यहै ठीक जिय कीनी शिवदैनी समकित की धारा॥ ५७

अथ विनय संपन्नता दूसरी भावना।

छंद—मूल धर्म को मुख्य विनयहै मनुषजन्म मंडन उपकार।
दग्ध करण संसार वृक्ष कौं तीन लोक जीवन हितकार॥
मिथ्या छेदन समकित कारण मान महीधर कोप विधार।
तातैं तुम अभिमान छांड़िकैं धारो विनय पंच परकार॥ १
अभिमानी कैं इस भव मैं ही वैर विरोध पतन अपमान।
वध वंधन वंदीग्रह पर भव भिष्टा लादन नांक छिदान॥

यातैं विनय देव गुरु वृष को करदो विधि अष्टांग नमामि ।
वा व्यवहार विनय सब जियसूं मन वच तन करदे चतु दान ॥२
मोक्ष प्राप्ति तप संयम ज्ञानरु वैया व्रत भक्ति आचार ।
चार संघ की आज्ञा पालन प्रायश्चित आदि विधिधार ॥
विद्या वृद्धि कीर्ति जग मैत्री यश सौभाग्य संपदा सार ।
आत्म शुद्धता मार्दव आर्ज्जव क्षमा प्रीति शोभा गुण सार ॥३

शील व्रतेष्न तीसरी भावना ॥

अहिंसादि प्रण व्रत पालन को चतु कषाय वर्जन अतिचार ।
सोही आतम स्वभाव शील है ताहि भेद ठारह हज्जार ॥
जाके धारक पूर्ण मुनीश्वर किंचित् श्रावकहू भी धार ।
याविन जप तप नियमेंद्रिय व्रत पठन ध्यान यम सर्व असार ॥१
राज्य भोग ग्रह त्याग सुलभ है शील व्रत पालन असिधार ।
काम नाम सुनि भ्रष्ट भये जन ब्रह्मा विष्णु महेश अवतार ॥
याके नामहि प्रगट करत है संवरारि मन्मथ स्मर मार ।
तातैं छोडो काम वेग दश शील वाडि नव पालो सार ॥२

अभीक्ष्ण ज्ञानो० चौथी भावना ॥

ज्ञानाभ्यास कर नष्ट होत है विषय वासना शल्य कषाय ।
धर्म ध्यान अरु शुक्ल ध्यान व्रत संयम होय विकल्पा भाय ॥
भक्षाभक्षरु योग अयोगरु त्याग ग्रहण अर मंद कषाय ।
कर्म नाश वृष की प्रभावना पाप नाश मन थिरता पाय ॥१
श्रीजिनेंद्र की आज्ञा पालन अरु परमार्थ जान व्यवहार ।
सम्यक् दर्श मोक्ष प्राप्त संतोष क्षमादिक शुभ आचार ॥
ज्ञान समान दान धन आदर शर्ण अभूषण नहीं विचार ।
अग्नि चोर जल दुष्ट राजभय नहि कुटंब उर दाइ या दार ॥२
है स्वाधीन ज्ञान धन उत्तम देश विदेश मान्य सुखकार ।
डूबत कौं हस्ता अवलंबन दिव अपवर्ग दैन दुखहार ॥

या प्रकार गुरु शिक्षा करते करो अभीक्ष्ण ज्ञान विचार।
तथा पढ़ावो स्वजन अन्य जन करो पाठशाला सुखकार ॥३

संवेग पांचवीं भावना

धर्म अधर्म के फल सूं प्रीति तन विरक्त भोगरु संसार।
पुत्र कलित्र मित्र परिजन सूं अरु विषयनि सूं राग घटार॥
पंच परावर्तन सूं भयकर दश लक्षण रत्नत्रय धार।
जीव दया अरु आत्म प्रशंसा मुनि वृष श्रावक प्रीति करार ॥१
तीर्थंकर वलदेव नारायण चक्रवर्ति प्रति केशव काम।
इंद्रदेव अहिमिंद्र भोग भू राज्य ऋद्धि ऐश्वर्य प्रणाम ॥
प्रचुर संपदा वलरु नागरी पंडित लोकमान्य जशधाम।
आज्ञाकारी देश कुटंबरु रोग रहित उज्जल गुण ग्राम ॥२
दीर्घ आयु संगत गुणजन की न्याय प्रवर्त्तक वचन मिठास।
कल्प वृक्ष चिंतामणि पारस चित्रावेलरु दासी दास ॥
देवलोक अरु नागलोक नर लोक सुख वृष के फल खास।
या प्रकार संवेग भावना अपने घट मैं करो प्रकाश ॥३

शक्तिस्त्याग छठी भावना

मिथ्या वेदरु रागद्वेष षट् हास्यादिक क्रोधादिक चार।
क्षेत्र वास्तु धन धान्य चतुष्पद द्विपद शयन आसन लंकार॥
दशस वस्त्र ये बाह्य परिग्रह चौदह अंतरंग सुविचार।
यथा योग्य चौबीस परिग्रह त्याग पदस्थ देखकर धार ॥१
ममता तृष्णा काम भोग विद्वेष शोक आशा अन्याय।
दुष्ट विकल्प कठिन संभाषण हिंसा मृषा परिग्रह धाय ॥
चतुवि कथा निंदा परशंसा ईर्षा वैर दुष्ट संगाय।
आरत रौद्रभाव तुम त्यागो दुःख नाश होय सुख लहाय ॥२

तपस्वी सातवीं भावना

यह तन अशुचि अनित दुख भय रहै न कोट्यां करत उपाय।
यातैं पुष्ट करो मत याकूं तुच्छ भोजन दे सुतप कराय ॥

तप विन काय कषाय काम मद प्रबल होयकै नर्कधराय ।
तातैं दो विधि वा द्वादशविधि बाह्याभ्यंतर तप जु कराय ॥ १
तप अनशन ऊनोदर व्रत परिसंख्या रस परित्याग महान ।
शयनाशैन विविक्त पंचमो कायक्लेश तप बाह्य जुजान ॥
प्रायश्चित विनय वैयाव्रत स्वाध्याय व्युत्सर्गारुध्यांन ।
अभ्यंतर तप भेद कहे षट् ये शुभ मन करकै उपजान ॥ २
इंद्री भोग कषायरु ममता कायरता परीषह गुण ज्ञान ।
तन कृषरोग समाधि पराक्रम जीवन अर सुखिया परधांन ॥
लंपटता समता विषयनमैं स्वाध्याय आलस निद्रान ।
ऋद्धि वृद्धि संवेग धर्म दुख वेदन कर्म निर्जरा जांन ॥ ३
तप चिंतामणि कल्प वृक्ष वा कामधेनु पारस सुखकार ।
तप स्वामी जग बंधु हितंकर मातपिता तप ही परिवार ॥
तप स्वर्गापवर्ग सुखदाता विश्व सुखाकर दुर्गतिहार ।
तप भूषितकै समीचीन सुख लोक त्रय को शीघ्र तैयार ॥ ४

साधु आठवीं भावना

तप व्रतशील त्याग गुण भूपित तिनकैं कोइक विघ्नकराय ।
वा बंदीग्रह दुष्ट राज्य दुर्भिक्ष चौरहरि दुःख धराय ॥
इष्टानिष्ट रोग उपसर्गरु चित्त विगाड़न मरण लहाय ।
तहाँ भय को नहिं प्राप्त होय है तिनकै साधु समाधिकहाय ॥१
तहां ज्ञानी ऐसा विचार कर मैं अखंड अविनश्वरकाय ।
जा उपजै सो विनसै निश्चय मुझ निजभाव मरणनैंथाय ॥
तातैं समता धार त्याग भय आराधन कर मरण लहाय ।
जन्मजरा मरणादि दूर हो स्वर्ग सुक्ख वा शिव सुखथाय ॥ २
या संसार भ्रमण के मांही सर्व समागम वहु वहु वार ।
मातपिता सुत भ्रात मित्र तिय रतन संपदा देश भंडार ॥
सुर नर सुख वा विषय सुख वा नर्क दुःख वृष रहित अपार ।
पांये वहु दुख कहूँ कहां तक तातै साधु समाधि चितार ॥ ३

वैयाव्रत नवमी भावना

कास स्वास ज्वर वात पित्त कफ कोढ़ खाज व्रण उदरविकार ।
आम वात विस्फोटक गुल्मरू ववासीर संग्रहणी धार ॥
उरोदर फ्लीहोद गुदोदर वातोदर प्रमेह अतीसार ।
मस्तक नेत्र कर्णउर शूलरू छिर्दरू कंपन वहु गदधार ॥ १
इत्यादिक रोगन कर पीड़ित दश प्रकार श्रावक ग्यार ।
तिनकी सेवा विनय सुश्रूषा औषधि दे निर्दोष अहार ॥
आसन स्थानरू पुस्तक पीछी तथा कायकर कर प्रतीकार ।
कफ मल मूत्र उठावन धोवन बैठावत कर्वट उपकार ॥ २
मार्ग देख वा दुष्ट चोर नृप सिंह मरी दुर्भिक्षरू व्याधि ।
तिनकी कुशलक्षेम पृच्छाकर वा सिद्धांत कहि मेंट उपाधि ॥
वैयाव्रत करकै वही वात्सल्य स्थितीकरण उपगूहन लाधि ।
तातैं स्वपर करो वैयाव्रत होय मदन वा तीर्थधरादि ॥ ३

अर्हन्त दसवी भावना

है सर्वज्ञ सर्व दर्शी जिन स्वयं ज्योति शिव ब्रह्मस्वरूप ।
वृषाधीश ज्ञानाधि तत्ववित्त निर्मद मोह क्षमी मुनिभूप ॥
पंच मूर्ति कर्मारि त्रिलोचन दमी विरागी यती सरूप ।
वीत शोक लोकेश जिनेश्वर योंकर अर्हद भक्ति अनूप ॥ १
दोहा—इत्यादिक वहु स्तवन कर, पूजन नमन त्रिकाल ।
तथा पंच कल्याण का, चितवन करहु विशाल ॥ २

गर्भ कल्याण

दोहा—इन्द्र पीठ कंपित हुवा, छह महीना सु अगार ।
जानि अवधि वर धनदको, आज्ञा दीनी सार ॥ ३
जाहु नगर शोभा करो, पंचाश्चर्य अपार ।
सुखी करो सब जनन कों, नृप पर मंगल चार ॥ ४
छंद—रचि रत्नसार प्राकारधार द्युति दिवाकर उत्तंगमान ।

खाई सुवारि जलचर मरार कमलादि धार वन बाग जान ॥
चतुनगर द्वार वहुकर शृंगार तोरन सुधार नट नाट्य गान।
मणिक रस सार वीथिन बाजार वहु खन आगार शुभ वस्तु खान ॥५
मारग मझार गजबाजि भार नर नारिसार कर पूर रहै।
हाट न सवार मणि रतन सार हैरण्यतार द्युति छाय रहै॥
नृपग्रह सवार मणि रतन जार धुज कलश भार वहुरंग रहै।
मणि वृष्टि सार गंधो दधार दुंदुभि अपार रवनाद रहै ॥६

अथ षोडश स्वप्नें माता ने देखे सो वर्णन

दोहा—जिन माता पश्चिम निशा, षोडश स्वप्न निहार।
तिन के नाम बखानिये, जिन आगम अनुसार ॥७

छंद—गयेन्द्र गवेन्द्र मृगेंद्र रमासु गदाभिं नि सेंद दिनेंदवरं।
युग मच्छ द्विकुंभ सरोज सरोवर उर्मिस मुद्र सुपीठ परं॥
गीर्वाणत्रि मान फणेंद्र सुथान सुरत्न अमानाश खेंदझरं।
इम स्वप्न निहार गई भरतार सुनें फलसार अनंद धरं ॥८
विबुधासन कंपित मुकट सुन मृत पुष्प सुगंधित भूमि परे।
इंद्राणी जल्पित पतिकिंचिल न्वित अवधि सचिंतत वचन सरे॥
जिन गर्भ सुशोभित चल मन मोदित पूजत दंपति नृत्य करे।
हियंकरचित हर्षित भेंट समर्पित जय जय करते दिवस धरे ॥९
तब ही श्री ह्री धृति कीर्ति बुद्धि लक्ष्मी आई निज परिवार।
भवन वासिनी बीस व्यंतरी षोडश रविशशि दोय कुमार ॥
द्वादश कल्पतनी शुभ कन्या इम छप्पन आई नृप द्वार।
नमस्कार कर नृप आज्ञा धर गई मातु ढिंग सेवा कार ॥१०
आई भक्ति नियोगन देवी जिन जननी की सेव भजै।
को इक स्नान विलेपन ठानैं को इक सार शृंगार सजै॥
को इक भूषण वसन समर्पै को इक भोजन सिद्धि करै।
को इक देत तोल रमाने को इक शिरलै छत्र धरै ॥११

को इक रतन सिंहासन थापै को इक ढारे चमर खड़े ।
को इक सुंदर सेज बिछावै को इक चापै चरण करे ॥
को इक चंदन सूं घर सींचै सगरे महल सुवास करी ।
को इक आंगन देत बुहारी झारे फूल पराग परी ॥१२
को इक जल क्रीड़ा कर रंजै को इक बहुविधि भेष किये ।
को इक मणि दर्पण कर धारैं को इक ठाड़े षड़ग लिये ॥
को इक काव्य कथा रस पोषैं को इक हास्य विलास ठवै ।
कोई गावैं बीण बजावैं कोई नाचत शीश नवैं ॥१३

दोहा—बहुविधि सेवा करत नित, नवैं मास शुभ वेइ ।
प्रश्न करैं सुर कामिनी, माता उत्तर देइ ॥१

छंद चाल—को तुमसी तिय को जग मैं भटको पंडित को मूर्ख दीन ।
को वैरी को मित्र को नधिक् को पवित्र जग कोन मलीन ॥
कौंन अंध को वधिर पांगुला कौंन मूक को भुज कर हीन ।
को कुरूप को दानी मानी माता उत्तर देत प्रवीन ॥१४

अथ अंतरलापि का लिख्यते

कहा सरस्वती अंध कहो चण भंगुर को है ।
कानन को कहा नाम बहुत सूं कहियत को है ॥
भूपति संग कहा रहै साधु राजै किहि थानक ।
लछिय वर कहा करे कहा करि है सब वानक ॥
श्रेयांस नाथ कीनों कहा सो कीजै भविजन सदा ।
अब अर्थ अन्त यह तंत सुन बीतराग सेवहु सदा ॥१५

कौंन ज्ञान विन आचरण, कौंन देव विनराग ।
कौंन साधु निरग्रंथ हैं, कौंन व्रती जिह त्याग ॥१६
वीतराग कीनौं कहा को चंदा की सैन ।
धाम द्वारका रहत है तारे मुनि शिखि वैन ॥१७
छहो द्रव्य मैं को शिरै, कहा धर्म को मूल ।
मिथ्याती कहिये कहा, जैन कह्यो सुक भूल ॥१८

अथ जन्म कल्याणक के छन्द लिख्यते।

दोहा—माता ही साता कियो, लियो जन्म तीर्थेश।
तीन भुवन चक्रित भए, अमर वृंद अमरेश ॥१६

अहमिंद्रन आसन कंप किये सिंहासन तजि जय जंपि जिये।
भुवि सात पैंड चलि नंपिलिये, जिन शासन मांहि हितंपहिये॥
वरदेव ऋषीश्वर देवन की, सोही विधि है जिनसेवन की।
अहमिंद्र ऋषी निज गेहनमें, उपजावत पुण्य सनेहन में॥ २०
कल्पवासि सौदन मंदिर में, घंटा धन बाजै शुभ्र नाद।
भवनवासि घर शंख बजै घन ज्योतिष देवनिकै हरिनाद॥
व्यंतर देवनके मंदिर मधि, पटहा बजै बिना मरजाद।
अवधि ज्ञान बल जानलियौ जिनजन्म भयो पायो आल्हाद॥ २१
प्रथम इन्द्र की आज्ञा पाकै सर्व देव जन्मोत्सव काज।
हर्ष धारकर शुभ श्रृंगार वर वस्त्राभूषण वाहन साज॥
निज निज सैन्य तैयार शीघ्रकर आये देव महत्तरराज।
देख सैन्य की अद्भुत शोभा यथा योग्य थापी हरिराज॥ २२

अथ भवन वासियों की सैना तथा इन्द्राणी तथा
देवांगनानि का वर्णन लिख्यते।

दोहा—प्रथम भवनवासीन का, वर्णन त्रिविध प्रकार।
कहूँ अबै संक्षेप सूं, जिह विधि ग्रन्थ मझार॥ २३

भवन वासी

असुर नाग सौपर्ण अरु, द्वीप उदधि सुकुमार।
विद्युत् स्तनितरुदिक् अग्नि, अनिल भुवन दशधार॥ २४

इंद्रो के नाम

चमर विरोचन भूतानंद रुधरनानंद वेणुविणदार।
पूर्ण वशिष्ट जल प्रभ जानों जलक्रांति हरषेणहिधार॥
हरिः क्रांति अरु अग्निशिषी अरु अन्यारूढ अमिति-गतिसार।
अमित वाहु घोषरु महाघोषा वेलं जनरुप्रभंजनधार॥ २५

सप्त प्रकार की सेना

दोहा—भैंसा घोड़ा रथ द्विरद, प्यादा अरु गंधर्व ।
नृत्य की सप्तम भेद हैं, असुर सैन्य यह सर्व ॥ २६
नव गरुड़ इभ मच्छ मय, सूरसिंह अरु यान ।
घोटक प्रथम अनीक मैं, सैन्य शेष भुवनान ॥ २७

अथ अलग अलग इंद्र के सैन्या कितनी है सो वर्णन

भैंसा चौंसठि साठ सहस हैं, प्रथम कच्छ असुरेंद्रहि धार ।
तृतिय इंद्र के छप्पन सहस हैं नाम प्रथम कच्छा मैं सार ॥
बांकी के सतरह इंद्रन के, प्रथम कच्छ पच्चास हजार ।
दुगुण दुगुण कर शेस कच्छ में त्रेसठ लाख पचास हजार ॥२८

अथ एक एक जाति की सेन्या कितनी कितनी सो लिख्यते

चमर इंद्र कैं सैन्यजु भैंसा लख इक्यासि ठाइस हजार ।
लाख छहत्तर सहस त्रीस दल वैरोचन भैंसा शुभ सार ॥
लाख इकहतर सहस वार है नौका भूता नंद मझार ।
शेष जु सत्तर इंद्र सैन्य है त्रेसठ लाख पचास हजार ॥ २६

अथ अलग अलग इंद्रो की सेना का समुच्चय जोड लिख्यते

पांच कोड अरु लाख जु अडसठ सहस छसानु सैंना चमरेंद्र ।
कोड पांच सै तीस लाख चालीस सहस वैरोचन इंद्र ॥
चार कोड अरु लख सत्तानवै सहस चौरासी सैन्य तृतींद्र ।
कोड चार चौदा लाख पचास सहस सैन्या शेषेंद्र ॥ ३०

अथ सामानिक अंग रक्षक एक एक इंद्र के कितने कितने सो लिख्यते

दोहा—चमर आदि त्रय इंद्र के, सामानिक तनु रक्ष ।
अठ सोलह का वर्ग कर, चतु सोलह घट कक्ष ॥ ३१
शेष जु सतरह इंद्र के, सहस पचास समान ।
अंग रक्ष विय लक्ष है, आगें सभा वषान ॥ ३२

अथ सभा निवासी एक एक इंद्र के कितने कितने सो वर्णन

चमर इंद्र कें सभा निवासी श्रेष्ट देव नव्वै हजार ।
वैरोचन के सहस चौरासी तिष्टै देव सभा शृंगार ॥

प्रथम इंद्र वा द्वितिय इंद्र के याही विधि कर सभा शुमार।
पंच पंच महादेवि इंद्र के वैक्रिय षट् वा अष्ट हजार ॥ ३३

अथ एक एक इंद्र कै वल्लभा कितनी कितनी सो लिख्यते

चमरत्रिक कै छप्पन सहस तिय वल्लभि का षोडश हज्जार।
धरना नंद पचास सहस तिय वल्लभि का दश सहस विचार॥
सुपर्णेंद्रि चालीस सहसतिय वल्लभि का है चार हजार।
शेष इंद्रतिय सहस बतीसहि दो हजार वल्लभि का सार॥ ३४

व्यंतर देव

द्वितीय भेद व्यंतर देवनिका तिन का वर्णन करूं विचार।
किंनर अरु किं पुरुष महोरग अरु गंधर्व यक्ष निशचार ॥
भूत पिशाच भेद ये वसु विधि इनके अस्सी भेद सम्हार।
आगैं इंद्र समान अंग रक्ष सैन्य सभा देवी विस्तार॥ ३५

इन्द्रों के नाम

किं पुरुषरु किन्नर सत्पुरुषा महा पुरुष महाकाय अतिकाय।
गीत रति अरु गीत यशा है मानभद्र पूरण भद्राय॥
भीम और महाभीम वारमा है सरूप प्रतिरूप बनाय।
काल और महाकाल सोलमां व्यंतरेंद्र यह नाम गिनाय। ३६

व्यंतरेन्द्र की सेना

हय गय रथ भट वृषभ नृत्य की अरु गंधर्व सप्त विधि धार।
प्रथम कच्छ ठाईश सहस की सब लख पैंतिस छपन हजार॥
इक इक इंद्र के दो किरोड़ लख अठ चालिस बावन हज्जार।
सामानिक सुर चार सहस अरु सोलह सहस अंग रक्षक लार॥३७

दोहा—दोय सहस सुर पारिषद, द्वि सहस देवी जान।
दो पट देवी वल्लभा, तीस दोय उर आन॥ ३८

ज्योतिषी देव

इंद्र चंद्र प्रत्येंद्र सूर्यग्रह नक्षत्ररु तारा गण जान।
रवि शशि सोलह सहस देविलै महादेवि चतुलै गुणवान॥

पंच प्रकार ज्योतिषी अगणित निज परिवार विभव निज ठान।
इह प्रकार करिकैं शृंगार सुरचालै निज निज बैठ विमान ॥३९

कल्पवासी देव

चौथा भेद कल्पवासिन का सोलह दिव बारह हरि जान।
ते हरि सैन्य तथा सामानिक वा अंग रक्षक परिकर आन ॥
लोकपाल वा देव पारिषद स्त्री वल्लभ पट देवि महान।
या प्रकार हरि कर शृंगार वर चाले निज निज बैठ विमान ॥४०

बारह इंद्रों की सैन्या सात सात प्रकार

सवैया—इंद्र सेना सात हाथी घोड़े रथ पयादे बैल गंधर्व नृत्य की सात सात प्रकार हैं। आदि चौरासी हजार आगें पट् दूने दूने एक कोड छह लाख अड़सठ हजार है॥ एते गज तेते २ छह भेद सब केते सात कोडि छियालीस लाख निरधार है। सहस छहत्तर तीर्थ एक अवतार देखो पुण्य शोभा ताहि कहते कवि हारे है ॥१

बारह इंद्रों की सेना जिसमे पहली कक्षा कितनी जिसका व्योरा वर्णन

दोहा चौरासी अस्सी सहस, बहतर सतर साठ।
अरू पचास चालीस सहस तीस बीस कर पाठ ॥ ४२

अथ सर्व इंद्रों के एक एक जाति की सेना कितनी कितनी जिसका अलग अलग जोड़ लिख्यते

रंग रंग की सैन्य सजाकर सर्व इंद्र चाले हरषाय।
प्रथम इंद्रगज एक कोडि छह लाख सहस अडसठ सजवाय ॥
हाथी घोड़ा वृषभ पयादा रथ गंधर्व नटी नृत्पाय।
याही विधि कर सप्त सैन्य को प्रथम इंद्र तैयार कराय ॥ ४३
द्वितीय इंद्र के एक कोड़ इक लक्ष साठ हजार गजेंद्र।
लाख इक्यावन सहस चवालिस सनत्कुमार तृतीय अमरेंद्र ॥
लाख अट्ठासी नवै सहस गज योही सप्त सैन्य माहेंद्र।
लाख छहतर सहस बीस गज लेकर चाले ब्रह्म सुरेंद्र ॥ ४४

त्रेसठ लाख पचास सहस गज लेकर लांत वेंद्र उमगाय।
लाख पचास सहस अस्सी गज शुक्र इंद्र तैयार कराय॥
अड़तिस लाख सहस दश गज सजि सतारेंद्र चाले हरषाय।
लख पच्चीस चालीस सहस गज सप्तम अष्टम जुगलसिधाय ॥४५

अथ सर्व इंद्रों की अलग अलग सेना का समुच्चय जोड़

सवैया—कोड सात छयालीस लाख छहत्तर हजार भाष सात कोड ग्यारह लाख सहस त्रीस आनिये। कोड षट् चालीस लाख सहस आठ ऊपर भाष कोड षट् बाईस लाख सहसतीस आनिये॥ कोड पांच लष तेतीस चालिस सहस धरो सीस कोड चतु चौदाह लाख लक्ष अर्द्ध ठानिये। कोड त्रिक पचास पांच लाख साठ सहस वांच दो करोड़ छयासठ लाख सत्तर सहस आनिये॥ ४६

दोहा—एक कोड सतहत्तरं, लाख असी हज्जार।
भिन्न भिन्न सब इंद्र की, सैन्या कही विचार॥ ४७

एक एक इंद्रके सामानिक सुर

दोहा—चौरासी अस्सी सहस, बहत्तर सत्तर साठ।
अरु पचास चालिस सहस, तीस बीस कर पाठ॥ ४८
ये सामानिक देव है, विभव इन्द्र सम जान।
इक इक इन्द्र के जांनिये, अनुक्रम कर मन आंन॥ ४९

अंग रक्षक देव एक एक इन्द्र के कितने कितने तिनका ब्यौरा

तीन लाख छत्तीस सहस अरु तीन लाख अरु बीस सहार।
दो लख अट्ठासी जु सहस है दोय लाख अस्सी जु हजार॥
दोय लाख चालीस सहस अरु दो लख इकलख साठ हजार।
एक लाख अरु बीस सहस अरु चार स्वर्ग अस्सी हजार॥ ५०

सभादेव इक इक इन्द्र के लार कितने कितने तिनका वर्णन

प्रथम इन्द्र के देव पारिषद तीन सभा चौरासि हजार।
द्वितिय इन्द्र के सत्तर सहस सुर छपन सहससुर सनत्कुमार॥

सहस बयालिस अरु अट्ठाइस चौदह सात आठ हजार ।
सतरह सै पचास शक्रचतु इक इक्के सुरसभा शृंगार ॥ ५१

भवन व्यंतर कल्पवासीनिकी सेन्या का समुच्चय जोड

कोड चवालिस लाख अठाणवै चौतिस सहस सैन्यादेव इन्द्र ।
कोड इक्यानवै लाख जु छप्पन सत्तर सहस सैन्य भुवनेंद्र ॥
उनतालीम कोड लख व्यासी सहस वहत्तर व्यंत्तर इन्द्र ।
सतक छहत्तर कोडि लाख सैतीस छहत्तर सर्वसुरेन्द्र ॥ ५२

चार प्रकार के सव देव कितने आये सो लिख्यते

बारह कोडाकोडि लाख पचास कोडि अद्धापल्ल काल ।
जितने समय होय तितने सुर आये पहले स्वर्ग खुस्याल ॥
श्रेणीवद्ध विमान ठारमो तहाँ इकतीस सम पटल सम्हाल ।
तहां स्थान सौधर्म इन्द्रका देख देव आश्चर्य विशाल ॥ ५३

अथ कौन कौन सवारी पर इन्द्र चढ़िके चले तिन्हें लिख्यते

प्रथम इन्द्र आरूढ़ होय गजद्वितिय इन्द्रवाजी असवार ।
तृतिय इन्द्र आरूढ़ सिंह पर चौथो इन्द्र वृषभ पर सार ॥
ब्रह्म इन्द्र चढ़ि सारस ऊपर ब्रह्मोत्तर पिक्र चढ़ तैयार ।
लांतव इन्द्र मराल पीठ पर अरुकापिष्ठ कोक चढ़ लार ॥ ५४
शुक्र गरुड महाशुक्रमत्स पर सारंग ऊपर इन्द्र सत्तार ।
सहश्रार आरूढ़ कमल पर सुमन माल ऊपर हरि चार ॥
मुकट आदि भूषण भूषित सज वहुविधिक्रिय शृंगार अपार ।
इन्द्राणी पटदेवि वल्लभा स्त्री हरिके संग चलन तैयार ॥ ५५

ऐरावत हस्ती की शोभा

योजन लक्ष रच्यौ ऐरावत वदन एकशो वसुर दधार ।
दंत दंत प्रति एक सरोवर सर सर प्रति पद्मनि सतसार ॥
पद्मनिपम पचीस विराजै दलराजै वसुशत अविकार ।
कोड़ि सत्ताइस दलदल ऊपर नटैं अप्सरा नचैं अपार ॥ ५६

हाव भाव विभ्रम विलासकर खरजऋषभ गावैं गंधार।
सुरनिषादमध्यम अरुधैवत पंचमस्वर गावैं उच्चार॥
भेद स्वर उनंचास कोडि के छप्पन कोडताल विस्तार।
साढ़े बारह कोडजाति वादित्र बजै जिनगुण प्रस्तार॥ ५७

अथ वाजों के नाम थपके वाजे

ढोल नगारा ढोलक ढफ डमरू डुगडुगी मृदंग।
तबला तासे मुरज तोमड़ी घड़ा खंजरी चौकी चंग॥
नौवत ढाँक पौमवई दौरा खोल दायरा उदकई सिंग।
गिडकट्टी संतूर गोथलम खोल तुमक नारी वाद्यंग॥ ५८

फूक के वाजे

भेरी मुंज मुरलि अलगोजा तुरही भेरि शख.मुहचंग।
सिंगी नादन फीरी मुहवर सैनाई भोपूरन सिंग.॥ ५९
नैरीवैण कमल मैगविन कर्ण नगसरम सुरनाश्रृंग।
पुंगीरवरी शाखाथूर्था गोमुख पंचम सरलाशुंग॥ ६०

तार के वाजे

नादेश्वरी शौक्ति की वीणा महती रुद्रा सुरश्रृंगार।
प्रासारिणी तृतंत्रिकि नारीस्वर वीणा आनन्द लहार॥
तरवदार कानून कमाची गोपी यंत्ररीद चौतार।
सारिंदी सुरसंग अलाबू सुखहारमीना दोतार॥
वीनसरोद वाव तंतूरा चिकारा कच्छप इक तार।
नसतरंग करवाव सारंगी मंडलि कुंडलि अरुषट्तार॥
विजयघंट अरु जलतरंग घड़ियाल झांझ झालर करतार।
घंटा घुघुरू और मजीरा चदरखदंडा अरगन तार॥

दोहा- यह सोभाकर चले हरि, नगरी पहुँचे आय।
पुरी प्रदच्छण देयत्रय, राजद्वार तिष्ठाय॥ ६०
फेरशचीसूँ कहहिं हरि, जाहु प्रसव आगार।
विनय नमनकर मातुसुत, लाहुतीर्थ अवतार॥ ६१

छंद चाल--यों शची जायसुत मात नाय निद्रादिलाय शिशु गोद लिये।
हर्ष न समाय पति निकट लाइ हरिकर फैलाय अतिमोद हिये ॥
चक्षुसहस थाय गजपर चढ़ाय सुरगिरि सिधाय शिलपांडु ठये।
कलशनभराय क्षीरोदलाय सुरकर ढराय चरणोदछिये ॥६२
फिरकर शृंगार शचि वस्त्रधार भूषणसम्हार आनंदधरं।
करि नमस्कार फिर स्तुति उचार लै गोदधार गजशीशधरं ॥
जयजय उचारि फिर कर विहार आ राज्यद्वार नृपदेय करं।
मेरापचार कहि कलश ढार नृप भेंटधार नट रूपधरं ॥ ६३

इन्द्रोंने नाटक आरम्भ किया

प्रथम इन्द्र पुष्पांजुलिदे पीतांडवनाम नृत्य आरंभ।
नट स्वरूप धरकर शृंगार वररंग भूमि मंगल प्रारंभ ॥
तालमान संगत वेदधुनि कियो नृत्य जग करन अचंभ।
सहस भुजा करचरण चपल धर बहुस्वरूप भरहोनिर्दंभ ॥ ६४
छिन इक रूप छिन वहुस्वरूप छिन सूक्ष्म थूल दैदीप्यमान।
छिन निकट आय छिन दूर आय छिन नभसमाहि छिनभूमि आन ॥
छिन चंद्रस्पर्श छिन सूर्यस्पर्श यों इन्द्रजालवत् क्रियाठांन।
वाजे बजायहरि रागगाइ उगलिनि नचाय अपछरसुआंन ॥ ६५

अथ कौन कौन से राग इन्द्र ने गाये तिनके नाम लिख्यते

भैरव बंगाली वैरारी माध्वी सैंधव नट कल्याण।
टोड़ी गौरी खंभावत अरु मालकोस पट मंजरिजान ॥
रामकली गुनकली बिलावल ललित हिंडोलकान रोमान।
केदारा कामोदध नासिरदीपक देशीमारू तान ॥ ६६
आशावरी और भूपाली गुर्जरि सोरठ विहँग मल्हार।
जैतश्री सारंग वसंतरु मोहनि और विभास उचार ॥
ताल मूर्छना सहित वक्त के गाये राग अनेक प्रकार।
जिन रागों सूं पत्थर पिघले वृक्ष फलित हो सरवर वारि ॥ ६७

दोहा---इहविधि तांडव नृत्य करि, पूज मात पितु नाय।
भेंट किए वस्त्राभरण, स्वर्गलोकतैं ल्याय ॥ ६८

फिर सेवा के निमित हरि, राखे देवकुमार।
बालक क्रीड़ा स्वामि संग, शुक पिक गज वन धार ॥ ६९

प्रभू की बाल लीला

देवन संग रमैं प्रभु अथवा गोष्ठी पंडित संग कराहि।
अलंकार साहित्य कोष व्याकरण काव्य श्रुत न्याय पढ़ाहि॥
देखे कौतुक मल्लयुद्ध वा नाट्य गीतवादित्र सु नांहि।
हंस सुवागजसूँ प्रभु खेलैं चौदह विद्या कला सिखाँहि॥
मुलकन हँसन रुदन मचलन प्रभु उदर चलन अंगुष्ट चुखांहि।
गुडकन डिगन गिरन पग रगडन स्खलित चलन झूला झूलाहिं॥
घुटन चलन शयनासन रंजन मात पिता शचि गोद खिलाहिं।
यों बालक लीला करि स्वामी पूर्णचंद्र मुख रूप धराहिं ॥७०

स्वामी देवकुमार संग खेले हैं वा कौतुक देखे हैं अथवा पंडितों के संग गोष्ठी करे हैं सो वर्णन

देवन संग रमैं प्रभु अथवा गोष्ठी पंडित संग कराहि।
अलंकार साहित्य कोष व्याकर्ण काय श्रुत न्याय पढ़ाहि॥
देखैं कौतुक मल्ल युद्ध वा नाट्य गीत वादित्र सुनाहि।
हंस सुवा गज सूं प्रभु खेलैं चौदह विद्या कला सिखांहि॥ ७१

स्वामी ने पितु आज्ञा पालन विवाह किया। और राज्य किया और स्वामी ने देश नगर वा राजा थापे अर राजाओं कूं तथा प्रजा को राजनीति हित शिक्षा दीनी सो वर्णन॥

पितु आज्ञा उरधार प्रभू ने कर विवाह किया शुभराज।
दिया इंद्र को हुक्म प्रभू ने थाप्यौ देश नगर अरु राज॥
राजनीति शिक्षा दी प्रभु ने पालो प्रजाधर्म हित काज।
देउ प्रजा कों हित की शिक्षा वह दे आशीर्वाद समाज॥ ७२

राजाओं का मुख्य धर्म है प्रजा पालना नीत्यनुसार ।
कर पीडन वाग्दंड दुष्टता मृग या मृषा द्यूत मत धार ॥
षट् गुण सप्त अंग चतु विद्या धारहु छोडो षट् वर्गार ।
स्थापो विद्या औषधशाला दीन पथिक गृह गली बाजार ॥७३

इह विधि शिक्षा नृपन कौ, दीनी बहु विस्तार ।
फेर प्रजा वा भृत्य नृप, दी हित शिक्षा सार ॥ ७४

प्रजा की शिक्षा

दीनी शिक्षा प्रभू प्रजा को राज्ञानुसार प्रवर्त करवाय ।
हिंसा चोरी झूंठरु चुगली ईर्षा कपट दुष्ट अन्याय ॥
वेश्या द्यूत मद्य मृगया मद छोड़ो लोभरु क्रोध कषाय ।
पालो मात पिता गुरू आज्ञा षट् विधि कर आजीव कराय ॥७५

अथ प्रजा पालक राजा लोगों मे कैसे गुण चाहिये जिस कर प्रजा को सुख होय और राजा की कीर्ति होय

बुद्धिवान धृतिमान दंडवित् शूरवीर वहु श्रुत मर्मज्ञ ।
ज्ञानवान बलवान जितेंद्रिय तेजस्वी कोमल धर्मज्ञ ॥
सावधान श्रुतवान दक्षता क्षमाशील निर्लोभ कृतज्ञ ।
दयावान कुलवान जितेंद्रिय सत्संगी हित वच तत्वज्ञ ॥७६
रहित प्रमाद प्रजा का पालन सेन्या संग्रह नीति विचार ।
सत्य वाक् प्रियदर्शी दाता मुख प्रसन्न इंगित आकार ॥
पुरुषार्थी कल्याण ग्राही सरल चित इतिहास प्रचार ।
साम दाम अरु दंड भेद गुण तब कुछ न्याय करे हितकार ॥७७

अथ दुष्ट राजाओं के लक्षण जिन कर प्रजा क्लेश तथा दुःख को प्राप्त होय सो वर्णन

दुष्ट स्वभावी पापी क्रोधी नीच अधर्मी बुद्धि विहीन ।
अन्याई निंदक अरु हिंसक मूर्ख कृतघ्नी विद्या हीन ॥
मृग या मृषा मद्य पी ज्वारी कपटी कृपण अक्ष आधीन ।
लोभी कामी शठ निर्दयता स्वजन विरोधी न्याय विहीन ॥७८

अविवेकी मानी स्त्री लपट हठी प्रमादी अरु वाचाल।
कटुभाषी निष्ठुर गुरुद्रोही स्वेच्छाचारी दुर्जन पाल॥
कर पीडन वाग्दंड दुष्टता रिस्पत लेन वचन जिम ज्वाल।
प्रजा पीडना ये अवगुण हैं दुष्ट नृपति के कहे कराल॥७६

राजा ही में से धर्म कर्म का मार्ग चलता है सो वर्णन लिख्यते

राजा विना अनीति प्रजा में होय कुधर्म पाप विस्तार।
हिंसक झूंठ कुशीली ज्वारी चोरों का होवे अधिकार॥
स्त्री सुत अनधन आभूषण कों छीने सबल निबल को मार।
देते दुःख क्लेश वध बंधन मचे जगत में हाहाकार॥८०
राजा विन धनवान गुणीजन वेद शास्त्र के जानन हार।
मात पिता वा गुरु की भक्ति नहिं होते वाणिज व्यौपार॥
दानरु विद्या औषधशाला मंगल कार्य विवाह प्रचार।
राजा विन सुख होय न जग में विना राज जग दुख दातार॥८१

छन्द – सुर समूह वर दोज चंद्रकर वृद्ध तरुण भरकर शृंगार।
पितु विनती पर व्याह हृदय धर राज्य कुमरि व्याही सुखकार॥
फेर राज्य कर प्रजा हेत धरदे शिक्षावर सुख विस्तार।
भोग मग्नतर आयु अल्पकर सुरी नृत्य पर प्रभू विचार॥ ८२

वैराग्य का कारण

दोहा—यह देवी नालांजना, देखत गई पलाय।
त्योंही यह सुख संपदा, क्षणक मांहि नशि जाय॥ ८३
यह जग अथिर असार है, महा दुक्ख की खांन।
यामें राचें ते दुखी, विरले तिन सुख जांन॥ ८४

बारह भावना विचार

देखत देखत विलय जात जग तन धन यौवन पितु सुतनारि।
राज भोग आज्ञा बल वाहन ग्रहलक्ष्मी प्रीती परिवार॥
इन्द्रधनुप जल वुदवुद बादल बिजुली वत यह जगत असार।
तातैं यह जग अथिर जानिकैं धरूँ चित्त वैराग्य विचार॥ ८५

अदर्शन भावना

या जगमें जमराज ग्रसित जिय तव रक्षक कोइ नहिं त्रियकाल।
इन्द्र अहेंद्र नरेंद्र खगेंद्ररु भूतयोगिनी क्षेत्तरपाल॥
औपध मंत्र तंत्र ग्रह पृथ्वी छांड जाहु ऊरध पाताल।
तो भी काल पवन नहिं वचते तातैं जिनमणि दीप उजाल॥ ८६

संसार भावना

छंद—या संसार क्षार सागर मैं यह जियभ्रमत चतुर्गति मांहि।
तथा पंच परवर्तन मैं जिय भ्रम्यौ अनंतकाल दुख पांहि॥
सरसों सम सुख हैतु मेरु समदुःख को नहिं पार लहांहि।
तातैं या जग के मग सूं मैं निकलूंगो अव मिथ्या नांहि॥ ८७

एकत्व भावना

यह जिय स्वर्ग नर्क के मांही एकहि सुखदुख सहे त्रिकाल।
तहॉ सहाई कोइ नहीं है मात पिता त्रिय भाई वाल॥
यह कुटंव भोजन के अर्थी तेरे दुख को सकैं न टाल।
रोग शोक वा जन्म मरण मैं तू ही भोगे दुक्ख विशाल॥ ८८

अन्यत्व भावना

छंद — क्षीर नीरकूं राजहंस विन भिन्न भिन्न को करै वनाय।
त्योंही ज्ञानीविन भिन्न करै को जड जियमिलै सदां के आय॥
मिले एक से दीसै तन जिय तेभी अन्य अन्य हो जाय।
तो स्त्री सुत पितु मात राज्य धन यह तो प्रत्यक्ष अन्य लखाय॥८६
नर भव मैं इतनी माता को तेनें कियो दुग्ध को पांन।
इक भव इक इक वूंद जोडते तो भरते वहु उदधि महांन॥
अथवा तुझकों इतनी माता रोई आंसू नीर वहांन।
भवभव की इक वूंद का लेखा जो करते भरते सर स्वांन॥ ९०

अशुचि भावना

यह शरीर मातंगगेह सम मास रुधिर मल मूत्र भंडार।
याके स्पर्श होत ही भोजन गंध वस्त्र माला लंकार॥

महा अपावन होत वस्तु सब पांव धरें तहां दूम प्रजार ।
ज्यों कोयला को तीर्थ उदधिजल उज्जल होत न करो विचार ॥६१

आश्रव भावना

छिद्र सहित तरनी जल डूबै त्यों आश्रव जल जीव डुबाय ।
ते आश्रव सत्तावन जानो मिथ्या अविरत योग कषाय ॥
इनही करकैं अष्ट कर्म मल उपजै नाना भेद बनाय ।
तिनहीं कर दुख पावैं जिय जग तातैं आश्रव हेय बताय ॥ ६२

संवर भावना

कर्म्माश्रव द्वारन कौं रोकैं ताके संवर होत विख्यात ।
गुप्त समिति चारित्र परीषह अनु प्रेक्षा दशधर्म ग्रहात ॥
इन कर वसुविधि कर्म न आवै ज्यों जल नाव छिद्रनैंपात ।
तातैं जे जिय संवर धारैं तिनके अष्ट कर्म नसि जात ॥ ६३

निर्जरा भावना

जो ज्ञानी वैराग्य भाव धर मद निदान छोड़े तप धार ।
तिनकैं होय अविपाक निर्ज्जरा चतुगति के दुखसूँ जु उवार ॥
जो अज्ञानी रागद्वेष कर बांधे कर्म पूर्व फल भार ।
उदय काल रस देय निर्जरै सो सविपाकी चतु गति धार ॥६४

लोक भावना

मध्य अलोका काश क्षेत्र के लोकाकाश जु पुरुषा कार ।
कोई कर्ता हर्ता धर्ता नहीं स्वयं सिद्धि है वाता धार ॥
चौड़ाई मोटाई ऊंचाई घनाकार डोरी विस्तार ।
तामैं तीन लोक षट् द्रव्यरु जीव स्थान अनेक प्रकार ॥६५

बोध दुर्लभ भावना

जीव अनादि निगोद वास मैं बस्यो अनंत काल दुख मांहि ।
कठिननिक स्थावरतन पायो काल असंख्य तहां दुख पांहि ॥
कठिन विकलत्रय पशु पंचेद्रिय पर्याप्त संज्ञी भव आहि ।
कठिन कर्मभू आय मनुषगति उत्तम कुल आयू पूर्णाहि ॥६६

इंद्री पूर्णरु रोग रहित तन धन आजीवन कठिन लहांहि।
खान पान स्वाधीन सुबुद्धि चिंता रहित कठिन वृष चाहि॥
रहित प्रमाद कठिन वृप श्रवणहि धारन शक्ति महा कठिनाहि।
यों चौरासी लाख योनि में है जिय दुर्लभ बोध लहांहि॥९७

सुलभ जगत में राज संपदा वल वाहन आज्ञा अधिकार।
पुत्र कलित्र भोग सुख संपति विद्या विभव रुद्धि परिवार॥
बोध रतन दुर्लभ या जग में याको उद्यम करो सम्हार।
याविन यह सब सुख सामग्री केलि थंभ वत है जु असार॥९८

धर्म भावना

वस्तु स्वभाव धर्म दश लक्षण वा रतनत्रय जीव दया।
याही कों उरधार भव्य जिय स्वर्ग मोक्ष का मार्ग लया॥
याही कर सुरतरु चिंतामणि पारस धेनु अर्हेंद्र भया।
इंद्र खगेंद्र नरेंद्र भोगभू रुद्धि विक्रिया अवधि लया॥९९

पुत्र कलित्र मित्र सुख संपति राज्य भोग ऐश्वर्य सुधाम।
यश सौभाग्य जीविका जीवन गेह पदस्थ सुकर धन नाम॥
याही वृप कर अरी मित्र होय विप अमृत अहि सुमन सुदाम।
जल थल अनल वारिहरि मृग होय द्विप अजहोय अरण्य सुराम१००

लोकांतिक देव

दोहा—इहविधि बारह भावना, गाई प्रभू विचार।
तत्क्षिण लौकांतिक सुरा, आए जिन आगार॥१०१

देव ऋपीश्वर पुष्पांजलि धर जै जै कर भुवि मस्तक धार।
चतु लख सप्त सहस वसु शत मिल आये जिन वैराग्य विचार॥
सुरविनती कर हे जिनवर धर पंच महाव्रत कर्म संहार।
धर्मा मृत कर जगत ताप हरता कर जीव लहै भवपार॥१०२
थर हर कंपी मोह सैन्य अव आज बढ़्यो शिवरमणि शृंगार।
आजहि स्वर्ग मोक्ष मग दीख्यो ताकर जग जन सुख विस्तार॥

स्वयं बुद्ध तुम हो जिन स्वामी हम नियोग यह औसर सार ।
तातैं विनती करहिं नाथ हम तुम सूरज को दीप उजार ॥१०३

दोहा—यों स्तुति कर लौकांति सुर, गये आपनें स्थान ।
तब ही चतु इंद्रादि सुर, पूर्व रीति पर आन ।१०४

छंद – चार प्रकार देव सब आये अरु विद्या धर राजकुमार ।
क्षीरोदधि अभिषेक ठानि कैं पहिराये वस्त्रालंकार ॥
फेर पालकी स्थापि प्रभू को सुर विद्या धर कांधे धार ।
इह औसर प्रभु सो है इम जिम मोक्ष वधू के वर गुण सार ॥१०५

दोहा—इह अवसर तिया मात सुत, पिता स्वजन परवार ।
सजल नेत्र प्रभु देख कैं, संबोधे नर नार ॥१०६

संबोधन

छन्द—सुन मात तात सुत दारा, भ्राता भगिनी परिवारा ।
यह चतुगति दुःख अपारा, या मैं सुख नांहि लगारा ॥१०७
यह राज्य भोग धन धामा, पितु मात भ्रात सुत वामा ।
जल बुद बुद संपा सम है, बुध जन इन मैं नहिं रम हैं ॥१०८
मैं इंद्रासन सुख पाया, नहि तृप्ति हुई मुझकाया ।
कहां सुख मानुष गति मांही, तृण जल सूं प्यासन जाही ॥१०९
जिय नर्क पशू दुख पावैं, तहाँ परिजन काम न आवैं ।
जहाँ मारन ताडन छेदन, क्षुत्रदशो तोष्णहि वेदन ॥ १०
मानुष भव दुःख जु कष्टं, जिय भोगे इष्ट अनिष्टं ।
धन हीन तिया सुत मर्णं आजीवन तन धन हर्णं ॥ ११
यह दुःख मूल संसारा, आलय सकला पद धारा ।
तातैं जिन वृषलहि शरणं, फेर न हो जन्मरू मरणं ॥ १२
तुमहू जिन वृष उर धारो, सब जिय सूँ क्षमा विचारो ।
यह विधि संबोधन कीना, फिर आतम रस चित दीना ॥ १३

छंद—इहविधि प्रभु संबोधन करकै शिवका चढ़ि पहुँचै वनथान ।

शांति भयो कोलाहल जबही साम्यभाव स्वामी उर आन ॥
वस्त्राभूषण त्याग सिद्ध नमि उदासीन उत्तर मुख ठान ।
पंचमुष्टि कच लौंच महाव्रत धरी दिगंबर मुद्रा ध्यांन ॥ १४

वन शोभा

सहकार श्रीफल ताड केला लवंग जाती कटहरं ।
खजूर पिंड खजूर पुंजी तूत एला वटहरं ॥
जंबू छुहारे विल्व कुचला नीम पीपल अटहरं ।
देवं दारू कदंव चंदन आल अर्जुन गूगरं ॥ १५
बादाम खिरनी सहजना अंकोल इमली मद फरं ।
तालीस गोंदी सिर सधात्री कैंथ चर्वस पाकरं ॥
लकुच पीलू तेंदु रीठा वैंत पर्नस छोंकरं ।
किरमाल स्वर्ण तमाल शालरु निर्मली रुद्राचरं ॥ १६
दाडिम नारंगी अरु विजोरा आम्र निंबु सदा फलं ।
करना जंभीर चकोतरा अरु राम फल वदरी फलं ॥
पुन्नाग हींग हिंगोट पाटल भूर्जव कुलरू नागरं ।
राज पूर अशोक नाग इत्यादि वृक्ष वनं भरं ॥ १७
अखरोट किर्कल नाग वल्ली सल्लि की गिर कर्णिका ।
वीज पूर फलास उपन समागधीं मधु पर्णिका ॥
सालूरध वकनवीर वकल रूसिसडंवर राइणा ।
सागोन हरडै आमला अरु वृक्ष चंदन वारणा ॥ १८
जिहि वनमैं मृग बंदर शूकर शैला रोझ गवय मृगराज ।
महिष भेड़िया गज गेंडा गौरीच शृंगाल इत्यादि समाज ॥
चक्रवाक जल कुक्कुट सारस हंस प्लव कारंड विराज ।
पिक शुक केकी नीलकंठ वटश्येन श्यामा करहिं अवाज ॥ १६

दोहा—तत्र सुरेश जिनकेश शुचि, क्षीर समुद संकल्प ।
तप कल्याणक साधि सुर, गये जु निज निजकल्प ॥ २०

प्रभु का आहार राज्य घर फिर वन में शुक्ल ध्यान कर केवलज्ञान होना

छंद----प्रभु योग धार तन तिथिविचार फिरकर विहार आराज्यधरं।
नृप भक्तिभार श्रद्धादिधार दे असनसार बहु पुन्यभरं॥
सुर रतनधार वर्षे अपार अतिशय निहार जन हर्ष धरं।
प्रभुवन मझार असिध्यांन धार द्वादश प्रकार तप वृद्धिकरं॥२१
तपचुरधर धर्मध्यांन कर गुण स्थान चढ़ि श्रेणिधरं।
द्वितिय शुक्ल आरूढ़ होय कर त्रेसठ प्रकृति नाशकरं॥
तब ही केवलज्ञान भयो जिन लोकालोक प्रकाश करं।
ततछिन चतुसुर आसन कंपे श्री जिन दश अतिशय जुधरं॥ २२
इंद्र हुकुमतैं धनद देव रचि समवशरण सोभा विस्तार।
ताहि कथन को या जगमैं जन कोई नहीं कवि है गुणधार॥
द्वादश सभामध्य जिनतिष्टै चौदह अतिशय देवनकार।
तहां पूजन स्तुति कर सुरनर मुनि बैठे निजनिज सभा मझार॥२३

इन्द्र स्तुति

नमामि भक्ति तारणं, भवाब्धि पार कारणं।
जगत्रय उचारणं हे कृपा व तारणं॥ २४
हे परोप कारणं, गुणाधि नाहि पारणं।
ध्यान खड्ग धारणं, काम वीर मारणं॥ २५
सर्व दुःख हारणं, मदादि दोष टारणं।
घातिया संहारणं, दशाष्ट दोष जारणं॥ २६
केवल प्रकाशनं, लोका लोक भाषनं।
मोह शत्रु नाशनं, सिंह पीठ आसनं॥ २७
महान रूप सुंदरं, नमस्कृतं पुरंदरं।
सर्व दुःख मंदिरं, धर्म्म के धुरंधरं॥ २८
हे जिनेशत्वं गिरं, मोह तम दिवा परं।
सर्व विद्य सागरं, मोक्ष मार्ग नागरं॥ २९

गणधर प्रश्न

दोहा – तब गणराज प्रणाम कर, विनय पूर्व कर जोर।
भो स्वामी मिथ्या तिमिर, छायो त्रिभुवन घोर॥ ३०
श्री मुख वाणी दीप विन, तहां उद्योत न होय।
तातैं हे करुणा निधी, वच मणि दीप उजोय॥ ३१
साठ हजार प्रश्न गणधर ने कीने विनय पूर्व जिनराय।
कौन ज्ञेय को हेय उपादेय कहा आलोक लोक पनकाय॥
कौंन द्रव्य को तत्व पदारथ कौंन काल त्रयगुण परजाय।
वीस प्ररूपण गुण स्थान कुल जाति मार्गणा भाव बताय॥ ३२
गिरा निरचर तालु होट विन खिरी हरण जगपीर महान।
गणधर गूंथी द्वादशांग मय इकसो वारह कोड प्रमान॥
लाख तिरासी सहस अठावन ऊपर पांच पदन को जान।
सो निर्मल जग किरन विस्तरी तारक भव्य लहै निर्वाण॥ ३३

स्वामी ने अनेक देशों मे विहार किया तिनके नाम वर्णनं

अंगे वंगे कलिंगे मगध जन पदे सिंधु देशे विराटे।
कर्णाटे को कनाख्ये कुरु वर गहनेभाट राष्ट्रे सयामे॥
काश्मीररे लाउ गौडेंगि खर गहने मेद पाठे सुदेशे।
गुजराते माल वाख्ये विहरदिति महा वोध हे तुं जनानां॥ ३४
इहविधि दिव्यध्वनि करकै प्रभु उपदेशे बहु जीव अयान।
वहु देशन में प्रकृति पिच्यासी नाशि समय पयश्रकलान॥
फिर अजोग पद पंच लघुत्तर तहाँ चतुर्थ शुक्ल कर ध्यांन।
दोय समय मैं प्रकृति पिच्यासी नाशि समय पहुँचै निर्वाण॥ ३५

मोक्ष कल्याणक

तबही चतु इन्द्रादिक सुरगण आये जिन निर्वाण कल्याण।
शिविका थापि पवित्र प्रभूतन द्रव्य सुगंध अगर घन आंन॥
अग्निकुमार मुकट तैं अग्नि प्रगटी जिन तन भस्म करान।

सो भस्मी इंद्रादिक सुरगण कंठ हृदय मस्तक जु लगान ॥ ३६

दोहा—इह विधि इन्द्रादिक सुरा, कर पंचम कल्याण।
महा पुन्य उपजाय फुनि, गए जु निज निज थान ॥ ३७

छंद—इस प्रकार अरहंत भक्ति कूं जो ग्रहस्थ ध्यावैं त्रयकाल।
सो निश्चय अर होय सत इंद्र पूज्य होय बहु गुणमाल॥
दे उपदेश भव्य जीवनकौं तारे तिरैं जगत जंजाल।
तातैं निज परसूं यह विनती करो शीघ्र जिनभक्ति विशाल ॥ ३८

इति अरहन्त भक्ति भावना संपूर्णम्॥

कवि लघुता

त्रिभंगी छंद---यह पंच कल्याणं जिन गुणगानं, धर्म सुध्यानं जानहिये।
या कर दुख हानं सुख उपजानं, शास्त्र प्रमाणं हृदय हिये॥
कहुँ चूक सुजानं हे बुधवानं, शुद्ध करानं सोच हिये।
मैं तुच्छ जु ज्ञानं शास्त्र महानं, कहा बखानं मौनलिये ॥ ३६

आचार्य भक्ति भावना ग्यारह

गुण छत्तीस धारक आचारज दिक्षा शिक्षा निपुण महांन।
स्यादवाद विद्या गुण मंडित प्रायश्चित्त देन बुधवांन॥
मुख्य अष्ट गुण मंडित इनविन आचारज पदणै सोभान।
गुरुशिक्षा कर संघ मान्यवर तिनकी बहुविधि भक्ति करान ॥४०
रागद्वेष रहित रत्नत्रय पराक्रमी वात्सल्य गंभीर।
चिर दीक्षित व्यवहार शांतिचित संघ विख्यात प्रतापरु धीर॥
गुरु कुल सेवित शास्त्र ज्ञाता अरु उपसर्ग जीत बलवीर।
विषय विरक्त परीषह जीतत प्रभावान निस्नेह शरीर ॥ ४१
चतु अनुयोग मूल उत्तर गुण परमारथ के जानन हार।
मंद कषाय होय दीरघ कुल दयावांन विद्या भंडार॥
शमी दमी उपसमी अष्टगुण धारक शील बनती चार।
देश काल के ज्ञाता दीरघ शोची संघ करन उपकार ॥ ४२

ज्यों खेवटिया सर्व उपद्रव टाल नाव को पार लगाय।
त्यौं आचारजं सर्व संघ कौं पार करैं वहु विघ्न वचाय॥
आचारवान आधारवान व्यवहार प्रकर्त्ता पायो पाय।
अव पीडक अरु अपरि श्रावीनीर्यापक वसु गुण सुध भाय॥ ४३

वहुश्रुति १२ भावना

स्यादवाद विद्याकर मंडित अंग पूर्व धारक श्रुत ज्ञान।
तिनकी सेवा विनय भक्तिकर पार होत श्रुत उदधि महान॥
ते उवझाय अंग द्वादशकौ पढ़े पढ़ावैं नय परमान।
परहित न सदैव उद्यमी चतु अनुयोग करहि व्याख्यान॥ ४४
सोलह सौ चौंतीस क्रिरोडहि लाख तिरासी सात हजार।
शतक आठ ऊपर अट्ठासी इक पद के अक्षर जु विचार॥
श्लोक अढ़ाइसै लिखैं जु प्रतिदिन तौ संवत्सर पांचहजार।
छसै छहत्तर वर्ष मास पन दिन साडे अट्ठाइस धार॥ ४५
द्वादशांग की संख्या वरणूं इकसो वारह कोडि विचार।
लाख तिरासी सहस अठावन ऊपर पाँच पदनकौं धार॥
आठ कोड इकलख वसु सहसरु सतक पिचहत्तर अक्षर सार।
रचै जु अक्षर वने प्रकीणक चौदह भेद सर्व विस्तार॥ ४६
ग्यारह अंग पूर्व चौदह शुभ पण परिक्रर्म सूत्र इक धार।
इक प्रथमानुयोग पण चूलिक अरु चौदह प्रकीर्णक सार॥
अपुनरुक्तये अक्षर जानो एक घाटि इकठी विस्तार।
इन अंगन को सदा चिंतवन सो वहुश्रति भक्ति निरधार॥ ४७

ग्यारह अंग

आचारांगरु सूत्र कृतांगरु स्थान अंगरु समवायांग।
व्याख्या प्रगपति ज्ञातृ कथांगरु सप्तम उपासका ध्ययनांग॥
अंतः कृत दश अंग अष्टमा अनुत्तरोप पादन व मांग।
दशम प्रश्न व्याकर्ण अंग है सूत्र विपाक कहा ग्यारांग॥ ४८

चौदह पूर्व

उत्पादरु अग्रायन दूजो तीजो है वीर्यानू वाद।
अस्ति नास्ति परवाद चतुर्थम पंचम पूर्व ज्ञान परवाद ॥
षष्टम सत्यप्रवाद सप्तमा आत्म प्रवादरु कर्म प्रवाद।
प्रत्याख्यानतु वादजु नवमा दशम पूर्व विद्यानुवाद ॥४६
ग्यारम पूर्व कल्यानु वाद है प्राणवाद द्वादशमाधार।
क्रिया विशालजु पूर्व तेरमां पूर्व त्रिलोकविंद दश चार ॥
चौदह पूर्वन की पद संख्या कोड पिचानव चित में धार।
लाख पचासरु पांच कहे पद गणधर ने जिनधुनि अनुसार ॥५०

प्रवचन भक्ति १३ भावना

प्रवचन श्रीजिन वीतरागधुनि तापर आगम वचन विशाल।
तिनमें षट् द्रव्य सप्त तत्व पंचास्ति काय नव पद तिरकाल ॥
अधा ऊर्ध्व वा मध्य लोक वा द्वीप उदधि भू रचना भाल।
कर्मभोग भू आर्यम्लेच्छ त्रस थावर नर पशु विकलत्रिक चाल ॥५१
मेरु कुलाचल नदी क्षेत्र द्रह रूपाचल पर्वत वखार।
सब विदेह वृषभा चल चैत्यालय उप उदधिरुहष्न्नाकार ॥
मनुष पशु व्यंतर ज्योतिष का आयु कायु विभवरु परवार।
स्थान विमान विक्रियाक्षेत्ररु उदय अस्त रवि शशि ग्रह तार ॥५२
कल्परु कल्पातीत पटलहरि त्रिदिश विमान विभव सुख धार।
रूद्धिविक्रिया अवधिरु लेश्या स्वास अहार जनम मर नार ॥
नर्क पटलविल योनिविक्रिया आयु काय लेश्या दुख भार।
अधो लोक में भवन चैत्यग्रह त्रिदश आयु विभव परवार ॥५३
यतीधम वा गृहीधर्म वा व्रत संयम नैष्टिक व्यवहार।
देव गुरू वृष तप सामायक पूजन ध्यान ज्ञान आचार ॥
गति गुण स्थान मार्गणा भावन अंग पूर्व रतनत्रय धार।
पंच पाप न जीवदया विधिविन प्रवचन को जानन कार ॥५४

आवश्यक परिहाण १४ भावना

छन्द—इंद्रियन के वश नहीं सो अवश कहत ऐसे मुनिराय।
तिन मुनिक्रिया सोहि आवश्यकता की नहिं परिहान कराय॥
सो छहविधि सामायक वंदन स्तवण प्रतिक्रमण स्वाध्याय।
कायोत्सर्ग नाम षट् जानों फिर इक इक छह भेद बताय॥५५
नाम स्थापन द्रव्य क्षेत्र अरु काल भाव षट् विधि परकार।
इन षट् विधि कर पुन्य पाप भरते आवश्यक काल चितार॥
ज्यों सराफ धन लाभ हानि कूं सोचें दिन के अंत विचार।
त्यों ज्ञानी मुनि वा श्रावक भी चिंतवैं पापरु पुन्य सम्हार॥५६
ग्रेही कौं भी षट् आवश्यक पूजन गुरू सेवन त्रय काल।
स्वाध्याय तप संयम दानरु इहविधि षट् आवश्यक पाल॥
जगत मूल तन धन स्त्री इन से मन कूं रोक छांडि जंजाल।
धर्म श्रवण निंदा परिवर्जन यह विचार आवश्यक पाल॥५७

मार्ग प्रभावना १५

छन्द—या संसार उदधि के मांही सनमार्गन सूं प्रीति न धार।
कुगुरु कुदेव कुधर्म आयतन वा ग्रहीत मिथ्या परिवार॥
अब के सुथल सुकुल शुभ संगति पाई तो सन्मारग धार।
करू प्रभावना वृष की ऐसी वहु जन होय आश्चर्य अपार॥५८
रत्न स्वर्ण रूपा मय झारी जिन अभिषेकरु जै जै गाय।
वा पूजन उज्जल सामग्री अति पवित्र शुभ पात्र भराय॥
अक्षर अर्थ सहित अमृत समचित एकाग्र विनय अतिलाय।
मंत्र सहित अति नम्र होय कर श्रीजिनेंद्र के अग्र चढ़ाय॥५९
तथा स्तवन स्वर ताल मूर्छना कर्णप्रिय जिन गुण वहु गाय।
चतु अनुयोग शुद्ध व्याख्या कर दया धर्म कौं पुष्ट कराय॥
जाके श्रवण करत ही जग जन पापारंभ भीति अति थाय।
पंच पाप वा सप्त व्यसन वा निशि भोजन वा त्याग कषाय॥६०

श्री जिनबिंब प्रतिष्ठा करना वा जिन मंदिर धर्म्म स्थान ।
दर्शन पूजन स्तवन जागरन सामायिक शास्त्र व्याख्यान ॥
दुखित भुखित कूं दान देन कर वा अभक्ष कौं त्याग करान ।
ऐसी उत्कट करूं प्रभावना अन्य मती आश्चर्य लहान ॥६१

प्रवचन वात्सल्य १६ भावना

छन्द—प्रवचन जो जिनदेव गुरू वृष तामें जो वात्सल्य कराय ।
महामुनी वा आर्या श्रावक तथा श्राविका धर्म सहाय ॥
दानी व्रती तपी धर्मी वा वहुश्रुती उपदेशी दाय ।
त्यागी शील संयमी जन की प्रीति करो ज्यों वत्सागाय ॥६२
अपने पुत्र कलित्र मित्र से कौन नहीं अति प्रीति कराय ।
पशु पक्षी शुक पिक व्याघ्रादिक देखो कैसी प्रीति धराय ॥
तिनके हेत मरैं अरु मारैं ते नहि तिनकी करत सहाय ।
तातैं स्त्री सुत धन सूं प्रीति त्याग धर्म सूं प्रीति दृढ़ाय ॥६३
वात्सल्य करके ही गुणधन विद्या विभव राज्य सुख भार ।
दया दान पूजन प्रभावना मत उद्योत कार्य शुभ चार ॥
वैर विरोध क्लेश दारिद्ररु अपजश अरु अपमानन खार ।
तातैं करूं वात्सल्य भाव तुम तीर्थंकर पद शीघ्र तैयार ॥६४

इति सोलह कारण भावना संपूर्ण । अथ पाताल लोक के सातों नरकों की रचना वा चरचा संक्षेप त्रिलोक सार अनुसार वर्णन लिख्यते

दोहा—प्रथम नमूं अरहंत को, द्वितीय सिद्ध महाराज ।
तृतिय साधु को नमन कर, अरुजिन वचन जिहाज ॥१

अथ पाताल लोक की चित्रा पृथ्वी की मोटाई को वर्णन

एक लाख असी सहस, योजन मोटी जान ।
मेरु तले चित्रा पृथ्वी, तीन भाग जुत मान ॥२

तीन भाग की मोटाई है सो वर्णन

खर विभाग सोलह सहस, सहस चौरासी पंक ।

अस्सी सहस अवहुल है, रहै नार की रंक ॥३

खर विभाग की सोलह पृथ्वी के नाम वर्णन

चित्रा वज्रा लोहिता, गौ मेदारू प्रवाल।
ज्योति रसा अरू अंजना, अंका अंजन माल ॥४
वैडूर्यारू संसारिका स्फाटक चंदन जान।
वकुला अर सर्वाधिका, शैला षोडश् आन ॥५

नर्क पृथ्वी के नाम लिख्यते

धम्मा अरू वंशा द्वितीय, मेघा अंजना जान।
आरिष्टा मघवी छठी, माघवी सप्तम आन ॥६

पृथ्वी की प्रभा वर्णन

रत्न शर्करा वालुका, पंक धूम तन जान।
और महातम जानिये, प्रभा नर्क की मान ॥७

सात नर्कों की पृथ्वी की मोटाई लिख्यते

दोहा—अस्सी अरु वतीस हैं, अट्ठाइस चौबीस।
वीसरू सोलह वसु सहस, नर्क भूमि दल दीस ॥८

नर्कों मे पाथड़ो की संख्या

तेरह ग्यारह नव कहे, सात पांच अरू तीन।
नर्क सातवें में कहौ, पटल एक परवीन ॥९

नर्कों में विलों की संख्या

दोहा—तीस पचीस पनरहरूदस, तीन पांच कम लाख।
नर्क सातवें पांच विल, यों जगदीश्वर भाख ॥१०

नर्कों के विल कितने संख्यात जोजन के कितने असंख्य जोजन के तिनका व्यौरा

भाग करो इन विल के, पांचजु चतुर सुजान।
एक भाग संख्यात के, चतु असंख्य के मान ॥११

नर्क विल कितने प्रकार के

हैं विल तीन प्रकार के, इन्द्रक श्रेणी बद्ध।

और प्रकीर्णक विखर वां, संख्य असंख्य समृद्ध ॥१२

जिस जिस पटल के दिशा विदिशान श्रेणी बंध विल जानना होय जिसके निकालने की रीति

दो सै अरू शत छियानवै, दिशि विदिशा ध्रुव जान।
करो चतुगुन पटल प्रति, गुण फल ध्रुवहि घटान ॥१३

सातों नरकों के समुच्चय विदिशा प्रकीर्णक विलों का व्योरा वर्णनं

शत उनचास दिशा श्रेणी विल, शत सैताल चारविदिशाविल।
परकीर्णक लख असी तीन है, नभै सहस शत तीन छयानवैं ॥ १४

नर्क विल समुच्चय संख्याते असंख्याते विलों का व्योरा वर्णनं

बीस सहस सडसठ जु लख, विल योजन असंख्यात।
असी सहस लख सोल विल, है योजन संख्यात ॥ १५

विलों में शीत उष्ण

सवा बयासी लाख विल, महा उष्ण उर आन।
लाख जु पौनें दोसही, दारुण शीत बखान ॥ १६

विलों का आपस मे अन्तर

विल योजन संख्यात का, योजन डेढ़रु तीय।
सप्त सहस असंख्यात का, असंख्यात भजनीय ॥ १७

नारकियों की योनी का आकार

दोहा—खर शूकर मार्जार कपि, गो मुख मांखी जाल।
गोल तिकौणें चौकुने, घंटा कार कराल ॥ १८

योनि स्थान नर्क नर्क प्रति कितने ऊँचे चौड़े सो व्योरा वर्णनं

दोहा—इग विग अरु तियकोशहै, इग विग तिय योजान।
अरु शत योजन चौड है, ऊंचे पाँच गुणान ॥ १९

नारकियों की आयु

एक तीन अरु सात दश, सतरा अरू बाइस।
थिति सागर तेतीस की, यों भांखी जगदीस ॥ २०

नारकियों के शरीर की ऊँचाई

हाथ सवा इकतीस की, प्रथम नर्क मैं काय।
द्विगुण द्विगुण आगैं करूँ, दोय सहस की थाय ॥ २१

प्रत्येक पटल मे शरीर की ऊँचाई

दोहा—प्रथम नर्क प्रथमहि पटल, तीन हाथ की काय।
दोकर अंगुल वसु अरध, पटल पटल वढ़वाय ॥ २२

दूजे में दोयकर अंगुल बीस ऊपर धर अंगुल के ग्यारह भाग तामें दोय लीजिये। तीजे मैं पट् पान अंगुल बाईस आन अंगुल के नव भाग तामैं छैह ग्रहीजिये ॥ चौथे में सतर हाथ ऊपर है अंगुली बीस अंगुल के भाग सात तामें चार लीजिये। पांच मैं पचास कर छठे शत छयासठि धर सोलह अंगुल सात मैं सहस्र कर वढ़ीजिये ॥२३

सात नर्कों का सामान्य उछलना कितना कितना सो वर्णन

दोहा—कोश सवा इकतीस का, उछलन प्रथमहिं नर्क।
द्विगुण द्विगुण आगें करो, दोय सहस विनु तर्क ॥२४

उछलने की नरकों की दूसरी रीति सो वर्णन

दोहा—अंक पांच का घन करो, द्यो सोलह का भाग।
उछलें धम्मा नार की, आगैं द्विगुण ही पाग ॥२५

अधो अवधि सातों नर्कों की कैसे कैसे सो व्योरा वर्णन

अधो अवधि प्रथमहि नरक, चार कोस की जान।
अर्ध अर्ध घटि सप्त मैं, एक कोस की आन ॥२६

ऊर्द्ध और तिर्यग् अवधि नार कीनकी कितनी कितनी सो वर्णन

योजन सहस असंख्य की, तिर्यक् अवधि बखान।
ऊपर विल की छत्त तक, अवधि नार की जान ॥२७

अथ नर्कों की दुर्गंध पटल पटल की कितनी कितनी सो वर्णन

मृतिका प्रथमहिं पटल की, वासै अर्द्ध हि कोस।
उनंचासमा पटल की, साढ़े चौबीस कोश ॥२८

नर्कों का जन्मांतर मरणांतर सातों का लिख्यते

चतुर्वीस महूरत प्रथम, द्वितीय सप्त अहमेय।
तृतिय पक्ष इक मास चतु, दुग चदु पट् क्रम ज्ञेय ॥२६

सातों नरकों में लगातार ही जाय एक जीव कितना बार तक जाय सो वर्णन

आठ सात षट् पंच चतु, त्रिक अरु दोय वखान।
नर्क नर्क प्रति जाय तौ, यह उत्कृष्ट प्रमाण ॥३०

कौन कौन संहनन वाला जीव कौन कौन से नर्क जाय सो वर्णन लिख्यते

जाय तृतिय षट् संहनन, चौथे पंचम पांच।
चतु षष्टम सप्तम जु इक, कही बात है सांच ॥३१

लेश्या सातों नर्कों में कैसे कैसे सो व्योरा वर्णन लिख्यते

इक विगतिय कापोत जु लेश्या है जघन्य मध्यम उत्कृष्ट।
और नील के जघन्य अंश है चतु पंचम मध्यम उत्कृष्ट ॥
अरु कृष्ण के जघन अंश हैं मघवी मैं मध्यम कर दृष्ट।
माघवी नाम सप्त नारक मैं लेश्या कृष्ण कही उत्कृष्ट ॥३२

नर्क नर्क की आगति कैसे ताको व्योरा वर्णन

सप्तम तैं पशु होय विरूपा, अष्टम तैं धर अष्टत रूपा।
पंचम व्रत चतु केवल ज्ञाना, तृतिय नर्क लहि पंच कल्याणा ॥३३

जो जीव तीर्थंकर नरक सूं निकस होनहार है उनका दुःख छह महीना पहले बन्द हो जाता है सो लिख्यते

दोहा—तीर्थंकर होय दुख मिटे, छह महीना जु अगार।
तृतिय नरक को जीव लहि, पंच कल्याणक सार ॥३४

सातों नरकों के सर्व नारकी जीवों की संख्या वर्णन

द्वितीय वर्ग धन अंगुल मूल, तामैं गुण जे श्रेणी पूर।
ता प्रमाण नारकी जीव, सात नरक मैं रहै सदीव ॥३५

जो जो बातें नरक चरचा में वर्णन करी तिनका समुच्चय छन्द वर्णन सवैया

भूमि और वर्ण मोटाई पटल बिल जान बिल भेद बिल ध्रुवा

विल आनिये। परकीर्णक दिशि विदिश संख्य जोड़ विल शीत और उष्मविल विलांतर मानिये ॥ योनि स्थान आयु काय उछलन अवधि गंध जननांतर मरणांतर गमनोत्कृष्ट जानिये। संहनन लेश्या आगति ओमिटन दुख नर्क कितने छंद तीस पांच आनिये ॥३६

इति पाताल लोक की नर्क चर्चा संपूर्णम्

चार प्रकार देवों की चरचा लिख्यते प्रथम नमस्कार

सप्त कोड बहतर जुलख, जिन मंदिर भुव नान।
प्रथमहिं तिनकों नमन कर, चरचा विविध बखान ॥१

देव जाति चार प्रकार के वर्णन

देव चार परकार के, भावन व्यंतर जाति।
तीजे ज्योतिप कल्प चतु, ये ही जग विख्यात ॥२

प्रथम भवन वासीनि की चरचा। भवन वासीन की दश जाति है सो वर्णन

दोहा - असुर नाग सौ पर्ण अरु, द्वीप उदधि सुकुमार।
विद्युत स्तनि तरु दिक अग्नि, अनल भुवन दश धार ॥३

भवनवासीन के शरीर की प्रभा का वर्णन लिख्यते

श्याम पांडु कंचन वरण, नील पांडु अरु नील।
कंचन लालरु नील रंग, दशम लाल तप शील ॥४

भवन वासी २० इंद्रों के नाम लिख्यते

चमर विरोचन भूता नंदरु धर नानंद वेणु विणुदार।
पूर्ण वशिष्ट जलः प्रभजानो जलः कांति हरिषेणहि धार ॥
हरि क्रांता अरु अग्निशिखी अरु अग्न्या रूप अमिति गति सार।
अमित वाहु घोपरु महा घोषा वेलं जनरु प्रभंजन धार ॥५

भवन वासीन के मुकट चिन्ह वर्णन

चूड़ामणि फन गरुड गज, मछ स्वस्तिक कपवि जान।
सिंह कलश घोटक भवन, मुकट चिन्ह उर आन ॥६

भवन संख्या पहिले इंद्र सूं दूजे से चार कमती

चौंतीसरु चौदाल लख, अरु अड़तीमहि भांख।

छहन विषैं चालीस हैं, अनल पचासहि लाख ॥७

भवन वासीन के भवन कहाँ कहाँ सो व्योरा वर्णन

नव प्रकार भुवनान के, भवन कहे खर भाग।
भवन असुर राक्षसन के, पक भाग मैं लाग ॥८

भवन वासीन के भवन कितने ऊंचे लम्बे और कितने ऊंचे योजन के चैत्यालय तिनका व्योरा वर्णन

क्रोट जु संख्य असंख्य के, तुंग तीन सै जान।
तामैं गिरशत तुंग है, तापर चैत्य महान ॥९

चैत्य वृक्ष के नाम वर्णन

अस्वथ सप्तरु शाल्मली, जामुन वैत कदंब।
प्रियंगु सिरस पालाश द्रुम, राज द्रुम दश अंग ॥१०

चैत्य वृक्ष के मूल में पांच प्रतिमा एक एक दिशा प्रति पांच पॉच मानस्थंभ तिन मे दिशा दिशा प्रति सात प्रतिमा तिनका व्योरा लिख्यते

दोहा—चैत्य वृक्ष के मूल मैं, दिश दिश पाँच जु चैत्य।
बीस जु मान स्थंभ मैं, सात सात है चैत्य ॥ ११

सात प्रकार की सेना असुर कुमार देवों की लिख्यते

भैंसा घोड़ा रथ द्विरद, प्यादा अरु गंधर्व।
नृत्य की सप्तम भेद है, असुर सैन्य यह सर्व ॥ १२

बांकी नो प्रकार भवन वासीन की आदि मैं सैन्या कौन कौन सी तिनके नाम वर्णनं

नाव गरुड इभ मच्छ मय, खूर सिंह और यान।
घोटक प्रथम अनाक मैं, सैन्य शेष भुवनान ॥ १३

असुर कुमार के आदि सैन्या भैसो की तिसकी सात कछा पहली कछा सूँ दूसरी कछा मैं दूनी दूनी इसी तरह सर्व इन्द्रो की जाननां

भैंसा चौसठ साठ सहसहै प्रथम कच्छ असुरेंद्रहिधार।
त्रितिय इंद्र के छपन सहस हैं नाव प्रथम कच्छा मैं सार ॥

वांकी के सतरह इंद्रन के प्रथम कच्छ पचास हजार।
द्विगुण द्विगुण कर सात कच्छ मैं त्रेसठ लाख पचास हजार ॥१४

भवन वासी इन्द्रों की भिन्न भिन्न सेन्या का समुच्चय जोड़ लिख्यते

पांच कोड अरू लाख जु अरसठ सहस छयानु सैन्या चमरेंद्र।
कोड पांच तेतीस लाख चालीस सहस वैरोचन इन्द्र ॥
चार कोड अरू लख सत्तानवै सहस चौरासि सैन्य तृतियेंद्र।
कोड चार चौदाल लाख पचास सहस सैन्या शेषेंद्र ॥ १५

सामानिक और अंग रक्षक देव एक एक इन्द्र के कितने कितने सो वर्णनं

चमर आदि त्रयइन्द्र कै, सामानिक तनुरक्ष।
आठ सोलह को वर्ग कर, चतु सोलह घटि कक्ष ॥ १६
शेष जु सतरा इन्द्र के, सहस पचास समान।
अंग रक्ष विय लक्ष है, आगैं सभा वखांन ॥ १७

सर्व इन्द्रों के सभा निवासी देव कितने तिनकी संख्या वर्णनं

अठ बीसरू छब्बिस सहस, प्रथम सभा के देव।
विंशतिय दोय दोय वृद्ध कर, संख्या होय स्वयमेव ॥ १८

इन्द्रों की स्त्री और वल्लभा देवियों की संख्या वर्णन लिख्यते

चमर त्रिक कैं छप्पन सहस तिय, वल्लभिका षोडश हज्जार।
धरना नंद पचास सहस तिय, वल्लभिका दश सहस विचार ॥
सुपर्णेंद्र चालीस सहस तिय, वल्लभिका है चार हजार।
शेष इन्द्रतिय सहस बतीसहि, दो हजार वल्लभिका सार ॥ १९

इन्द्रों के महादेवी कितनी कितनी और विक्रिया कितनीं कितनी करैं सो वर्णन लिख्यते

दोहा---पंच पंच महादेवि हैं, इक इक इंद्र कैं जान।
विक्रिय अठ अरु षट सहस, इक इक करैं प्रमाण ॥ २०

इन्द्रों की देवी की आयु लिख्यते

पल्य एक पल्य भाग अठ, गरूड पूव त्रय कोड़।

आयु शेष महा देवि की, संवत्सर त्रय कोड ॥ २१

भवन वासी देवों की आयु वर्णनं

असुर आयु इक उदधि की, त्रिक तिय ढाई पल्य ।
दोय डेढ अविशेष की, व्यन्तरायु इक पल्य ॥ २२

काय भवन वासी देवों की वर्णनं

असुर कुमार पचीस धनु, 'बाकी नो भुवनान ।
दश दश धनुष जु काय है, या प्रकार उर आंन ॥ २३

भवन वासीन का भोजन अन्तर वर्णन लिख्यते

सहस वर्ष भोजन असुर, द्वादशार्ध दिन तीन ।
तिय भोजन बारह दिवस, सप्त अर्द्ध त्रय लीन ॥ २४

स्वांसो स्वांस अन्तर लिख्यते

असुर स्वांस इक पक्ष मैं, तिय पचीस घट कान ।
तियकै दश दो मुहूर्त मैं, तिय पंद्रह घट जांन ॥ २५

अवधि उत्कृष्ट और जघन्य सामान्य वर्णन लिख्यते

योजन कोटि असंख्य की, अवधि असुर कै जांन ।
सहस असंख्यहि शेष की, जघन्य शतक कोसान ॥ २६

विशेष अवधि व्योरा ऊर्द्ध अधोतिर्यक् और काल का वर्णनं

कोडा कोड असंख्य की, तिर्यक अध असुरान ।
रूजुविमाण तक ऊर्द्ध मैं, काल असंख्य प्रमाण ॥ २७

बाकी नो प्रकार देवों की अवधि वर्णनं

दोहा—शेष भवन तिर्यक् अधो, असंख्यात हज्जार ।
मेरु चूलिका ऊर्द्ध तक, काल संख्य विस्तार ॥ २८

अवधि क्षेत्र जघन्य और काल भावन व्यन्तर का वर्णन

भावन व्यंतर मैं जघन, योजन अवधि पचीस ।
न्यून दिवस इक काल है, द्रव्य क्षेत्र वत दीस ॥ २९

भवन वासी सर्व देवों की संख्या वर्णनं

वर्गमूल प्रथम घन अंगुल, जगश्रेणी तैं गुनैं जु मुनिवर ।

ता प्रमाण संख्या गिन लेव भवन वासि के ऐते देव ॥ ३०

भवन वासी सर्व देवों की चर्चा का समुच्चय छंद वर्णनं

जाति अरुवर्ण अरु इन्द्र अरु मुकट चिन्ह,
भवन भेद चैत्य वृक्ष सेन्या उर आंनिये।
सामानिक तनु रक्ष सभा देव वल्लभा,
देवी अरु महा देवि इन्द्र की प्रमानिये॥
विक्रिया अरू आयु काय आहार औ स्वांसो,
स्वांस अवधि क्षेत्र संख्या दोहा तीस मैं बखांनिये।
कह्यो है सामान्य भेद जोनी चांहो जो,
विशेष देखो त्रिलोक सार संशय को भांनिये॥ ३१

इति भवन वासी देवों की चर्चा सम्पूर्ण॥

व्यन्तर देवों की चर्चा, व्यन्तर देव आठ प्रकार के

दोहा—किन्नर अरुकिं पुरुष है, महोरग अरु गंधर्व।
यक्षरू राक्षस भूत गण, अरू पिशाच गनि सर्व॥ १

विशेष अस्सी जाति व्यन्तरों की लिख्यते

आदि चतुक दश दशक है, द्वादश पक्षहि वांच।
राक्षस भूत जु सप्त गिन, चौदह भेद पिशाच॥ २

वर्णन व्यन्तर देवों के शरीर का वर्णनं

प्रियंग और सित स्याम रंग, गंधर्व त्रिकहेम।
भूत पिशाचरु स्याम रंग, वर्ण कहे यह नेम॥ ३

इन्द्रों के नाम सोलह वर्णनं

किं पुरुषरु किन्नर सत्पुरुषा महा पुरुष महा काय अतिकाय।
गीत रती अरु गीत यशा है मानभद्र पूरण भद्राय॥
भीम और महाभीम वारमा है सरूप प्रति रूप बनाय।
काल और महाकाल सोलमा व्यंतरेंद्र यह नाम गिनाय॥४

इंद्रों के नगर कहाँ कहाँ कितने कितने सो वर्णन

इनही द्वीपन के विषैं, पांच पांच पुर जान।

इक इक इंद्र के जानिये, जंबू द्वीप प्रमान ॥६

व्यंतरों के स्थान तीन प्रकार के कितने उत्कृष्ट और कितने जघन्य हैं सो वर्णन

भवन लंब बारह हजार के तीन शतक योजन के तुंग।
जघन्य भवन योजन पचीस के ऊंचे योजन पौन अभंग॥
पुर उत्कृष्ट लाख योजन के जघन्य एक योजन पर संग।
द्विदश सहस दोशत अवास बढ योजन पौन कहे लघु अंग॥७

व्यंतर देवों के नगर कोट दरवाजा महल सभा कितनी कितनी चौड़ी लम्बी सो वर्णन लिख्यते

कोड जु साढे सैंतिस ऊंचा साडे बारह कोड महान।
गो पुर तुंग जु साढे बासठ सवा इकतीस चौड़ाई प्रमान॥
महल पिचहतर योजन ऊंचे तामैं सभा सुधर्मी आन।
साढ़े बारह योजन लंबी और सवा छह चौड़ी जान॥८

चैत्य वृक्ष व्यंतर देवों का वर्णन

अशोकारु चंपा तरु, केशर नाग वखान।
तुवड वट अरु कंटक तरू, तुलसी कदंब बखान॥९

व्यंतर देवों की सैन्या सात प्रकार की ताका वर्णन

गज घोटक प्यादारु रथ, गंधर्वरु नृत्य कार।
वृषभ प्रथम ही कच्छ मैं, अट्ठाईस हजार॥१०

सैन्य महत्तर देव की वर्णन

ज्येष्टरु सुग्रीवरु विमल, मरु देव श्री दाम।
दाम श्री रु विशाल यह, सैन्य महत्तर नाम॥१२

व्यंतरेंद्र की सेना का भिन्न भिन्न जोड़ ब्योरा वर्णन

दो किरोड अठताल लख, सहस बानवै जान।
व्यंतरेंद्र इक इक एक कै, सेन्या कही प्रमान॥१३

सर्व इंद्र की सैन्या का समुच्चय जोड़ लिख्यते

गुनतालीस जु कोड है, लाख बयासी जान।
सहस बहतर सर्व है, व्यंतरेंद्र सैन्यान॥१४

सामानिक अंग रक्षक सभा निवासी कितने कितने एक एक इंद्र के सो वर्णन

चतु सहस्र सामानिक देवा, सोलह सहस अंग रक्षक भेवा।
अभ्यंतर परिषद आठ सैं, मध्य हजार अंत बारा सैं ॥१५

व्यंतरेंद्रों के देवी पट देवा वल्लभा कितनी कितनी और सामान्य देवन के देवी कितनी कितनी सो वर्णन

देवी द्वि सहस पट्टदो, वल्लभि का बतीस।
यह संख्या है इन्द्र की, हीन पुन्य बतीस ॥१६

गणिकान के नगर और इंद्रों के बाग कितने कितने लम्बे चौड़े सो वर्णन

योजन द्वि सहस नगरतैं, लख योजन के बाग।
दोऊ तरफ गणिका नगर, सहस चौरासी पाग ॥१७

व्यंतर देवों की आयु काय कितनी कितनी सो वर्णन

एक पल्य उत्कृष्ट है, जघनहि दश हजार।
मध्यम भेद जु बहु कहे, काय धनुष दश धार ॥१८

आहार और स्वासो स्वांस व्यंतर देवों का वर्णन

साढ़े पांच दिनान मैं, है व्यंतर आहार।
साढ़े पांच मुहूर्त मैं, स्वासो स्वांस विचार ॥१६

व्यंतरों की अवधि ऊर्ध अधोतिर्यग् कितनी कितनी काल की सो वर्णन

वसु व्यंतर तिर्यक् अवधि, कोडा कोडि असंख्य।
स्व विमान तक ऊर्ध मैं, अधो सहस्र असंख्य ॥२०

जघन्य अवधि और काल कितना कितना व्यंतर देवों का सो वर्णन

व्यन्तर देवन के जघन, योजन अवधि पचीस।
काल दिवस कुछ घाटि है, द्रव्य क्षेत्र बतदीस ॥ २१

सर्व व्यन्तरों का संख्या का वर्णनं

वर्ग तीन सै योजन तना, ले परदेशा संख्यागिना।
जगत प्रतर में ताको भाग, सो व्यंतर की संख्या लाग ॥२२

इति व्यन्तर देवों की चर्चा संपूर्णम् ॥

तीसरी ज्योतिषी देवों की चर्चा, ज्योतिषी देवों की जाति पंच प्रकार की है सो वर्णनं

चंद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र है, अरु तारागण जांन।
इंद्र चंद्रमा जानियैं, सूर्य प्रत्येन्द्र वखांन ॥ १

ज्योतिषी देवों के विमान की लंबाई मोटाई का व्योरा वर्णनं

इक योजन के भाग तुम, इकसठ करहु महंत।
विधु छप्पन भाग जु कहो, रवि अठ ताल कहंत ॥ २
पोन कोश बृहस्पति कह्यो, शुक्र कोश कों धार।
वुध कुज अध शनि तारिका, इक अधपाव विचार ॥ ३
नक्षत्रनि को कोश इक, राहु केतु कछु घाट।
इक योजन मैं जानियें, अध. मोटाई पाट ॥ ४

ज्योतिषी देवों की किरण संख्या वर्णनं

चंद्र सूर्य वारह सहस, किरण कही परवांन।
सहस अढ़ाई शुक्र की, या प्रकार उर आंन ॥ ५

ज्योतिषीन के वाहक देवों की संख्या लिख्यते

चंद्र सूर्य सोलह सहस, अठ चतु दोय हजार।
ग्रह नक्षत्र जु तार का, वाहक देव विचार ॥ ६

तारागणों में आपस में कितना कितना अन्तर है सो वर्णन लिख्यंते

एक सहस उत्कृष्ट हैं, मधि योजन पंचास।
जघन तीन सै धनुष को, अन्तर कह्यो प्रकाश ॥ ७

ज्योतिषी देवों की आयु वर्णनं

चंद्र पल्य इकलाष वर्ष, अरु सूर्य पल्य इक वर्ष हजार।
पल्य एक सो वर्ष शुक्र की, बृहस्पति पल्य एक उरधार ॥
वुध कुज शनि की आध पल्य है, नक्षत्ररु तारा जु विचार।
पल्य भाग चौथाई जानों, अथवा अष्टम भाग समानों ॥ ८

चन्द्र सूर्य के देवांगना और महादेवी कितनी कितनी तिनका व्योरा लिख्यते

देवी सोलह सहस हैं, महादेवि हैं च्यार।

इक इक देवी विक्रिया, करैं आठ हज्जार ॥ ६

देवांगनानि की आयु और एक एक देव के कमती सूं कमती कितनी देवागना तिनका व्योरा लिख्यते

अपने अपने देव सैं, देवी आयु जु धर्म ।
महाहीन भी देव कैं, देवी चौसठ अर्ध ॥ १०

देवों की अवधि अधो ऊर्ध तिर्यग् कितनी कितनी और काय कितनी वड़ी सो व्योरा वर्णनं

सहस असंख्य उत्कृष्ट हैं, जघन्य अधो संख्यात ।
कोडा कोड असंख्य की, तिर्यग् अवधि विख्यात ॥ ११
ऊर्धभाग स्वविमान के, धुजा दंड तक जांन ।
सात धनुष की काय है, या प्रकार उर आंन ॥ १२

जंबू द्वीप संबंधी दो चन्द्रमा दो सूर्य तिनका परिवार कितना कितना सो वर्णन लिख्यते

दोय चंद्र दोय सूर्य ग्रह, इक शत छहत्तर जान ।
छपन नक्षत्र जु तारका, कलल घसन परमान ॥ १३

एक एक क्षेत्र और कुलाचल पर कितने कितने तारे हैं सो वर्णनं

सप्त शतक अरु पांच भरत पर चौदह सै दशहिमवन जान ।
शतक अठाइस बीस है भव तक छप्पन सै चालीस महाहिम वांन ॥
सहस ग्यारह दोसैअस्सी हरि बाइस सहस निषिध पर आन ।
शतक पांच अरु आठ ऊपरै अब विदेह का करूं वखांन ॥ १४

दोहा—पैतालीस हजार अरु, इक शत बीस विदेह ।
आगैं गिर अरु क्षेत्र मे, अर्ध अर्ध घट तेह ॥ १५

एक चंद्रमा के साथ कितने कितने तारे सो वर्णन लिख्यते

नील चार चालीस हैं, पद्म पिचासी जांन ।
पैंसठि खरब जु छह अरब, कोड पचीस वखांन ॥ १६

ज्योतिपी देवों के विमान मेरु से कितने योजन दूर गवन करें सो वर्णन लिख्यते

ग्यारह सै योजन इक ईसा ।

मेरु छोडि ज्योतिष जग दीसा ॥१७

सूर्य मार्ग पांच से दश योजन का

पांच शतक दश योजन सारा ।
सूर्य गमन को क्षेत्र विचारा ॥१८

चंद्रमा का मार्ग एक से अस्सी योजन का उसी पांच से दश योजन मैं

शतक असी योजन अव धारा ।
चंद्र मार्ग का क्षेत्र सम्हारा ॥१६

सूर्य गमन की गली कितनी

शतक चौरासी गली सूर्य की ॥

चंद्र गमन की गली कितनी

पनरह गली कही शशि कर की ॥

सूर्य गली का गली दूसरी सूं अन्तर कितना सो लिख्यते

सूर्य गली अंतर अठ कोसा ॥

चंद्र गली का अपनी गली सूं अन्तर कितना सो वर्णन

चंद्र गली योजन चौतीसा ॥

सूर्य की आदि में अन्त में मध्य में गमन की रीति वर्णन

गज घोटक अरु सिंह चाल है ।
आदि मध्य बारह सम्हाल है ॥१८

श्रावणवदी प्रति पदा सूं सूर्य दक्षिणायन गमन करे कर्क संक्रांति दिन मान अठारह मुहूर्त का

रवि संक्रांति मकर उत्तरायण ।
महूरत बारह दिवस परायण ॥२०

दिन दिन हानि वृद्धि सूर्य गमन की कितनी कितनी

तीन जु पलठावन विमल, विपल अंश षट् जान ।
हानि वृद्धि रवि गमन की, दिन दिन प्रति परमान ॥२१

एक सौ चौरासी वीथी सूर्य की तिसमें जम्बू द्वीप में कितनी अर लवण समुद्र में कितनी सो वर्णन लिख्यते

त्रेसठ वीथी निषध पर, चौंसठ पैंसठ जोय।
हरि क्षेत्र अरु लवण मैं, शतक उनीस जु होय ॥२२

पनरह वीथी चंद्रमा की तिसमें द्वीप में कितनी अर लवण समुद्र में कितनी सो वर्णन

वीथी पांच जु द्वीप मैं, दश आवण मैं जान।
इन सब वीथिन के विषैं, सूर्य चंद्र गमनान ॥२३

एक एक वीथीन के एक लाख नो हजार आठ से खड कल्पना करिये तिसमें एक मुहूर्त में चंद्रमा कितने खंड गमन करे सो हिसाब लिख्यते

सतरासे अठसठ खंड गति शशि एक मुहूर्त।
सर्व खंड पूरन करं साठरु दोय महूर्त ॥२४

सूर्य एक महूर्त मे कितने खंड गमन करे सो वर्णन

अठारा सै अरु तीस खंड, गति रवि एक मुहूर्त।
एक लाख नो सहस वसु, शत खंड सात महूर्त ॥२५

चंद्र सूर्य ग्रह नक्षत्र तारा इनका शीघ्र गमन इस भांति लिख्यते

चंद्र सूर्य ग्रह नक्षत्ररु, तारा गण अव धार।
उत्तरोत्तर शीघ्रहि गमन, जान लेहु विस्तार ॥२६

सूर्य अयोध्या वासीन को निषिधा चलके कितने उरे आवे जब दीखे और अस्त कहाँ होय सो लिख्यते

चौदह सहस छसै इक ईसा, योजन निषिध परै रवि दीसा।
सहस पांच शत पांच पिचहतर, उरै अस्त रवि दक्षिण निषिध पर ॥२७

ढाई द्वीप और दो समुद्र में स्थिर तारेन की संख्या लिख्यते

स्थिर छतीस इकशत उनताली, इक हजार दश उदधि जु काली।
सहस इकतालिस इकशत वीसा, त्रेपन सहस दोय सैतीसा ॥२८

कौन कौन ज्योतिपी एक ही परधि पर भ्रमे कौन कौन परधि को पटल कर गमन करे सो ब्योरा वर्णन

चंद्र सूर्य ग्रह को भ्रमण, परिधि परिधि पलटंत।

नक्षत्ररु गण तारिका, एकहि परिधि अमंत ॥२६

ज्योतिषी देवन की संख्या वर्णन

अंगुल दीसै छप्पन ताका, वर्ग प्रदेश लीजिये वाका ।
जगत प्रतर को भागा देहि ता समान ज्योतिष गन लेहि ॥३०

ज्योतिषी देवन की चर्चा संपूर्णम्

चौथे कल्पवासी देवों की चर्चा, सोलह स्वर्गों के नाम लिख्यते

सौधर्मरु ईशान है, सनत्कुमार माहेंद्र ।
ब्रह्म ब्रह्मोतर स्वर्ग फुनि, लांतव कापिष्टेंद्र ॥ १
शुक्र और महा शुक्र है, अरु सतार सहश्रार ।
आणत प्राणत आरणा, सोलम अच्युत धार ॥ २

नवग्रीव नवोतरा पंच पंचोतरा कल्पातीत के विमान का वर्णनं

त्रिक नवग्रीव नवोतरा, पंचानुत्तर जांन ।
कल्परु कल्पातीत के, नाम कहे कर ध्यांन ॥ ३

कल्प और कल्पातीत का क्षेत्र कितने राजू में सो वर्णन लिख्यते

जुगल दोय तिय राजु में, षट् जुग तिय में जान ।
इक राजू नवग्रीव कहि, अब अनुत्तर पंचान ॥ ४

कल्प सोलह और कल्पातीत में विमान और चैत्यालय कितने
सो वर्णन लिख्यते

प्रथम बतीस दूजे अठाईस तीजे बारह चौथे आठ पांचै
छट्ठे चार लाख ख्याति है ।
सातै आठमैं पचास चालीस नोमैं दशमैं ग्यारह बारह छै
हजार चार शत शात है ॥
अधो एक शत ग्यारह मध्य एक शत सात ऊरध इक्यानू
नव नवोत्तरे जात है ।
पंच पंचोत्तरे चौरासी लाख सतानू हजार तेईस चैत्याले
सब वंदों अघ घात है ॥ ५

विमानों में संख्याते योजन के कितने और असंख्याते योजन के कितने सो व्योरा वर्णनं

दोहा—जेते स्वर्ग विमान हैं, भाग करो तिस पाँच।
चतु असंख्य के जांनिये, एक संख्य के वांच ॥ ६

विमान तीन प्रकार के इन्द्रक प्रकीर्णक श्रेणी वद्ध है सो वर्णनं

है विमान त्रिक जाति के, इन्द्रक श्रेणी वद्ध।
और प्रकीर्णक विखरयां, संख्य असंख्य समृद्ध ॥ ७

जिस पटल के दिशा के श्रेणी वंध विमान जानने होय तिसका व्योरा लिख्यते

दो सै छप्पन का ध्रुवा, धार दिशा मन मांहि।
करो चतुर्गुण पटल प्रति, गुणफल ध्रुवहि घटाहि ॥ ८

असंख्यात योजन के सर्व विमान सोलह स्वर्गों मे कितने सो वर्णन लिख्यते

सरसठ लख सत्तानु हजारा, शतक तीन अरु-साठ विचारा।
शतक तीन अरु चालीस धारा ॥ ९

कल्पातीत मे असंख्यात योजन कितने कितने संख्यात योजन सो वर्णन लिख्यते

तीन अठारा सतरहा, ग्रैवेयक संख्यात।
नव अनुदिश पंचोत्तरा, एक एक विख्यात ॥ १०
कल्पातीत विमान में, संख्याते चालीस।
अर असंख्य के दोय सै, अस्सी तीन कहीस ॥ ११

विमानों की तली की मोटाई कितनी कितनी सो वर्णनं

छहो जुगल तल कल्प चतु, ग्रैवेयक त्रिक शेष।
ग्यारह सै इकवीस में, निन्यानवै रनरेस ॥ १२

ये विमान काहे के आधार हैं सो वर्णन लिख्यते

इक जुग जल द्वितीयहि पवन; चार जुगल जल वायु।
आगैं शेष विमान है, नभ आधार सहाय ॥ १३

विमानों का रंग वर्णनं

दोय दोय चतु कल्प चतु, आगैं शेष विमान।
पांच चार तिय दोय इक, वर्ण कहे क्रम जान॥ १४

स्वर्गों के त्रेसठ पटल का व्योरा वर्णन लिख्यते

इकतीस सात जु चार दो, एक एक तिय तीन।
तिय तिय तिय इक इक पटल, त्रेसठ कहे प्रवीन॥ १५

त्रेसठ पटल जिनमें त्रेसठ इन्द्रक तिनके नाम वर्णनं

छन्द—ऋजु विमल चंद्र वलारु वीरा रुण नंद नारु नलि नाये।
कांचेन रोहित चंचत मरु तरु ऋद्धि सवै डोरिया॥ १६
रुचि कर रुच्चि अरु अंका, स्फाटक तपनीय मेघ अभ्राये।
हारिद्र पद्म रोहित वज्ररु नंदीव वर्तायै॥ १७
प्रभं करा अरु प्रथक गज, मित्र प्रभये जान।
जुगल प्रथम के पट लये, है इकतीस प्रमान॥ १८
अंजन वन मालरु गरुड, सर्प लांग ला जान।
वल भद्ररु सप्तम चक्र, कहे द्वितिय जुग लान॥ १६
नाम अरिष्टरु सुरस कहि, ब्रह्म ब्रह्मोतर चार।
ब्रह्म हृदय अरु लांत वा, लांतव जुगल विचार॥ २०
शुक्र शतारहि युगल मैं, शुक्र शतार कहंत।
आनत प्राणत पुष्प करु, आरण युगल भणंत॥ २१
सातक आरण अच्युतरु, आरण युगल भणंत।
आठ जुगल बावन पटल, आंगै और कहंत॥ २२

नव ग्रीवक का इंद्रक नाम लिख्यते

सुदर्शना मोघ सु प्रबुध, तूर्य यशोधर जानं।
सुभद्र और सुविशाल है, सुमन ससौमन सान॥ २३
प्रीत्यंकर ग्रीवक नवम, नवो तरादि त्यैंद्र।
पंचाणुतर के विषैं, सरवारथ सिध्येन्द्र॥ २४

केवल देवांगनानि के ही उपजने के विमान कितने सो वर्णन लिख्यते

लाख जु षट् सौ धर्म मैं, चार लाख ऐशान ।
ए दशलाष विमान मैं, केवल स्त्री उपजान ॥ २५

सोलह स्वर्ग मे वारह इंद्र प्रत्येंद्र की विधि लिख्यते

चार स्वर्ग मैं आठ है, आठ स्वर्ग मैं आठ ।
चार स्वर्ग मैं आठ है करो भव्य मुख पाठ ॥ २६

इंद्रों के रहने के विमान श्रेणीवद्ध विमानों में कहाँ कहाँ सो वर्णन लिख्यते

ठारम सोलम चौदमां, वारम दश वसु आन ।
षट चतु आठों युगल क्रम, श्रेणीवद्ध सुजान ॥ २७
अपने अपने युगल के, अंत पटल के माहि ।
श्रेणीवद्ध विमान मैं, वसै शक्र सुख पांहि ॥ २८

देवनि के मुकट चिन्ह तिनका व्योरा वर्णन

स्वर्ग वारमैं तक विषैं, और युगल दो जान ।
इन चौदह स्थानक विषैं मुकट चिन्ह ये आन ॥ २९
सूर हिरण भैंसारु मछ, कुर्म द्रदर अस्व कुंज ।
चंद्र सर्प गेंडा अजा, वृषभ कल्प तरु पुंज ॥ ३०

देवन के वाहन अनुक्रम करके सो व्योरा वर्णनं

दिव द्वादश सहसार तक, आन तादि इक थान ।
इन तेरह स्थानक विषैं, वाहन कहूँ सुजान ॥ ३१
गज तुरंग सिंहरु वृषभ, सारस कपिरु मराल ।
कोक गरुड मछ मोर अरू, कमल पुष्प की माल ॥ ३२

सेना सात प्रकार की लिख्यते

हाथी घोड़ा रथ सुभट, वृषभ और गंधर्व ।
नृत्य की सप्तम भेद है, ये ही सैन्य दिव सर्व ॥३३

सैन्या सात प्रकार की एक एक में सात कच्छा एक सूं दूसरी कच्छा में दुगुणी ताका व्योरा लिख्यते

चौरासी अस्सी सहस, वहतर सतर आठ ।

अरु पचास चालिस सहस, तीस वीस कर पाठ ॥३४

सर्व इंद्रों की अलग-अलग सेना का समुच्चय जोड़ लिख्यते

सात कोडि छयालिस लाख छहतर हजार भाष सात कोड
ग्यारह लाख सहस वीस आनिये।
कोडि षट् चालीस लाख सहस आठ ऊपर भाष कोडि
षट् वाईस लाख सहस तीस जानिये ॥
कोडि पांच लाख तेतीस चालीस सहस धरो शीश कोडि
चतु चौदा लाख लच्च अर्ध ठानिये।
कोडि त्रिक पचास पांच लाख साठ सहस वांच दो किरोड
छयासठ लाख सतर सहस मानिये ॥३५

दोहा—एक कोडि सतहतरो, लाख असी हज्जार।
भिन्न भिन्न सब इंद्र की, सेन्या कही विचार ॥३६

वारा इंद्र के सामानिक देव कितने कितने सो वर्णन लिख्यते

दोहा—चौरासी अस्सी सहस, वहतर सत्तर साठ।
अरु पचास चालिस सहस, तीस वीस कर पाठ ॥३६

अंग रत्तक वारह इंद्रों के कितने कितने सो वर्णन

तीन लाख छतिस सहस अरु तीन लाख अरु वीस हजार।
दो लख अट्ठासी जु सहस है दोय लाख अस्सी जु हजार ॥
दोय लाख चालीस सहस अरु दो लख इक लख साठ हजार।
एक लाख अरु वीस सहस अरु चार स्वर्ग असि असी हजार ॥३७

सैन्य अंग रत्तकादि ऊपर कहे जिनके स्थान का व्योरा वर्णनं

चार स्वर्ग चतु चतुज गल, चार स्वर्ग सु विचार।
ये ही वारह इंद्र के, स्थान करो निर धार ॥३८

सभादेव इक इक इंद्र के कितने कितने आदि सभा सू दूजी तीजी में
दो दो भाग वढ़ा लेवो सो व्योरा लिख्यते

इक इक इक इक चतु युगल, और चतु नवमा स्थान।
वारह दश वसु षट् चतु, दो इक सहस वखान ॥३६

शतक पांच अरु ढाइसै, प्रथम सभा के देव।
दूजी तीजी भाग दो, वृद्धि करो गुण भेव ॥४०

जुगल जुगल के इंद्रों की वल्लभा लिख्यते

वतीसरु वसु दो सहस, शतक पान सैं जान।
शतक ढाइसै सवा सैं, त्रेसठ दोय जुग लान ॥४१

एक एक इंद्र के महादेवी आठ आठ जिनकी विक्रियां वर्णन लिख्यते

सोलह सहसरु विक्रियां, आदि युगल में जान।
द्विगुण द्विगुण आगें करो, अष्ट युगल परमान ॥४२

देवीनि की आयु कितनी कितनी सो वर्णनं

पल्य पांच प्रथमहि सुरग, दोय दोय ग्यारहै वृद्धि।
सात सात चउ स्वर्ग में, देवी आयु समृद्धि ॥४३

काय देवनि की जुगल जुगल की कितनी कितनी सो व्योरा वर्णनं

दो दो चउ दो दो चतु, तिय तिय तिय नव पंच।
रतन सात छह पंच चतु, अर्ध अर्ध घट तंच ॥४४

आयु आठों जुगल की त्रिक ग्रैवेयक नवोतरा पंचोत्तरा की सो व्योरा वर्णन।

दोय सात दश चतुर्दश, षोडश अठारह वीस।
वा वीसहि फिर एक इक, सागर कर तेतीस ॥४५

सम्यग् दृष्टी देवायु भवन त्रिक सूं लेकर पहले स्वर्ग ताईं सो वर्णन लिख्यते

कल्प भुवन सागर अर्ध, सो सम दृष्टी होय।
व्यंतर ज्योतिष आध पल्य, आयु वृद्धि अवलोय ॥४६

अवधि अधो भाग मे कितनी सो व्योरा वर्णन

दोय दोय अरु तीन चतु, नव चौदह परमान।
अवधि विक्रिया देव की, नारकीन के जान ॥४७

देवों के अवधि काल कितना सो वर्णन लिख्यते

वर्ष असंख्यहि कोड की, अवधि प्रथम जुग लान।
पल्य भाग असंख्यात की, द्वितिय तृतिय जुग लान ॥४८

लांतवादि सर्वार्थ सिधि, किंचित् न्यून जु पल्य ।
धुजा दंड तक ऊर्द्ध मैं, अवधि धार निःशल्य ॥४६

जननांतर मरणांतर देवों के कैसे जुगल जुगल में सो लिख्यते

जनम मरन अंतर दिवे, दोय दोय तिय चउ शेष ।
दिन सातरु पक्ष मास दुग, चतु षट मास कहेस ॥५०

देवों का प्रविचार युगल का सो लिख्यते

दुय दुय तिय चउ शेष मैं, काय स्पर्श अरु रूप ।
शब्दरु मन प्रविचार फिर, अप्रविचार प्ररूप ॥५१

आहार स्वासो स्वांस अन्तर लिख्यते

जितने सागर आयु है, तितने वर्ष हजार ।
भोजन पक्ष जितने गये, स्वासो स्वांस विचार ॥५२

कौन कौन संहनन वाले जीव कौन कौन स्वर्ग में जायं सो वर्णनं

अष्टम तक षट् वार मैं, पांच सोलमें चार ।
ग्रीव तीन दुई नवोत्तरा, इक पंचोत्तर सार ॥५३

एकाभवतारी जीव कौन कौन से स्वर्ग में जाय सो वर्णनं

लोक पाल सौ धर्म शचि, लौकांतिक दक्षिणेंद्र ।
एका भवतारी कहे, सरवारथ सिद्धेंद्र ॥५४

लौकांतिक देव वर्णन दिशा विदिशान के लिख्यते

सारस्वत आदि त्यवन्हि, अरुण और गदि तोय ।
तुषितरु अव्या वाध है, अरु अरिष्ट दिशि जोय ॥५५

दिशा विदिशान के वीच में जो लौकांतिक नाम है सो वर्णन लिख्यते

अग्न्या भरु सूर्याभहै, चंद्रा भरु सत्याभ ।
श्रेयस्कर क्षेमंकरा, वृष भेष्टरु कामांध ॥५६

सोरठा—निर्मण रज्जा जांन, दिगंत रक्षित मानिये ।
आत्मा रक्षित सर्व, क्षिति भरु तरु वसु अश्व विश्व ॥५७

चार प्रकार के देवों में लेश्याओं के भेद कैसे कैसे सो व्योरा वर्णनं

कृष्ण नील कापोत भवन तक और जघन्य पीत के अंश ।

दोय स्वर्ग मैं पीत जु मध्यम तीजे चौथे उत्कृष्टंत ॥
और पद्म के जघन्य अंश है पंचम दश तक पद्म मध्यंश ।
पद्मोत्कृष्ट ग्यार बारम मैं और जघन्य कहे शुक्लंश ॥ ५६

स्वर्ग चर्चा का खाते वंध समुचय छंद लिख्यते

नाम क्षेत्र संख्या विमान और चैत्यालय भाग भेदध्रवा
जान दिशि विदिशि मानिये ।
प्रकीर्णक संख्या संख्य मोटाई आधार रंग पटल और
इन्द्रक देव्योत्पत्ति आनिये ॥
इन्द्र और प्रत्येन्द्र और इन्द्र स्थान मुकट चिन्ह वाहन
अरु सैन्या सामानिक जानिये ।
अंग रक्ष सभा देव वल्लभारू महादेवि विक्रियारू आयु
काय अवधि परमानिये ॥ ६०

दोहा—जनन मरण प्रविचार अरु, स्वासो स्वांस अहार ।
संहनन लेश्या आगती, लौकांतिक विस्तार ॥ ६१

इति कल्पवासी देवों की चर्चा सम्पूर्णम् तथा चार प्रकार देवों की चर्चा सम्पूर्ण हुई ।

मध्यलोक में असंख्याते द्वीप समुद्र तिनमे सोलह आदि के सोलह अन्त के द्वीपों का नाम लिख्यते

सवैया—जम्बू द्वीप धातु की पुष्कर अर वारुणी क्षीर वर घृतवर इक्षवर मानिये । नन्दीश्वर अरुण अरु अरुण प्रभास द्वीप कुंडरवर शंखवर रुचिकवर जानिये ॥ भुजग और कुसवर क्रौंचवर द्वीप ये आदि के सोलह इनको परमानिये । मैनसिल हरताल सिंधु अरु श्याम द्वीप अंजनारु हिंगुला रूप्य ता वखानिये ॥ १

दोहा—स्वर्ण वज्र वैडूर्य मणि, नाग भूत यक्ष देव ।
अहमिंदर स्वयंभू रमण, अंत कह्यो जिन देव ॥ २

इति बत्तीस द्वीपों के नाम संपूर्णम् ॥

मध्य लोक के ढाई द्वीप में जो जो रचना है तिनके नाम लिख्यते

छंद---द्वीप अढ़ाई पंचमेर हैं पैंतिस क्षेत्र कुलाचल तीस।
तिस भोग भूम नरह कर्म भू आर्य भूमिसो सत्तर दीस॥
शतक आठ पच्चास म्लेच्छभू इकसो साठ विदेहक हीस।
भरतैरावत पंच पंच दश देवारण्य भूतार्ण्य वनीस॥ १

साढे चारसै मूल नदीद्रह शतक तीस नंदी परवार।
लाख नवासी साठ सहस है साढे चारसै कुंड विचार॥
साठ विभंगा सत्तर महानदि तीनसै वीस विदेह मझार।
इकसौ सत्तर उप समुद्र इति रूपाचल वृषभाचल सार॥ २

वीस नाभिगिरज मक्र मेरुवन वीस वीस गज दंत विचार।
दिग्गज चालिस असिवक्षारगिर कंचन गिरहै एक हजार॥
जंबूं शाल्मली दश जानों पर्वत चार जु इष्वाकार।
सर्व शैल पनरहसै उनसठ आगैं लिखूं कूट सुविचार॥ ३

विजयारध के सर्व कूट है पनरह सै अरू तीस विचार।
दो सै अस्सी कूट कुचाल तीनसै वीस कूट वक्षार॥
इक शत साठ कूट गजदंता षोडश कूट जु इष्वाकार।
एक हजार आठ पाताल तेतिस पर्वत लवण मझार॥ ४

दोहा---और कुभोग भू छयानवै, लवणोंका लो जान।
स्थूल अढाई द्वीप की, रचना कही वखांन॥ ५

इति सम्पूर्णम्॥

विदेहों के नाम बत्तीस लिख्यते

श्लोक---कच्छासु कच्छ महा कच्छा, चतुर्थी कच्छ कावती।
आवर्त्ता लांग लावर्त्ता, पुष्कला पुष्कलावती॥ १
वत्सा सुवत्स महावत्सा, चतुर्थी वत्स कावती।
रम्य सुरम्य काचैव, रमणी मंगला वती॥ २
पद्मा सुपद्म महा पद्मा, चतुर्थी पद्मकावती।
शंखाचलिनाचैव, कुमुदा सरिदा तदा॥ ३

वप्रासुवप्र महावप्रा, चतुर्थीवप्र कावती ।
गधाचैव सुगंधाच, गंधिला गंधि मालिनी ॥ ४

इति सम्पूर्णम् ॥

विदेह क्षेत्र की नगरी के नाम लिख्यते

क्षेमा क्षेमं पुरीचैव, रिष्टारिष्ट पुरी तथा ।
खङ्गाच मंजुपाचैव, औषध्या पुंडरीकणी ॥ १
सुसामा कुंडला चैव, अपराजित प्रभंकरी ।
अंका पद्मावती चैव, शुभाच रत्न संचया ॥ २
अश्वपूर्यां सिंहपूर्यां, महापुर विजयापुरी ।
अरजा विरजाचैव, अशोकावीत शोकहा ॥ ३
विजया वैजयंतीच, जयंति अपराजिता ।
चक्रापुरी खङ्गपुर्यां, अयोध्या अवध्या तथा ॥ ४

इति सम्पूर्णम्

षोडश व क्षार गिर के नाम वर्णनं

चित्रकूट अरु पद्मकूट है नलिन एक शैला जु विशाल ।
अरु त्रिकूट वैश्रवणरू जानो अंजनात्मा अंजनमाल ॥
श्रद्धावानरु विजटावानं आशीविष जु सुखा वह माल ।
चंद्रमाल अरु सूर्यमाल है नागमाल अरु देवहिमाल ॥ १

इति सम्पूर्णम् ॥

बारह विभंगा नादयों के नाम विदेह में है तिनके नाम वर्णनं

गांधवती द्रहवती पंकवती तप्तजला मत जला निहार ।
उन्मत जला क्षारोदा सप्तम सीतोदा अष्टम निरधार ॥
श्रोतृ वहिन गंभीर मालिनी फेन मालिनी ग्यारम सार ।
उर्मिमालिनी नदी विभंगा द्वादश कही विदेह मझार ॥ १

इति सम्पूर्णम् ॥

आर्त्तध्यान के भेद चार तिनके छन्द वर्णनं, पहिला अनिष्ट संयोगज आर्त्तध्यान लिख्यते

नाश करण वाले तन धन के पुत्र कलित्र मित्र ग्रहयान ।

तथा दुष्ट बांधव कलित्र सुत राज पडोसी शत्रु ग्रहान ॥
राक्षस सिंह व्याघ्र अहिमूषा कीड़ा उटकन बीछू स्वांन ।
अग्नि चोर जल रोग दलिद्ररू नीच दीनकुल असमर्थान ॥ १

दोहा--- इन अनिष्ट संयोग में, मत कर आरत ध्यांन ।
सम भावन सूं सहन कर, कर्म्म निर्जरा दांन ॥ २

छंद----भोज्ञानी तुम ऐसा सोचो परभव में धनहर स्त्री वाल ।
कीन अन्याय कलंक लगाया शीलवंत त्यागी वृषपाल ॥
खोटा मार्ग विषय विकथा अरू देव द्रव्य खाया निर्माल ।
वोही पाप उदय अब आया अब मैं धारूं समता ढाल ॥ ३
अब अनिष्ट संयोग मिले है इनतैं असंख्यात गुणधार ।
नरक और तिर्यंच मनुष्य में भोगे दुःख अनेक प्रकार ॥
जन्म दरिद्ररू भारा रोपन मारन छेदन शीत क्षुधार ।
वात अग्नि जल भय इत्यादिक पाये दुःख मैं वारंबार ॥ ४

इष्ट वियोग आर्त्तध्यांन के भेद वर्णन लिख्यते

पुत्र कलित्र मित्र वहु संपति राज्य भोग ऐश्वर्य स्थान ।
यश सौभाग्य जीविका जीवन गेह पदस्थ सुक्ख धनधान ॥
इत्यादिक वियोग में मूर्छा भ्रम विलाप शोकरू रुदनान ।
तथा कूप पर्वततैं पड़कर विष भक्षण तैं घात करान ॥ १

दोहा---ऐसे इष्ट वियोग मैं, मत कर आरत ध्यांन ।
सुक्ख होय दोऊ लोक मैं, यह निश्चय कर जांन ॥ २

छन्द----भो ज्ञानी तुम येही विचारो जो संयोग हुवा संसार ।
निश्चय कर वियोग होयगा कोइ न ताकूं राखन हार ॥
मात पिता वल इंद्र नरेंद्ररु यंत्र मंत्र औषध विस्तार ।
जो वियोग होय अपने तनका तो स्त्री सुत की कौंन सम्हार ॥ ३
मात पिता सुत भ्रात मित्र घर रतन संपदा देश मकांन ।
स्त्री स्वामी सेवक सुखदाता तो क्यों होते जुदे जहांन ॥

तातैं इष्ट नहीं ये तुमकों तुम क्यों इनको शोच करांन ।
तातैं वृष भज तज ममता कौं होय नित्य नये सुक्ख महांन ॥४

तीसरा पीड़ा चिंतवन आर्तध्यान के भेद वर्णन लिख्यते

कांस स्वांस ज्वर वात पित्त कफ कोढ खाज व्रण उदर विकार।
आम वात विस्फोटक गुल्मरु ववासीर संग्रहणी धार ॥
उरोदर प्लीहोद गुदोदर वात्तोदर प्रमेह अतिसार ।
मस्तक नेत्र कर्ण उर शूलरु छिर्दरु कंपन वहु गद धार ॥१

दोहा—रोग वेदना तैं वड़े, कोटीभट महा शूर ।
सहते कोट्यहि शस्त्ररण, तिनके धीरज चूर ॥ २

छंद – हे प्राणी तुम ये ही चितारो, पंच परावर्तन के मांहि ।
देव मनुष पशु नर्कन मांही कोनं कोन दुख पाए नांहि ॥
जो कुछ कर्म्म उदय अव आया धीरज धार सहो मन मांहि ।
इहां सर्व सामग्री परिजन परभव मैं तुम किम जु करांहि ॥३
पांच कोड़ अरु लाख जु अडसठ सहस निन्यानु शतक पंचाश ।
अरु चौरासी रोग नर्क में एकै काल सहे वहु त्रास ॥
धीरज धार धरो उर समता तातैं होय सुखालय वास ।
तथा चार चतु वारह भावन भावत होय कर्म को नाश ॥४

चौथा निदान वन्ध आर्तध्यान का भेद लिख्यते

देव भोग अपछर नृत्यादिक रूप भाग ऐश्वर्य सुधाम ।
महल राज्य सुख सेज्या आसन वस्त्रा भरणरु कोमल वाम ॥
कोमल तन भोजन नानारस विद्या लाभ कुटंव शुभ नाम ।
आज्ञा विजय उच्चता जीवित धन सुत सेवक स्वामी ग्राम ॥ १

दोहा—आगामी वांछा करन सो है आर्त्त निदान ।
पुन्य नाश कारन सही, अरु संसार भ्रमान ॥ २

छन्द—हे प्राणी निश्चय उर आनो पुन्य वंध निर्वाछक भाव ।
तातैं छोड निदान पुन्य भज यातैं होय विकल्पा भाव ॥

चाह दाह में जीव अनंते कटै वलै अरु मरैं कुभाव।
तो भी चांह दाहनें पूरन तातैं धर संतोष सुभाव ॥ ३
नंतानंत पुरुष पृथ्वी मैं रूप वंत संपत वल वीर।
राज्य कुटंव भाग्य ईश्वरता ते भी खाये काल गहीर ॥
तातैं समझ देख मन मांही तृष्णा पूर्ण होय नहिं वीर।
यातैं वृष भज तजे निदान को मुक्ति रमा आवै तुझ तीर ॥ ४

रौद्र ध्यान जिसमे हिंसा नद रौद्र ध्यान का भेद वर्णन लिख्यते

दुष्ट स्वभावी नास्तिक क्रोधी हिंसा शक्त पाप परवीन।
जल थल नभ विल जीव मारने मैं उत्साह होय तल्लीन ॥
चर्म्म नेत्र नख दंतरु इंद्री जीभ उपाउन हर्ष धरीन।
अग्नि जलावन नीर डुबोवन पर्वत गेरन बुद्धि करीन ॥ १
ताडण मारण छेदन त्रासन हाथ पांव काटन स्वच्छन्द।
कटते मरते छिदते भिदते जीव देखकर होय अनंद ॥
जीव परस्पर लड़वाने मैं जीति हार संग्राम नरेन्द्र।
निर्दयता कर शस्त्र वान धर पापोपदेश देंन कु कवेन्द्र ॥ २
दुःख शोक भय विघ्न आपदा अरु अपमान देख आनंद।
सुखी गुणी यश कीर्ति उच्चता ईर्षा क्लेश करै मति मंद ॥
पृथ्वी जल अरु अग्नि वनस्पति पंवनारंभ करै स्वच्छंद।
भक्षाभक्ष विवाहरु भोजन गमना गमन ठांन आनंद ॥ ३
दाइया दार दुष्ट वैरी मुझको समर्थ तिन मारन खास।
कौंन ज्योतिषी मंत्री तंत्री को रागी को वैरी जास ॥
जो कदाचि अरि मर जावै तो द्यूं भोजन ब्राह्मण गौ ग्रास।
तथा दान पूजा अरु उत्सव देवतान का करूं प्रकाश ॥ ४
इस वैरी नैं धन धरती गृह कुटंव जीविका धन हर लीन।
तथा हास्य निन्दा अपवादरु झूंठ कलंक लगाय जुदीन ॥
कहा करूं मुझ शक्ति विगड़ गई निःसहाय निर्धन हो दीन।

जब मेरा अवसर आवैगा करूं मैं ऐसा जमन करीन ॥ ५
इस देखें मुझ हृदय जलै है कहा करूं कुछ वनि नहि आहि ।
जराभि मेरा वक्त जु होता कभी न रखता जीता याहि ॥
मारूं याकूं परभव तांई कोई न कोई दाव लगाय ।
हे भगवान करो तुम ऐसा ये वैरी जलदी मर जाय ॥ ६
जीवन मेरा जभी सफल है जो वदला लूं अपनें हाथ ।
मारूं खूब त्रास दे करकैं तथा कुटंव मारूं इस साथ ॥
इस फिकर मैं उठूंरु वैठूं विपन मसान फिरूं दिन रात ।
जो कोई भूत पलींत मसानी मिलै तो भेजूं वैरी साथ ॥ ७

मृषानंद रौद्र ध्यान के भेद वर्णनं

झूंठ कला कर राज्य द्वार मैं तथा देव गुर द्वार वजार ।
पंडित सभा तथा वुध जन में वोलूं झूठ कभी नै हार ॥
धूर्त कला चौसठ मैं जानूं सांचे को झूंठा कर मार ।
निंदा झूंठ वचन चुगली कर दे विस्वास लेउ धन सार ॥ १

चौर्यानंद रौद्र ध्यान का भेद वर्णनं

किसकी अब मैं करूं खुशामद गिरा पडा भूला भू मांहि ।
तथा धरा धन राज प्रजा का भेद लगाकर घात लगांहि ॥
चोर कला छत्तीस निपुण मैं कहीं भी धन हो लाऊं ताहि ।
क्यों उद्यम कुछ नहीं फिकर मुझ कोठ्यां धन इक दिन में लांहि ॥१

परिग्रहानंद रौद्र ध्यान का भेद वर्णनं

महल मकान चित्रशाला अरु काम क्रीडन नाट्य ग्रहान ।
स्वर्ण थाल पट्रस के भोजन अरु छत्तिस विधि के पकवान ॥
रत्न स्वर्ण चांदी के खंभा तथा सेज हिंडोल करान ।
वाग वगीचा चदर फुवारा जल क्रीडन के हौज वखांन ॥ १
कौमल वस्त्र जरी रेशम के तथा विछायत परदा तार ।
सोनै चांदी के गृह भाजन तथा सुगंध पुष्प फल सार ॥

हाथी घोड़ा रथरु पालकी तथा भोर पंखी जल धार।
सेवक मित्र कलित्र पुत्र धन नाती पोता गोत्र परिवार ॥ २

चतुर्गति के दुक्ख वर्णनं

थिति निगोद में नादि काल सूं जन्म मरण अष्टा दश स्वास।
भूमि नीर अरु अग्नि पवन तरु इनमें दुःख सहे वहु त्रास ॥
खोदन फोडन रगडन सोषन ज्वलन पछाडन पशु नर प्यास।
जल विष तैल चीर घृत दावन वृक्ष वीजणा भीत विनास ॥१

दोहा—चोटन काटन भक्षणं, छेदन रांधन ज्वाल।
तैल चार सूकन किरन, पीसन दुःख विशाल ॥ २

द्वितीय विकलय दुःख का वर्णनं

कफ मल मूत्र रु कूडा जल घृत तैल दुग्ध मधु अग्नि समीर।
उपल ठीकरा माटी दीपक आंधी मेह गुडा गुड खीर ॥
भूख प्यास कर शीत उष्ण धर पाद त्रान पछाडन चीर।
हलन चलन पीसन घिस खोदन रांधन कटन सही वहु पीर ॥ ३
सींग पूंछ खुर घोडा वैलरु गाड़ी वलध तलै दव जाहि।
फल तरू फूल अन्न मेवा कर तथा चलित रस मोरी मांहि ॥
सर्प विस्मरा चिडी काक अरू नभ जल थल के जीव चुगांहि।
इत्यादिक विकलत्रय के दुख जीव दयाविन वहुविधि पांहि ॥ ४

जलचर जीवों के दुःख का वर्णनं

धीमर जाल यंत्र कांटा कर जीव सहित काढे झुलसान।
धूप सुकावन रांधन छोंकन भय अरू भूख करै संधान ॥

थल जीवों का दुःख वर्णनं

वन जीव क्षुधा तृषा कर शीत उष्ण वर्षा ओलान।
तडित शिकारी पारधीन कर सिंह व्याघ्र चीता अरू स्वान ॥ ५
मारन चीरन काटन रांधन क्रुरता मर्म स्थान विदार।
पग अरू जीभ पूंछ काटन कर तथा दंत तन चर्म उपार ॥

यंत्र जाल फांसीरू पिंजरा रस्सी सांकल विष हर ताल ।
रोग शोक भय करकै अहिनिशि छुपे रहै गिर कोटरू खार ॥ ६

नभचर जीवों का दुःख के वर्णनं

नभ चर जीव वाज शिकरा कर वागल घुग्घू सुन मार्ज्जार ।
तथा शिकारी पारधीन कर चीरन रांधन पांव उपार ॥
तथा शीत अरू उष्ण पवन कर ओलां मेह वैठ तरू डार ।
तथा अचार तेल मे तलकर वाधरि थैली वेच वजार ॥ ७

घरेलू पशु जीवों का दुःख का वर्णनं

पशु घरेलू हाथी घोडा ऊंट वलध भेसा खर जान ।
वधिया हाडरू नांक फोड कर कडी जंजोर रू रज्जू वांन ॥
शीत उष्म वर्षारू विजली ओला चोट सहै गंधान ।
लादन जोतन आर चामडी लाठी चावुक मर्म स्थान ॥ ८

पीठरू कंधा नांक गलन कर जरा रोग मंजिल कर दूर ।
लवण धातु अरू पत्थर चूना ईंट वोझ कर तन चक्र चूर ॥
पांव हाथ टूटन कर वन में गिर खाडा दल दल जल पूर ।
वग मच्छर अरू मांखी वीछूं काटै शुन अरू पंखी क्रूर ॥ ९

नर्क गति के दुःख का वर्णनं

मारन तारण छेदन भेदन ओंटावन रांधन झुलसान ।
पेलन चीरन काटन पीसन गोदन भक्षण भाड़ भुनान ॥
पाक पकावन देह विदारन नेत्र उपाटन डाह लगांन ।
कूटन और पछाडन वांधन लटकावन अरु फांसी तान ॥ १

नर्क के शस्त्रनि को वर्णन

मुद्गर मूसल भाला फर्सी चक्र करोंत छुरी तलवार ।
वांन वसूला और कुल्हाडी गह दंड अरु वर्छी धार ॥
कोलू घानी घट्टी भट्टी लोह पूतली ऊखल भार ।
जल अग्नी समीर गिरा शाल्मलि सिंह स्वान पक्षी भयकार ॥ २

कौन पाप करके मनुष्य नर्क में जाय ताका वर्णन

वह्वारंभी परिग्रही अरु हिंसक धर्म द्रोही स्वामि।
मित्र द्रोही विश्वासघाती और कृतघ्नी धन हरवाम॥
यती घात अन्याय मार्गी वन तरु घास जलाये ग्राम।
जीभ लोलपी मद्य मांस मधु कुगुरु कुदेव कुधर्म नमामि॥ ३
जूवा चोरी झूंठरु वेश्या अभक्ष भक्षी तीव्र कषाय।
क्रोधी मानी लंपटता कर कल्पित ग्रन्थ रचे दुखदाय॥
मृगयाकर अरु यज्ञ होम कर निशि भोजन आरंभ कराय।
युद्ध करन अरु आतिशवाजी पापोपदेश निपुणका थाय॥ ४

मनुष्य गति के दुःख का वर्णन

मनुष्यगति में गर्भ दुःख अरु जन्मत मातपिता मरजाय।
पर उच्छिष्ट क्षुधा तृषा कर दासपना अपमान कराय॥
लवण तेल घृत धातु मृतिका उपल कालत्रय स्थान धराय।
भूंख प्यास कर बीस कोस की दीर्घ भार धर मजल कराय॥ १
पेट भरन के कारण उद्यम वस्तर धोवें छापैं रंग।
सीमें तूमें बुनेंरु पीसें दलेंरु खोटें बुनें पलंग॥
घासरु लकड़ी कंडा भांडे बेचें ढेर बनाय उतंग।
चीरें फाड़ें काष्ट बुहारे ढोवें मल मूत्तर जन अंग॥ २
स्वर्णकार कुंभार लहाररु भड़भूंजा भट्टी चलवान।
चोरी छल अरु झूंठरु चुगली घर घर मांगत रुदन करान॥
रस्ता लूटन कर संग्रामरु विषम वनी अरु उदधि महांन।
चित्रकार वादित्य गीत नृत्य नीच राज्य सेवा जु करान॥ ३
गुड अरु खांड तेल घृत लवणरु मेवा औषधि अरु पकवान।
माणिक मोती स्वर्णरू चांदी लोहां तांबा पीतल आन॥
जूवा रोपण गुमास्तगीरी करै दलाली कष्ट करान।
कोई महंत कोई गुरूशिष्य हो कोई दीन हो पेट भरान॥ ४

केई मनुष्य अत्यंत दुखी है रस नीरस अर्ध उदर भरान।
तथा एक अरू दोय तीन दिन अंतर भोजन मिलैं अखान॥
रोकन बांधन बंदीग्रह में हितू वियोग रोग दुरध्यान।
अंधा लूला बधिर पांगला गूंगा मूर्ख विकल अंगान॥ ५
कलहकारिनी अंधी लूली कटुक भाषिनी विडरूपान।
बहु कुपुत्र पुत्री विडरूपी रोगी भूंखे रुदन करान॥
भाई दुष्ट महावैरी अरू दुष्ट पडोसी होय बलवान।
लोभी दुष्टी क्रोधी कृपणी औ गुणग्राही स्वामि मिलान॥ ६
दुष्ट कृतघ्नी और अधर्मी सेवक आज्ञाकारी नांहि।
राजा मंत्री कोतवाल अन्याय मार्गी दुष्ट मिलाहि॥
वृद्ध उमर में स्त्री मरनें का छोटे बालक रुदन कराहि।
पराधीन कर खान पान हो निर्धनता कर दुःख धराहि॥ ७
आंधी लूली लंगड़ी पुत्री और कुरूपी अति दुखदाय।
तथा गुणवती पुत्री का गुणवान जमाई मरण कराय॥
मातपिता के मरने का दुख धन होते निर्धनता थाय।
माथैं ऋण अरू सुतहोय व्यसनी तथा गुणीसुत मरण धराय॥ ८
मित्र होयकै छिद्र प्रकाशै अर कलंक अपजस लग जाय।
देशनिकाला राज्यदंड अरू पंचदंड हो मरण कराय॥
इत्यादिक ये मनुष्य गति के बहु दुख पाये धर परजाय।
तातैं भवि समता उरधारो दुक्ख नाश हो सुक्ख लहाय॥ ९

इसी जीवनें गर्भवास में तथा जन्मकाल में तथा योवन अवस्था में
. जो दुख पाये तिनका वर्णन, गर्भ के दुख का वर्णन

छंद—गर्भाशय में जिय आवै, नारक सम बहु दुख पावै।
साढे त्रय कोड सुई को, कर तप्त छेदें तन कोई को॥ १
जो दुःख होय तन मांही, तासूं अठगुन दुख पांही।
मल मूत्र स्थान विच रहता, मुख अधो दुःख बहु सहता॥ २

चावल सम चौदह दिन का, चेंटैं सम इक्किस दिन का।
तहां कर पद नाहि पसारै, रुधिरादि करहि आहारै ॥ ३
यों नव दश मास बढ़ै है, फिर निकसन पीड सहे है।
जन्मत जिय संकट पाया, जिम यंत्री तार कढाया ॥ ४
मल मूत्र रुधिर लिपटाई, तडफै रोवै भू माई।
नाहीं शक्ति हलन चलन की, पय पान दुःख मेटन की ॥ ५
मच्छर मांखी क्रिम खटमल, चोंटैं तन रोवै पलपल।
मल मूत्र चाहे सोई खावै, ताकर तन रोग बढ़ावै ॥ ६
दूखै उर शिर तन गर्दन, नहि जान सकै कोई शिशुमन।
समझै भूखा पितु माता, प्यावै पय औषधि साता ॥ ७
इह विधि दुख बालकपन को, फिर यौवन स्त्री सुत धन को।
विउरूप कलहनी नारी, सुत जुवारी चोर लवारी ॥ ८
वहु सुता अंध विउरूपा, पाडोसी भ्रात दुख कूपा।
भोजन धन वस्त्र भिखारी, मांगै पर देवैं गारी ॥ ९
तन रोग करज शिर भारी, अपमान करहि नर नारी।
क्षुतृट् शीतोस्नहि दुःखं, यों यौवन में नहि सुःखं ॥ १०
फिर वहु दुख वृद्धापन को, प्रत्यक्ष जु है नेत्रन को।
दृग अंध श्रवण वहिरापन, मुख लाल श्रवै तन कंपन ॥ ११
अन आदर सब परिवारा, सुत मित्र भृत्य हितु दारा।
कफ खांसी करत उफै है, सयनाशन पीर सहै है ॥ १२
मांगै जल कोई नहिं देता, सब चाहै कब यह मरता।
कोइ पकड़ बैठाय उठावै, तो भी कुछ बात न आवै ॥ १३
स्त्री सुत बांधव परिवारा, पूंछै कहाँ द्रव्य तुम्हारा।
जो कुछ कहुँ होय बतावो, तुम तो परलोक सिधावो ॥ १४
वो हैं कंठागत प्राणा, कुछ कसिनकै दुख माना।
यों वृद्ध अवस्था मांही, दुख भोगे मरण करांहीं ॥ १५

इति तीनों पन के मनुष्यों के दुःख सम्पूर्ण ॥

मनुष्य पर्याय के और भी दुःख का वर्णनं

गर्भवास जन्मत्रास मातनाश दुखभरं,
उच्छिष्टग्रास रोग रासक्षत्पिपास कर मरं।
दरिद्र पास सुत कुभास स्त्री विनास घर जरं,
कुदेश वासधन न पास दुष्टत्रास भय करं ॥ १

देवगति के दुक्ख का वर्णनं

देवनि के भी मानसिक दुःख अन्य महर्धि देव दुख होय।
मित्र वल्लभा वियोग को दुख इष्टवियोग शोक दुख जोय॥
वाहन अरु अपमान हौन का आज्ञा अरु ऐश्वर्य न होय।
एक स्थान में खड़े होन का इंद्र सभा प्रवेश नहिं होय ॥ १
अवधि विक्रिया विभव ऋद्धि को देखैं हीन अधिक उरमांहि।
मुरझावैं षट्मास प्रथम हीं माला ताकर रुदन कराहिं॥
देवलोक तें च्यवन होन का थावर पशु गर्भ दुख पांहि।
इत्यादिक दुख देवगती के कहूँ नहीं सुख चतुगति मांहि ॥ २

इति सम्पूर्णम् ॥

यह गृहवास महा दुःख का कारण है सो वर्णनं

यह गृहवास हेतु ममता का आशा लोभ वढावन हार।
अरु कषाय की खांन जीव के पीडा करन तथा उपकार॥
निरंतर त्रस थावर हिंसा सचित अचित वहु धन परिवार।
मन वच काय वृद्ध करने में तथा परिश्रम वहुत प्रकार ॥ १
सारासार अनित्या नित्यहि शरनाशरण अशुचि शुचिजान।
दुःखा दुःखं हिताहित आश्रय अन आश्रहि अनमित्रहि मान॥
महादुखी घर में तिष्टै हैं लोह पींजरैं सिंह महान।
मृग व्याघ्रन में गज कर्दम में वंदीग्रह में चौर रहान ॥ २
पक्षी मच्छ जालमें जैसें तथावधिक घर में पशु जान।
रागरूप जहाँ सर्प वसै है चितारूप डाँकिनी जान॥

शोकरूपल्याली जहाँ तिष्ठै क्रोधरूप अग्नी परजाल।
कुटंब वियोग वज्रकर खंडित आशारूप लतावंधान ॥ ३

लाभा लाभ वांधा कर वेधित अपजस रूप मैल लिपटाय।
माया रूप वधू आलिंगन मोह रूप गज घाति कराय ॥
तिरस्कार कुल हाड विदारत पाप शिकारी मार गिराय।
भीम रूप सांकल कर मंडित ईर्षा स्त्री सूं प्यार कराय ॥ ४

परिग्रह रूप पिशाच ग्रहै है मान रूप राचस दुख देय।
जहां असंयम सन्मुख होय है कर्म नाश कारण नहि भेय ॥
नाना योंनि भ्रमण को कारण मुक्ति द्वार आगल धर देय।
या प्रकार ग्रहवास दुःख की खांन जान कर त्याग करेय ॥ ५

व्याधि पसाया जाल मृगन को तव कोइक मृग भाग्यो दूर।
अपनें संगी फंसे देखकैं फिर तिनमें आयो वुधि चूर ॥
जैसें पची पिंजरे छूट्या बाग बगीचे कूं चहुँ घूर।
फिर स्वयमेव स्थान तृष्णा कर पड्यो पींजरे में दुख पूर ॥ ६

जैसें हस्ती फस्या जु कर्दम ताकूं गज बल दंत निकाल।
फिर स्वयमेव फस्या दल जल में जल तृष्णा करवहु दुख शाल ॥
ज्यों कोइ तरु में आग लगी जदभच्ची भागें छोड़ घुशाल।
उड़ चहुँ ओर देख घुसले को जलता जान पड़े उस ज्वाल ॥ ७

अहिंसा विषय वर्णनं

देव मंत्र पर्व्वी औषधि कौ जैनी हिंसा नाहिं करांहि।
संकल्पी त्यागै जु सर्वथा ह्वै उदास आरंभ धरांहि ॥
चूल्हा चाकी द्रव्योपार्जन आसन वाहन गेह बनांहि।
गमन विवाह चैत्य पशु पालन हिंसा को संकल्प आंहि ॥ १

प्रमत योग प्राण व्यपरोपण सो हिंसा है जिन मत मांहि।
रहित प्रमाद प्रवर्त यतन सूं प्राण घात तोउ हिंसा नांहि ॥

नहीं करै हिंसा फल भोगें करें जु हिंसा फलनें पाहि।
एक करैं भोगें अनेक वा वहुजन कर फल एक लहांहि ॥ २
अल्प करैं वहुफल को भोगें वहुत करैं फल अल्प लहांहि।
करैं नहीं पहिले फल भोगें कोई करत करत फल पांहि ॥
करैं नहीं फल पाप भोगवैं करैं जु हिंसा पुन्य लहांहि।
यों जिनेंद्र का मार्ग गहन वन अज्ञानी नहिं पार लहांहि ॥ ३

इस ससार में जप तप धर्म दान पूजा है सो अहिंसा ही है

अहिंसा ही धर्म है, अहिंसा ही धन है।
अहिंसा ही सुक्ख है, अहिंसा ही दान है॥
अहिंसा ही मोक्ष है, अहिंसा ही यज्ञ है।
अहिंसा ही मंत्र है, अहिंसा ही ध्यान है॥
अहिंसा ही माता है, अहिंसा ही पिता है।
अहिंसा ही प्रेम है, अहिंसा ही प्राण है॥
अहिंसा ही राज्य है, अहिंसा ही वल है।
अहिंसा ही नीति है, अहिंसा ही ज्ञान है॥ १

दया पालने के वीस विसे है जिसमें सवा विसे दया पालना ही मुशकिल है

वीस विसे स्थावरत्रस हिंसा ये ही त्रिस दश विसवे पाल।
तिसमें भी संकल्पी आरंभ पांच विस संकल्पी टाल ॥
संकल्पी में निरअपराधी अपराधी ढाई विसवे टाल।
निर अपराधी सहित अपेक्षा सवा विसवे निरपेक्षा टाल ॥ २

इसी छन्द की प्राकृत गाथा वर्णनं

जीवा सुहमाथूला संकप्पारंभ भवे भवे दुविदा।
सपराह निरपराहा सापेक्खाचेव निर पेक्खा ॥ १

आगे दयाधर्म के जाने विना सर्व जप तप व्रत निरर्थक है तातैं दयाधर्म की शोभा कहिये है

दोहा—सर्व व्रतन की आदि ही, जीव दया व्रत सार।

दया सारिखो लोक में, नहिं दूजो हितकार ॥ १
दया मूल सब धर्म्म को, दया समान न और ।
दया एक ही पालिये, सर्व व्रतनि शिरमौर ॥ २
दया दया सब कोइ कहै, मरम न जानें कोइ ।
हिंसा में धर्म्म जु गिनैं, दया कहां तें होय ॥ ३
दया दया जग कहत हैं, भेद न जानैं कोय ।
अन छानों पानी पियें, दया कहां ते होय ॥ ४
दया बड़ी सब जगत में, ये नहिं जानें कोय ।
रात्रि पड़े भोजन करैं, दया कहां ते होय ॥ ५
दया धर्म कीजे सदा, यही बात सब जान ।
पै नहीं तजै अभक्ष को, दया कहां ते आंन ॥ ६
दया बिना करणी वृथा, यह भाषैं सब लोक ।
न्हावै जनगालै जलं, बांधे अघ को थोक ॥ ७
व्रत जु करैं एकादशी, दिवस छांडि निशि खांहि ।
कंद मूल, बदरी फला, खावैं धर्म कहांहि ॥ ८
दया धर्म मुख से कहै, मद्य मांस मधु खाँहि ।
ते प्राणी नर्कहि पडैं, कभी न सुक्ख लहांहि ॥ ९
दया परम ही धर्म है, कहै सकल जन एह ।
पर धन पर तिय जे हरैं, दया कहाँ ते लेह ॥ १०
दया धर्म मुख से कहै, अरु पशु घात कराँहि ।
ते दारुण दुख नर्क में, सहैं जु मिथ्या नाँहि ॥ ११
दया समान न धर्म को, यह गावै संसार ।
पर द्रोह चुगली करै, कैसैं दया जु धार ॥ १२
दया नाँहि परमत विषैं, दया जैन ही माँहि ।
बिना फैन यह जैन है, यामें संशय नाँहि ॥ १३
बिना जैन मत यह दया, दूजै मत दी खैन ।

दया मयी जिन धर्म इक, कहीं न हिंसा वैन ॥ १४
दया दोय विधि जन मत, कही स्वपर भगवांन।
स्वदया रागादिक कहने, जीव दया पर जान ॥ १५
दया मात सब जगत की, दया सर्व जग सार।
दया परम सुख कारणी, दया जगत उद्धार ॥ १६
दया सु गुण की वेल है, दया सर्व सुख खांन।
जीव अनंता सीझया, दया तनें परमान ॥ १७
जो कवहूँ पापांण जल, अरु पश्चिम ऊगै भांन।
शीतल गुण हो अग्नि में, हिंसा धर्म न जान ॥ १८
धरा पीठ उलटै कही, सूर्य अस्त दिन भान।
कमल होय पापांण पर, हिंसा धर्म न जान ॥ १९
काहै के वे देवता, करैं माँस आहार।
तिनकों पूजैं जे कुधी, जावै नर्क मझार ॥ २०
महिमा जीव दया तनी, जानै श्री भगवांन।
गणधर भी कहि ना सकैं, पै चतु ज्ञान निधान ॥ २१
कहि न सकैं इन्द्रादि सुर, कहि न सकैं अहमिंद्र।
कहि न सकैं जिन भारती, कहि न सकैं जु मुनीन्द्र ॥ २२
कहि न सकैं पाताल पति, जिह्वा कोटि लगाय।
महिमा जीव दया तणी, हम पै वरणि न जाय ॥ २३

इति सम्पूर्ण ॥

सत्य का विषय वर्णनं ॥

ऐसा वचन कभी मत वोलो सांच झूंठ हो स्वपर विगार।
जा वच भय दुख शोक कलह धन हानि जीविका देशनिकार ॥
कर्कश भंडनीच कुल नास्तिक मर्म छेद रे तूं अपकार।
वोलो हितमित मधुर शास्त्रवच दयाधर्म सत पर उपकार ॥ १
वसै निगोद रहै थावर में तहाँ जिन्हा इंद्री नहि पाँय।

विगतिग चदु पन समना अमना तहां जिव्हा तो पाई आय ॥
पन अक्षर के कहन सुनन की शक्ति नहीं धर पशु परजाय।
कठिन मनुष्य को जन्म पाय तुम कंठाभर्ण सत्यवच गाय ॥ २

देखो वचन करकें हीं सर्व व्यवहार वर्ते हैं सो वर्णनं

वचनहिं करकें होय जो मालुम कायर शूर कृपण दातार।
दयावान निर्दय निःकपटी मद उद्धत कपटी छलकार ॥
क्रोधी मानी लोभी पंडित मूरख धर्म्मी पापाचार।
याचक दीन महंत उद्यमी तथा आलसी हीनाचार ॥ ३

वक्र सरलु उत्तम आचारी राजा रंकरु मन्त्री जान।
ग्राम नगर जन चतुर मूढ जन संस्कृत प्राकृत विद्यावान ॥
सभा संगती औ कुसंगति अकुली कुली कला गुणवान।
इत्यादिक निश्चय व्यवहार गुण संभाषण तै प्रगटजहांन ॥ ४

पशु पक्षी वचन से खारे वो प्यारे लगते हैं

काक अरु रासभ उलूक जब बोलत हैं तिनके तो वचन
सुहात कहि कौंन को।
कोकिल सारिक पुनिशुका जब बोलत हैं सब कोऊ कांन
दे सुनत खधौन को ॥
ताहि तैसो वचन विवेक कर बोलियत योंही आक वाक
वकि तोरिये न पौन को।
सुन्दर समझकर वचन उच्चार करो नांहि तो समझिकर
बैठो गहो मौंन को ॥ १

दोहा—बोली एक अमोल है, जो कोई बोलै जान।
हिये तराजू तोल कै, तब मुख बाहिर आन ॥ २
एक वचन सुख राशि है, एक वचन दुख रासि।
एक वचन बंधन बंधै, एक वचन गल फांस ॥ ३

सत्य वचन के गुण वर्णनं

लोक विश्वास जगतप्रिय मान्यरु यशवर्धन कीर्ति सौभाग्य।
द्युतिमति क्राँति नीति गुण वर्धन क्षमा दया लक्ष्मी अनुराग ॥
विद्या मंत्र तंत्र वच सिद्धी रोग शोक दारिद्रहि भाग।
भूत प्रेत अहि सिंह डॉकिनी ये वश होंहि सत्य वचलाग ॥ १

झूंठ वचन के दोप वर्णनं

झूंठ वचन से राज्य दंड हो मातपिता परयन अपमान।
तनधन नास कीर्ति सुख शोभा विद्या विभव धर्म की हाँन ॥
प्रीति प्रतीत विनय स्वासरु करै नहीं जग आदरमान।
तातैं झूंठ वचन सु नृपवत् मत बोलो तुम हे गुणवॉन ॥ १

मौन के गुण

हे मौन तैं मंगलकारिणी तूं, हे मौन तें दंगल कारिणी तूं।
हे मौन तें सुखप्रचारणी तूं, हे मौन तें दुष्ट प्रहारणी तूं ॥
हे मौन तें ज्ञान प्रचारणी तूं, हे मौन तें प्राणउधारणी तूं।
हे मौन तें दोषनिवारणी तूं, हे मौन तें दोष विदारणी तूं ॥
हे मौन तें आपद टारनी तूं, हे मौन तें संपत कारणी तूं।
हे मौन तें जगत सुधारणी तूं, हे मौन तें मुक्त विहारणी तूं ॥ १

परिगृह प्रमाण विपय वर्णनं

परिग्रह लक्षण मूर्छा जानों वहुआरंभी नर्कहि जाय।
करु प्रमाण स्वपदस्थ जोग तुम तृष्णा छाडहु प्रागन थाय ॥
हिंसा चोरी झूंठ कपट सूं धन नहि होय न्याय में गाय।
पूर्व पुन्य विन होय नहीं धन करहु प्रमाण परिग्रह भाय ॥ १

गीता छंद—या परिग्रह के जु कारन हीन सेवा दास पन।
म्लेच्छ देश समुद्र मांही नदी पर्वत जायवन ॥
धर्म छोडैं पाप मांडै कपट निंदा द्वेष पन।
धारै विरूप उच्छिष्ट खावैं धन परिग्रह के वढ़न ॥ २

इति सम्पूर्ण ॥

परिग्रह के वास्ते जीव कैसे कैसे दुःख पावे और कैसे कैसे कार्य करे तिनके नाम वर्णनं

मारै ताड़ै बाँधै छेदै कलह दुष्टता पाखंड धार।
जीव घात आरंभरु चोरी झूंठ कुशील ठगई गर्वार॥
चुगली ईर्षा रंक असूया क्रोध मान माया लो भार।
मरै छिदै और भिदै अविनयी पंच पाप शिल्पि नृत्यार॥ १
खोटा वणिजरु से वारा जाति तरस्कार लज्जा सत्कार।
शीत उष्ण वर्षारु पवन भय भूख प्यास अपमान पुकार॥
सेवा वणिज नीच संगर में कूप उदधि वन गुफा पहार।
धूप नींद नहि वैर विलापरु काम क्लेश ममता मूर्छार॥ २

परिग्रह विना राखे गृहस्थीन के आर्त्तध्यान हो जाय ताका वर्णनं

जो ग्रहस्थ में धर्म सेवना तो राखो परिग्रह परमान।
नहि तो काल दुकाल रोग में जरा वियोग जन्म मरनान॥
दुःख शोक दारिद्र उपद्रव हार व्योहार जात कुल मान।
भोजन वस्त्र गेह धन इन बिन चित स्थित नै होय निदान॥ १
धर्म कर्म सामायिक पूजन शास्त्र श्रवण संजम तप न्याय।
व्रत उपदेश समिति चतु भावन विद्या विनय और स्वाध्याय॥
भोजन वस्त्र और आजीवन इन विन नाँहि निराकुल थाय।
तातैं योग्य विचार पापतैं रहित परिग्रह उद्यम न्याय॥ २
न्यायोद्यम कर लाभ होय जो तामें धर संतोष स्वभाय।
पुन्य वान के वस्त्राभर्णरु भोजन देख क्लेश मति थाय॥
डरो नर्क अरु पशु गति सें आमद माफिक खर्च कराय।
नहि तो धीज प्रतीत आवरु बिगड़े दीन दरिद्री थाय॥ ३
ऋणी होय कर वहु खर्चन से आर्त्तध्यान होय वहु दुख पाय।
छूटै देश कुटंब शोक अपमान दीन वंदीगृह जाय॥
पूजन ध्यान भजन सामायिक शास्त्र श्रवण परणाम नशाय।
झूंठ कपट चोरी हिंसा में करजदार को चित्त लचाय॥ ४

हे भाई तुम ये सोचो हो वड़े हमारे वड़े जु काम।
किये जु कैसें में करु छोटा विगड़ जाय जो मेरा नाम॥
सोचो पुन्य अस्त से किसका रहा वड़प्पन इसही ग्राम।
इंद्र नरेंद्र त्रिखंड राज्य पद ते भी प्यारे मरे कुठाम॥ ५

लाखों कोड्यां मनुष्य जिन्होंनें जन्म सु लेय मरण तक धाय।
धातु पात्र धन मोदक मेवा सोंना चाँदी वस्त्र रंगाय॥
घृत मिष्ठान्न रुपैया पैसा अर कुटी मात्र ने मिली रहाय।
एक दोय दिन से जादा नाहिं खाने को तिस पास लहाय॥ ६

जो कुटंव तुमको दुःख देवै तो तुम कहो ये ही सिख वात।
पूर्व जन्म में दानरु पूजा पर उपकार किया नहिं हाथ॥
उसी पाप कर हुये दरिद्री भोजन वस्त्र मिलै नैगात।
तातैं तुम संतोष करो मैं उद्यम न्याय करूं दिन रात॥ ७

क्षय उपशम लाभांतराय के जो कुछ प्राप्त होयगा आन।
लाऊं तामैं भाग करो तुम अपना मेरा भोजन पान॥
तुमरे हेत अन्याय करूं नहि ताकर होय नर्क दुख खान।
धर्म कर्म मेरा नहि विगडै तुम भी चलो उसी परमान॥ ८

दोहा—या प्रकार कर चिंतवन, परिग्रह धार ग्रहस्थ।
ये ही मंद कषाय तप, पावै स्वर्ग्ग गृहस्थ॥

अनर्थ दंड के पंच प्रकार के भेद वर्णनं, प्रथम ही हिंसा दान वर्णनं

दोहा – कुश खुरपा धनु फावडा, छुरी कटारी कुदाल।
खडग तमंचा दांतला, वैडी सांकल भाल॥ १
वाण तोप वंदूक घन, दारू गोला आग।
गोली चावुक विष लकुटि, हिंसा दान न पाग॥ २

दूसरा भेद अपध्यान वर्णनं

दोहा—पुत्र कलित्र कुटंव धन, इंद्रिय जीवन स्थान।
वुद्धि जीविका नाश सुख, मती करो अपध्यान॥ ३

तीसरा भेद श्रुति श्रवण वर्णनं

दोहा—हास्य वीर उच्चाट रस, वशी करण शृंगार।
भूत रसायन मारना, इन्द्र जाल विस्तार॥ ४
चतुविकथा अर काम रस, यज्ञादिक इतिहास।
युद्ध शास्त्र दुश्श्रुति श्रवण, मती करो अभ्यास॥ ५

चौथा भेद प्रमाद चर्या वर्णनं

पृथ्वी खोदन जल ढुलन, पवन अग्नि तरु जात।
छेदन भेदन अग्नि कर, विना प्रयोजन घात॥ ६

पांचवाँ पापोपदेश वर्णनं

छन्द—घररु जायगा व.ग वगीचे अरु तलाव वन कटी करान।
वधिया मंत्र तंत्र निशि भोजन वशीकरण व्यभिचार करान॥
व्याह रोशनी आतिशवाजी मठ कुदेव छिडकाव करान।
कपट रसाय न चुगली चोरी इंद्र जाल खेती जु करान॥ ७
यंत्र जाल मारन उच्चाटन खोटे शास्त्र पठन शृंगार।
जूंवा लीखरु मच्छर उटकन शुन वीछू मूषा खेल शिकार॥
मनुष्य और तिर्यंच लड़ाई मेला ख्याल गीत नृत्यार।
विसंवाद गाली युद्धादिक झूंठ अभक्षरु माया चार॥ ८
गृह डाहन अरु पाल फुडावन वाग विगाडन वृक्ष कटान।
घास खुदावन दाह लगावन कोल करावन ईंट पकान॥
भोजन रोकन नाक छिदन अरु डाह दैन अरु कैद करान।
वधोपदेश आरंभरु हुक्का तिर्यंच वणिजरु दानरु कान॥ ९
मति वेंचो मत भांडे देवो खड्ग छुरी घट वानरु भाल।
फरसी खुरपा मुद्गर वर्छी वेड़ी सांकल अग्नि कुदाल॥
कांटा और करोंत वसूला कुलहाड़ीरु पींजरा जाल।
सेल फावडा और कुदाडी विषरु हथोडा अरु हर ताल॥ १०
खोटा वणिज लोह साजी सण नील लवण सावण अन्नादि।

लकड़ी लाख ऊंन तिल जरदा आल कसूंमा गुड महुवादि ॥
भांग-तमाखू गांजा चरसरु चर्म सिंहाडा घृत तैलादि ।
दारू गोली शीशा छर्रा भाटा वंस्य ईंट शस्त्रादि ॥ ११
दल फल फूल मोम मधु दंती छाना चूना दासी दास ।
घोड़ा ऊंच वलध अरु गाड़ी गाय भेंस गज पक्षी रास ॥
व्याह सगाई रिसवत खाना हास्यरु चुगली झूंठरु हांस ।
अपजस रु अपमान पराजय ईर्षा क्लेश विवादरु त्रास ॥ १२
लेन देन मत करो नीच सूं जो आवे बहु भाडो व्याज ।
चमार कोली खटीक नाई धोबी गाढीवानरु राज ॥
वेश्या चोर कलार जुवारी और चून पज तीरंदाज ।
घस घोदारु नीलगर रैंगर पलभक्षी पालै सुनिराज ॥ १३
कोतवाली पशू दलाली गाली भंड वचन विपरीत ।
स्वांग कौतूहल चतु विकथा अरु मिथ्या शास्त्र पठन संगीत ॥
जूवा खेलन नीच जीविका चंडी भैरव पूज्य कुरीत ।
चौपड सतरंज और गंजफा तज्यो सर्व अन्याय कुरीत ॥ १४

इति सपूर्णम्

सामायिक का वर्णनं

सामायिक में साम्यभाव कर स्थानरु आसन शुद्धि कराय ।
इंद्री विषय पंच पापारंभ दुष्ट विकल्प त्याग वच काय ॥
काष्टत्थं भवत् सर्व्व वस्तु में वैर भाव तजि मैत्री भाय ।
परमेष्टी गुण शतक तेतालिस कर्म चिंतवन द्वादश भाय ॥ १
जगत विनश्वर शर्ण कोई नहिं चतुर्गति दुःख स्वयं कर्तार ।
सर्व द्रव्य पर देह ग्लानमय आवै कर्म योग के द्वार ॥
रोकै पाप पुन्य को पूरब झारै कर्मरु लोक विचार ।
कठिन रतनत्रय वृष धारैं सुख यों सामायिक काल चितार ॥ २
करैं चिंतवन रात्रि दिवस में कितनो काल ध्यान स्वाध्याय ।

दर्शन पूजन पात्र दान में दीन दुखित उपकार धराय ॥
केता काल भोग गृह आरंभ पंच पाप वा च्यार कषाय ।
यों सम्हाल दो वार दिवस में ज्यों सराफ व्यवहार कराय ॥ ३
जे अज्ञान भावतैं पूरव करी विराधना स्थावर काय ।
वा विकलत्रय पशु पंचेंद्री वा बुध जन कैं दोष लगाय ॥
निंदा देव गुरु वृष धर्मी वा मिथ्या वृष हिंसा गाय ।
ताकर नर्क पशु गति में दुख भरे अनंत परावर्ताय ॥ ४

दोहा – हे परमेष्टिन तुम शरण, लियो जु अब मैं आय ।
मिथ्या कार करूं अवै, किए पूर्व अव धाय ॥ ५

जगत दुख मय तिसका विचार वर्णनं

नंतानंत काल जिय जग में भ्रमण करत धर वहु पर जाय ।
पुद्गलाणु कोइ नाहि रह्यो वा क्षेत्र स्पर्श न नाहि रहाय ॥
तथा काल भव भाव सम्यक् विन नाहि रह्यो त्रैलोक्य मझाय ।
तातैं यह जग अथिर जान कैं धरहु धर्म जो ऋषभ वताय ॥ ६

काय स्वरूप चिंतवन का विचार वर्णन लिख्यते

यह शरीर है रोग भोग विल मल अपवित्र दुःख निःसार ।
धोवन पोषन गंध विमर्दन रक्षण पोषन होत असार ॥
मल दुर्गंध जु श्रवै निरंतर पराधीन मल मूत्र भंडार ।
ऐसी अशुचि काय जो जानैं तो भी नहिं वैराग्य चितार ॥ ७

इति सम्पूर्ण ॥

सामायिक में धर्म ध्यान में चार पापों का विचार करना चाहिये

भेद ज्ञान धारा होत धर्म ध्यान धारा वहै सर्व पाप टारा
लहै स्वर्ग सुख भारा है ।
जिन राज जो वखानी सोही हिये मांझ आंनी ठीक दुष्ट
कर्म हरिवे की मति का विचारा है ॥
अधो मध्य ऊर्द्ध लोक रचना का सर्व थोक हिये मांझ जानै
नांहि होत राग धारा है ।

कर्म के विपाक सेती सुख दुख अचिंत्य होत मानत अनित
तरहि जानत विकारा है ॥ १

आज्ञा विचय

द्रव्य अचित ही सूक्ष्म है छदमस्थ के ज्ञान में आवत नाहिं।
भए अरहंत सुहैं अब होंहिगे या जग ढाई द्वीप के माहिं ॥
पुन्यरु पापका आश्रव बंधर संवर मोक्ष की रीत लखांहि।
जो जिनदेव कहे जिते भवते एवरमेवतेंगाढ तहांहि ॥ १

अपाय विचय

जीव अनंत बसैं जग में तिन्हैं कर्म नचावत नाच रहे हैं।
लघु दीरघ देह अछेद धरैं नर नार तिर्यग देव हुये हैं ॥
पूरन हो तन नाचकदा समता बिन सांच तू जान हिये है।
सिद्ध भये अर होत जिते जिते ते समता चित मांहि गहै हैं ॥ १

विपाक विचय

और सब वात वृथा कर्म विपाक यथा रोग दोष शोग
भोग जोग मिल जात है।
इंद्र और नरेंद्र फण पति मिलि फेरैं फंद तोहू न मिटत
बंध भावी ना हटात है ॥
विकल्प न कीजे सत्य चित मान लीजे हर्षित ह्वै जी जे
कोऊ थिर न रहात है।
आस त्याग कीजे अपराध नाही दीजे संतोष धार लीजे
तब आनन्द उमगात है ॥ १

संस्थान विचय

धर्म्म औ अधर्म काल पुद्गल आकास जीव लोक में
सदीव रहैं वाहर अलोक है।
घनाकार तीन सै तियालीस लोक तामें त्रस नाडी जहां
त्रसही को थोक है ॥

तलें तलें नरक सात तहां महा उत्पात रोग दोष त्रास घात
होत सदा शोक है ।
मध्य में तिर्यच नर ऊपरे है देव भर ताके परै सिद्ध लोक
तिनके पग धोक हैं ॥ १

रोग साभोग संयोग वियोगसा आलसी भामनी मिष्ट प्यारा ।
याम साधाम सुनाम है नागसा कालसा काम संसार सारा ॥
आनकैं ज्ञानकूं मोहकूं भानकैं दूरथल बैठकें गाढ़धारा ।
लीन शुद्धात्मा धर्म काधात्मा भक्ति परमात्मा होत सारा ॥ २

दोहा—नाहि विषम ना भीरजन, नहीं गरम नहि शीत ।
उदासीनथल धीर चित, ध्यान धरत यां रीत ॥ ३

इति सम्पूर्ण ॥

आगैं साम्यभाव की महिमा तथा साम्यभाव के गुण वर्णनं

साम्य विना समता उरनाही साम्यविना जग भ्रमण कराय ।
साम्य विना मिथ्या तन जावै साम्य विना नहि सुक्ख लहाय ॥
साम्यभाव महिमा जिन गावै साम्यरूप त्रिभुवन शिरनाय ।
साम्यभाव समहितू न जगमें साम्यहि जप तप शिव मगदाय ॥ १

साम्यभाव जिनके उर प्रगट्यो तिन सन्मुख जग शांति जु धार ।
सिंह मृगन को गरूड नाग को मूषककूं बिल्ली नहि मार ॥
व्याघ्र हिरण सिंहनि निंदनि सुत दुग्ध पिलावै करैं जु प्यार ।
सर्प्प मोर मार्ज्जारी हंसरु वृक अजनकुल सर्प्प हित धार ॥ २

भूत प्रेत अहि मंत्र तंत्र अरु जादू मूठ नहीं चलवाय ।
सुर विद्याधर दुष्ट राक्षस राजा दंड नहीं करवाय ॥
पवन अग्नि जल रोग मरी दुर्भिक्ष उपद्रव नहीं चलवाय ।
कौन कहै महिमा जु साम्य की कहैं तो श्रीजिन ही कहवाय ॥ ३

इति सम्पूर्ण ॥

भोगोपभोग प्रमाण का वर्णन लिख्यते

औषधि मेवा अन्न मसालो अर बहु वस्तु पणो मतलेहु ।

गुड़ घृत तेल खांड वहु औषधि पाक चलित रस छांडो नेह ॥
घृत जल तेल हींग वहु औषधि चर्मपात्र की नाहि लहेहु ।
दुग्ध दही जल असन खाद्य अरु चून खांड मर्याद ग्रहेहु ॥ १
भोजन रात्रि अरचा निशि भोजन जल अनछनो भाजन चाम ।
भांग तमाखू गांजा चरसरु छूंत अमल ज़रदा मद धाम ॥
चून हाट का सराय वरतन औषधि अत्तारन की ठांम ।
दंतडचूड अरु रोम वस्त्र का भोजन मतकर नीचन धाम ॥ २
एक थाल में साभिल भोजन देव चढ्यो भोजन मत खाय ।
पल भक्षी जीवों की ओंठन पितर श्राद्ध जीमन मतजाय ॥
खांड लापसी के गज घोटक इन खायें जिन हिंसा थाय ।
रजस्वला नाईरु नीच को वरतन कोई काम न आय ॥ ३
वेश्या अरु विट पुरुष सिपाई नीच म्लेच्छ कैसें पहिरान ।
वस्त्राभर्ण कमी मत पहिरो पहरो कुलवय देश प्रमान ॥
सतरह नियम विचारो अहिनिश छोडा वाइस अभक्ष अखान ।
या प्रकार भोगोपभोग में हेय उपादेय कर उर आन ॥ ४

धर्मात्माओं को ये वस्तु नहीं खानी चाहिये तिनके नाम वर्णनं

छंद—मदिरा मांस मधूनिश भोजन चर्म तेल घृत हींगरु वार ।
विन छांन्या जल गाजर मूली लहसन प्याजरु सलगम छार ॥
विष वेंगन कूष्मांडरु पेठा पुष्प उदंवर कंदहिटार ।
विदल अचार चलत रस वस्तु त्यागो वीधा अन्न विचार ॥ १

द्रव्यक्षेत्र काल भाव अपना पौरुष देखके भोग का त्याग करना योग्य है सो वर्णनं

देशकालवय योग शक्ति लख रोग निरोग सहाय असहाय ।
पराधीन स्वाधीन जीवका तथा एक वा कुटंव लहाय ॥
है स्वाधीनक नाही भोजन तथा कुटंव संक्लेश रहाय ।
देश विदेशरु उदधि समर मे तथा नगर वन ग्राम वसाय ॥ १
प्रवल रोगतें अंध होनतें पराधीन सामर्थ नशाय ।

जरा आवते वंदीग्रह तें दुष्ट म्लेच्छ आधीन रहाय ॥
राज्योपद्रव अरु जवरी तें भोजन पान जु भृष्ट कराय।
तथा दुष्ट अरु नीच म्लेच्छ के सामिल भोजन दे करवाय ॥ २

दोहा—जेता राग घटा सही, ते ता त्याग संभार।
या तैं भोगोपभोग का, करो प्रमाण विचार ॥ ३

दानियों में वही दानवीर है जो पराया उपकार करते हैं

दान वीर वह धन्य अन्य उपकार करै जो।
देह दान से लदा देश का दैन हरै जो ॥
दुर्लभ ऐसे मनुष्य सदा जग में होते हैं।
दुख सहकर भी स्वयं पराया दुख खोते हैं ॥ १

दोहा – शिव दधीच के सम सुयश, इसी भूर्ज तरु नै लीया।
जड भी होकर के अहो, त्वचा दान सवकूं दिया ॥ २

आगे देखो धन की शोभा दान करके है

दीन को दीजिये होय दयामन मित्र को दीया प्रीत बढ़ावै।
सेवक दीजिये काम करै वहु साहब दीजिये आदर पांवै ॥
शत्रु को दीजिये वैर रहै नहि भाट को दीजिये कीरति गावै।
पात्र को दीजिये मोत्त के कारन दान दियो न अकारथ जावै ॥१

देखो पुन्य घटे लक्ष्मी घटे अर दान के दिये लक्ष्मी नहीं घटे है

पुंन्य घटे विघटे लक्ष्मी पर दान दियें न घटे धन भाई।
शोच निवारह कूप निवारहू काढत तैं जल बाढत जाई ॥
पात्र कूं दान निरंतर ठानहि ये सरधान महा सुखदाई।
खाय गयो वह खोय गयो नर लेय गयो जिन और खवाई ॥ १

स्वान पेट निज भरै भूपहू पेट भरै है।
कहा बड़ाई भई खाय दुर्गंध करे है ॥
पात्र दांन नित देय लेय नरभव फल तेही।
अंतर है कछु नांहि नाम तिन को जग लेही ॥ २

अपना पेट भरने मे कुछ्छ वड़प्पन नहीं है, पच्छियों के पीने से दरयाव का जल नहीं घटता

पच्छियों के पीने से नदी जल नहीं घटता।
गुरुवों को दान देने से कभी धन नहीं घटता॥
जिय चाहै तेरा तू तो आजमाले यहाँ पर।
खेतों के सींचने से कूप जल नहीं घटता॥ १

पचमकाल के धर्मात्मा धनाढ्यों का विचार वर्णन लिख्यते

धन्य घड़ी मेरी है वो ही मेरा धन आवै शुभ काज।
दान धर्म पूजा प्रभावना तीर्थ यात्रा मंडल साज॥
औषधि शास्त्ररु विद्याशाला बिम्ब प्रतिष्टा पूजन काज।
रथ यात्रा साधू अर श्रावक तथा श्राविका धर्म समाज॥ १
दुखित भुखित परदेशी दुर्बल अंध पंगु कोढ़ी भयवान।
चोर राज अहिसिंह सताया अरु दुर्भिक्ष दुष्ट वलवान॥
तथा मित्र अरु भ्राता गुरुजन साधर्मीजन स्थिती करान।
वहिण भुवा वेटीरु भांनजी विधवा भोजन वस्त्र मकान॥ २
जो पहिलीं प्रतिष्ठित थे नर फेरि दरिद्री होय गए।
सर्व वस्तु तिनकी जो विक गई स्त्री सुत उनके छूट गये॥
ओछा काम करा नहि जावै फिरैं विदेश जु रंक भये।
तिन सज्जन पर करैं जु सेवा तेही जग जन पूज्य भये॥ ३
दानी है वो यह सोचे है दान विना नहीं जीवोपकार।
यश कीर्ति सौभाग्य वड़प्पन धन सोभा जु दानतें सार॥
दान विना इस अंध कूपतें पड़तेकों को काढन हार।
तातैं करो दान कूं नितही छहो कायकों शक्ति सम्हार॥ ४
धनवानों का आश्रय लेकें घनें जीव सुलटे धर ज्ञान।
हिंसा चोरी झूंठ जुवा अरु पाप क्रिया त्यागे निशि खान॥
अरु अन्याय अभक्ष कुसंगति अरु कुदेश नहि करै कुवान।

काम क्रोध अरु लोभरु माया दुष्ट क्रिया न करहि कुदांन ॥ ५
धनवानों कूं यही उचित है पर दुख हरै कोई परकार ।
सेवा वणिज दलाली साझा धीज प्रतीत काम व्यवहार ॥
भोजन पान वस्त्र पूंजी दे अरु संतोष स्थान दे सार ।
वंदीग्रह सूं तथा दुष्ट सूं म्लेच्छ चोर दुर्भिक्ष उवार ॥ ६

अन्न दान की प्रशंसा वर्णनं, अन्न दान महा दान है सो लिखिये

दोहा—अन्न दान आनंद विधि, अन्न प्राण आधार ।
अन्नहि को सब जगत में, छाय रह्यौ व्यवहार ॥ १

सवैया—अन्नहि धर्म कर्म उपजावै अन्नहि बुधि वल ज्ञान बढ़ाय ।
अन्न दानतें शास्त्र समझ हो अन्न दानतें ध्यान धरांहि ॥
अन्न दान कल्याण जु दायक अन्न दानतें मोक्ष उपाय ।
अन्न दान सब धर्म प्रधानहि अन्न दानतें प्राण रखाय ॥ १
बड़ो अन्नतें दान और नहिं नर पशु पक्षी प्राण बचाय ।
अन्न प्राण एकहि जानो अन्न दियो तिन प्राण सहाय ॥
गौ कन्या भू हेमहस्ति गृह रथ कोई के नहिं प्राण बचाय ।
आतुर प्राण अन्न विन जावै बहुत बात को कहै वनाय ॥ २

चौपाई छंद—क्षुधा रोग जब तन अकुलाई, दीजै औषधि अन्न मगाई ।
खडग त्रिशूल छुरी सव धारा, इन घावनतें क्षुधा अपारा ॥ ३
वर्छी चक्र वांण के घाई, इनतें क्षुधा अधिक दुख दाई ।
तो मर शक्ति गदारु कृपाणा, इनतें अधिक क्षुधा के वांणा ॥ ४
लागै क्षुधा सवै गुण खारा, सो है नहीं रूप शृंगारा ।
लागै क्षुधा बुद्धि नहि रहई, धीरज ज्ञान ध्यान सव दहई ॥ ५

दोहा—होत क्षुधा वाधा जवहि, विसर जाय सब ज्ञान ।
और कष्ट नहि जगत में, दूजो क्षुधा समान ॥ ६

करुणा दान सर्व ही जीवों को देना सो वर्णनं

सर्व आत्मा आप से, चेतन गुण भरपूर ।

यह अपनी पहिचान विन, कष्ट सहै अति क्रूर ॥ १
तिन पर ज्ञानी कर दया, सदा करै उपकार ।
नरतिर सब ही जीव के, हरैं कष्ट दुखकार ॥ २
अन्न वस्त्र जल औपधी, तृण इत्यादिक लेय ।
जानैं अपने मित्र सम, पर पीड़ा जु हरेय ॥ ३
बाल वृद्ध रोगीन को, अति ही जतन कराय ।
अंध पंगु कोढ़ीन पर, मन में दया धराय ॥ ४
वंधु छुड़ावै द्रव्य दे, दुःख सर्व छुट वाय ।
अभय दान दे सर्व जिय, मन में दया धराय ॥ ५
जे जन काल दुकाल में, अन्न दान करवाय ।
तिन ही को जीवन सफल, भव भव मैं सुख पाय ॥ ६
शीतकाल में शीत हर, दे उपकरण वनाय ।
उष्ण में काल तप्त हर, वस्तु प्रदान कराय ॥ ७
वर्षा कालहि जे सुखी; दे आश्रय सुख दाय ।
दुखहारी उपकर्ण दे, सो जैनी कहलाय ॥ ८
भांति भांति की औपधी, भांति भांति की वस्तु ।
भांति भांति के वस्त्र दे, सो जैनी परशस्त ॥ ६
दान की विधी अनेक हैं, कहां तक कहिये मित्र ।
जे करुणा कर देत हैं, ते दातार पवित्र ॥ १०
लक्ष्मी दासी दान की, दान मुकति को मूल ।
दान समान न आन कों, जिन मारग अनुकूल ॥ ११
अपनी शक्ति प्रमाण सूं, करै जीव उपकार ।
तन कर मन कर द्रव्य कर, करै जगत सुखकार ॥ १२

ये कुदान जैन मत सेवन करने वालों को नहीं करना चाहिये
गौ गज अश्वभामिनी दासी कन्या तिल घृत लवण जु दान ।
रस स्वर्ण चांदी अरु तांवा मोती रत्न जु भूमि कुदान ॥

गृह जूती सुख सेज सवारी वस्त्र सुगंध तेल रुई दान ।
दर्प्पण दीपक रात्रि विनोला काले मृग का चर्म्म अदान ॥ १

पंचम काल के मानी धनवानों का वर्णन लिख्यते

छंद—क्रोध वधै परिणामन में अभिमान वधै पुरुशारथ में ।
स्थितीकरण अरु वात्सल्यतादयारहै नाही घट में ॥
तिरष्कार अपमान करै बुधि नीत वचन के खंडन में ।
साधर्मिन के विनय वचन सुनि शंका भय राखै मनमें ॥ १

डरै सदा निर्वांछक सूं जो मत कदाचि खरचावै दाम ।
सबकी बुद्धि घाटि जो दीखै नहीं सराहै परका काम ॥
कर्तव्य प्रशंसा खर्च घटावन तेजी वढै सदा परिणाम ।
दुर्ब्बल दीन अनाथ पांगुलो पैसो इक खर्चे नहिं दाम ॥ २

निर्वांछक ज्ञानी धर्मी को दगावाज अरु समझै चोर ।
कपटी चुगल धूर्त चौरन कूं धन जु ठगावै होडा होर ॥
अप सर्वस्य हरै पहिले को निर्वांछक समझे शिर मोर ।
धीज प्रतीत आवरू ओछी निर्धन की जाने सबठोर ॥ ३

करी बड़ाई अपनी ऊंची अजर अमर प्रभु समझै रूप ।
निर्धन को दुख अपना रोवै और रंक समझै जु कुरूप ॥
धनी देखकर हाथ जोड़कर भेंट करै वहु सोना रूप ।
अरु अभिमान पुष्ट होय तहाँ मंदिर बाग बनावै कूप ॥ ४

जो जु ठगावै माल आपकूं तासूं प्रीत करै भरपूर ।
धनवानों को आप ठगावै तिनकी बुद्धि समझै भरपूर ॥
दिखलावै अपनी उदारता हार व्यवहार जान भरपूर ।
बड़ो आपकूं सच्चा जानै और सर्व झूंठे भरपूर ॥ ५

अपनो मतलब शीघ्र करै अरु नौकर को दुःख जानै नाहि ।
अपनो मुख्य प्रयोजन समझै परको तुच्छ समझै मनमांहि ॥

पर की वस्तु अल्प कीमत में तथा मुफत में हाथहि आहि।
तथा मुझे धनवांन जानिकै थोड़े ही में देकर जाहि ॥ ६
आरंभ और परिग्रह बढ़ावता जु धापै नहीं गरण संतोष
नाहि धारै अपमान में।
जहां नाम कीर्ति कपाय मान पुष्ट होय ऐसे व्याह यात्रा
जिन मन्दिर के करन मैं॥
तहां पंच पंचायत मे अपनो अभिमान बधै तहां करै
खर्च धन माया की लगन मैं।
कौडी एक खरचै नांहि जीरण मंदिर मांहि ऐसे महामानी
धनी कलियुग के चरण मैं॥ ७

धन ऐश्वर्य आज्ञा के मद मे धनवान अन्धे हो रहे हैं। धन मद में
च्यार रोग पैदा होते हैं सो वर्णनं

वधिरयति कर्ण विवरं वाच मूकं नयननं धमिति।
विकृतिय तिगात्र पृष्टं संपद्रोगो भवद भुते राजन् ॥

छंद—धनैश्वर्य आज्ञा के मद में अंधे होय रहे धनवान।
धन ही बड़ा जगत में भारी ऐसें समझै हैं धनवान॥
बड़े बड़े शास्त्रनि के ज्ञानी कविता न्यायरु तर्क पुरान।
नागर नीत कला के ज्ञाता ज्योतिष वैद्य मंत्र तंत्रान् ॥ ८
तथा भजन पूजन प्रभावना करने वाले बहु गुणवान।
बेला तेला व्रती उपासक त्यागी दुर्बल धर्म बखांन॥
घनैं हमारे घर आवत है भजन करन अरु पढ़न पुरान।
सब गुण हमरे धन के मांही तातैं हम ही बड़े प्रधान ॥ ९
श्रीजी की पूजा प्रभावना हमरे धन तें होय महान।
साधू और अर्जिका श्रावक इनको भोजन वस्त्र मकान॥
चैत्यरु मंदिर अपनैं ही हैं तथा और तैयार करान।
या प्रकार जो करै अवज्ञा धन के मद में धनी जहांन ॥ १०

बड़े बड़े तपसी धरमातम पंडित ज्ञानी व्रती प्रधान।
घनैं हमारे घर आवत हैं अरु आवैंगे बहु गुणवान॥
देशि विदेशनकूं हमरो चर दीषत है कहुँ नाहि ठिकान।
हम सिवाय कोई और नहीं है हमही दांनी अरु धनवान॥ ११
करैं लालसा धनकी तिनकैं नै होवै वात्सल्य प्रचार।
लाखां धन तो कोटि होन में वांछा अहि निशि परिगृह भार॥
पाप निपुणता दान कृपणता धर्मी प्रीति नांहि उपकार।
जहां नाम कुछ होता जानें तो धन खरचै बहुत विचार॥ १२
घर के काम सुधारन वाले साधर्मी सुशील आचार।
करै अवज्ञा तिनकी भारी नहीं सराहै तिनको कार॥
ऐसे धनी काल पंचम के तिनको कथन कहों में सार।
संशय जाकैं होय सो देखो रतन करंड श्रावका चार॥ १३

सल्लेखना विचार कथन वर्णनं

आयु काय बल रोग मरी दुर्भिक्ष उपद्रव अनिलहिवार।
तथा राज्य वा दुष्ट धर्म हन तहां सल्लेखन करे विचार॥
कृषकर काय कषाय स्वजन वा अन्य जननि सूं स्नेह निवार।
सब सू क्षमा कराय वस्तु घटकर निशल्य सिंह व्रत धार॥ १

दोहा—तिस अवसर में शोक भय, स्नेह अरु वैर विषाद।
कलुष अरति कायर कलह, ईर्षा प्रीति न वाद॥ २
सावधान हूवे विना, मरै अनन्ती बार।
इमि चिंतवन मन में करो, यह संसार असार॥ ३
हूं अकलंक अवंक थिर, मिलत न काहू मांहि।
नसो देह भावै रहो, हमें न किन विधि चांह॥ ४

छप्पै—यह सर्व भची कालतें बचै न कोई,
देव इंद्र थितिपूर्ण देख मुख रहै जु सोई।
यम किंकर लैजाय आपनो कथा कौन है,

तन धारै सो मरै वृथा कर खेद जोन है ॥
यह आजकल मूवा पुरुष सुनि प्रतीति नहिं आदरो ।
यह निरुपाय जग रीति यह जिन वृषभज साहस धरो ॥ ५
देह सनेंह करो किन कारण यावपु ज्यों चपला चमकाई ।
नांहि उपाय रसायन को वहु औषधि मंत्ररु तंत्र बनाई ॥
यों थितिपूर्ण होय तवै सुर इंद्र नरेंद्र हरी मृत थाइ ।
दाव वन्यो हित साधन को वहुलोग चिगावहिं में न चिगाई ॥ ६
मातपिता व पुराम सुनो मम देह सनेह वृथा तुम धरो ।
को तुमको मम हाट तनी गति प्रात पयान करै जन सारो ॥
रीति धरै इम हाटतनी तुम अंतर के दृग खोल निहारो ।
आपतनो दृढ़ शोच करो तुम आतम द्रव्य अनाकुल न्यारो ॥ ७
हे त्रिय देह तनी सुन सीख सनेंह तज्यो वपुसें अव प्यारी ।
देही सूं संबंध इतो अब पूर्ण हुवो मत खेद धरारी ॥
काज कछू न सरै तनतें तुम राखहु नांहि रहै तन नारी ।
तातैं हे त्रिय शोच तज्यो तुम जो उपजै सो मरण धरारी ॥ ८
भोग किये चिरकार घनें त्रिय काज सरो न कछू सुख पायो ।
इष्ट वियोग अनिष्ट संयोग निरंतर आकुलता पन खायो ॥
दुर्लभ जन्म व्यतीत करै अब कालके गाल तलै वपु आयो ।
भो त्रिय राखन कौन समर्थ वृथां कर खेद सुजन्म नसायो ॥९
हे प्यारी मम नारि सीख हित चित धरीजो ।
शील रतन उरधार तत्व श्रद्धा दृढ़ कीजो ॥
धर्म विनां भव भ्रमें काल चहुं हम तुम सवही ।
गति च्यारूं दुख रूप धरी अव धरो न कवही ॥
हे प्यारी सुख वांछता क्यों स्नेह वढ़ावती ।
तातैं जु जाहु मुझ पासतैं करो सु तुम मन भावती ॥१०
दोहा—नारि बुलाय संबोध इमि, सीख दई हित साज ।

अब निज पुत्र बुलाय कैं, ममत छुड़ावन काज ॥११

पुत्र विचक्षण सुनों आयु पूरण अब म्हारी।
तुम ममत्व बुधि तजो खेद दुख को कर्त्तारी ॥
श्री जिनवर को धर्म भली विधि पालन कीजो।
पूजा जप तप दान शील संयम गहि लीजो ॥
फुनि लोक निंद कारण तजो साधर्मिनतें हित करो।
तुम जुग भव सुखहु यहै जो सुत सीख हमारी हिय धरो ॥१२

दोहा—जो तुम राखो देह यह, रहो जु राखो धीर।
मैं वरजों नहि तोहि सुत, करो शोचि निज वीर ॥१३

छन्द—मो सत संग सु देह पुजे जगमो निकसै तनकों जन जारै।
मानत देहरु जीव इकत्रल सै यह को षठ रोय पुकारै ॥
हाय पिता त्रिय पुत्र कलित्र सु मात हितू कहँ जाय पधारै।
और एकते विलाप करैं शठ खेद कलेश वियोग पसारैं ॥१४
इह विधि दे उपदेश स्वजन जन तथा अन्य जन को समझाय।
धन गृह क्षेत्र वस्तु इत्यादिक कर विभाग उर क्षमा कराय ॥
होय निःशल्य धरै अनुभव सुख तथा पंच परमेष्टी ध्याय।
इहविधि मरण करे सल्लेखन तो निश्चय कर स्वर्ग सिधाय ॥१५

देखो कौन पाप कर प्राणी दुःख को प्राप्त होय तिन दुःखों के नाम वर्णनं

अंधा लूला बहिरा गूंगा निर्धन पुत्र रहित अपमान।
रोग निवलता दुर्ज्जनारू पराधीन क्रोधी अरुमान ॥
खोटी स्त्री भयमान कुरूपरु भोगोपभोग न भोग सकान।
वंधु वंधु मैं मात पुत्र में पिता पुत्र में दोष लगान ॥ १
पुत्र कुपूत कुटंव दुक्खदायक दासपना कुलनीच वियोग।
विन कारण को वैर दोष व्रत भंग देशांतर जीवन शोग ॥
एकेंद्री विकलत्रय नपुंसक स्त्री समुदाय मरण अरु रोग।
कुविसन में धन गर्भपात दारिद्री मूरख विकलांगी लोग ॥ २

दगाबाज हिंसक पापात्मा पापक्रिया नर अन आचार।
चोर कृपणता कुब्जक वामन पुत्र वियोग मनुष्य पशुभार ॥
दीरघआयु दुखी वहु भूखा नर्क कुक्षेत्ररु मायाचार।
लोकनिंद भयवानरु कैदी गोली फांसी मरण विचार ॥ ३

प्रश्न, कौन पुन्यकर यह मनुष्य सुख कौ प्राप्त होय तिन सुख के नाम वर्णनं

पुत्र सहित सज्जनता समता धर्मातम कीरति बलवान।
सुन्दर भामा तन निरोग सुख पुत्र होय निर्भय धनवान ॥
रूपमान स्वाधीन मान्यवर रचित उदार पंडित गुणवान।
पिता पुत्र में भाई भाई में मात पुत्र में स्नेह बखान ॥ १
दीर्घआयु कवितारु पूज्य पद ऊंच कुली घर मंगलचार।
सत्यवादी समुदाय पुन्य अरु शोक रहित सुखधन दातार ॥
सब जन वल्लभ अल्पाहारो भोगी देव मनुष अवतार।
भोगभूमि तीर्थंकर केशव चक्री बलदेव काम कुमार ॥ २

पाप आश्रव के कारण वर्णनं।

शार्दूल छंद—इन्द्री पोषण पांच पाप करना आरंभ मद उद्धता।
रोकन दान अभक्ष भक्ष ईर्षा अन्यायरु दुष्टता ॥
आर्त्तरु रौद्र कषाय और विकथा अदयार अब्रह्मता।
मिथ्या धर्म प्रमाद सत्य व्यसना परिणाम काठिन्यता ॥ १

पुण्याश्रव के कारण वर्णनं।

इन्द्री रोकन दान दीनन दयातप न्याय चतु भावना।
पांचो समिति विवेकशील विनयो पट् कर्म उपदेशता ॥
संयम पालन संग सज्जन क्षमा दशधर्म व्रत भावना।
त्यागन चार कषाय सप्त व्यसना अरु पाप विधि पंचधा ॥ १
भट्टारक देवाधिदेव अरहंत सिद्ध आचार्य महान।
उपाध्याय साधु में भक्ति अरु सर्वज्ञ की आज्ञा मान ॥

सर्व जीव की दया प्रवर्तन मंद कषाय देय बहुदान।
सत्य वचन अरु पंच पापतें रहित न्याय धन ग्रहै सुजांन ॥ २
दोहा—इनही में मन बचन तन, शुभ आश्रव पहिचानं।
इनते उलटे परिणमन, अशुभ आश्रव जान ॥ ३

नरकायु के आश्रव कारण वर्णनं

मिथ्यादर्शन अति क्रोधी अति मानी लोभी निर्दय भाव।
कटु परिणाम जीव घातनके संतापन वध बंधन घाव ॥
महा झूंठ परधन हरने में अतिकामी अति निन्दाभाव।
रौद्रध्यानी महा अभक्षी लेश्याकृष्ण नारकी आव ॥ १

तिर्यंच आयु के आश्रव के कारण वर्णनं

सेवन मिथ्या कर्म कपट बहु मायाचार परिग्रह चाह।
कूटकर्म बहुशील रहित तन मन वच काय नें पावै थाह ॥
विसंवाद परभेद करन में दूषण कुल बहु जात लगाय।
गुण लोपै बहु अवगुण प्रगटै नील कपोत कुतिर्यंग पाय ॥ २

मनुष्यायु के आश्रव के कारण वर्णनं

बुद्धि विनय बहु सरल स्वभावी मार्दव आर्ज्जव सत्य प्रचार।
क्रोधरेतमेलीक दया मन पर सुख सुखी सरल व्यवहार ॥
मिष्ट बचन सब जीवनसूं बहु प्रकृति मधुरता नहीं अपकार।
पूजा दान देव गुरु वृष में प्रीत कपोत लेश्य नरधार ॥ ३

देवायु के कारण वर्णनं

देवधर्म गुरुस्थान आयतन पूजा दान शास्त्र अनुराग।
व्रत तप संयम शील भावना दया दान मृदु वचन सुहाग ॥
जल रेखा सम क्रोधबाल तप काम निर्जरा मंदसराग।
इत्यादिक देवाश्रव हेतु कहैं सुगुरु उरधार विराग ॥ ४

अन्तराय कर्म के कारण वर्णनं

दानरु लाभ भोग उपभोगरु वीर्य विनाशन ज्ञान विराग।

स्नान विलेपन अत्तर सुगंधरु पुष्प वस्त्र आभर्ण विदार ॥
खाद्य स्वाद्य वहुलेह पेय अरु शैय्या आसन स्थान उजार ।
तथा कृपणता अतिवांछा धन निंदक देव धर्म आचार ॥ १
चढ़ी वस्तु के ग्रहण करन में तथा देव पूजा को रोक ।
तथा दरिद्री दीन भुखित को देते वस्तु न देवें टोक ॥
रोकन वांधन छेदन काटन करै निपुणता जीव विलोक ।
इन कारण कर अन्तराय लहि ताके फल भव भव में शोक ॥ २

अशुभ नाम आश्रव के कारण वर्णनं

मन वच काय कुटिलता राखन विसंवाद झूंठी दे साख ।
यंत्र पींजरा जाल वनावन परनिन्दा निज शंसा भाख ॥
वसु मद धरै हरै परको धन दश प्रकार की धरै कुभाख ।
देव द्रव्य निमल्यिग्रहै स्त्री वशीकरण भोग अभिलाख ॥ १
अग्नि प्रयोगरु पाप जीविका सर वन वाग नाशतरु जार ।
चतु कषाय के तीव्र करन में पाप क्रियातें करूं व्यवहार ॥
नर पशु तिष्टन के मकान को मल मूत्रादितें जुविगार ।
मंदिर चैत्य विनाश कर नये अशुभ नाम आश्रव उरधार ॥ २

इस संसार मे कर्म वड़ा वलवान है कोई जगह वचने की नहीं तिसका व्यौरा लिख्यते ।

कर्म उदीरण निमित पायकैं उदय आय अपना रस देय ।
तव अमृत विष शस्त्र होय तृण मित्र अरी होय दुःख करेय ॥
वुद्धि विपर्यय अर्थनाश यश अपयश लाभ अलाभ लहेय ।
जीवन मरण जराभय चिंता दुख वध वंधन क्लेश धरेय ॥ १
द्विपद चतुष्पद नेकपाद अहि श्री सर्प्पादिक भूमि विहार ।
कच्छ मच्छ दादुर घड़याल नत्त मकरादिक तिन गमनहि वार ॥
गृद्ध सिचान चील अरु क्रौंचरु वायस गमन आकाश विचार ।
कर्म्म प्रवल जल थल नभ सवमें कहीं न छोड़े लोक मझार ॥ २

चंद्र सूर्य उद्योत होत नहिं जल समीर नहिं दहन प्रजार।
तथा विक्रियाऋद्धि जाहि नहिं ऐसे स्थान वहुलोक मझार॥
स्थान नहीं ऐसा कोई जगमें जहाँ कर्म को नहिं पैसार।
विद्या मंत्र तंत्र भट गज रथ सामादिक कोइ राखन हार॥ ३
इन्द्र अहेंद्र नरेंद्र खगेंद्ररु भूत योगिनी क्षेत्तरपाल।
चंडी दुरगा पितर भवानी व्यंतर चंद्र सूर्य ग्रह माल॥
ब्रह्मा विष्णु महेश औलिया पीर पैगंबर वली कमाल।
पृथ्वी जल अरु अग्नि समीरहि ऊरध मध्यम भवन पताल॥ ४
इन्द्रराज को नाश होय तो औरन की कहा कथा बखान।
जे अणिमादि ऋद्धि के धारक देत असंख्याते मिल आन॥
ते रचानें करैं इंद्र तदि अन्य अधम व्यंतर देव्यान।
कहा कर सकैं रंक बावरे तातैं धर्म धरो उर ध्यान॥ ५

मनुष्य पर्याय में ये सामग्री पावना दुर्लभ है सो वर्णनं

कर्मभूमि शुभ आर्यक्षेत्र अरु मनुष्य गति उत्तम कुलधार।
दीरघआयु अक्ष पूरनता तन निरोग जीविका सार॥
न्याय राज्य सुखस्थान कुटंबरु चिंता रहित प्रमाद विडार।
खान पान स्वाधीन सुबुधि धर्म रुची माध्यस्था धार॥ १
शास्त्र श्रवण साधर्मी संगत हितोपदेश दाता लहि सार।
धारन शक्ति होय जिन वृष की तब कुल भला होय संसार॥
सो सामग्री सबही पाई करो धर्म शिव सुख दातार।
जो चूको तो दाव नहीं फिर श्री गुरु कहै पुकार पुकार॥ २

सर्व पर्याय में सम्यक्ज्ञान की प्राप्ति का होना दुर्लभ है सो व्योरा वर्णनं

वसै निगोद रहै स्थावर में वा विकलत्रय पशु पर्याय।
अधम देव व्यंतर आदिक में ज्ञान नहीं मिथ्यात प्रभाव॥
मनुष्यों में भी विरले तिनमें ज्ञानावरण क्षयोपशम थाय।
हो प्रवीणता जीवघात में जल थल नभ बिलजीव सताय॥ १

मारन पकड़न छेदन बांधन यंत्र पींजरा फांसी जाल ।
खड़ग तोप वंदूक वांन विप जीव शिकार देश पर जाल ॥
मग लूटन अरु धन हरने में प्राण हरन में पंडित शाल ।
तिरस्कार चुगली दंडादिक नष्ट जीविका लूटन माल ॥ २
धातुकाष्ट पापांण मृतिका रत्न वस्त्र महलरु चित्राम ।
मंत्र तंत्र वैद्यक व्याकर्णरु छंद न्याय नाटक संग्राम ॥
अलंकार शृंगार वीर रस धातू मारण भौतिक काम ।
परनिंदा आपनी प्रशंसा लोक चातुरी सुकनी धाम ॥३

पद लिख्यते, देखो ज्ञान बराबर इस संसार में कोई प्रकाश करने वाला नहीं है

ज्ञानो द्योत न सम उद्योत नहिं जगत प्रकाश करा ।
चंद्र सूर्य भी लज्जित होकर चतु दिशि भ्रमण करा ॥
टेक राजा पूज्य होय निज पुर में ज्ञान त्रिलोक्य पुरा,
ज्ञान धर्म धन काम मोक्ष सुख नृप पद पाप भरा ।
ज्ञानो द्योत न सम उद्योत नहिं० ॥ १
ज्ञान श्रेष्ठ धन हरण शक्ति नहिं यातुधानअमरा ।
शत्रु मित्र नृप भ्रात पुत्र बट नहि जल अनिल जरा ॥
ज्ञानो द्योत न सम० ॥ २
रूप तेज बल भाग्य नागरी कीर्ति क्रांति अगरा ।
ज्ञानामृत विन सब गुण फीके ज्यों हंसन बगुला ॥
ज्ञानो द्योत न सम उद्योत नहिं० ॥ ३
तीन लोक त्रयकाल सर्व सुखदाय पदार्थ सुथिरा ।
तिन दर्शन स्पर्शन स्वादन को ज्ञानहि एक धुरा ॥
ज्ञानो द्योतन० ॥ ४
पद्मालय जो सौख्य ज्ञान के कहि न सकै गणरा ।
तातैं निज पर्यन को देवो ज्ञान दान मधुरा ॥

ज्ञानो द्योतन सम उद्योत नहिं जगत प्रकाश करा।
चंद्र सूर्य भी लज्जित होकर चतुर्दिशि भ्रमण धरा ॥५

इस संसार भ्रमण करते प्राणी को मनुष्य पर्याय और तिसमें भी जिन धर्म का पावना बहुत दुर्लभ है तिस ऊपर दृष्टांत में पद वर्णनं

इस अनादि संसार उदधि में मानुष भव दुर्लभ पाया।
ये अवसर फिर नहीं मिलने का उदधि रतन वत पछिताया ॥

टेक—चेतो नित्य निगोद स्वास में जन्म मरण अठदश पाया।
फिर स्थावर में स्थिति असंख्यलो खनन जलन वहु दुख पाया ॥
इस अनादि संसार० ॥ १

विकलत्रिक में सहस उदधि थिति तहां दुख का वारण आया।
कटन छिदन पीसन संघर्षण अनिल अनल जल थल काया ॥
इस अनादि० ॥ २

पशु पंचेन्द्री अमना समना थिति अठभव चालिस गाया।
शीत उष्ण क्षुत्तृट् वध वंधन भार रोग तन वग खाया ॥
इस अनादि संसार० ॥ ३

चक्र भोज्यवत् काक ताडिवत् अंध वटेर हाथ आया।
जूडा कीली उदधि राइवत चिंतामणि चौपथ पाया ॥
इस अनादि संसार० ॥ ४

ये नर देही पाय कठिनतें तामें भी अति दुःख पाया।
गर्भ खिरण वा जन्म मरण वा मात तात मरणा आयो ॥
इस अनादि० ॥ ५

पर उच्छिष्ट क्षुधा तृषा गद शीत उष्ण कर विललाया।
दास पना अपमान वोझ धर पेट भरन घर घर जाया ॥
इस अनादि० ॥ ६

दैव योग तैं यो धन पाया तो मदांध होय मस्ताया।
मेरा तेरा में तू लेदे वहु अघकर नरकन जाया ॥

इस अनादि संसार० ॥ ७

अबकै सुथल शुकुल शुभ संगति हित उपदेश श्रवण पाया।
हे पद्मालय चेत शीघ्र ही फिर नहि मिलनी यह काया ॥
इस अनादि संसार उदधि में मानुष भव दुर्लभ पाया।
यह अवसर फिर नहि मिलनें का उदधि रत्नवत पछितायाा ॥८

हे भगवान तेराही पंथ स्वर्ग मोक्ष का दाता है तिसके ऊपर पद वर्णनं

यह तेरा पंथ जिनदेव मेरो मन भाता।
यह तेरा पंथ अपवर्ग स्वर्ग का दाता ॥

टेक- यह तेरा पंथ दृग ज्ञान चरण करता।
शंका मद वसु त्रय मूढ अनायतन हरता ॥
यह देव अदेव कुदेव सर्व दर्शाता।
यह सुगुरु कुगुरु का भेद भाव समझाता ॥
यह धर्माधर्म विवेक हृदय में लाता।
यह तेरा पंथ अपवर्ग स्वर्ग का दाता ॥१

यह तेरा पंथ अणुव्रती महाव्रत कारा।
यह क्षमा सत्य तप संयम का दातारा ॥
यह समिति चरित व्रत ज्ञान सर्व गुण भारा।
यह चतु कषाय पण पाप व्यसनतें न्यारा ॥
जिन सेयौ ते भये जगत में ज्ञाता।
यह तेरा पंथ अपवर्ग स्वर्ग का दाता ॥२

यह तेरा पंथ हत कुगति सुगति का करता।
यह काम क्रोध मद लोभ मोह का हरता ॥
यह दया दान षट् कर्म क्रिया शुभ करता।
यह चतु आराधन ज्ञान ध्यान विस्तरता ॥
यह तेरा पंथ ही मृत्युंजय पाता।
यह तेरा पंथ अपवर्ग स्वर्ग का दाता ॥३

यह जिन तेरे पंथ इंद्र अहमिंद्रा।
अरु लौकांतिक दिग् पाल सर्व भुव निंद्रा॥
यह ऋषी यती अणगार महा मुनि चंद्रा।
तेरे ही पंथी चक्रवर्ती तीर्थेन्द्रा॥
जे भये महा पद धारी विधि हाता।
यह तेरा पंथ अपवर्ग स्वर्ग का दाता॥४
जिनराज प्रार्थना यही मेरी तुम से।
अरु या व्रत् होय अपवर्ग जगत वन से॥
अरु तावत तेरा पंथ रहो मुझ मन से।
यह श्री मृगांक को विनती चरणन से॥
अब तीन लोक में यही मार्ग सुख साता।
यह तेरा पंथ अपवर्ग स्वर्ग का दाता॥
यह तेरा पंथ जिनदेव मेरे मन भाता।
यह तेरा पंथ अपवर्ग स्वर्ग का दाता॥५

पद्माच राग में वर्णनं

परभव में जाना तुझको एकला तूं समझं सोचले॥
टेक—इहां आनकै क्या जु किया तुम दिल मैं करो विचार।
क्यों माता नें बोझा मारी धर कर नर अवतार॥
दान दिया नहि नर पशून को करी न पूजा सार।
शास्त्र श्रवण कीनों नहीं सनें दर्शन देव जु द्वार॥
जी तूं समझ सोचले परभव में जाना तुझको एकला॥ १
तीर्थ यात्रा नहीं करी सनें करीन सज्जन प्रीत।
निंदा देव गुरू वृष कीनीं धारी दुर्ज्जन रीत॥
हिंसा झूंठ कपट चोरी कर खोई धीज प्रतीत।
परनिंदा अपनी परशंसा करी अन्याय अनीत॥
जी तूं समझ सोचले परभव में जाना तुझको एकला॥ २

किसका सुत किसकी त्रिया सुनें किसका धन परवार।
परभव में तूं ही दुख पावै कौंन सुनें तुझ मार॥
वहां पुकार हा माता पितु हा कुटंव परिवार।
सुख मैं तुम स्वारथ के साथी दुख मैं कोइन लार॥
जिया तूं समझ सोचले परभव में जाना० ॥३

संपत विजली सारखी सनें जोवन वादल रंग।
जीवन जल वुद वुद सम जानों भोग रोग क्षण भंग॥
मात पिता भ्राता सुत अवला ये नहिं तेरी संग।
तूं ही परभव जाय एकला मार खायगा अंग॥
जिया तूं समझ सोचले परभव में जाना० ॥४

धन गृह लग मसान लग परिजन देह दाग लग जान।
पुण्य पाप दोऊ साथ जांयगे कोंइ न लावै आन॥
राग द्वेष किस सूं अव करते ये सव झूंठे मान।
रमावधू जिन वृष उर धारो जो पावो शिव थान॥
जिया तूं समझ सोचले परभव में जाना० ॥५

मूर्ख के कभी ज्ञान नहीं होय चाहे जितना शास्त्र पठन करे तथा
श्रवण करे तिस पर दृष्टान्त वर्णन लिख्यते

मति मंद नहीं समझे कभी शास्त्र श्रवण से।
कौवा न कभी हंस होय मोती चुगनें से॥
न होय स्वान पूंछ सीधी घी के मलने से।
सर्प्प के न अमृत होय दुग्ध पिवन से॥ १
निकसै न कभी घी जो वहु जल के मथन से।
कोला न होय सफेद कभी उदधि स्नपन से॥
न होवै दुष्ट कभी सुष्ट शास्त्र पठन से।
वांझके न पुत्र होय वहु यत्न करन से॥ २
मीठा न होय नीम जो गुड़ घृत के सींचन से।

फूलैं फलैं न बेंत कभी मेघ झरन से ॥
अंध को न सूझै नहि सूर्य उगन से ।
वहिरा जो स्वर सुनैं नहीं वहु ढोल वजन से ॥ ३
निकलै न कभी कनक जो वहु तुस के कुटन से ।
न होय छिद्र हीरे मैं सिरस सुमन से ॥
इत्यादिक सुनि दृष्टांत कहा वहुत कथन से ।
श्री मृगांक समझै नहीं वहुत पठन से ॥ ४

पद वर्णनं

जियाजी थाने कुणभर मायो जी ।
भोग कर भव दुख पाया जी ॥
टेक—भोग भुजंग जु सार से, भोगत प्राण नसाय ।
देवसार से भोग सेवतां उपजै थावर काय ॥
उपजि कर स्थावर काया जी ।
भोग कर वहु दुख पाया जी ॥
जियाजी थाने कुण० ॥ १
इन भोगों के कारणों, करैं नीच अघ काम ।
भोग चाहकां तृप्त होय नहि भटको दशदिशि ठाम ॥
भोग दशदिशि भटकाया जी ।
भोग कर वहु दुख पाया जी ॥ २
यां भोगां सूं प्रीति जु करकैं भ्रम्यों अनंत संसार ।
सुख पायो नहिं कोइ जगे सुनें, लख चौरासि मझार ॥
भोग चौरासी भ्रमाया जी ।
भोग कर वहु दुख पाया जी ॥ ३
सुभूमि चक्री भोग चाह कर, गये सप्त स्वर्गमाहिं ।
और रंक की कहा कथा सुनें रुले चतुर गति मांहि ॥
भोग चतुगंति रुल्हाया जी ।

भोग कर बहु दुख पाया जी ॥ ४
तीन लोक के स्वाद तुम भोगे बहु बहु बार।
तो भी तृष्णा नहिं घटी सुनें, चाँह दाह विस्तार ॥
चांह की दाह बढ़ाया जी।
भोग कर बहु दुख पाया जी ॥ ५
अग्नि तृप्ति नहिं इंधनं, उदधि न दिन कर नांहि।
रमावधू ज्यों भोग रोग की, चाँह घटी उर नांहि ॥
चाँह बहु दुःख दिखाया जी।
भोग कर बहु दुख पाया जी ॥ ६

स्त्री की तरफ से अपने पति का शिक्षा रूप पद वर्णन

चाल लावणी की—पिया खूब किया जु विचार योग तुम धारा।
अरु किया आत्म कल्याण मेरे भरतारा ॥
टेक—पिया यह अनित्य संसार सुख दुःख कारा।
अरु सदां शोक भय क्लेश दुःख दातारा ॥
पिया यह संसार असार दुःख की धारा।
कहीं रंच मात्र सुख नहिं भ्रम्यां जग सारा ॥
पिय जिन छोड्य घर द्वार हुवे जग पारा।
अरु किया आत्म कल्याण मेरे भरतारा ॥ १
सुत मात पिता स्त्री भ्रात मित्र परिवारा।
ये हुवे अनंती बार भ्रमत संसारा ॥
कोई दुख मैं साथी हुवा नहीं पिय म्हारा।
अब गया अकेला आप नर्क की धारा ॥
तब गया संग नहि पिता मात सुत दारा।
तुम किया० ॥ २
यह धन यौवन तन रूप बीज चमकारा।
अरु राज रोग बल चक्र धनुप उनिहारा ॥

यह सब इक दिन हो नाश पिया उरधारा।
जहां जाय अकेला आप कोई नहिं प्यारा॥
जहां जलै गलै तन कटै चक्र की धारा।
तुम किया० ॥ ३

पिया जो जनम्या सो मर्या जगत की धारा।
अब जिनका हुआ संयोग वियोग पुकारा॥
कोई देवी देवता नहीं बचावन हारा।
वह झूंठी दुनिया भटक रही जग सारा॥
सद् धर्म्म सिवाय न कोई सुख - दातारा।
तुम किया० ॥ ४

यह पृथ्वी धन गज रत्न स्वर्ण विस्तारा।
नहिं तार सकै संसार नर्क पशु धारा॥
पिया कहँ तक करूं तारीफ आप हुवे पारा।
अब श्री मृगांक भी हर्ष हृदय में धारा॥
तुम लिया अमर पद स्वर्ग सुक्ख दातारा।
अरु किया आत्म कल्याण मेरे भरतारा॥ ५

ऋषभ देव का पद

प्रभु ऋषभदेव मम प्यारा, जिन मोक्ष मार्ग विस्तारा।
नृप नाभि भवन अवतारा, त्रिभुवन जिय आनंद धारा॥
देवों नें किया जयकारा, प्रभु ऋषभ देव मम प्यारा॥ २
बालक रमि यौवन धारा, षट् कर्म प्रजा में प्रचारा।
फिर राज्य मार्ग विस्तारा, प्रभु ऋषभ देव मम प्यारा॥ ३
कोई हेत त्याग संसारा, तन नग्न दिगम्बर धारा।
तप कर अरि कर्म संहारा, प्रभु ऋषभ देव मम प्यारा॥ ४
फिर दया धर्म विस्तारा, उपदेशे जग जन सारा।
बहु सतो गुणी उर धारा, प्रभु ऋषभ देव मम प्यारा॥ ५

भू श्री मृगांक शिर धारा, त्रिक नमों ऋषभ अवतारा ।
जिन हनि अरि मोक्ष पधारा, प्रभु ऋषभ देव मम प्यारा ॥ ६

संसार में चक्रवर्त्यादि पदवी तथा और सुख सम्पदा इत्यादि पावे तो क्या हुआ आखिर मरना जरूर होगा इसके ऊपर शेरखानी चाल मे छन्द वर्णनं

पट् खंड भूमि साध चक्रवर्ति कहाया ।
मलेच्छ खंड वृषभाचल नाम लिखाया ॥
बत्तीस सहस भूप आकैं शीश नवाया ।
दश चार रत्न नव निधि जो घर में धराया ॥
दशांग भोग नारि सहस छयानवै पाया ।
गज वाजि सुभट गजरथ सुर सेव कराया ॥
व्यंतर फल हेतु जाकें समुद गिराया ।
जब कालवली आया तब सबकों भगाया ॥
षट् खंड चक्रवर्ति हुवे तो भला क्या ॥ २
वासुदेव तीन खंड राज्य कराया ।
प्रति वासुदेव भूप सहस मार गिराया ॥
सप्त रत्न देश कोप घर में धराया ।
जब वख्त अपना आया तब पानी भी न पाया ॥
तीन खंड अवधि पति हुवै तो भला क्या ॥ ३
राजाधिराज महाराज नाम जु पाया ।
मंडलार्द्ध मंडल महा मंडलीक कहाया ॥
मोहर छाप सिक्का धोंशा निशान वजाया ।
जब कालवली आया सब होगये पराया ॥
महाराज महा मंडल हुवे तो भला क्या ॥ ४
व्याकर्ण न्याय तर्क अलंकार वनाया है ।
काव्य कोष छन्द शास्त्र वेद पढ़ाया ॥
स्नान ध्यान शौच कर पंडित जो कहाया ।

जब कालसिंह आया पंडितकों लै सिधाया ॥
वेद पुरान पढ़कर पण्डित हुवा तो क्या ॥ ५
पढ़ अष्ट अंग पूरण ज्योतिष को छांन डाला।
ग्रह लग्न दशा सोधि किया लोक उजारा ॥
जीत हारि हांनि लाभ मरण निकाला।
जब वक्त अपना आया उस वक्त को न टाला ॥
ज्योतिष के अंग पढ़कर पण्डित हुवे तो क्या ॥ ६
पढ़ मन्त्र तन्त्र यन्त्र जादूगर जो कहाया।
तू वोंके शेर कर के बहु लोक डराया ॥
भूत प्रेत० जिन्न सब के दूर कराया।
वक्त मोत अपनें जादू न काम आया ॥
पढ़ मन्त्र तन्त्र जादू टोना किया तो क्या ॥ ७
कितनों ने बादशाही क्या क्या खिताब पाया।
चपरास मुहर सिक्के पर नाम खुदाया ॥
भौंहें चढ़ाय अचल नेम जल पर जु चलाया।
चपरास नाम सिक्का ढूँढा कहीं न पाया ॥
दो दिन का मुहर सिक्का दर पर हुवा तो फिर क्या ॥ ८
ईसा ने करामात से मुरदों को जिलाया।
अन्धों को दीनीं आँखें गूंगों को बुलाया ॥
रोगों को किये चंगे बहिरों को सुनाया।
इतनें भी काम करने पर फिर क्रुस चढ़ाया ॥
इतनी भी करामातें फिर भी तो हुवा क्या ॥ ९
इस मौत से किसीनें कोई कों न बचाया।
ऐसा तो कोई आजतक नजरों में न आया ॥
इस वास्ते इस मौत का कर जल्द सफाया।
श्री मृगांक ने भी अपने दिल को सुनाया ॥

घर घर में शोर चर्चा इसका हुआ तो क्या ॥ १०

सब मनुष्यों के वास्ते दाल आटे का फिकर है तो कैसे धर्म की प्राप्ति होय ताका छंद वर्णनं

गरने आटे दाल का अब जो नहीं होता फिकर ।
तो न फिरतें ये मुसाहिब बादशाह हो दर बदर ॥
हाथीरु घोड़ा रथ सिपाही फौज ले करते सफर ।
जाबजां गढ़ कोट से लड़ते फिरें हैं आयु भर ॥
सबके दिलको फिकर है दिनरात आटे दाल का ॥ १
गरने आटे दाल का दुनियां में होता जो फिकर ।
तो सुबह से श्याम तक कंधे पे रखतें क्या सिपर ॥
सेठ साहूकार सब क्यों बैठते दूकान पर ।
दल्लाल अरु व्यापार क्यों सब लेते देते मालजर ॥
सबके दिल को फिकर है दिनरात आटे दाल का ॥ २
अर न आटे दाल का खटका न होता बार बार ।
दौड़ते काहे को फिरते धूप में प्यादे सवार ॥
दरया व जंगल अरु पहाड़ों क्यों भटकते राजा के द्वार ।
क्यों शिर घुटाकर डोलते क्यों शिर पें रखते जटाभार ॥
सबके दिल को फिकर है दिनरात आटे दाल का ॥ ३
सब हुनर अरु पैंसे कारी खास इस ही के लिये ।
ताबेदारी खितमतें अरु खुशामद दीजिये ॥
नालतीबामला मतवागाल खिड़की सब पिये ।
इस दाल आटे के जु खातिर हमनें क्या क्या न किये ॥
सबके दिल को फिकर है दिनरात आटे दाल का ॥ ४
यह दाल आटा अजब है दुनियां मे इसही का नूर ।
इस बिना सब खेल फीके नृत्य और संगीत दूर ॥
जिसकी ख्वाहिश इसमें रहती वोही हैगा दूर नूर ।

जिसनें इसको त्याग दीना वोही कामिल हैगा पूर ॥
सबके दिल को फिकर है दिनरात आटे दाल का ॥ ५

दुनियाँ में सर्व भेष रोटी के वास्ते हैं सो वर्णनं

कपड़े किसी के लाल है रोटी के वास्ते ।
लंबे किसी के वाल हैं रोटी के वास्ते ॥
ओढ़ै है कोई शाल को रोटी के वास्ते ।
रखते हैं मृगछाल को रोटी के वास्ते ॥ १
मुड़वाते शिर के वाल को रोटी के वास्ते ।
आतिश की ज्वाल सहते रोटी के वास्ते ॥
गैरों की फाल खोलते रोटी के वास्ते ।
अपनी नहीं सम्हाल है रोटी के वास्ते ॥ २
दर वदर सवाल है रोटी के वास्ते ।
जो कुछ के दिल पै ख्याल है रोटी के वास्ते ॥
यह सर्व इन्द्रजाल है रोटी के वास्ते ।
इसमें नहीं कमाल है आखिर के वास्ते ॥ ३
दुनियां पै जाल डालते रोटी के वास्ते ।
गैरों का माल मारते रोटी के वास्ते ॥
पढ़ते खुदा के हाल को रोटी के वास्ते ।
यह सर्व इस्तमाल है रोटी के वास्ते ॥ ४

किसी को कुछ भी मालूम नहीं इस संसार में विधाता क्या करैगा और क्या कर चुका सिवाय केवलज्ञानी के और कोई नहीं जान सकता सो वर्णन लिख्यते

यह कौन जानै क्या किया कल क्या क्या विधाता काल करैगा ।
किसै बिगाड़ै किसै सुधारै किसै लुटावै किसै भरगा ॥
किसै उठावै किसै गिरावै किसै भगावै किसै रखैगा ।
किसी को मुतलक नहीं है मालुम क्या क्या किया विधि क्या क्या करैगा ॥

पढ़े भटकते हैं लाखों पंडित हजारों कामिल किरोड़ों स्यानें।
जो हमनें देखा तो गौर करके ज्ञानी की बातें ज्ञानी ही जानें ॥ १
कोई है हंसता कोई है रोता कहीं है शादी कहीं गमी है।
कहीं है बढ़ती कही है घटती कोई है क्रोधी कोई शमी है॥
कोई घिसटता जमी के ऊपर कोई पलंग पर नहीं कमी है।
यह भेद वह अपना आप जानें किसीके दिल पर यह नहीं जमी है॥
पढ़े भटकते हैं लाखों पंडित० ॥ २

सृष्टि का कोई कर्ता हर्ता धरता नहीं बीज वृक्षवत् यह जगत अनादिकाल से है ताका वर्णनं

सृष्टि नहीं जो पहिले से थी तबतक ईश्वर कहां रहा।
कहां बैठकें सृष्टि बनाई सब सामग्री पाई कहां॥
क्या दुख था जो सृष्टि बनाई क्या फल चाहा दिल में तहां।
क्यों बनाय कर सृष्टि बिगाड़ी क्यों नाराजी हुई वहाँ ॥ १
जो परमेश्वर सृष्टि रची तो क्यों सुखिया नहिं किया जहांन।
दुखी दरिद्री रोगी शोकी अंधे बहिरे लूले कान॥
उल्लू काक सिंह अहि गर्दभ बीछू खटमल शूकर स्वान।
दुष्ट म्लेच्छ विषकंटक विष्टा दुखदायक क्यों रची प्रमान ॥ २
सृष्टि बनाने का जो नकशा पहिले कहाँ से आया वहाँ।
निराकार से नहीं होय साकार वस्तु सिद्धान्त कहाँ॥
सत वस्तु का नाश होय नहीं असत् उपजे नहिं यहाँ।
बीज वृक्षवत् जगत अनादिका कोई नहीं करता है तहाँ॥ ३
जो परमेश्वर रागी नहीं था तो काहेकूं रच्या जहांन।
जो परमेश्वर द्वेषी नहीं था तो काहेकूं नाश करान॥
जो परमेश्वर पुन्य पाप का कर्ता क्यों जिय दुख भुगतान।
वो स्वतंत्र नहीं अस्मादादिवत् सो परमेश्वर नहीं प्रमान ॥ ४
जो सुख की इच्छा नहिं थी तो सृष्टि रची काहेकों इहाँ।

जो परमेश्वर ज्ञानी था क्यों दैत्यरु काफिर रचे जहाँ ॥
जो दैत्यों से भय नहिं था तो हाथों में शस्त्र ग्रहा ।
राग द्वेष नहीं था क्यों सुख दुख स्वर्ग नर्क फल दिया महा ॥ ५

काम नहीं था तो परमेश्वर काहेकूं स्त्री संग लिये ।
क्रोध नहीं था तो हिरणाकुश पेट चीर क्यों रुधिर पिये ॥
लोभ नहीं था तो ईश्वर के क्यों रतन हेत जल मथन किये ।
मोह नहीं था तो क्यों विलाप किय रामचंद्र सीता के लिये ॥ ६

संसारी लोग जगत का कर्ता अनेक ईश्वर को ही माने है

कोई कहता है जग का कर्ता ईश्वर तथा महेश्वर जांन ।
कोई कहता है ब्रह्मा विष्णु कोई मनु कोई प्रकृति वखांन ॥
कोई कहता है दक्ष प्रजापति कोई कश्यप कोई पुरुष प्रधान ।
कोई स्वतः-ही पंच भूति कोई शक्ति को कहै प्रमान ॥ १

ब्रह्मवादि कोई देववादि कोई भूतवादि कोई अक्षरवादि ।
अंडवादि परनामवादि कोई कालवादि कोई नास्तिकवादि ॥
द्वैतवादि अद्वैतवादि कोई क्षणकवादि कोई कर्तावादि ।
प्रकृतिवादि कोई कर्मवादि कोई सिद्धवादि यों करैं विवाद ॥ २

धर्म सेवन कर निदान करना योग्य नांहीं सो दृष्टान्त वर्णनं.

कौड़ी साठै कोट्य मोल मणि लोहे अर्थ रत्न भरयान ।
मुक्ता हार सूत को तोड़ै भस्म अर्थ गोसीर छिदान ॥
अमृत पाय पांव को धोवै गजसज ईंधन बोझ ढुरान ।
काक उड़ावन पारस फैंकैं काष्ठ अर्थ तरु कल्प छिदान ॥ १

बैचैं काष्ट रत्न भूषण करखल रांधन कंचन सुरनीर ।
अमृत पायकर लहसन सींचैं शूकर मेवा मिश्री खीर ॥
पाय रसायन कौडी फैंकैं हस्त दीप पड़ि कूप गहीर ।
तैसें धर्म रत्न कों पाकर मूर्ख निदान करैं बहु पीर ॥ २

हिंसा में कदापि धर्म नहीं तिस पर दृष्टान्त वर्णनं

सवैया सूर्य अग्नि शीतल होय जल चंद्र उष्ण होय पृथ्वी कमल तुश कूटै अन्न जानिये। बांझ पुत्र सर्प्प मुख अमृत औ मेरु चले काक मुख शोच औ शिला जल तिरानिये॥ कृपण कैं उदारता और वेश्या पुत्र बाप होय मूरख के सौच सिद्ध पुनर्जन्म जानियें। सूर्य उदय पश्चिम में पंगु मेरु चढ़े सही अन्ध रत्न परख होय बहिर सुर पिछानियें॥ १॥

कायर समर जीतें मृत्यु कैं दया होय विष खाये जीवन घी जल मथन सूं। सर्प्प चाल कुत्ता पूंछ सीधी होय कहूं वालू खल पैलै तेल होय कभी जतन सूं॥ पापी कूं देवगति पुन्यी कूं नरक होय अंगुल आकाश नापैं भूमि नापै पगन सूं। कलह में जसगान रात्रि में होत भानु जड में न होत ज्ञान सिंधु नापैं चलु'न सूं॥ २

सर्व देवों में जिनेन्द्र देव की मुख्यता तिस पर दृष्टांत वर्णनं

कल्प वृक्ष चिंतामणि चक्री कामधेनु ऐरावत इन्द्र।
काम देव पारस मणिधारी चित्रावेल सूर्य अरु चंद्र॥
चक्र सुदर्शन मेरु सिद्ध पद अभय दान अरु उदधि मृगेंद्र।
काला गुरू शीलव्रत लवणरु सर्व देव में देव जिनेंद्र॥ १

हर एक बात पर दृष्टांत सो ताका वर्णनं

श्लोक—कूपं वारि विना दलं करं विना हस्तं वदानं विना।
रजनी चंद्र विना गिरा सुर विना धेनुश्च दुग्धं विना॥
पांथं साथ विना सरंजल विना दानं च मानं विना।
गीतं कंठ विना तरुं फल विना यंत्रं च तारं विना॥ १
भोज्यं लवण विना गजं मद विना वाजी च तेजी विना।
मंदिर दीप विना वनं तरु विना राज्यं च नीतिं विना॥
मुक्ता वारि विना गृहंधन विना वर्षा विना श्रावणा।
पुष्पं गंध विना नदी जल विना पद्मं विना पुष्करा॥ २

उपवन पुष्प विना पुरं नदि विना शस्त्रं च तीक्ष्णं विना ।
नगरी कोट विना प्रजा नृप विना राजा च मंत्री विना ॥
मित्रं प्रीति विना मुखं दृग विना ताम्बूल पुंगी विना ।
स्वर्ण क्रांति विना करी रद विना छाया विना पादपा ॥ ३
दृष्टिं प्रीति विना धनं सुख विना ग्रेहं च भार्या विना ।
विप्रा वेद विना कुलं सुत विना राजा च सैन्यां विना ॥
शूरा शस्त्र विना स्त्रियः पति विना पूजा विना देवता ।
ये ते सर्व्व न शोभते किम परं धर्म्म विना मानवा ॥ ४

खोटी संगति करके औगुण प्राप्त होते हैं सो दृष्टांत वर्णनं

अधम नीच दुर्जन संगत कर सज्जन हू दुर्ज्जन हो जाय ।
जल अग्नि कर दूध कांजि कर कज्जल संगहि उज्जल जाय ॥
लोह अग्नि रवि केतु राहु विधु कायर संग सूरता जाय ।
स्वात संग अहि पुष्प मृतक संग लहसन संग गंध गुण जाय ॥१

अच्छी संगति करके भले गुणों की प्राप्ति होती है सो दृष्टांत वर्णनं

काव्य छंद — चंदन नीम तरु चना व लोहा क्षुद्रा जला जान्हवी ।
दुग्धं तोय च मेघ ईप कीटा भृंगा सुमन देवता ॥
पारस लोह च सीप स्वांति मेघा सिंधुर्तिली अर्गजा ।
तुलसी विष्णु रसादि ताम्र सुवर्णा संगं निशापति निशा ॥१

देखो ऐसे दुष्ट लोगों की संगति नहीं करना

ऐसे की संगत नहीं करना हिंसक चोर दुष्ट ठग जान ।
ज्वारी व्यभिचारीरु लवारी क्रोधी लोभी मदिरा पान ॥
दुर्ज्जन धूर्त कृतघ्नी कपटी अरु विस्वास घाती दुर्ध्यान ।
वेश्या शक्त मूर्ख खल द्रोही निंदक नीच पाप ठग खांन ॥ १

पर उपकारी वस्तुन के दृष्टांत लिख्यते

पुष्प सुगंध नदी जल तरु फल स्वर्णाभर्ण वृक्ष वट छांह ।
रहठ घड़ी अरु इक्षु दंड रस चंदन गंध मेघ जल आह ॥

काम धेनु पारसरु बिनोला ये सब पर उपकार करांहि ॥ १

सज्जन लोगों के गुण वर्णनं

गालि खाय कर गालि न देवै मार खाय नहिं मारै पार ।
झूंठ श्रवण कर झूंठ न बोलैं वाद विवाद करैं न लगार ॥
दुष्टी चोर छली पापी नर इनको भी दुर्वच नहिं मार ।
ऐसे सज्जन पुरुषों कूं तुम देव समान जान सुखकार ॥ १

लज्जावान पुरुषों के गुण वर्णनं

नीची दृष्टि वचन हित मित के मंद हास्य दीरघ स्वर नांहि ।
सभा नम्रता प्रीति सवन में सादा चाल क्षमा उरमांहि ॥
हास्य मश्करी निंदा चुगली ईर्षा धीठ प्रलापन आहि ।
धर्म कर्म में सावधानता यह गुण लज्जावंत कहांहि ॥ १

क्षमावान पुरुषो के गुण वर्णनं

क्षमावान पृथ्वी जु सारका गाली कटुक वचन सुनि कांन ।
मार खाय कर क्लेश पाय कर क्रोध करै नहिं पुरुष प्रधान ॥
क्षमा मातु पितु मित्र गुरूजन क्षमा अहिंसा सत्यरु दान ।
क्षमा शांति है क्षमा श्रेय है क्षमा स्वर्ग अथवा निर्वाण ॥ १

धर्मात्मा पुरुषों के लक्षण वर्णनं

सत्य बोलना दया पालना क्रोध जीतना छोड़ प्रमाद ।
धर संतोष लोभ को छोड़ो जीतो इंद्री कामोन्माद ॥
मिष्ट बोल परनिंदा छोड़ो रागद्वेषरु वैर विवाद ।
ममता कपट पाप को छोड़ो छांड मूर्खता हिंसा नाद ॥ १

शास्त्र पठन अरविद्या सीखन मन वश कर तप धर्म करान ।
आलस छोड़ देव गुरु को नमि पर उपकार करो चतुदान ॥
मैत्री भावरु चित्त प्रसन्नता निद्रा अल्परु भोजन पान ।
यह धर्मी के लक्षण जानो कहै जैनमत गुरू प्रधान ॥ २

नमस्कार करने योग्य पुरुषों के लक्षण वर्णनं

संम्यग्ज्ञानी आत्म ध्यानी शिवमग जानी सुख दानी।
हित मित वाणी गुण प्रधानी वचन प्रमाणी श्रुत ज्ञानी ॥
रक्षक सब प्राणी ब्रह्म ज्ञानी संशय हानी गुरु जानी।
मिथ्यात उडाणी सुक्ख निशानीं दया प्रधानी गुणखानी ॥ १

जूवा व्यसन के दोष वर्णन

द्यूत व्यसन संकेत पाप पण चतु कषाय अपजस धन हार।
प्रीति प्रतीत धर्म सब खोवै संगत अधम गुरू अपकार ॥
हार जीत कुल मरण देखै पुत्र कालित्र दाव में धार।
छोड़ो द्यूत समाव्हय दोनों वा चौपड़ सतरंज निहार ॥ १

मदिरा के दोष वर्णनं

बुद्धि विवेक ज्ञान सत्य संयम शौच तेज सम दया क्षमारु।
चोरी स्त्री वेश्या बध बंधन रोवन हसन गान मूर्छारु ॥
दोडन लुटन क्रोध निर्लज्या भ्रमण नमन नाटक पंकारु।
मरण आपदा किंकर राजा स्वान मूत्र मुख वास पुकार ॥ १

दोहा—लोक निंद भय नग्नता, अर कृतघ्नी विश्वास।
दोष जु इत्यादिक घनैं, मद के कहे प्रकास ॥ २

क्रोधासुर का विचार जब मनुष्य के हृदय में प्रवेश करे तब कैसा होता है सो वर्णनं

धन की प्राप्ति होय मुझ करकैं लोक सर्व भय खाते हैं।
जीत होय अरि सें मुझ करकें रंका राज्य पाते हैं ॥
मेरे भय से सब जन सेवै नमस्कार कर आते हैं।
बड़े बड़े राजा महाराजा देश छोड़ कर जाते हैं ॥ १
देवी देवता मुझ करकैं ही अपनी पूजा पाते हैं।
क्रूर दृष्टि करि शस्त्र हाथ में रख कर जगत डराते है ॥
मुझ कूं ही मन में चिताकर राक्षस असुर गिराते हैं।

आप काल में साधु संतद्विज मेरी याद धराते हैं ॥ २
लूटमार में जीव घात में मुझे प्रथम ही ध्याते हैं।
शूरवीर वलवान प्रतापी सव गुण मेरे गाते हैं ॥
दांती पीसन होंठ डसन अर भृकुटी ऊर्द्ध चढ़ाते है।
मोह नृपति निज सैन्या मांही मुझको प्रथम वुलाते हैं ॥ ३

क्रोध ही चतुर्गतियों मे दुक्ख देने को अगुवा है सो वर्णनं

कलह शोक संग्राम क्लेश वध स्वजन नाश छूटै निज देश।
ईर्षा वैर चित भ्रम वंधन डूवन कूपरु वदले भेष ॥
विष भक्षण वंदी ग्रह मारण राज्य दंड घर नर्क प्रवेश।
चतुर गती में दुक्ख दैंन को अरे क्रोध तूं ही अग्रेश ॥ १

क्रोध करने से सर्व नाश होता है और आपकी वा घरकी वड़ी भारी हानि होती है सो वर्णनं

क्रोध करन से भाग्य नाश हो द्रव्य नाश हो रूप विनाश।
राज्य नाश हो प्रजा नाश हो कुटंव नाश वलवुद्धि विनाश ॥
धर्म नाश हो स्वर्ग नाश हो क्षमा दया यश विद्या नाश।
सत्य नाश हो आत्म नाश हो सुख नाश हो सर्व विनाश ॥ १
क्रोधी मारै ताड़ै छेदै गाली दे दुर्वचन कहान।
पिता पुत्र का घात करै वा पुत्र पिता का घात करान ॥
स्त्री भर्ता अरु माता भ्राता जा माता ले पुत्री प्राण।
स्वामी सेवक मित्र गुरूजन सव को मार करे निज हान ॥ २

भोजन कारण ये जीव अनेक पाप करे है सो वर्णनं

भोजन कारण हिंसा चोरी झूंठ कुशील परिग्रह पाप।
जीव खाय जल थल नभविल के तथा शिकार करे ले चांप ॥
चर्मकार मातंग शूद्र जन तिनकी ओठ न खावै धाप।
तथा पुत्र वा स्त्री पुत्री कूं भोजन कारण वैंचे वाप ॥ १
क्षुधा हेत नहिं देखे कुलको जात पदस्थरूप अभिमान।
शूर वीरता क्षांतिक्षमा वल नीत शक्ति वा धैर्य महान ॥

क्षुधावान छोड़ै वृष लज्जा मित्ररु स्वामी गुरु गुण ज्ञानं।
देखौ ग्राह श्वान मार्ज्जारी होय क्षुधा तुर सुत को खांन॥ २

वोही शास्त्र जगत में, कल्याणकारी है जो तत्व का प्रकाशक दयाधर्म का पुष्ट करने वाला हो तिसका वर्णनं

वोही शास्त्र है जगहितकारक जिस कथनी में दया प्रधान।
सत्य प्रकाशक हितमित भाषक करुणारस कर पूर्ण महान॥
तत्व प्रकाशक चतुगति नाशक क्रोध लोभ माया नहिं मान।
क्षमा मार्दवार्जव गुणदर्शक प्रगट्यावन शिव सम्यक्ज्ञान॥ १

शास्त्र श्रवणकर पशुपक्षी भी उत्तमगति को प्राप्त हुये तिनके नाम वर्णनं

शास्त्र श्रवणकर पशुपक्षी नर हुवे ऊंच कुल के अव तंस।
स्वान सिंह गज अज अहि शूकर जंबुक वृषभ नकुल कपि हंस॥
गृद्ध कबूतर मृग मातंगरु धीवर चोर भील विटवंस।
तातैं जिन वृष श्रवण करो नित पावो दिव अपवर्ग प्रशंस॥ १

आगैं देखो शास्त्र के अभ्यास से पुन्य पाप के चरित्र तथा कला चातुर्यता प्राप्त होती है

शास्त्र के अभ्यास बिन हिताहितं न जानियं।
देव गुरू धर्म वा अधर्म कि पिछानियं॥
राग द्वेष सुख दुख पुण्य पाप छानियं।
स्वर्ग नर्क सत्य असत्य विवंध मोक्ष मानियं॥ १
लोक वा अलोक वा त्रिकाल वस्तु जानियं।
ऊर्द्ध अधो मध्य भेद जीव किमि प्रमानियं॥
संसृती निवृति मार्ग पुद्गलात्म भानियं।
पंच लब्धि णुव्रतं महाव्रतं सुज्ञानयं॥ २
भूगोल वा खगोल गणित ज्योतिषं सुवैद्यकं।
तर्क छन्द अलंकार कोष न्याय नीतकं॥
संगीत वाद्य नाट्य औ कलारु नृत्य चित्रकं।
शस्त्र शास्त्र शिल्पि समर वारि पोत वास्तुकं॥ ३

यंत्र तंत्र इन्द्र जाल काय पर प्रवेशनं ।
जलं गतं नभ स्थलं वायु अग्नि चालनं ॥
अनेक मत अनेक देश चाल ढाल जाननं ।
धर्म कर्म सब व्योहार शास्त्र ही प्रमाणनं ॥ ४

आगैं शास्त्र श्रवणकर अनेक जीव संसार के दुःख से छूटे तिन्हों के नाम वर्णनं

ताराख्य सरोवर के तीर हंस को सिचाण ।
घायल किया सुचैत्य के समीप पड़ा आन ॥
तहां शिष्य को गुरू जु पढ़ाते थे शास्त्र ज्ञान ।
सुन करके प्राण छोड़ि हुआ देव किन्नरान ॥ १
इक यज्ञ बीच स्वान को द्विज मार गिराया ।
जीव कने जहां आके उसे शास्त्र सुनाया ॥
मर करके यक्ष इन्द्र को उद्योत कराया ।
धर्मी कूं देख दुःख में संकट से छुड़ाया ॥ २
इक वज्र घोष हाथी मुनि मारणे आया ।
हाथी को मुनि देश शास्त्र श्रवण कराया ॥
श्रावक व्रत धार स्वर्ग बारमा पाया ।
नौ भव के सुख भोग पार्श्वनाथ कहाया ॥ ३
एक वन के बीच सिंह मुनि मारने धाया ।
मुनि देखि सिंह क्रूर को भव सिंह सुनाया ॥
सुनकर के शास्त्र सिंह सु सन्यास धराया ।
दशभव सुख भोग वीर नाथ कहाया ॥ ४
एक रोहणीय चोर सुनें वीर के वचन ।
देवों के तनकी छाया नहीं औ पलक लगन ॥
इतनें ही श्रवण सूं जु बचा शूली के चढ़न ।
आखिर में तपकूं धारकैं किया स्वर्ग में गमन ॥ ५

इक पुत्र चिलाती जु महा क्रोध का भरा ।
शिरकाट सेठ पुत्री का गोद में धरा ॥
उपशम विवेक संवर सुन शांतिरस भरा ।
उपसर्ग घोर चैंटिका सहकर हुवा सुरा ॥ ६

इक चोर ने मुनि अर्जिका को अग्नि जलाया ।
मुनि शास्त्र को चांडाल से सम्यक्त लहाया ॥
भव धरके दूसरे में सुत ब्राह्मण जाया ।
धर्मोपदेश धार भीम केवल पाया ॥ ७

मछुवे को एक साधू नें जिन धम सुनाया ।
सुनकरके एक मछली का प्राण बचाया ॥
देवों से सेवा पाकर धन रत्न लहाया ।
आखिर को सर्व त्याग के दिवलोक सिधाया ॥ ८

देखो शास्त्र पढ़ने से अनेक गुण प्राप्त होते हैं

शास्त्रवान् विद्वान् बुद्धिवर ज्ञानवान् होवै गुणवान् ।
कलावान बलवान् नीतिवर सत्यवान् हो उद्यमवान् ॥
शांतिवान अरु क्रांतिवान् अरु क्षमावान् हो धीरजवान् ।
प्रीत प्रतीत संयमी दानी क्रियावान् राजा सन्मान ॥ १

जैन ग्रन्थों के नाम हाजिर में मिले तिन्हों के नाम लिख्यते

अंगपूर्व परिकर्म सूत्र प्रथमानुयोग चूलिका धार ।
परकीर्णक श्रुत वस्तु प्राभृत महाधवल जयधवल विचार ॥
धवल और महाभाष्य चूर्णिका अरु जिनेंद्र व्याकर्ण सम्हार ।
आत्म आध्यात्म प्रमाण परीक्षा न्यायदीपि नय चक्र प्रचार ॥ १

श्री तत्त्वार्थ सूत्र वसुपाहुड़ समयसार अरु प्रवचनसार ।
गोमटसार त्रिलोक्यसार पंचास्तिकाय विधि क्षपणासार ॥
बृहत्रयी लघुत्रयी अष्ट सति श्री देवागम लब्धीसार ।
श्री सर्वारथ सिद्धि परीक्षा मुख अष्ट सहस्त्री रयणासार ॥ २

राजवार्तिक श्लोकवार्तिक प्रमेय कमल मार्तंड विचार।
श्री पुरुषार्थ सिध्यु परमात्मा यशस्तिकल आराधन सार ॥
अर्थ प्रकाश स्वामिअनुपेक्षा सार सिद्धान्त सुधारस सार।
अनुभव ज्योति आत्म अनुशासन रत्न सुभाषित दर्शनसार ॥ ३
मूलाचार आचारसार अरु नेमसार चरित्रा सार।
संग्रह द्रव्य कुमुद चन्द्रोदय आप्त परीक्षा यत्याचार ॥
योगासार भगवति आराधन ज्ञानर्णवरु श्रावकाचार।
सार चौवीस पद्मनन्दीकृत पच्चीसी तत्वारथ सार ॥ ४
आदिनाथ उत्तर पुराण श्री तीर्थंकर तेईस पुराण।
पद्मपुराण और हरिवंश पुराणरु कर्णामृत पांडवरु पुराण ॥
सम्यक्त कौमुदी धर्म्म परीक्षा कथाकोष पुण्याश्रव जान।
धर्मसार सद्धाशत वली नाटक क्रिया कोष सब जान ॥ ५
रत्न करंड अमिति गति वसु नंदि ज्ञानानंद श्रावका चार।
प्रश्नोत्तर धर्मोपदेश गुरु पूज्यपाद श्रावक आचार ॥
द्यानत वुधजन भूधर अनुभव चिद्विलास परमानंद सार।
ब्रह्म विलास व नारसि पारस जिन गुण सुन्दर ज्ञान सम्हार ॥ ६
जंबू स्वामि यशोधर श्रेणिक भविष्य दत्त जिनदत्त चरित्र।
श्रीपाल प्रद्युम्न चारुदत्त कौशल नागकुमार चरित्र ॥
जीवंधर प्रीत्यंकर सीता महीपाल भद्रबाहु चरित्र।
सेठ सुदर्शन धनकुमार सुकुमाल सगर सुभूमि चरित्र ॥ ७

कुंद कुंदाचार्य कृत ८४ पाहुड जिसमें ४ पाहुड के नाम वर्णनं

प्रवचन पाहुड क्रियारु योनी सत्यासत्य तत्व विस्तार।
द्रव्य भाव नोकर्म जु पाहुड बंध मोक्ष चारित्र प्रचार ॥
विद्या पाहुड निमित्त सिद्धी षट् दर्शन पाहुड नयसार।
वस्तु सूत्र सिद्धान्त नियम अरु प्रकृति चूलिका जीव सम्हार ॥ १
ऊत पादरु आयत जु पाहुड कर्म वीर्य पाहुड विज्ञान।

अस्ति नास्ति सामायिक वंद नति प्रकृति मन अरु प्रत्याख्यान ॥
प्रश्नोत्तर अरु प्राश्चितरु कल्पाकल्प विनय संठान ।
सर सब जीवा जीवोत्पत्ति कुंद कुंद कृत पाहुड जान ॥ २

आगै देखो अनेक शिल्पि शास्त्र जिनसे कारीगरी का काम सीखा जाता था ऐसे प्राचीन ग्रन्थों के नाम वर्णनं

शिल्पिशास्त्र अरु शिल्पलेख अरु शिल्पिकला दीपक विस्तार ।
शिल्पि ग्रन्थ सर्वस्व संग्रहा वास्तुक विश्व कर्म अवतार ॥
विश्वमर्म अरु विश्व प्रकाशक विश्वदीप शिल्पार्थ सुसार ।
संग्रह विश्व विश्वकर्मीय जु ये सब शिल्पिशास्त्र विस्तार ॥ १

आगै अनेक शिल्पिकारों के नाम

मणिकारा स्वर्णकारा रतनकारा च वेधिका ।
कांस्यकारा तांम्रकारा लोहकारा स्मकुट्टका ॥ १
अस्त्रकारा शस्त्रकारा वस्त्रकारा च शिल्पिका ।
चित्रकारा रंगकारा वीणकाराश्व गायका ॥ २
इषुकारा दंडकारा खड्गकारा स्वतंत्रिका ।
कृषिकारा कुंभकारा तैलकाराश्व नापिका ॥ ३
कोषकारा केशकारा चर्मकाराश्व देहका ।
सूपकारा पूपकारा नृत्यकारा सुयंत्रका ॥ ४

आगैं देखो बड़ी बड़ी पंडिता विद्वान् स्त्री जिन्होंने बड़े बड़े काम किये और शील पाल्या तिनके नाम वर्णनं

श्लोक—अनुसूया कमलावती च गङ्गा तारामती नर्म्मदा ।
सावित्री च सुकन्ययारु विभणी लीलावती जानकी ॥
दमयन्ती च प्रभावती भगवती मन्दोदरी मालती ।
कौशल्या च शकुंतला पद्मिनी दुर्गा जया उर्म्मिला ॥ १

आगे नृत्यगान सीखा जाय ऐसे सांगीत शास्त्रों के नाम वर्णनं

नारद पंचम सार संहिता दामो दर सांगीत सुसार ।
अरु दर्प्पण संगीत नारायण रत्नाकर सांगीत विचार ॥

रागर्ण व नारद संगीतरु तांडव तारंगेश्वर सार।
रंभा संगीत ध्वनि मंजरि इति सांगीत शास्त्र विस्तार ॥ १

श्लोक—यस्य श्रवणमात्रेण रज्यंते सकला प्रजाः।
सर्व सारंजना द्धेतो स्तेन राग इति स्मृतः ॥ २

एक लगोटी की चाह के कारण जीवों क कितना आर्त ध्यान होय है सो कथन वर्णनं

सवैया इकतीसा—संयम को नाश हो तप वरज लोही मल कर्दम अरु गोवर जुंवा लीक उपजात है। दवने तें वैठन तें उठने तें सोवन तें अरु निचोड़न तें जीव मरजात है ॥ शर्दी तें गर्मी तें धूप में सुखावन तें उड़ने तें कंटक में संकट बहुपात हैं। हरने तें फटकने तें कटने सें सीमने तें क्रोध मान माया लोभ कषाय उपजात हैं ॥ १

दोहा—लाभ अलाभ विषाद भय, लज्जा गौरव दीन।
पैहरन तारण धरन का, याचन वस्त्र मलीन ॥ २
जीरण भीजन सिचन तें, कंटन और उठान।
एक लंगोटी कर रहै, सदा जु आरत ध्यान ॥ ३

पर द्रव्य सापेक्षा अठारा हजार शील के भेद वर्णनं

दोहा—मनत्रिक कृतत्रिक संज्ञ चतु, पच इंद्री दश जंतु।
क्षमा उलट क्रोधादि दश, सहस अठारह तंत ॥ १

स्त्री सापेक्षा अठारह हजार शील के भेद जिसमें अचेतन स्त्री सापेक्षा सातसै वीस वर्णनं

तीय अचेतन त्रिक जु मन, काय कृत त्रिक जान।
पंचेंद्री द्रव्य भाव युत, चतु कषाय उर आन ॥ १

चेतन स्त्री सापेक्षा शील के भेद सतरह हजार दोसै अस्सी सो ताके भेद वर्णनं

दोहा—तिय चेतन त्रिक मनजु त्रिक, कृत त्रिक इंद्री पांच।
द्रव्य भाव संज्ञा चतु, कषाय दश षट् वांच ॥ २

चौरासी लाख उत्तर गुण वर्णनं

पंच पाप अक्ष क्रोध चतु, भय रति अरतिलि गान।

त्रिक दुष्टत्व प्रमाद पै, सून्य मिथ्यात अज्ञान ॥ १
अति क्रमा अरु व्यति क्रमा, अती चार अन चार।
जीव परस्पर गुणित दश, आलोचन दश धार ॥ २
गुण दश शील विराधना, प्रायश्चित दश जान।
इन कर गुणित जु कीजिये, लख चौरासी मान ॥ ३

वक्ता के लक्षण वर्णनं

लोभी कपटो मानी क्रोधी तीव्र कषाय रहित जो होय।
प्रश्न सहन प्रथमहि उत्तर दे आगम लौकिक ज्ञाता होय ॥
प्रभुता गुण अरु जगत मान्य प्रियमन हारक मिष्टाक्षर होय।
निर्वांछक निःशंकित सज्जन देश काल को ज्ञाता होय ॥ १

श्रोता के लक्षण वर्णनं

भव्य होय कल्यांण विचारक हित वांछित दुखतें भयभीत।
सावधान इच्छक सुख वृष को धारण शक्ति होय निरनीत ॥
विनय वान प्रश्नोत्तर कर्ता हठीरु मानी क्रोध रहीत।
दयावान परमादरु आलस दोष कुसंग रहित शुभ चीत ॥ १

चौदह जातियों के श्रोता वर्णनं

दोहा—मांटी चालनि छाज वक, शुकबि लाव अहि जौंक।
उपल हंस गौ भैंस घट, डंश जाति के लोक ॥ २

कथा कैसी होनी चाहिये सो वर्णनं

कुमति कुधर्म विनाशनी, सुमति धर्म परकाश।
दया सत्य संवेग गुण, प्रगट करन सुख रास ॥ १
तत्वातत्व विचारणी, सब जीवन हित कार।
चतुर्वर्ग प्रगटावनी, ऐसी कथा प्रचार ॥ २

तीर्थंकर केवल बल का प्रमाण वर्णनं

द्वादश अजबल एक जु गर्धव दश गर्धव बल इक हय जान।
द्वादश हय बल एक जु महिषा पानसै महिषा गज इक आन ॥

पानसै गज वल एक केशरी पान सै अष्टा पद के मान ।
अष्टा पद दश लाख एक वल भद्र कोड वल इक नाराण ॥
नभै नारायण चक्रवर्ति इक कोड नरेंद्र जु वल इक देव ।
कोड देव वल एक इंद्र में अनंत इंद्र तीर्थंकर देव ॥
तीर्थंकर की चट्टी अंगुली ताके वल को नहीं अछेव ।
तो शरीर वल कौन कहै वहुथके कथित कवि गणधर देव ॥ १

अक्षौहिणी सैना का प्रमाण वर्णनं

पति सेन्या सेन्या अखं, गुल्म वाहिनी जान ।
प्रतिमा चमूं अनी कनी, दश गुण छोह निजान ॥ १

छन्द—गज इक इक रथ अस्व तीन है पांच पयादे पति वखांन ।
तिगुन तिगुन कर अनी कनी तक दश अनी कनी चौहणी जान ॥
सहस इकीस आठसै सतर गज एते ही रथ जु वखांन ।
पैंसठ सहस छसै दश घोटक और पयादे करूं वखान ॥ २

दोहा - एक लाख नो सहस अरु, तीन शतक पंचास ।
इक छोहनि की सैन्य यह, लिखी जिनागम भांप ॥ ३

रावण सैन्या कितनी सो व्योरा वर्णनं

गज रथ आठ कोड परमाणं लाख चौहत्तर अस्सी हज्जार ।
घोटक छव्त्रिस कोड लाख चौवीस सहस चालीस विचार ॥
सुभट कोड चालीस तीन है लाख चौहत्तर करो सुमार ।
तथा कुटंव परिवार सर्व मिलि दश मुखकों कोइ राखन हार ॥ १

रामचन्द्र की सर्व सेन्या कितनी सो वर्णनं

चार कोड सैंतीस लाख चालीस सहस गज रथ उर आंन ।
तेरह कोड लाख द्वादश जुत बीस सहस घोटक घर ध्यांन ॥
कोड इकीस लाख सतासी श्रेष्ठ सुभट योद्धा जु महांन ।
ऐसे रामचंद्र दशरथ सुत तेभी काल ग्रसित भये आंन ॥ १

स्त्री पर्याय के दुःख वर्णनं

मात पिता की आज्ञा का दुख भरता दुख अपमान कराय।
पति वियोग दुख शोक वचन दुख पुष्पवतीरु वांझ हो जाय ॥
गर्भ भार दुख गर्भ पात दुख दुख प्रसूत सुत मरन कराय।
भाग्यहीन पति दुख दरिद्र को महा दुःख विधवा है जाय ॥ १

भरत क्षेत्र के पंचम काल में जिनेंद्र मुद्राधारक कितने अरु कितने भ्रष्ट हो गये सो तिनकी संख्या वर्णनं

दोहा – भारत पंचम काल में; जिन मुद्राधरि छांड़।
साढ़े सतहि कोडि जिय, जाय निगोद मझार ॥ १

कुगुरुन के सेवक नर्क कितनें जायगे सो संख्या वर्णनं

सेवक पैंसठ कोड लख, पचपन सहस पचीस।
शतक पांच पच्चीस कहि, जाय नरक अवनीस ॥ १

जंबू द्वीप का क्षेत्रफल कितना सो वर्णनं

शत सै नभै कोडि अरु, छप्पन लाख विचार।
सहस चौरानव डेडसै, योजन उर में धार ॥ १

एक महूर्त की कितनी आवली सो वर्णनं

एक कोडि सरसठ जु लख, सतहत्तर हज्जार।
दो सै सोलह आवली, इक महूर्त की सार ॥ १

पंचम काल के एक दिन में कितने पल आयु रोज घटे सो वर्णनं

इक दिन में अठरा जु पल, घटी जु नो इक मास।
शतक आठ घटि वर्ष मैं, शतक वर्ष छह मास ॥ १

जिनवाणी के सब पद लिखने में कितने वर्ष लगे सो वर्णनं

छप्पन सै छहत्तर वर्ष, पांच जु महिना जान।
साढे अट्ठाइस जु दिन, इक पद लिखन प्रमान ॥ १

एक श्लोक में कितनी स्याही लगे सो वर्णनं

चावल पौन जु मिस लगै, लिखने में इक श्लोक।
तोला एक सहस्र को, सवा सेर लख श्लोक ॥ १

जिनवाणी के एक पद लिखने में कितनी स्याही लगे है

इक सै उनसठ मन जु मिस, इक पद छव्विस सेर।
चतु तोला मासा जु सत, रती चार नहिं फेर ॥ १

एक स्वास की कितनी आवली होय सो वर्णनं

चतु सहस्र अरु चार शत, अरु पोनैं सैंताल।
एक स्वास की आवली, कही जिनागम भाल ॥ १

सूतक कितनी पीढ़ी तक कितने दिन का होय सो वर्णनं

साख तृतिय दिन वारह जाना, चार साख दिन दश परमाना।
पंचमि छह छट्ठी दिन चारा, साख सात दिन तीन विचारा ॥१
साख आठमी मे वसु जामा, नवमी प्रहर दोय अभिरामा।
दशमी स्नान मात्र भी सही, इम सूतक जिनमत विधि कही ॥२

विद्या सीखने के वाह्य का कारण पांच मिले सो वर्णनं

वाहिज कारण पांच हैं, गुरु पुस्तक भृत्य स्थान।
अरु भोजन स्थिरता कही, विद्या वृद्धि निदान ॥ १

विद्या सीखने के अभ्यंतर पांच कारण सो वर्णनं

वुद्धि विनय वात्सल्यता, उद्यम अरु नैरोग।
अभ्यंतर कारण कहै, पांच जु विद्या योग ॥ २

आचार्य कैसे शिष्य कूं दीक्षा देवे सो वर्णनं

देह भोग इन्द्री विरक्त भवभीत दया कर आर्द्रित होय।
उज्जल वुद्धि धर्म रोचक अरु मोचक पाप शास्त्र रुचि होय॥
नम्री भूत देश उत्तम कुल ब्राह्मण वैश्यरु क्षत्री होय।
मोह मंद परणाम विशुद्धी सुख चाहक भव्योतम होय ॥ १
राजरु लोक विरुद्ध होय नहिं करजदार खोटे व्यवहार।
दुराचार व्यसनी हत्यारा अरु उन्मत नीच कुल धार ॥
तीव्र कपायी रागी शोकी अरु कुटंव की आज्ञा टार।
शिल घट अहि शुक मच्छर भैंसा मेंढा चालनि मृत मार्जार ॥ २

निज स्वभाव की प्राप्ति सोई धर्म है उसकूं कोई ले सकता नहीं सो वर्णनं

यह जिन धर्म किसी का खोस्या वा लूट्या चोस्या नहिं जाय।
देश विदेशरु उदधि समर में तथा नगर वन साथ रहाय॥
ऊर्द्ध मध्य पाताल विदिशि दिश तोय तीर्थ नग नाहि धराय।
निज स्वभाव की प्राप्ति सोई वृष तातें याको करो उपाय॥१

यह जिनधर्म धारना बहुत सुगम है

यह जिनधर्म सुगम है ऐसा बालक युवा वृद्ध बलवान।
निर्बल दीन सहाय असहायी रोगी निर्धन सधन प्रधान॥
खेद क्लेश भय कलह शोक दुख शीत उष्ण नहिं बोझ धरान।
विसंवाद झगड़ा नहिं इसमें है स्वाधीन धरहु बुधिवान॥ २

पतिव्रता स्त्री कूं कैसा ही पति मिले परन्तु कभी अपने पति सूं द्वेष भाव नहीं रखे तिसका वर्णनं

नारी तजै न अपनो सुपनेहूँ भर्तार।
पंगु गूंग बौरा बधिर अंध अनाथ अपार॥
अंध अनाथ अपार वृद्ध बावन अति रोगी।
बालक पंडु कुरूप सदा कुवचन जड़ योगी॥
कलही कोढी भीरु चोर ज्वारी व्यभिचारी।
अधम अभागी कुटिल पतितापति तजै न नारी॥१

पतिव्रत धर्म स्त्रियों को इस माफिक पालना जैसा एक कबूतरी ने पाल्या

एक कबूतरी पतिव्रत पाल्या, पति भोजन विन नहीं कुछ खान।
पति बैठन विन नहीं बैठना, पती सयन विन सयन न ठान॥
पति त्यागी वस्तु नहीं खाना, पति आज्ञा पर ध्यांन धरान।
हर्षित पति को देख प्रफुल्लित, पती शोक में पति समझान॥ १
पति आज्ञा विन कहिं नहिं जाना, पति क्रोध कर विनय करान।
पति विदेश शृंगार त्यागना, पति विन कोइ सूं भाषण ठांन॥
पति मुखकों सुतवत अव लोकन, पति को ही परमेश्वर जान।
पति सेवा में गृह जु काम हो तो भी पति के निकट रहान॥ २

आगे स्वर्ग जाने का मारग वर्णनं

त्यक्त हिंस दया वंत सर्वभूत रक्ष कन्।
अनृतं च निष्ठुरं च त्याग पैशुनं वचन् ॥
ग्राम ग्रेह निर्जने अरण्य त्याग परधनं।
पर दार स्वस्ठ मातृ वत् सु त्याग ब्रह्म पालनं ॥१
शत्रु मित्र तुल्यवत् भजंति मैत्र सर्वजन्।
संतुष्ट प्राणि शास्त्र वंत न्याय धर्म शौचमन् ॥
क्रोधमान माया लोभ स्वाद इंद्रियं दमन्।
ये ही स्वग्ग कारणं नर्क दुःख के हरन् ॥ २

आगे देखो लक्ष्मी कहती है कि मैं ऐसे घर विषैं रहती हूँ सो वर्णनं

लक्ष्मी कहती वहां मैं रहती जहां देव गुरु भक्ती वान।
जहां दयालुता क्षमा सरलता दान शील वृष श्रद्धावान ॥
धीर वीर प्रिय वादि अहिंसक व्रती कृतज्ञ सु लज्जा वान।
सौम्य दृष्टि त्यागीरु जितेंद्रिय सत्य वादि प्रिय किरिया वान ॥१

फिर भी लक्ष्मी कहती है कि मैं ऐसे घर विषैं नहीं रहती हूँ सो वर्णनं

लक्ष्मी कहती वहां नहिं रहती जहां क्रोध माया अरु मान।
ईर्षा डाह दुष्टता आलस कलह झूंठ वच गाली ठान ॥
मात पिता गुरु आज्ञा लोपन धर्म द्रोहि पाप रति मान।
जीव घात स्त्री सुत पशु मार न मलिन गेह अरु भोजन पान ॥१

मन शुद्ध होने के कारण वर्णनं

मन शुद्धी होने के कारण प्रथमहि छोडो अशुभ विचार।
तथा कुसंगत क्रोध लोभ अभिमान ईर्षा चिंता धार ॥
भय शंका निंदा आलस्यरु पक्षपात छल लज्या छार।
निर्दय झूंठ मोह हठ आतुर द्वेष भाव छांडहु हितकार ॥ १

श्रीमान् वीतराग अरहंत देव स्वरूप गुण वर्णनं

वीतराग शांति मूर्ति दृष्टि नाशिका धरं।
अस्त्र शस्त्र वस्त्र त्याग भूषणं दिगंबरं ॥

राग द्वेष मोह मार खंडनं कृपा करं।
जन्म मृत्यु पारकार मोक्ष मार्ग नागरं॥ १

महादेव स्वरूप तथा गुण वर्णनं

रुंड माल कर कपाल शूल खड्ग कर धरं।
व्याल माल शिर जटाल स्वेत भस्म तन भरं॥
त्रिनेत्र शीश गंग व्याघ्र हस्ति चर्म अंबरं।
अर्द्ध अंगि शंकरं मद्य मांस प्रिय तरं॥ १
कपाल ब्रह्म वाम हस्त काक पक्ष शिर धरं।
नृसिंह चर्म हरिण चर्म सिंह चर्म अंबरं॥
यज्ञोपवीत ब्रह्म केशपर सु गदा कर धरं।
नृसिंह शीश काट गले रुंड माल मणि वरं॥ २

विष्नु देव स्वरूप वर्णनं

मच्छ कच्छ नारसिंह ओवराह तन धरं।
चतुर्भुजं सुशंख गदा पद्म चक्र धर करं॥
मोर मुकट राधे संग गाय वत्स प्रिय तरं।
गोपि रमण नाग सेज नेक दैत्य संहरं॥ १

धर्मात्मा जैनी लोगों कूं चाहिये कि रात्रि कूं कोई काम का आरम्भ न करे। इहां तक कि चिल्ला के कोई काम भी गृहका न करें खटका किसी चीज के उठाने धरने का न करें, क्योंकि इसमें अनेक जीव हिंसादि कार्य में प्रवर्तन करे हैं

चाल छंद—खटका शब्द करो रात निशि मैं जीव अनेक क्लेश करतार।
सब से पहिले उठ कर तुम मत करो शब्द का दीर्घ उचार॥
सुनि कैं तुम्हरे शब्द सर्व जिय सर्वारंभ करै व्यापार।
पीसन कूटन दलन खनन अरु लीप न रांधन मांटी गार॥ १
अग्न्या रंभरु कृषी करन अरु जल घट गाडी रहट लुहार।
तेली धोबी धींवर बाघरि हिंसक कंदोई कुंभार॥
द्यूत मद्य मांसादिक भोजन आहेडी पशु वध चिडमार।

इत्यादिक ये काम करैं सब तातैं रात्रि न शब्द उचार ॥ २

जो नर रात्रि को भोजन करते हैं तिनके दोष

दिन को छोडि रात्रि खांहि ते उलूक जानिये ।
मांस हार सार से निशाचरं सो मानिये ॥
अहर्निशं करे आहार ते पशू समान है ।
कीट मच्छरादि जीव खाय सो अयान हैं ॥ १
अन्य जन्म काक गृद्ध स्वान गर्द भादि का ।
होय अंध कोढि पंगु हीन दीन जाति का ॥
रात्रि के अहार में अनेक रोग आनिये ।
अंत होय नर्क वास घोर दुःख जानिये ॥ २

आगें इस जीव के मरणकाल में कोई साथी संगाती नहीं एक पुण्य पाप ही साथ जाता है ऐसा जान एक धर्म ही सेवन करो

छन्द—जिनसूं तुम प्रीति रचाऊ, ते क्षण में होत वटाऊ ।
वांधव मरघट लों संगी, संग नहिं जाय अरधंगी ॥ १
सुत वांधव प्रिय हित जेते, कोइ संग नहि लागहि तेते ।
आपु नहीं अकेलो जाई, कोइ साथ न लागत राई ॥ २
दोहा—तब रो रो पछितात है, मल मल कै दोऊ हाथ ।
पच्यौ नर्क में जायकर, दुख पावै बहु जात ॥ ३
छन्द—तहां नहिं कोई होत सहाई, मारें यम यह तब विललाई ।
सुत पितु माता अरधंगी, उस दुःख में कोई न संगी ॥ ४
को सुत अरु काको पितु है, यह जग माया अद्भुत है ।
तातैं समझो मन मांही, क्षण भर में यह तन नांही ॥ ५
हिम. ग्रीषम वर्षा आई, दिन दिन यह आयु सिराई ।
अब सोच विचार न कीजे, सतधर्म शीघ्र गहि लीजै ॥ ६
दोहा – काल व्याल इस जीव को, उस तरहतदिन रात ।
धर्म सार संसार में, अवरन दूजी बात ॥ ७

मूरख जन नित करत तन, धन को सदा गुमान।
तन धन यह संग ना चलै, जात अकेले प्राण॥ ८
जैसें जल में बुदबुदा, उठ उठ कैं गल जात।
ऐसे ही गल जायगो, धन योवन अरु गात॥ ९
कौंन बंधु परिवार को, को कुटंब नर नारि।
ज्यों मारग पंथी मिलन, त्यों झूठ्यो संसार॥ १०
होत न काहू को कोई, तात मात सुत भ्रात।
दो दिन के साथी सवै, अन्त धर्म संग जात॥ ११
यह मेरो घरवार है, यह मेरो परिवार।
यह मेरी है संपदा, निश दिन यही विचार॥ १२
कोहू काहूको नहीं, झूंठी माया मोह।
धन्य वही जो त्याग सब, बसत गिरन की खोह॥ १३

राम नाम सत कहाँ तक साथ जाय सो ताका छंद वर्णनं

राम नाम सत जबतक सच्चा जबतक मुरदा जलै नहीं।
जलता वलाकै सब कुटंब फिर अपने घर घर जाय कहीं॥
फिर वोइ झूंठे झगड़े में फंस एश ओ अशरत करै सही।
रंज शोक अरु रामनाम सत इसका फिर कुछ जिकर नहीं॥ १

जैनाभ्यास जे ढूढ्या मार्गी तिनका कुछ वर्णन क्रिया कोष अनुसार वर्णनं

कली काल के योग से कैयक जैनाभास।
मलिन भेष को धार कै, करै दया को नाश॥ १
दयाधर्म मुख से कहें, वासी भोजन खांहि।
अगणित त्रस उपजै तहाँ, वासी भोजन मांहि॥ २
अनछाना संधान अरु, कांजी विदल अहार।
खावैं तो पापी कुधी, जावै दुरगति द्वार॥ ३
शूद्र मांस भक्षीन को, करै अहार जु ल्याय।

चर्म तोय घृत तेल अरु, हींग अभक्ष जु खाय ॥ ४
हाट जु बिकती शीरनी, कहै प्राशुक निर्दोष ।
दया पली मुख से कहैं, करहि अहार सदोष ॥ ५
दयाधर्म श्रुत श्रवण को, मुख्य जिनालय स्थान ।
ताके निंदक जे कुधी, ते दुष्ट आतमा जान ॥ ६
कारण आत्म ध्यान को, जिन प्रतिमा जगमांहि ।
ताकौं जे वंदै नही, ते हिन्दू न कहांहि ॥ ७
दया पली मुख से कहैं, दया स्वरूप न जान ।
पाटी मुंह पैं बांधकर, करै जु त्रस की हांन ॥ ८
मूत्र जु थकी शौच जु करैं, पियें जु धोवन पान ।
ताको प्राशुक कहत हैं, तिन सम मूर्ख न आन ॥ ९
बार बार भोजन करै, मलिन बारि जल पांन ।
अपनै को साधू कहैं, ते नर पशू समान ॥ १०

देखो अज्ञानी लोगों ने भोले जीवों कूं अपने असत्य धर्म पोषण करने के वास्ते ऐसा बहका दिया है कि यह जैनमत नास्तिक धर्म है कहो जिस मत मे एक पत्र वनस्पती का तोड़ने से हिंसा होती है ऐसा दयामय धर्म कैसे नास्तिक हो सकता है

अज्ञानी लोगों ने जग को बहकाया नास्तिक मत जैन ।
जिस मत में निर्दोष देव गुरु धर्म अहिंसा सत्य जु वैन ॥
शमदम संयम शील दान तप क्षमा विनय हित लज्जा जैन ।
पुन्य पाप फल स्वर्ग नर्क है कहुँ कैसैं नास्तिक मत जैन ॥ १

कहो जिस मत में जगह जगह बड़े बड़े जीवों के मारने में और मांस खाने में धर्म तथा स्वर्ग लिखा है वो मत कैसे नास्तिक हो सकता है अपने चित्तरूपी तराजू से तोलना चाहिये कि कौन आस्तिक है अरु कौन नास्तिक है

जिस मत में बहु जीव घात हों कैसें आस्तिक तुमने मान ।
अस्वमेध नरमेध मेधगौ पित्र सर्प अज मेध करान ॥

इक इक यज्ञ में असंख्यात जिय मरे रुधिर की नदी बहान।
हिंसा करके स्वर्ग सुर कहो कैसे यह मत आस्तिक जान॥ १
देव यज्ञ पितृ पर्व श्राद्ध में मद्य मांस मछ भोजन पान।
स्त्री सेवन अरु द्यूतिविसन अरु जीव शिकार मांस का दान॥
भक्षाभक्षरु रात्रि भोजन कंदमूल फल जल बिन छांन।
इक सोचो तो अपने मन में कैसे यह मत आस्तिक मान॥ २

ब्राह्मण लक्षण वज्र सूचि का ग्रन्थानुसार वर्णनं

ब्राह्मण क्षत्री वैश्य अरु शूद्र वर्ण यह चार।
क्यों ब्राह्मण उत्तम कहैं, प्रथम प्रश्न उरधार॥ १
क्या यह ब्राह्मण जीव है, किं वर्ण वा जाति।
किं देहरु पांडित्यता, किं धर्म प्रिय भ्रात॥ २

कोई कहता है जीव ब्राह्मण चतुरवर्ण इक जीव वही।
कोई कहता है वर्ण ब्राह्मण स्वामस्वेत चतुवर्ण ग्रही॥
कोई कहता है जाति ब्राह्मण कोई जाति ब्राह्मण जु नहीं।
ब्रह्मज्ञान जिसने उर धारा वही शूद्र ब्राह्मण जु सही॥ ३
कोई कहता है देह ब्राह्मण देह कार्य इक जाति मही।
कोई कहै पांडित्य ब्राह्मण चार वर्ण पढ़ते जु सही॥
कोई कहता है धर्म ब्राह्मण जप तप दान करै सब सही।
इन सबमें ब्राह्म जु धर्म नहिं यही बात सिद्धान्त कही॥ ४
तो अब कौन सत्य ब्राह्मण है इसका उत्तर यही सही।
जो शम दम संतोष धारते रागद्वेष जिनकै न कहीं॥
मात्सर्यता काम क्रोध मद तृस्ना संमोहादि नहीं।
सोही जग में सत्व ब्राह्मण भेष धरा द्विज नहीं सही॥ ५

श्लोक—जन्मना जायते शूद्रा संस्कारा द्विज उच्यते।
वेदपाठी भवेद्विप्रा ब्रह्म जानाति ब्राह्मणा॥ ६

हे ब्राह्मण क्रोध न करो, सुनकर यह व्याख्यान।

वज्र सूचिका ग्रन्थ में, लिख्या यही अख्यान ॥ ७

आर्य भेद वर्णनं

आर्य भेद वर्णन करूं, सुन्यो सजन चितधार ।
धर्माधर्म विचार कर, बनों आर्य संसार ॥ १
दोय भेद है आर्य के, ऋद्धि और अनऋद्धि ।
प्रथम भेद अनऋद्धि का, वर्णन करूं प्रसिद्ध ॥ २

अनऋद्धि आर्य भेद

क्षेत्र आर्य अरु जाति आर्य और वंश आर्य चौथा कर्मार्य ।
कर्म आर्य त्रय भेद कहे हैं सावद्याल्परु सावद्यार्य ॥
असावद्य है भेद तीसरा कहा ऋषी बहु श्रुत आचार्य ।
असिमसि कृषि विद्या वाणिज्यरु शिल्प कर्म ये सावद्यार्य ॥ ३
द्वितिय अल्पसावद्य आर्य के भेद जु षट् वा बहुत प्रकार ।
सत्य अहिंसा शम दम भक्ति मैत्री भाव दया व्यवहार ॥
क्रोध मान माया अति लोभरु ईर्षा द्यूत व्यसन व्यभिचार ।
मद्य मांस मधु रात्रि भोजन त्याग अभक्ष छान पी वारि ॥ ४

असावद्य आर्य के भेद

असावद्य आर्य जु भेद त्रिय उन्हे कहैं साधू अनगार ।
वो रहते गिर गुफा शून्य गृह तरु कोट खनवाग उजार ॥
आत्म ध्यान तथा स्वाध्यायरु गुप्ति समिति व्रत परिषहधार ।
तृण कंचन वा शत्रु मित्र सुख दुख मरन जीवन इक सार ॥ ५
दोय भेद चारित्र आर्य के अभि गति अनभि गति उर आन ।
बाह्योपदेश विना मन शुद्धी ते अभिगति चारित्र कहान ॥
मोहक्षयोपशम बाह्योपदेशरु मिलैं अनभि गति चारित्रान ।
आज्ञादि कभी आर्य भेद दश जे पालैं ते आर्य महान ॥ ६

आगे देखो प्रवचन जो भगवत की वाणी तिस ही कर त्रैलोक्य के चर अचर पदार्थ तथा हिताहित की वार्ता जानने में आवे है सो वर्णनं

प्रवचन श्री जिनवीतराग धुनि तापर आगम वचन विशाल ।

तिन मैं षट् द्रव्य सप्त तत्व पंचास्ति काय नव पद तिरकाल ॥
अधो मध्य वा ऊर्द्ध लोक वा द्वीप उदधि भू रचना भाल।
कर्म भोग भू आर्य मनुषगति स्थावर पशु विकलत्रय चाल ॥ १
विन प्रवचन के कौन जानता देव कुदेव गुरु कुगुरान।
धर्माधर्मरु जीवा जीवरु पुन्य पाप संसृति निर्वाण ॥
तीर्थ कुतीर्थरु शास्त्र कुशास्त्ररु भक्षाभक्षरु दान कुदान।
सत्या सत्य अहिंसा हिंसा विन प्रवचन कोविद नहि जान ॥ २
गति इंद्री षट् काय जोगत्रिय वेद कषायरु दर्शन ज्ञान।
भव्यरु संयम लेश्या प्राणरु पर्याप्तरु चौदह गुण थान ॥
संज्ञा चतु उपयोग चेतना त्रय परणति विकथा चतु ध्यान।
जाति और कुल कोड मार्गणा विन प्रवचन को करै वखांन ॥ ३
श्रावक गुण वा त्रेपन किरिया चतु भावन षट् कर्म विचार।
सप्त व्यसन वाईस अभक्षरु दोष पचीस सम्यक्त चितार ॥
परमेष्टी गुण शतक तेतालिस चौरासी आसादन टार।
चौविस परिग्रह सतरानियमरु वीस विसे जु दया उर धार ॥ ४
मूलोतर गुणभेद प्रमादरु है साढ़े सैंतीस हजार।
वाइस परिसह दश आलोचन तप भावना आराधन चार ॥
इक सो आठ भेद हिंसा के शील भेद ठारह हज्जार।
दोष छयालिस सत्तावन आश्रव अंतराय वतीसहि टार ॥
लोकमान लोकोतर मानरु संख्या-मानरु उपमा मान।
चौदह धारा पुद्गल गुण पर्याय भेद वा अनु खंधान ॥
सिद्ध राशि संसारी संख्या थावरपण विकलत्रय जान।
पशु पंचेन्द्री मनुष नारकी भावन व्यंतर ज्योतिर्यान ॥ ५
लोक अलोकरु ऊर्द्ध मध्य वा अधो लोक त्रशनाली जान।
असंख्यात दधि द्वीप के मांही ढाई द्वीप राजु वर्णान् ॥
अंक डेढ सै द्वादशांग पद अल्प वहुत्व जीव संख्यान।

छहो काल षट् मतरु कुवादी तीन सै त्रेसठ संख्या मान ॥ ६
कर्म प्रकृति इक सौ अठतालिस पुन्य पाप सो अठसठ जान।
जीव देह भवक्षेत्र विपाकी घाति अघाति बंध दश ठान ॥
त्रेसठ प्रकृति नाश केवल हो प्रकृति पिच्यासी क्षय निर्वाण।
समुद् घात अरु पण परिवर्तन शुद्ध जीव गुण पंच कल्याण ॥ ७

देखो वहुधा कर कलयुगी पंडित अश्रद्धानी महाशयों का वर्णन

वहुधा कर कलियुगी गुणी पंडित तुम जानौ।
वेचैं प्रतिमा शास्त्र अन्यथा तत्व वखानौ ॥
मंदिर भीतर मेज विछा गुलदस्ते लगाना।
लेंप लगा दो खड़े होय व्याख्यान कराना ॥
कहते हम उन्नति करत जैनधर्म की आज।
सुनौं हमारे वचन कों सारै जैन समाज ॥ १
वनो सभापति और मेम्बर सभा वनावो।
करौ इकट्ठा रुप्या हमें द्यौ मम्भव वढावो ॥
सुनौं कहानी कथा खुशी हो तालि वजावो।
हम पीटेंगे मेज तुम जो चंदा लिखवावो ॥
इस भांति हमारे वचन को मानो सव जन आज।
हम पंडित जिनधर्म के उपदेशक शिर ताज ॥ २

केचित् पंडित उपदेश देने को व्यवहार करते हैं मार्ग में उनके आचरण का वर्णन

जव जाते उपदेश दैन को लोटा छन्ना डोर न वारि।
चांडाल का झूंठा पानी विन छान्या पीते त्रस मार ॥
स्टेशन ऊपर वंवई शिरनी पूडी कंद मूल आचार।
लैं खरीद गाड़ी में वैठें खावैं म्लेच्छों मैं धीटार ॥ १
आलू वेंगन रात्रि भोजन भक्षाभक्ष न करैं विचार।
घर घर जाते माल उड़ाते वहकाते पुर के नर नारि ॥

ऐसे हीनाचारी क्या उपदेश करेंगे शास्त्र अनुसार।
तातैं इनते वचना चहिये ये धन धर्म चुरावन हार॥ २

आगे द्रव्योपार्जन करने वाले लोभी पंडितों का वर्णनं

मेज बिछाना लेंप लगाना गुलदस्तों की करो वहार।
बात वनाना सब को हँसाना कह लतीफे दो तीन चार॥
प्रिसिडेंट वनाना सभा रिझाना मेंवरान के नाम पुकार।
रुपये उगाहना तालि वजाना उपदेशक जी वड़े हुस्यार॥ १

उन मार्ग चलाना मत को लजाना वहकाना जु सभा नर नार।
हास्य कराना धर्म मिटाना असत् मार्ग उपदेश प्रचार॥
अभक्ष खाना जल अन छान्या नहि रखना आचार।
धर्म वहाना मौज उड़ाना उपदेशक जी वड़े हुस्यार॥ २

आगैं देखो कोट पतलून वूट पहर कर जैनोन्नति करते फिरते हैं
आप णमोकार के गुण भी नहीं जानते ताका वर्णनं

कोट बूंट पतलून पहरकर जैनोन्नति करते फिरते।
जिनकै नहिं पहचांन देव गुरु शास्त्र दया विधि क्या धरते॥
श्रावकगुण वा णमोकार गुण नहीं जानते आचरते।
सिरफ दुनियावी धन्धों पर वो लंबी चौड़ी डग धरते॥ १

लैकचर देते मेज पीटते अथवा ताली पिटवाते।
जिओग्रफी हिस्ट्री सुन करकें जिनमत निंदा करवाते॥
जिनमत के आश्चर्य पदारथ सुनकर हंसते हंसवाते।
जैन धर्म का तत्व न जाना जी चाहै सो छपवाते॥ २

सोडा वाटर कंदमूल मद रात्रि भोजन वो करते।
जल अनछाना अभक्ष्य भोजन दर्शन रोज नहीं करते॥
जिनमत सार जरा नहीं जाना वो क्या जैनोन्नति करते।
कुल नकलें वोयशुभसीह की करते फिरते नहिं डरते॥ ३

आगें देखो कलिकाल के महाशय जी जातोन्नति होने के पांच कारण बताते हैं

विधवा करो विवाह वर्णभेद मत गिनो।
सब जाति साथ भोजन में दोप मत ठनो॥
सम्यक्त अव्रती को मद मांस भोजणं।
सप्त व्यसन सेवन में नहीं दोष जिन भनं॥ १
देव गुरु शास्त्र का विनय जु मत करो।
जी चाहै जहाँ जूते पहिरे लिये फिरो॥
मद्य मांस चरबी लिपि शास्त्र पढ़न में।
नहि लगता कुछ भी दोप इस कलियुग के चरण में॥ २
जैनोन्नति होने के यह पांच कारणं।
तुम सर्व सभा मिलकैं यही उर में धारणं॥
हम महान पंडित कहते हैं आपसे।
उपरोक्त कार्य करने में मत डरपो पाप से॥ ३

केचिन् पंडित अपना मतलब बनाने को शास्त्र विरुद्ध उपदेश देते हैं

उपदेश हमारा जु सुनौ सर्व सभा जन।
करना नहीं प्रतिष्ठा जिनबिंब जिन भवन॥
वेदी विधान पूजा नहिं नृत्य नहिं भजन।
जल यात्रा और गजरथ नहि करना तीर्थाटन॥ १
भंडार द्रव्य घंटा चमरादि उपकरण।
न करना दान करुणा सम दत्ति पात्र जन॥
जो कुछ भी घर में होय सो दे डालो तुम सजन।
हम देंगे तुमें पदवी प्रसिडेंट मेम्बरन॥ २
सिंह ही सवाइ सिंगही श्रीमंत सेठ पन।
जो कुछ भी हम से मांगो हम देंगे उसी क्षण॥
उपरोक्त कार्य करने में मत खरचो तन वा धन।
वो कार्य लाभदायक नहिं सोचो अपने मन॥ ३

केचित्पंडित महाशयजी कहते हैं अगले जमाने के पंडित और श्रावक धनवान् मूरख थे जो लाखों किरोड़ों रुपये जिनबिंबों की पूजा प्रतिष्ठा में खरच कर देते थे

अगले जमाने के जु जैनी अपढ़ मूरख थे सही।
जिन बिंब जिन आगार वेदी बहोत बनवाते मही ॥
पूजा प्रतिष्ठा और गजरथ संग चलवाते सही।
चतु संघ की वात्सल्यतामें कोटि धन खरचैं योंही ॥ १
दान सम दत्ती दिये ज्यौनार में लाखों धनं।
भंडार अरु चमरादि उपकरणादि सामग्री मनं ॥
खरचैं वृथा आरंभ में अरु पाप उपजाया धनं।
इसलिये इन कामों में मत कोडी खरचौ सज्जनं ॥ २
कहैं पंचमकाल पंडित बात यह मानो सही।
पूजा प्रतिष्ठा बिंब जिन बनवाओ मत मंदिर कही ॥
तीर्थ वैयावृत्ति में कुछ पुण्य नहि होवै ग्रही।
दे डालिये सब माल हमको पुण्य हो तुमको यही ॥ ३

आगैं देखो प्राचीनकाल के बड़े बड़े आचार्य तथा महान पंडित कहते हैं कि गृहस्थी के पूजा प्रतिष्ठा सिवाय महान कोई पुण्य ही नहीं देखो शुद्ध संप्रदाय को श्रावकाचारादि ग्रन्थों में कहा है।

श्लोक—कुरुवत्स जिनागारं बिम्बं च पूज्य पूजनं।
प्रतिष्टादिक सत्कर्म मुक्तौ द्रव्येन प्रत्यहं ॥ १
चतुर्विंशति तीर्थेषां ये कुर्यें प्रतिमांवरां।
लक्ष्मी त्रिलोक्यजालब्धास्ते भव्यांत्यत्रतत्समा ॥ २
न प्रतिष्ठा समोधर्मो विद्यते गृहिणां क्वचित्।
बहु भव्योपकारित्वा त्धर्म सागर वर्धनात् ॥ ३
बिंबादलोन्नतियवोन्नति मेवभक्त्या।
ये कार यंति जिनसद्म जिनां कृतंवा ॥
पुण्यं तदीय मिहवा गपि नैव शक्त्या।

स्तोतुंपरस्य किमु कारपितुर्द्वयस्य ॥ ४
इंद्राणां तीर्थ कर्तॄणां केशवनां रथांगिनां ।
संपदः सकलासद्यो जायंते जिन पूजिता ॥ ५

देखो प्राचीनकाल के धर्मात्मा धनाढ्य लोगो ने पूजा प्रतिष्ठा वा तीर्थयात्रा मे कितना द्रव्य लगाया तिनके किंचित् नाम वर्णनं

सवैया---चतुर्वीस तीर्थंकर की चौवीस प्रतिष्ठा मांहि चौवीस लाख द्रव्य जिन श्रावक लगायो है। तिनके कुछ नाम लिखूं प्राचीन वार्तानुसार सुननें से चित में आनन्द ना समायो है ॥ पोखरजी पहाड्या और वीरम जी भोंसा और सेढ़मलजी छावड़ा का नाम जु बतायो है। हेमराज पापडीवाल लाटनजी रांवका और गोरधनजी गोधा का सुजस जग छाया है ॥१॥ शालनजी सेठीरु बनारसी गोत पहाड्या श्रावकसार। और टोडरजी गोत पाटनी वीरमदास गोत चांदूवार ॥ सेठमलजी सोगानी अरु कोलणजी बैंनाड्यासार ॥ इक इक चौविस लाख द्रव्य सूं करी प्रतिष्ठा पूजा सार ॥२॥ तेजपाल वसुपाल सुपन रह कोड खरच धन आबू पहाड़। टोडरमलजी करी प्रतिष्ठा धन दश कोडि किला गुवालियर ॥ ग्यारा कोडि प्रतिष्ठा में धन राज खर्च किया पोरवार। खड्गसिंह दश कोडि खरच किया चौवन लाख चौवीस हजार ॥३॥ वीरमजी काला अजमेर में सोलह लख धन जिन अगार। संग चलाया गोकुल सोनी सात लाख धनसूं गिरनार ॥ धन दश लाख प्रतिष्ठा में व्यय किया पोहपसिंह चाँदूवार। गंगवाड़ा में सात लाख सूं करी यशोधरजी गंगवार ॥४॥ सिंगही नानूरामजी गोधातियासी, प्रतिष्ठा जिन अगार। संघ चलाया पाँच कोडि व्यय तियासी हाथी बंधते द्वार ॥ वीस लाख धन सूं जु प्रतिष्ठा वालूभाई चाँदूवार। साढ़े बारह लाख द्रव्य सूं चंद्रभानजी चाँदूवार ॥५॥

दोहा—इत्यादिक सहस्रो पुरुष, करी प्रतिष्ठा सार।
अब क्यों वरजो कलियुगी, इतर निगोद तैयार ॥ ६

आगैं देखो शास्त्र के वक्ता तथा उपदेशदाता का आचरण शुद्ध होना चाहिये

अनुपसेव्य वस्त्र नहि पहिरे भांग तमाखू अरु मद पांन।
कुगुरु कुदेव कुधर्म न पूजे त्यागै बाइस अभक्ष गिलान ॥
पंचमि अष्ठमि चौदश को नहि खाय सचित तथा रंधान।
निशि अहार का त्यागी होवै पानी पीवै पट कर छांन ॥ १

देखो जैन संप्रदाय में रोटी के वास्ते जैन विरुद्ध भेष धारण किये हैं,

कोइ बनता है ऐलक क्षुल्लक कोई दशमीं प्रतिमा को धार।
कोई व्रती भेषी पाखंडी पीछी ले बनते ब्रह्मचार ॥
पहिली प्रतिमा भेद न जानें फिरैं भटकते घर घर द्वार।
असत्य मार्ग भोले 'जीवन कूं बहका कर लेते कलदार ॥ १

आगे देखो वही सभा श्रेष्ठ है जिसमें लोगों के कल्याण का उपदेश होय सो वर्णनं

वोही सभा है धर्म वर्द्धनी जहँ उपदेश होय कल्याण।
सारासार हिताहित निर्णय हेयाहेय वस्तु का ज्ञान ॥
सुख दुख लक्षण पुण्य पाप वा बंध मोक्ष का जहां वर्णन।
सत्यासत्य अहिंसा हिंसा वर्णन यह हो सभा सोई जान ॥ १
आज्ञा पाय विपाक विचय संस्थान लोक चतु शुक्ल ध्यान।
चतुगति दुःख दुःख के कारण कि दुख नाश उपाय बतान ॥
दुख नाशक हो सुख अनंत का वर्णन धर्म सभा सोई जान।
उसी सभा में अवश्य जावो श्रवण करो वृष देकर ध्यान ॥ २
जहां क्रोध मत्सर मद माया आशा लोभ लिये व्याख्यान।
सप्त व्यसन वा अभक्ष भोजन कंद मूल को पुष्ठ करान ॥
बहु वध त्रिस वध अनुप सेव्य वा विधवाओं का व्याह करान।
जहां धर्म की निंदा होवै वहां सभा में कभी न जान ॥ ३

णमोकार मन्त्र का प्रभाव वर्णनं

या मंत्र तनी महिमा महान, लघु मंत्र नहीं याके समान।

कंचन गिरि की जो शक्ति सार, किम और अचल धारै विचार ॥१
याके प्रभाव विष दूर होय, पन्नग को विष व्यापै न कोय।
फुनि क्षुद्र देव उपसर्ग घोर, करनें समरथ ना चलै जोर ॥ २
या मंत्र शक्ति कर सिंधु कर, भयकार भील अति शत्रु भूर।
नर पाल कष्ट अरु दुष्ट देव, आधीन होय फुनि करे सेव ॥ ३
महा मंत्र ते उदधि अपार, गोखुरसम है दे निरधार।
मंत्र प्रभाव भूप श्री पाला, दुस्तर सागर तिरयौ विशाला ॥ ४
पड्यौ वैश्य रस कूप मझारा, गिर ऊपर वकरा निरधारा।
चार दत्त नव कार महाना, दियौ भयौ जुग देव महाना ॥ ५
कपि को शिखर संमेद पैं, दियो मंत्र मुनिराय।
अमर होय शिवपुर वस्यौ, धर चौथी पर जाय ॥ ६
मंत्र परम रुचि सेठ ते, सुन्यो वृषभ के जीव।
नर सुर के सुख भोगि कैं, भयो भूप सुग्रीव ॥ ७
विंध्य श्री अहि ने डसी, मंत्र तवै नव कार।
दीनों जाय सुलोचना, भई सुरी मनु हार ॥ ८
नाग नागिनी जलता लखि, तिनको पार्श्व जिनेंद्र।
दियो मंत्र तत छिन भये, पद्मावति धरणेंद्र ॥ ९
चहले में हथिनी फसी खग दीनों नव कार।
अनुक्रम तैं सीता भई, सति यन में शिर दार ॥ १०
लख्यौ चोर शूली चढ्यौ, अरह दास गुन माल।
दियो मंत्र जल माग तो, भयो देव दर हाल ॥ ११
चंपापुर में ग्वाल नें, जप्यौ मंत्र अम लान।
सेठ सुदर्शन सो भयो, तद्भव लहि शिव थान ॥ १२
सात विसन में रति अधिक, अंजन चोर असार।
सरधा कर वर मंत्र की, विद्या साधी सार ॥ १३

आगे देखो सिंह ने सम्यक्त व्रत पाला उपदेश सुन करके संन्यास धार सुरलोक गया नव में भव में महावीर स्वामी हुए सिंह की भावना

अब के हरि संयम साधे, त्रस जीव न भूल बिराधे।
तज जीव घात अरु मांसा, यातें होय स्वर्ग निवासा ॥ १
तत्वारथ सरधा कीनी, श्री जिनवाणि लख लीनी।
संम्यक्त धरयो जिन अंगा, व्रत पाले रहित जु संगा ॥ २
संन्यास सहित तन छीनौ, आहार न पानी कीनौ।
सब सचित विवर्जित सोई, हिय शांति सु संयम होई ॥ ३
क्षुधादि परीसह भारी, नित सहित सु धीरज धारी।
सब जीव दया कों पालै, तन नेक न इत उत चालै ॥ ४
हरि चिंते धर्म सुध्याना, यातें दृढ़ कर्म कृषाना।
धारो तन निश्चल अंगा, थिर चित कर पाप विभंगा ॥ ५
यावत तन जीव रहाई, व्रत प्रचुर किये हरिराई।
संन्यास सहित तजि प्राना, धर शुद्ध समाधि निदाना ॥ ६

दोहा—व्रत फल स्वर्ग सुधम में, सिंह जीव तहां जाय।
सिंह केतु नामा अमर, हुयो ऋद्धि अधिकाय ॥ ७

यह कथन वर्द्धमान पुराण से लिख्या अनिष्ट के तथा विघ्न के शांति करन कूं जिनेंद्र अभिषेक पूजन और मंडल विधान अरु दान करना चाहिये

सर्व अनिष्ठ के शांति करन को करु प्रभावना मन हर्षान।
मंडल मांड करै जिन पूजा गीत नृत्य वादित्र विधान ॥
तथा दान दे पात्र जनन को दीन दुखित को करुणा दान।
तिनके सर्व अरिष्ठ शांति हों तीर्थंकर आयु बंधान ॥ १

आदि अंत मंडल विधान के श्री जिनेंद्र अभिषेक कराय।
तिनके पुण्य तनी अति महिमा वर्णन को करि सके बनाय ॥
ऐसे मंगल कार्य करन को जे पापी जन वर्जें आय।
तिनके तन धन पुत्र नाश हो नरक निगोद आयु बंधवाय ॥ २

इस जीव का निगोद से निकल कर मनुष्य पर्याय का पावन बहुत कठिन है

छप्पै—थित निगोद तें कठिन पंच थावर तन भरिवो।
तिह ये इंद्री कठिन कठिन तें इंद्री धरिवो॥
चतुरेंद्री ह्वै कठिन कठिन पंचेंद्री मन विन।
यातें सैनी कठिन कठिन भू आरिज मत जिन॥
अब निवारि मिथ्योत कूं निज आतम निरधार कर।
जो भूले ऐसे जन्म में तौ फुनि फुनि संसार भर॥ १

दोहा—रहना सदा निगोद में, कठिन निकसना होय।
ये तौ लख सुलझै नहीं, फुनि निगोद लै सोय॥ २
हांसी खेलन मनुप भव, कहा रहे हो भूल।
कर्म हनों आनों मुकति, नहि जे हौ निर मूल॥ ३

जिन वचन रूपी औपधि पी वो तो भला होगा

विपय विरेचन औपधी श्री जिन वचन प्रमान।
जन्म जरा दुःखदाय कर, शिव सुखदायक जान॥ ४

संसार में वो ही शूरवीर है जो प्राण जाते भा धर्म मार्ग सूं हठै नहीं

शूरवीर नर धर्म करन में मर करके भी हठै नहीं।
चाहैं अस्थिर अंग कटै पर स्वप्न में भी नटै नहीं॥
प्रण पालन में प्राण निछावर करता है कुछ खेद नहीं।
कठिन कार्य में धर्म धुरंधर होता है निर्वेद नहीं॥ १
इंद्रासन भी मरघट सम है जो कि धर्म के मन्मुख है।
ध्रुव सम रहै धर्म संकट में दुख में भी जिसको सुख है॥
जिसे लाभ में हर्ष नहीं कुछ जिसे दान में चोभ नहीं।
धर्म धुरंधर वोहि धर्म को छोड़ि अन्य में लोभ नहीं॥ २
पुत्र कलित्र धाम धरती धन इनकी जिसको चाह नहीं।
महादुःख में जिसके मुख से कभी निकलती आह नहीं॥
जगा हुवा है घोर निशा में धर्म सुधा में पगा हुआ।
धर्म धुरंधर रहै निरंतर परहित में मन लगा हुआ॥ ३

धर्म धुरंधर नर को कोई कर्म कठिन है कहीं नहीं।
उसके हाथ हिलाने से क्या हिल सकती है नहीं मही ॥
पर उसके उपकार अहिंसा सत्य धर्म का ध्यान रहै।
दया मार्ग पर चले निरंतर सदा आत्म का ज्ञान रहै ॥ ४
रंक तुल्य है राजा जिसके पर्वत सम है राई के।
शत्रु मित्र में भेद न जिसके कंटक भी सम भाई के ॥
धर्म धुरंधर की शिव पदवी उसी मनुष्य को मिलती है।
हिलती है जिसके भय से भू रज में नलिनी खिलती है ॥ ५

आगे देखो ज्ञानी पुरुष सर्व पदार्थों को समान दृष्टि से देखते हैं

छंद—अरि मित्र सुख दुख स्तुति निंदा महल रत्न मसान में।
मरन जीवन रति अरति कंचनरु मणि पाषांन में ॥
भोग रोगरु लाभालाभरु शूल फूल लतान में।
रंक रावरु कीट इंद्ररु खररु कुंजर प्राण में ॥ १
पूजा प्रहाररु विपति संपति मान अरु अपमान में।
स्वर्ग नकरु पुन्य पापरु इष्ट निष्ट न ध्यांन में ॥
शीत उष्णरु रसरु नीरस कटुक मिष्ठ न खान में।
चंदनरु कर्दम सम विषम ज्ञानी के सम है ज्ञान में ॥ २

देखो इस संसार में सब स्वार्थ के सगे हैं

इस असार संसार चार में स्वारथ के सब यार बनें।
मात पिता भ्राता भगिनी सुत सुता और निज नारि जनें ॥
स्वजन कुटंबी मित्र प्राण प्रिय दासी दास परिवार घनें।
राजा प्रजा गरीब तवंगर पंडित ग्रामी बने ठनें ॥ १
योगी भोगी जन वैरागी चोर तथा साहुकार सभी।
पतिव्रता अरु कुलटा नारी वर्णाश्रम शुभ चार सभी ॥
पशु पक्षी जल जंतु कीट मृग जीवन योनि अपार सभी।
स्वारथ विन कोई पास न आवै करै न कुछ उपकार कभी ॥ २

जैन जाति के क्या मायनें जैनी को कैसा बरताव करना चाहिये

जैनी के मायने हैं जिन आन मानना।
निर्दोष देव धर्म गुरु तत्व जानना।
परमेष्ठि इष्ट पूज शास्त्र सुनना सुनाना॥
जिनदेव के सिवाय कोई को शिर न झुकाना।
इस राह पर चलने से जैन जाति कहाना॥ १
मद्य मांस मधु अभक्ष्य त्याग करना।
निशि अहार त्याग पानी छांन पिलाना॥
चलना जमीन देख लाखों जान बचाना।
जीवों कि दया पाल कोइ का दिल न दुखाना॥
इस राह पर चलने से जैन जाति कहाना॥ २
हिंसारु झूंठ चोरी नहिं करना कराना।
जूवा कुशील चुगली से नहिं दिल को लुभाना॥
काम क्रोध तीव्र लोभ मन में न लाना।
मिष्ट वचन बोल सबके दुख को मिटाना॥
इस राह पर चलने से जैन जाति कहाना॥ ३
दीनों को दान दैना नहिं जुल्म कराना।
निंदा न करना कोइ की पर ऐब छुपाना॥
आपस में नहिं लड़ना गैरों को बचाना।
एक्यता जु करके सत्य धर्म बढ़ाना॥
इस राह पर चलने से जैन जाति कहाना॥ ४
अन्याय के धन में नहीं दिल को लगाना।
परोपकार मे न कभी दिल को हटाना॥
ऐश्वर्य पाय कर नहिं गर्व कराना।
संसार चार वारि से पड़ते को बचाना॥
इस राह पर चलने से जैन जाति कहना॥ ५

विषय भोग रोक आत्म शक्ति बढ़ाना।
सर्व जीव प्राण गिनों अपने समाना॥
यह नर जन्म मिलना राधा वेध विधाना।
जो दाव चूके यहां तो फिर कहिं न ठिकाना॥
इस राह पर चलने से जैन जाति कहाना॥ ६

इस राह पर चलने तें हैं वोही जैनि कहाते।
दुनियां में मान्य हो के कीर्ति अपनी बढ़ाते॥
धन पुत्र औ कलित्र सुख में काल व्यताते।
अंत में सब त्याग स्वर्ग लोक सिधाते॥ ७

आगें चारित्रानुसार सम्यक्त के तेरेसठ ६३ गुण वर्णनं

निःशंकित आदिक वसुगुण जुत वसुमद रहित मूढता तीन।
षट् अनायतन रहित सप्त भय निर्वेदादिक वसुगुण लीन॥
अतीचार पण रहित शल्यत्रय सप्त व्यसन भी त्याग जु कीन।
आठ मूल धारक त्रेसठ ये सम्यक्ती के गुणों कोचीन॥ १

और के सुख के लिये दुःख पाकर भी उसे सुख दैना येही मनुष्य का कर्तव्य है।

और के सुख के लिये अपना सभी सुख छोड़ना।
और के हित के लिये सवस्व से मुख मोड़ना॥
जो शरण आवै उसे बढ़कर बचाना भीति से।
लोक रंज न प्रीति से करना सनातन नीति से॥ १

है नहीं तन का भरोसा किस घड़ी छुट जायगा।
एक दिन इस रूप का बाजार भी लुट जायगा॥
धाम धरिनी अरु खजाना नाम भी मिट जायगा।
जिस तन पै तू मगरूर करता खाक में मिल जायगा॥ २
सब कुटंबरु राजपाटरु इहां ही रह जायगा।
वहां तेरे काम को कोइ साथ भी नहिं जायगा॥

जो कुछ भी तुझ पै कफन डाला वो भी यहां छिन जायगा।
आखिर अकेला लाखों मंजिल रोता वा पिटता जायगा ॥ ३
हाय माता हा पिता स्त्री पुत्र को चिल्लायगा।
कोई नें सुनेंगा बात तेरी जहां तू जलाया जायगा ॥
इस वास्ते तू कर भला तेरा भला हो जायगा।
यहां नाम भी रह जायगा वहां भी बड़ा सुख पायगा ॥ ४

उदार और परउपकार पुरुषों की प्रशंसा वर्णनं

आहा वही उदार है परोपकार जो करै।
आहा वही कृपावतार जो प्रहार नहिं करै ॥
आहा वही दयावतार दुर्निवार दुःख हरै।
आहा वही गुणावतार जो सुधार जग करै ॥ १
आहा वही जो शास्त्रवंत जो कषाय नहिं करै।
आहा वही जो न्यायवंत पक्षपात नहिं करै ॥
आहा वही है द्रव्यवंत दांन को सदा करै।
आहा वही जो धर्मवंत जीव की दया करै ॥ २

देखो मरना अवश्य होगा परन्तु नामवरी के साथ मरना चाहिये

विचार लोक मर्त्य हो न मृत्यु से डरो कभी।
मरो परंतु यों मरो जु दया तो करै सभी ॥
होइ सो न मृत्यु तो वृथा मरै वृथा जिये।
मरा नहि वही कि जो जिया न आपके लिये ॥
यही पशु प्रवृत्त है कि आप आपको चरै।
वही मनुष्य है सही कि और के लिये मरै ॥ १

जो कुछ भलाई दुनियां के साथ करनी होय सो जल्दी कर लेवो

जो कुछ करना करलो जलदी फिर सोचे क्या होता है।
लैना दैना लो द्यो जलदी फिर सोचै क्या होता है ॥
जिन सूं मिलना मिललो जलदी फिर सोचे क्या होता है।

वक्त नजीक चला आता है फिर सोचे क्या होता है ॥ १
कुछ भी नेकी करलो यहां पर फिर सोचे क्या होता है।
कंठागत जब प्राण हुवे तब फिर सोचे क्या होता है ॥
आप भी रोते कुड ंब रुलाते फिर सोचे क्या होता है।
लेट पालकी चले प्रेत बन फिर सोचे क्या होता है ॥ २
सब देखे खाक हुवा तन फिर सोचे क्या होता है।
नहि पहचाना जाता है ये किसका नाती पोता है ॥
राजा हो वा रंक निधन हो आखिर मरना होता है।
श्री मृगांक तू शोच शीघ्र ही फिर सोचे क्या होता है ॥ ३

आगें सूम कृपण सेठजी की मरण काल शोचनीय अवस्था का वर्णन

साथ सब लै जायगे यों कह रहे थे सेठ सूम।
खांयगे न खिलांयगे धरती में गाड़ेंगे जु चूम ॥
इस तरह से सोच करते मौत जब आई है झूम।
कंठगत जब प्राण हुवे माल पर पड़ रही है धूम ॥ १
खटिया में पौढा देखता है नाहि कह सकता है कुछ।
कुड ंब के सब लियें जाते अब न बन पड़ती है कुछ ॥
खाया न खरचा पेट भर के दान में नहिं दिया है कुछ।
अब चला सबको छोड़कर के हाथ संग नहीं चला कुछ ॥ २
व्यर्थ ही में जमा जोड़ी कुछ सुख नहिं मुझ मिला।
हाय धन के वास्ते काटा अनेकों का गला ॥
मैं जानता था हर हमेशा रहोंगा चंगा भला।
काल के आगें नहीं चलती किसी की कोइ कला ॥ ३
उमर भर में पैसे भर भी घी नहीं मुझको मिला।
अब मेरे घर का माल धन सब खांयगे पर्यन खला ॥
इस शोच में मेरा जु दिल जरता है ज्यों दावा नला।
हाय लक्ष्मी छोड़कर मैं अभी मरघट को चला ॥ ४

मुफ सूम नें धन जोड़ कर नहिं दिया कोइ को एक दाम ॥
पुत्र मित्र कलित्र सब रोटी को रोते थे तमाम ॥
मैं भी नंगे पांव से कौड़ी को फिरता वनरु ग्राम ।
हाय कोट्यां छोड़ धन जाता हूँ मैं मरघट मुकाम ॥ ५

दोहा—सूम छोड़ सब द्रव्य को, गये नरक पुर धाम ।
पूर्व पाप शोचन लगे, अब जलो अग्नि में चाम ॥ ६

आगें देखो वडे वड़े वलवान राजा हुवे परन्तु काल ने किसी को नहीं छोड़ा सो दृष्टान्त वर्णनं

मुकट मंडित वंदित जे हुते, विदित भूपति मंडल मंडनं ।
तनक में तिनको तिन दंड से, विटप जीवन खंडित ह्वै गयो ॥ १
रतन मंदिर मे जो आनन्द से, रतन ज्योति निरन्तर देखते ।
दिवस अन्तर में सोइ सो वही, अब भयंकर घोर मसान में ॥ २
मखमली मृदु मंजुल तूल की, सुमन रंजित सेज बिछाय के ।
मृदुल अंगन के लखि ये परें, कठिन काठ चिता पर्यंकपैं ॥ ३
करत सैल हुते कल बाग की, तुरंग बाग गहै कर रेशमी ।
सुन परी तिनकी सब वार्ता, चल पड़े सब छोड़य मालयं ॥ ४
असुर रावण से शिशुपाल से, भट महा खरदूषण वान से ।
प्रवल कंश वकासुर व्योम से, वहुवली कवली कृत ह्वै गये ॥ ५
करत घात अचानक तू बुरी, शुकुन से दुर्योधन से वली ।
समर धीर समर्थ समस्त सो, इम विलाय गये जल वुलवुला ॥ ६
करत घात अचानक तू बुरी, पतित पै सुकृती जन पै तथा ।
तरुण वुद्धि विवेक करै नहीं, अति कठोर अरे तव टेक है ॥ ७
नगर में वन में गिर तुंग पै, पवन मे जल में तरु भूमि में ।
दिवस में निशि में खल बापुरे, सब घड़ी तुव डाढ चलो करे ॥ ८

देखो संसार में एकसा जमाना किसी का रहता नहीं

संसार में किसका समय है एक सा रहता सदा।
है निशि दिवासी घूमती सर्वत्र विपदा संपदा॥
जो आज राजा बन रहा है रंक कल होता वही।
जो आज उत्सव मग्न है कल शोक से रोता वही॥ १

आगें अपनी आमदनी के अनुसार ही धन खर्च करना चाहिये ज्यादा नहीं

आय के अनुसार ही व्यय नित्य करना चाहिये।
द्रव्य संग्रह कर समय के अर्थ धरना चाहिये॥
नियम यह संपति विषय का याद जो रखता नहीं।
दुःख पाकर लोक सुख का स्वाद चख सकता नहीं॥ १
धन बिना संसार में कुछ काम चल सकता नहीं।
दुःख के दृढ़ जाल से निर्धन निकल सकता नहीं॥
हो न सकता धर्म भी धन के बिना संग्रह किये।
नित्य वित्त निमित्त सबको यत्नकर धरकर हिये॥ २

जिसकी संसार में कीर्ति है वोही अमर है

जिसकी बनी सत्कीर्ति है जग में अमर नर है वही।
अपकीर्ति का है भाव जिसके सिर मनुज खर है वही॥
जो सत्य व्रत हो धर्म रत हो न्याय के पथ पर चलै।
लाखों पड़ें यदि विघ्न पर तो भी नहीं तिल भर टलै॥ १

आगें देखो राजा प्रजा वा साधू अथवा पंडित सब कलदार के ताबेदार हैं

सब देवों में बड़ा देव इक जिसके लिये छांड़े परवार।
राजा प्रजा गुणी जन उसको फिरैं भटकते पुर बन वारि॥
कामदार अरु नामदार अरु जमादार अरु जुर्रतदार।
जमीदार जागीरदार अरु जोरदार अरु जिम्मेदार॥ १
मालदार मकानदार दूकानदान अरु सूवेदार।

पोतदाररु फौजदार अरु मनसबदार बड़े सरदार ॥
हवलदार अरु चौबदार अरु थानेदाररु चौकीदार ।
रिश्तेदार शिरस्तेदाररु ओहदेदार तावे कलदार ॥ २

हे रौप्य देव तुमकूं नमस्कार है तुम्हारे लिये ही देश वन समुद्र संग्राम श्मसानों मे जाना पड़ता है

काव्य—तेरे लिये प्राणपत इति कूपं, तेरे लिये ईमान त्यजंति भूपं ।
तेरे लिये ध्यान धरंति रामा, हे रौप्य देवं तुमको प्रणामा ॥ १
तेरे लिये सिंधु हिमाद्रि गमनं, त्यजंति दारापितु मात सजनं ।
तेरे लिये छांड़ति देश धामा, हे रौप्य देवं तुमको प्रणामा ॥ २
तेरे लिये धिक्कवच गालि सहनं, तेरे लिये माररु भार वहनं ।
तेरे लिये ढोवत पाप सामा, हे रौप्य देवं तुमको प्रणामा ॥ ३
तेरे लिये पुत्र पिता सुहतनं तेरे लिये भूत पिशाच यतनं ।
तेरे लिये ठानत युद्ध सामा, हे रौप्य देवं तुमको प्रणामा ॥ ४
तेरे लिये विष्णु समुद्र मथनं, तेरे लिये वेद पुराण कथनं ।
तेराहि लेते दिन रात नामा, हे रौप्य देवं तुमको प्रणामा ॥ ५

यह द्रव्य देव जिनका अवतार राव रंक तथा सर्व जन कर पूजित है तिनकी शोभा वर्णनं

पदचाल में—हे द्रव्य देव आपका कहां मुकाम है ।
जाना नहीं किसी नें वह कौन ठाम है ॥ १
परमात्मा के नाम से प्रतिकूल है जगत ।
अनुकूल आप नाम से जो हैं बड़े भगत ॥ २
आपही के पीछें सब जन रहैं खड़े ।
बालक भी देख आपको रोते भि हँस पड़े ॥ ३
आपके लिये ही जन विदेश भागते ।
वन द्वीप औ पहाड़ वा समुद्र लांघते ॥ ४
आपके लिये ही धर्म कर्म छोड़ते ।

जाते विलायतों को दूर दूर दौड़ते ॥ ५
हे द्रव्य देव आपके अवतार है बड़े।
नव रत्न स्वर्ण मुहरें कंठी रुपये कड़े ॥ ६
आपके हि हुक्म से डरते बड़े बड़े।
बादशाह हो राजा सब दर्श को खड़े ॥ ७
हे द्रव्य देव आपसे मूरख भी हो चतुर।
आप विन सर्व गुण सम्पन्न होय खर ॥ ८
आपकी कृपा से हो पंडित कुलीन शूर।
रूपवंत लायक बहु मान्य कोहनूर ॥ ६
जिसके जु घर में आपका अवता रहै नहीं।
उस घर में चूहे मक्खी चेंटी भी नहीं कहीं ॥ १०
संगीत नाट्य काव्य शास्त्रधी कला हुनर।
दिखलाते आपको ही पंडित वा मान्यवर ॥ ११
हे द्रव्य देव अ पका कहां तक करूँ बयान।
राजा प्रजा वा देव ऋषी कें तुम्हारा ध्यान ॥ १२
इक वीतराग मुक्ति पुरुष छोड़ा आप नाम।
श्री मृगांक चाहता कब छूटै आप ग्राम ॥ १३

आगें शुद्ध आत्मा तथा परमेश्वर के नाम गुण वर्णनं

जीव अनादि अनंत अरूपी अचल अमर अक्षय अजरान।
अज अगम्य अनुरूपी अनुदय अनुदीरक अनहारक जान ॥
अःकषाय अव्याप्य अयोगी अमर अजर अपरंपरमान।
अशरीरी अविरुद्ध अनाकुल अलख अशोक अतींद्रीवान ॥ १
अप्राणी अनयोगि असंज्ञी अनवगाह्य गुरु लघु परणाम।
अविनासी अनवेद अछेदो अन आश्रव अकलंक अनाम ॥
अ संसार. अनभोग अछेदी अनवंधक अकंप अनकाम।
अभय अरोग अनाकुल अरिरज अरहस अकृत अमित अनठाम ॥२

जीव के अनेक भाव नाम वर्णनं

अस्ति नास्ति द्रव्यत्व भाव ध्रुव सत्ता भाव तत्व गुण भाव ।
वस्तु प्रभुत्व विभुत्व नित्य अरु एक अनेक अघट घट भाव ॥
पर्म सुधर्म अबंध सास्वता भेदाभेद अतुल अज भाव ।
अमल अपार अखंड भाव चैतन्य भाव अविकार सुभाव ॥१

देखो शुद्ध आत्मा मे क्रोध मानादि कोई दोष नहीं

न क्रोधं न मानं न माया न लोभं ।
न दंभं न हास्यं न कामं न क्षोभं ॥
न पुरुषं न पुंसं न स्त्री वेद युक्तं ।
न देवं न निरयं मनुतिर्य थोक्तं ॥ १
न स्पर्शं न रसनं न घ्राणं न नयनं ।
न श्रोत्रं न शब्दं न रूपं न वचनं ॥
न स्वेतं न पीतं न कृष्णं न रक्तं ।
न मिष्टं न कटुकं न आम्लं न तिक्तं ॥ २
न पितृं न मातृं न पुत्रं कलित्रं ।
न भ्रातृं न मित्रं न जामातृं शत्रुं ॥
न कर्तृं न धर्तृं न हर्तृं न भोक्तं ।
एको अहं शुद्ध रागादि मुक्तं ॥ ३

सर्व सुखों में प्रधान सुख मोक्ष में ही है संसार में कहीं भी नहीं

न जन्मं न मरणं न आधि न व्याधि ।
न रागं न द्वेषं न क्लेशं न शोषं ॥
चिंता न तृष्ना भय आर्ति ग्लानं ।
न खेदं न स्वेदं न रोषं न म्लानं ॥ १

आगें देखो निर्दोष परमेश्वर कूं पूजना चाहिये जो आप ही क्षुधादि दोष कर सहित है वो हमारा दुःख कैसे दूर करेगा

राग द्वेष सुक्ख दुक्ख आधि व्याधि पीडनं ।
काम क्रोध लोभ मोह जन्म मृत्यु नहि जिनं ॥

भय प्रमाद स्वेद खेद क्लेश नाहि चिंत्तनं ।
क्षुत्पिपास त्रास नांहि वो ही देव पूजनं ॥ १

आगे देखो इस संसार में विद्या ही सर्व सुख संपदा की दाता है
और ये ही माता है

विद्या समान नहीं जग में धन दूसर राज धनादि बखाना ।
दांन दिये अधिकाय सदा पृथ्वी तल बीच विचित्र बखाना ॥
चोर लोग न घटै बटै कुछ काम पड़ै तो करे बल नाना ।
को कविपार लहै उपमा जु करे सब भांति करे कल्याणा ॥ १
विद्या ही कर प्राप्त होय धन विद्या ही कर धर्म महान ।
विद्या ही कर भोग प्राप्त होय विद्या ही कर विनय विज्ञान ॥
विद्या ही कर लोक मान्यता पद विद्या कर घर घर सन्मान ।
विद्या ही कर द्युति मति कीर्ति राज्य विभव ऐश्वर्य महान ॥ २
विद्या ही कर अधिक रूप हो पंडित वाग्मीक गुणधार ।
विद्या ही कर सर्व शास्त्र का ज्ञाता होय निपुण जनसार ॥
विद्या ही कर षट् रस भोजन यश सौभाग्य संपदा सार ।
विद्या ही कर सुर तरु पारस काम धेनु चिंतामणि लार ॥ ३

देखो इस भारत में हजारों वर्ष पहिली पश्चिमी लोग विद्या सीखने
को यहां पर आते थे

सब देश विद्या प्राप्ति को संतति यहां आते रहै ।
सुरलोक में भी गीत ऐसे देव गण गाते रहै ॥
है धन्य भारतवर्ष वासी धन्य भारतवर्ष है ।
सुरलोक से भी सर्वथा उसका अधिक उत्कर्ष है ॥
यही ज्ञान की आदि जन्म स्थली है ।
यही सभ्यता सुंदरी थी भली है ॥
नहीं विश्व में भूमि एसी कही है ।
अहो आज छाही अविद्या वही है ॥ २

अब तक कोई देश नहीं मिला जो भारत का चेला न हुआ हो

अवलूं न कहीं वह देश मिला, जिसका न इसे उपदेश मिला।
गुरु के गुण गौरव अस्त भए, गुरु के गुरुदेव समस्त हुवे ॥१

यह वही भारतक्षेत्र है जोकि बड़े बड़े विद्वान देखने के वास्ते आते थे

यह वही जु भारत क्षेत्र वर्ष है बड़े बड़े विद्वान समाज।
देश देश के आते देखने कीर्ति प्रसंशा करते गाज॥
झूंठ कपट हिंसा का नाम नहिं जब रघुवंशी करते राज।
खुली दुकानें रहती रात्रि दिन कोइ नहि छूता कोई का साज॥ १

जैसे भारत मे सुशील स्वभावी पुरुष थे वैसे किसी विलायत में न थे

सभ्यता धनाढ्यता उदारता दयालुता।
कृतज्ञता गुणज्ञता सुविज्ञता कृपालुता॥
नम्रता सुशीलता न्यायता सु सत्यता।
विद्वता चातुर्यता सुवीरता मृदुत्वता॥-१

[दे]खो मनुष्य जन्म पाकर के भी कोई काम अच्छा नहीं किया सो बड़ा रंज है

बड़े भाग्य से इस दुनियां में दुर्ल्लभ मानुष तन पाया।
वृथा गमाया उसको हमने माया में मन उलझाया॥
क्या करना है उचित जन्म से कभी न इस पर ध्यान दिया।
अज्ञानी पशु तुल्य सर्वदा वे समझै सब काम किया॥ १

देखो जिसने मनुष्य जन्म पाके दीनों का उपकार नहीं किया उसने कर्म भूमि में आकर क्या किया

जिसने बढ़कर नहीं दीन जन को अपनाया।
पतित बंधु को दुखी देख नहीं दुख से छुड़ाया॥
सुनकर करुणा नाद न जिसने कान हिलाया।
दया सलिल असहाय तृषित को नहीं पिलाया॥
बस आप जिया अपने लिये जिया किंतु वह क्या जिया।
इस कर्म भूमि में आप ही कहिये क्या उसने किया॥ १

क्षुधातुरों को देख जिसने नहिं अन्न खिलाया।
तृषातुरों को देख ग्रीष्म पानी न पिलाया॥
रोगी जन को दुखी देख औषधि न कराया।
शीत कुकड़ता देख वस्त्र नहीं जिसने उढ़ाया॥
बस आप जिया अपने लिये जिया किंतु वह क्या जिया।
इस कर्मभूमि में आप ही कहिये क्या उसने किया॥ २
गिरे पड़े असमर्थ देख उपकार न कीना।
विधवा बालक वृद्ध देख दुःख दूर करीना॥
अंध पंगु कोढ़ी अनाथ का दुख नहि चीन्हा।
ठग चोरों से लुटा देख धीरज नहिं दीन्हा॥
बस आप जिया अपने लिये जिया किंतु वह क्या जिया।
इस कर्मभूमि में आपही कहिये क्या उसने किया॥ ३

देखो शुभ प्रयोग कर मनुष्यों के सुख समाज की वृद्धि होय है

शुभ प्रयोग सुख प्राप्ति ऋद्धि सिद्धि मंदिरं।
क्रांति कीर्ति रूप तेज बल प्रताप गुणभरं॥
संपदा सु काम भोग पुत्र नारि ग्रहवरं।
देश रत्न कोष राज्य धन सुधान्य नरवरं॥ १

देखो दुःख प्रयोग कर अनेक दुःख प्राप्त होते हैं

दुख प्रयोग दुःख प्राप्ति रोग शोक निर्धनं।
क्षुत्पिपाश शीत घाम मार भार बंधनं॥
अंग पंगु मूक बधिर ज्वारि चोर हिंसनं।
भिक्षुकं निरादरं कुरूप मूर्ख निर्जनं॥ १

दुनिया में सब टल जाय परन्तु सज्जनों का वचन हल चल सकता नहीं

चंद्र सूर्य टल जाय और ध्रुव भी टल जावै।
हिले शेष का शीश और अचला चल जावै॥
छूट जगह से फूट टूट नभ मंडल जावै।
कमलासन से कमल कमल से जल हट जावै॥

जमा जहां पर जमा अब पैर फिसल सकता नहीं ।
क्षत्रिय देव व्रत कभी सो व्रत से चल सकता नही ॥ १
देखो त्याग ही संसार मे सार है अरु सुख का आगार है
आत्मा कि शक्ति वह है कि त्याग जिसका नाम हैं ।
आत्मा है उच्च उसकी त्याग जिसका काम है ॥
है मनुष्य वोही कि त्याग से कुछ प्यार है ।
सच तो यही है कि त्याग ही संसार मे इक सार है ॥ १
आगें इस दुनिया मे कोई कहता है कि हम पहिले तुम पीछे परन्तु कोई पहिले पीछे का चिह्न नहीं दिखाता परन्तु दिगंबर जैन अपना चिह्न दिखाता है देखो ध्यान दे करके
इस दुनिया में कोइ कहता है पहिली हम है पीछे तुम ।
कोई कहता है पीछे तुम हो सबसे पहिली हम ही हम ॥
निर्णय नहिं कोई करता हैगा आपस में लड़ते हर दम ।
क्यों छोटी सी बात चीत पर दुनियां झगड़ैं कदम कदम ॥ १
उत्तर—जिस मत में यह मुहर छाप हो नग्न दिगम्बर परम धरम ।
वा ही मजहब सबसे है पहिली पीछे हैंगे हम सब तुम ॥
देखो बालक दुनियां के पर कौन छाप है जनम दिनं ।
ज्यादा कुछ तकरार करो मत वोही मजहब है सबसे प्रथम ॥ २
नहीं शिवांकित ब्रह्मा विष्नु नहीं मोह मिडन यिशूधरम ।
पक्षपात का चश्मा छोड़ो शोचो दिल में बात मरम ॥
कोई बनाता किसी चीज को नाम चिन्ह करता है प्रथम ।
इतनें ही में समझ लीजिये कौन है पहिली हम या तुम ॥ ३
आगें देखो मूर्ख जनों ने जगत को बहका दिया है कि जैन मन्दिर में नहीं जाना सो क्यों जिन नग्न वृषभावतार को श्री शुकदेव जी नें तथा हजार ऋषीश्वरों ने नमस्कार किया उस ऋषभदेव के मन्दिर में जाने की मनाई क्यों सो बड़ी ही मूर्खता है
अज्ञ जनों ने जग बहकाया न गच्छेज्जिन मंदिर मांहि ।
क्या दूषण हैं जिन मन्दिर में कहो कृपानिधि स्पष्ट करांहि ॥

नग्न मूर्ति जहां ऋषभदेव की भागवत अनुकूलहि तिष्टांहि ।
प्राक्काल में बड़े बड़े ऋषि नृप ब्राह्मण बहु नमन करांहि ॥ १
जहां अहिंसा दया क्षमा वा सत्य शौच संयम तप सार ।
शम दम विषय कषाय त्याग वैराग्य आत्मध्यान विचार ॥
जहां जाने से मद्यमांस मधु त्याग अभक्ष जुवा व्यभिचार ।
हिंसा चोरी झूंठ कपट के त्याग होन के शास्त्र प्रचार ॥ २
भगवत पूजा गुरु उपासना तथा भजन शास्त्र व्याख्यान ।
धर्माधर्मरु जीवाजीवरु पुण्य पाप संसृत निर्वाण ॥
कहो कृपानिधि जिन मंदिर में क्या दूषण है धर उरआंन ।
नाहक जग को क्यों बहकाते फल पावोगे नर्क निदान ॥ ३

इस संसार में यह मन कोई तरह वशीभूत नहीं होता है

हाथी होता यह जु मन अंकुश छेद सुधार ।
चढ़ता गज के कंध पर वश करते निरधार ॥ १
घोड़ा होता यह जु मन, चाबुक देय सवार ।
मुख लगाम दे वश्य कर, चाल सिखाता सार ॥ २
विष धर होता यह जु मन, मौहर बीन बजाय ।
नाग दमन सिखलायकै, निर्विष करता ताय ॥ ३
लोहा होता यह जु मन, अग्नि तप्त घन मार ।
यंत्री मांहि जु खैंचकर, करूं सुरीला तार ॥ ४
पत्थर होता यह जु मन, करता गृह संचार ।
रहता सुख सूं गेह में, तीन वर्ग को धार ॥ ५

देखो मनुष्य पर्याय में यह काम नहीं करना चाहिये ताका वर्णनं

हिंसा चोरी झूंठ परस्त्री क्रोध लोभ माया मद मान ।
परिग्रह जुवा मांस मद वेश्या कपट कुशील पाप नहिं ठान ॥
निंदा देव गुरू वृष द्रोही कलह अन्याय न खलता आंन ।
निर्लज्जरु निर्दयता कडुवचन नहिं चुगली नहिं रिश्वत खांन ॥ १

हे तृष्ना तेरे वास्ते मैं वड़े वड़े काम किये तव भी तुझे संतोष नहीं आया अब तो तू मुझे छोड़

भटक्यो देश विदेश तहां फल कछू न पायो।
निज कुल को अभिमान छोड़ सेवा मन लायो॥
सही गालि अरु खीज हाथ झारत घर आयो।
दूर करत हूँ दौर स्वांन ज्यों पर घर खायो॥ १
खोदत डोल्यो भूमि गढ़ी वहु पावत संपत।
धोकत फिरो पखांन कनक के लोभ लगी मत॥
गयो सिंधु के पास तहां मुकता नहिं पाये।
कौड़ी कर नहिं लगी नृपन कूं शीश नवाये॥ २
साधै प्रयोग मशान में भूत प्रेत वेताल भज।
अजहूँ न तोहि संतोष नहिं अब तो तृष्णा मोह तज॥ ३

आगें कंदमूल का निषेध। सरसों बराबर कंदमूल में अनंते जीव बसै हैं

बसैं जा तिल सम कंद में जीव अनन्ता ठीक।
खाय सुमिथ्या दृष्टि नर, आमिष सम तहकीक॥ १
सर्षपसम जो कन्द को, खाग अधर्मी जीव।
वहु जीवों के असन तें, दुर्गति लहै सदीव॥ २
खाय कंद जे मूढ नर, गद नाशन के हेत।
सो भाजन होय रोग को, स्वभ्र कूप गति लेत॥ ३
ऐसे निंद जु कंद को, जान बूझकर खांय।
सो निकृष्ट गति कूं लहै, कहो न मोपर जाय॥ ४

श्लोक—तिलमात्र समं कंदे अनंता जीव संस्थितः।
तस्य भक्षणातो भुक्तया सर्वे जीवा कुदृष्टिभिः॥ १
सर्षपेन समंकंदं ये खादंति अधर्मिणां।
दुर्गतिं यंति ते मूर्खा, नंत जीव प्रभक्षणात्॥ २
रोगादि पीड़ितो यस्तु खाति कंद सुखाप्तये।
सुरोग भाजनं भूत्वा, स्वभ्र कूपे पतिष्यति॥ ३

आगें देखो अन्य मत अपेक्षा सब जाति के पुष्पों में देवता बताते हैं उन पुष्पों को तोड़ना नहिं चाहिये सो दृष्टांत वर्णनं

विन प्रतिमा खाली नहीं पाया कोई फूल फुलवारी में।
भ्रमर दृष्टि कर तमाम देखा हमने वाग वहारी में॥
गुलाव में गरुड ध्वज राजें पुष्प केवड़ा केशव राज।
पुष्प चमेली दीखै चतुर्भुज पुष्प केतकी कृष्ण विराज॥
वेला में दीखे हैं विष्णु पुष्प मोगरा मोहन राज।
मौरशिली में दीखे मुरारी नरगिस में नारायण छाज॥
गेंदा में गोपाल विराजें हरिहर हार शृंगारी में।
भ्रमर दृष्टि कर तमाम देखा हमने वाग वहारी में॥ १
जगंनाथ जूही में तिष्ठें पुष्प मोतिया माधव राज।
राय वेल में राम विराजै पुष्प सेवती शिव महाराज॥
मालती में माहेश्वर राजै कमल पुष्प कमलासन साज।
सूर्य मुखी में सूर्य विराजै कुंद कली करुणा कर राज॥
गुडहल में गोविंद विराजें नरसिंह फूलनिवारी में।
भ्रमर दृष्टि कर तमाम देखा हमने वाग वहारी में॥ २
पाडल में दीखे है प्रजापति पियावांस पर ब्रह्म निवास।
कन्हेर में दीखे है कपर्दी पारिजात पुरुषोत्तम वास॥
कहो कृपानिधि मुझै काट कैं किस पर चढ़ाते देकर त्रास।
सब पुष्पों में मैं ही विराजूं क्यों करते मेरा तुम नाश॥
अये साहब मुझको न सताओ इस दुनियां फुलवारी में।
भ्रमर दृष्टि कर तमाम देखा हमने बाग वहारी में॥ ३
विन प्रतिमा खाली नहि देखा कोई फूल फुलवाड़ी में।
भ्रमर दृष्टि कर तमाम देखा हमने बाग वहारी में॥ ४

देखो दादू पंथी कहते हैं

कली ब्रह्मा पत्र विस्नु, मूल में महादेव।
तीन देव न काटै कै, तूं करे किसकी सेव॥ १

आगे देखो गोमटसार गाथा

मूले कंदी छल्ली पवालदल कुसुम शाल फल वीजे।
सम भंगे सदिणंता, असमे सदहोंति पतेया ॥ १

आगे देखो ज्ञानी श्रद्धानी लोगों को जहां देखो वहां ही परमात्मा दीखता है

यहां तुम हो वहां तुम हो बताऊं क्या कहां तुमको।
तुम हीं तुम बस रहे दिल में जहां देखूं तहां तुम हो ॥
स्वर्ग भी विन तुम्हारे कुछ नर्क से कम नहीं मुझको।
हमारे तो लिये सुरपुर वही प्रियवर जहां तुम हो जहां तुम हो ॥ १
कोई कहता है मंदिर में कोई मसजिद में बतलाता।
कोई कहता है गिरजे में कोई कावे में बतलाता ॥
कोई कहता है वेदों में कोई तीर्थों मे दिखलाता।
कोई कहता समाधी में कोई सिजदे में शिर नाता ॥ २
कोई कहता है पानी में कोई सूरज में दरसाता।
कोई कहता जमी में है कोई अस्मा में जतलाता ॥
कोई कहता है पूरब में कोई पश्चिम में बतलाता।
कोई कहता फकीरी में कोई फाकों में बतलाता ॥ ३
अगर सच पूछिये दिल से पता कोई को नहिं पाता।
मगर पाया पता जिसने वोही खामोश हो जाता ॥ ४

दोहा—है है कहूँ तो है नहीं, नहीं कहूँ तो है।
है नहि के तूं वीच में, जो कुछ है सो है ॥ ५
पास कहूँ तो दूर है, दूर कहूँ तो पास।
ऐसे मोहन रूप को, कैसे करूं तलाश ॥ ६

देखो संसार में कुछ का कुछ भेद किसी ने नहीं पाया अर पाया जिसने बतलाया नहीं

सब इसी कुछ में समाया फिर भी कहता कुछ नहीं।
कुछ न कुछ का भेद सब जाना किसी ने कुछ नहीं ॥

मिल गया कुछ का पता जिस किसी को जो कहीं ।
जान कर कुछ को जो उसने फिर बताया कुछ नहीं ॥ १

आगे रात्रि दिन मनुष्य जन्म चिंता में जाता है

दिन सूं अंतर रात, रात अनंतर प्रात ।
ऐसे निश दिन जात, अरु कुछ नहीं बनती बात ॥ १
अब सुनों जु मेरे भ्रात, चिंता चित रहात ।
मन नहि धर्म्म समात, तब कहो कहां कुशलात ॥ २
आयु पूर्ण हुई जात, परभव निकट दिखात ।
तहां जु पिट हैं भ्रात, तब कौन बचावन जात ॥ ३
कौन बचावन जाय जहां कटना और चिरना ।
गलना जलना शीत उष्णगिरि पर से गिरना ॥
शूला रोपण भूंख प्यास कोल्हू में पिलना ।
वैतरणी में गिरन वहां कोई नहिं शरणा ॥
इत्यादिक दुख नर्क के, सहै जु कैसें हम तहां ।
तातैं सुधर्म उर धारिये, सब चिंता मिट जा यहां ॥ ४

आगे सुमित्र सज्जन लोगों का स्वभाव वर्णनं

हे सर्वथा न जिनकें कुछ लाभ जी में, है स्वार्थ जो समझते पर कार्य ही में । जो मित्र के सुख सुखी दुःख में दुःखी है, सच्चे सुमित्र जगती तल में वोही है ॥ गाते परोक्ष गुण दोष सदां हि छिपाते । देते शरीर तक लोभ कभी ना लाते, ऐसे सुमित्र हम किंतु कहीं ना पाते ॥ आते न दृष्टि पथ और सुने ना जाते ॥ १

आगे कुमित्र दुर्ज्जन मनुष्यों का स्वभाव वर्णनं

आगे विनीत बनते निज कार्य से ही ।
निंदा परोक्ष करते डरते न वे ही ॥
बातें महा मधुर नित्य नई बनाते ।
एसे अनेक अब मित्र यहां दिखाते ॥ १

देखो जैन मतानुसार राजधर्म का संक्षेप वर्णनं देखो महाभारत तथा स्मृति अनुसार न्यायवान प्रजापालक धर्मज्ञ राजों का कुछ संक्षेप वर्णन लिखते हैं देखो राजा कैसा गुणवान होना चाहिये

बुद्धिमान धृतवान दंडवित शूरवीर बहुश्रुत मर्मज्ञ।
ज्ञानवान बलवान जितेंद्रिय तेजस्वी कोमल धर्मज्ञ॥
शांतिवान मतिवान दक्षता क्षमा शील निर्लोभ कृतज्ञ।
दयावान कुलवान जितेंद्रिय सत्संगी हित वचत त्वज्ञ॥ १
रहित प्रमाद प्रजा का पालन सेन्या संग्रह नीति विचार।
सत्यवाक् प्रियदर्शी ज्ञाता मुख प्रसन्न इंगित आकार॥
पुरुषार्थी कल्याण ग्राही सरल चित इतिहास प्रचार।
साम दाम अरु दंड भेद गुण तव कुछ न्याय करे हितकार॥ २

दुष्ट अन्यायी राजों के लक्षण वर्णनं

दुष्ट स्वभावी पापी क्रोधी नीच अधर्मी बुद्धि जु हीन।
अन्यायी निंदक अरु हिंसक मूर्ख कृतघ्नी विद्या हीन॥
मृग या मृषा मद्य पी ज्वारी कपटी कृपण अक्ष आधीन।
लोभी कामी शठ निर्दयता स्वजन विरोधी न्याय जु हीन॥ १
अविवेकी मानी स्त्री लंपटी हठी प्रमादी अरु वाचाल।
कटुभाषी निष्ठुर गुरु द्रोही स्वेच्छाचारी दुर्ज्जन पाल॥
कर पीडन वाग्दंड दुष्टता रिस्वत लैन वचन जिम ज्वाल।
प्रजा पीडना ये अवगुण है दुष्ट नृपति के कहै कराल॥ २

जो राजा पूर्वोक्त गुण का धारी न होय तो प्रजा में लूट मार चोरी अनीति मे प्रवर्तन करने लग जाय सो वर्णन

राजा विना अनीति प्रजा में होय अधर्म्म पाप विस्तार।
हिंसक झूंठ कुशील जुआरी चोरों का होवै अधिकार॥
स्त्री सुत धन आभूषण को छीने सबल निवल को मार।
देते दुःख क्लेश वध बंधन मचै जगत में हाहा कार॥ १

राजो विना धनवान गुणी जन वेद शास्त्र के जानन हार।
मात पिता वा गुरु की भक्ति न होते वानिज व्यापार॥
दानरु विद्या औषधि शाला मंगल कार्य विवाद प्रचार।
राजा विन सुख होय न जग में विना राज ये दुख दातार॥ २

आगें देखो राजाओं को यही धरम यही नीति अनुसार प्रजा का पालन करना और अमीर हो वा गरीब हो सबकी अरजी अपने कानों से सुनना प्रमाद नहीं करना

राजाओं का यही धर्म है प्रजा पालना नीत्यनुसार।
कर पीडन वाग्दंड दुष्टता मृगया मृषा द्यूत मत धार॥
षट् गुण अंग सप्त चतु विद्या धारहु छांडरु षट् वर्गार।
स्थापो विद्या औषधिशाला दीन पथिक गृह गली वाजार॥ १
क्या गरीब क्या अमीर हो नर सब की सुनना यही नृप नीति।
अकलमंद आ मिल कारीगर साधू सज्जन सूं कर प्रीति॥
अदना सूं आला तक की फर्याद सुनों यह न्याय सुरीति।
उद्योगी व्यापारि जनन की तन धन सूं कर मद्दरु मीत॥ २
व्याह कार्य वा जन्म मरण में करो मदद परजा की सम्हार।
गौ धन धाम विका कै हासिल मत लेवो यह न्याय विचार॥
क़िसी मजहब में दखल करो मत शिक्षा धर्म प्रजा विस्तार।
यह विधि राजा राज करे तिस प्रजा सुयश गावै संसार॥ ३

आगें राजाओं को चाहिये प्रतिदिन प्रजा के सुख दुख की सम्हाल करना कोई भूखा न सोवै राज्य भर में और घी अन्नादिक वस्तु का निरख रोज दरयाफत करैं कमीवेशी का वन्दोवस्त करै।

भूपेन्द्र को निज प्रजा मांही कार्य नित प्रति सोचना।
कौन दुखिया कौन सुखिया को धनाढ्यरु निर्धना॥
किसके लाभरु हांनि किसके कौन दानी याचना।
कौन पंडित कौन मूरख कौन दुर्ज्जन सज्जना॥ १
कितने हैं डाँकू चोर ज्वारी मद्य पी हिंसक जना।

कितने है वालक वृद्ध विधवा रोगि भूखे अन्न विना ॥
राज्य के सब कर्मचारी कोइ को दुख देते तो ना।
यौ खबर नित प्रति मुझै क्या भाव गुड़ घी अन्न चना ॥ २

दोहा—मेरे राज्य में कोइ नहिं, भूखा सोवै आन।
जलदी उसकी खबर लो, देकर भोजन पान ॥ ३

आगे देखो राजाओं को चाहिये अपने स्वार्थी को छोड़ प्रजा के हित का विचार करना इस प्रकार करने से प्रजा राजा की मित्र रहेगी, नहीं तो दुश्मन हो जायगी

राजाओं को लोभ त्याग के प्रजा पालना न्यायानुसार।
सदा प्रजा के हित का चिंतन नहीं करै प्रतिकूल विचार ॥
सुखी रखै अपनी परजा को स्वयं सुखी होवै संसार।
अपने स्वार्थ को तिलांजली दे प्रजा स्वार्थ पर दृष्टि पसार ॥ १

राजनीति का सार प्रजा सूं प्रीति जु करना।
ज्यों गौ वत्स। प्रीति प्रजा का पालन करना ॥
सुख देने से प्रजा राज की मित्र रहेगी।
चोरी झगड़ा लूट मार हरगिज न करेगी ॥ २
रंज न करना सदा प्रजा का राज धर्म है।
क्रोध लोभ वश होय दंड दे यह अधर्म है ॥
यह शिक्षा उरधार प्रजा कूं सुतवत पालो।
दीर्घ काल कर राज्य अंत सुरलोक सम्हालो ॥ ३

आगे देखो राजाओं को अपने निकट हमेशा चार वर्ण के कितने कितने आदमी चाहिये

राज द्वार में चार ब्राह्मण वैद्य ज्योतिषी शास्त्र प्रचार।
शूरवीर वलवान शास्त्र धर क्षत्री आठ होवैं सरदार ॥
स्वच्छ भेष वर विनय वान चतुशूद्र राज्य आज्ञा शिरधार।
सप्त व्यसन वा लोभ विवर्जित राजा के मन रंजन हार ॥ १
इक्किस वणिक वड़े व्यापारी नृप के निकट रहै दरबार।

राजा सलाह करै इनही से नगरोन्नत सोभा व्योपार ॥
सदा करै इनकी प्रतिपालन ये ही नगर उछालन हार ।
वणिक विना नगरी श्मशानवत् दीप कभी नहि जलै वजार ॥ २

आगे देखो प्रजा का रंजाय मान न करना ये ही राजाओं का धर्म हैं

नृप का पहिला धर्म प्रजा को रंज न करना ।
सर्व राज्य का दुःख शोक भय आपद हरना ॥
सुख देने कों हमें कार्य सारे है नृप के ।
होंगे उसके भक्त न होंगे हम किस के ॥ १
भूपति जो कर रूप प्रजा से कर लेते ।
वो प्रजा अर्थ ही उसे वढ़ाकर दे देते थे ॥
जैसे दिनकर प्रथम महीतल से जल लेता ।
फिर सहस गुणाकर अधिक जमी पर वरषा देता ॥ २

देखो जो राजा न्याय मार्ग पर नहीं चलता वो अनेक कार्य में सफल होता नहीं

न्याय पूर्वक जो नृपति अज्ञान वस चलता नहीं ।
वह कभी निज काय में पूरा सफल होता नहीं ॥
यह सुनिश्चय नीति का नित ध्यांन रखना चाहिये ।
पाप का फल जान कर क्या पाप करना चाहिये ॥ १
पाप का फल एकसा मिलता सभी को है सही ।
राव रंक विचार इसमें है नहीं होता कहीं ॥ २

देखो जो प्रजा को राजी रखते हैं वो ही राजा कहलाते हैं

रंज न करते सर्व प्रजा को वो ही राजा कहलाते ।
शासन करते रक्षा करते विद्या शिक्षा सिखलाते ॥
पालन करते पोषण करते उदर सर्व का भरवाते ।
राव रंक की अरजी सुनके न्याय वरावर करवाते ॥ १
प्रजा के धन को प्रजा कार्य में लेते देते खरचाते ।
अपने स्वार्थ को प्रजा कष्ट दे धन लेते वो शरमाते ॥

अन्न दुग्ध का संचय करते प्रजा में सस्ता विकवाते।
सब जीवों की रक्षा करते वो ही राजा कहलाते॥ २

श्लोक—प्रजा नां रंज ना द्राजा शासना द्रक्षणा द्यथा।
शिक्षानात्पालनात् शास्ता भरणात्पोषणा नृपा॥ १

आगे जो राजा प्रजा का सन्मान करता है वह आनन्द से रहता है

जिस राज्य में रैयत का सदा होता है सनमान।
आनंद सहित राजाभि हो जाय सु बलवान॥
सेना में प्रगट होती है वीरत्व की इक शान।
भर जाता है धन जु कोष में घर घर में धन सुधाम॥ १

आगे देखो राजाओं को चाहिये वणिक लोगों से प्रीति करना व आदर सन्मान करना कोमल कर लेना यही भंडार भरने का और नगर के आवाद होने का उपाय है देखो महाभारत शांति पर्व अध्याय में लिखा है

महाभारत के शांति पर्व में लिखा सतासीमा अध्याय।
जो राजा वैश्यों से प्रीती करते तन मन धन सुलगाय॥
वो ही राज्य का सुख भोगते अरु उनका भंडार भराय।
इस समान कोइ कार्य न उत्तम राजा को करना मनलाय॥ १
राजाओं को यही योग्य है वणिको से प्रीती करना।
धीरज देना पालन करना धन देना आपद हरना॥
उनके साथ मित्रता करना संविभाग आदर करना।
प्रियवच कहना मंगल करना कोमल कर स्थापित करना॥ २
जो राजा वैश्यों से प्रीती करते वो होते धनवान।
वणिक लोग ही राज्य वृद्धि को करै कृषी व्यवसाय महान॥
इसी वास्ते राजाओं को वणिकों का करना सन्मान।
होय वड़ा उपकार देश का नृप सुख होय प्रजा धनवान॥ ३

आगे देखो राजाओं का भोजन वस्त्र अलंकार हाथी घोड़ा सर्व घर का सुख प्रजा ही से चलता है

प्रजा के धन से राजाओं का सब गेह कार्य नित चलता है।

भोजन पान वस्त्र आभूषण रियाया ही से मिलता है ॥
रियाया ही से राज्य भोग ऐश्वर्य विभव सुख फलता है।
ऐस अशरत के सर्व कार्य सुख रियाया ही से निकलता है ॥ १
इसी वास्ते राजाओं को रियाया को राजी रखना।
प्रिय वचन कहना मंगल करना कोमल कर स्थापित करना ॥
अपने कर्मचारियों कूं यही बात समझा देना।
कोई तरह रैयत सुख पावै वो ही न्याय तुम कूं करना ॥ २

राजा कहता है

अपनी रिश्वत लेने को क्या मेरी प्रजा को दुख दैना।
मार ताड वा डर दिखला के जेलखानें भिजवा दैना ॥
इसमें हो नृप की अपकीर्ति फिर तुमको भी दुख भरना।
अलख से डर इनसाफ करो तुम नृप आज्ञा पालन करना ॥ ३

देखो इस संसार में सब जीवों से प्रेम करना किसी से वैर भाव न करना

खुदा फरमाता है खलक से मुझे खुश करना चाहो तुम।
तौ मत सताओ दिल किसी का मानों तुम मेरा हुकम ॥
शंख घंटा और अर्गन बाग मे सुनता नहीं।
कुरवानी से या यज्ञ से पशु होम से मिलता नहीं ॥ १
वेदों पुरान कुरान बाईबिल क्यों सुनाते हो मुझे।
शिर घुटवा जटा कर क्यों भेप दिखलाते मुझे ॥
पूजा जकायत दंडवत से क्यों रिझाते हौ मुझे।
इन हरकतों से खुश नहीं क्यों हँसाते हो मुझे ॥ २
मेरी खुशी इस बात में दुनियां से सच्चा प्रेम कर।
अपने नफे के वास्ते कोइ जान का मत घात कर ॥
इस राह पर चलने से मैं तुझसे मिलूंगा अये सनम।
और कोइ रास्ता नहीं मिलने का मुझसे कोइ जनम ॥ ३
समझले तू अपने दिल में प्रेम सम कोइ हज नहीं।

रोज़ा नमाज अरु देव पूजा प्रेम से बढ़कर नहीं ॥
दुनियां में जितने मभ्भव हैं वो प्रेम से विहतर नहीं ।
जैन बौद्ध जु और महम्मद ईशा ने भी यही कही ॥ ४

इस संसार में प्रेम क्या गुणकारी वस्तु है कोई कह सकता नहीं

प्रम है क्या वस्तु जग मे कोइ बता सकता नहीं ।
कहने में आता है नहीं सुख कोई जता सकता नहीं ॥
प्रेम का क्या मर्म है सो समझ सकते हैं नहीं ।
प्रेम मिलता भी नहीं है हर समय में हर कहीं ॥ १
प्रेम की बातें निराली देख पड़ती हैं सभी ।
प्रेम बंधन दुःख कारण हो नहीं सकता कहीं ॥
प्रेम का बदला नहीं संसार की सब संपदा ।
प्रेम से ही प्रेम का होता है सब करजा अदा ॥ २
प्रेम में वह शक्ति है जो मोम पत्थर को करें ।
शत्रु भी सब मित्र होवैं प्रेम सतउर में धरै ॥
प्रेम सोंना है खरा तामा तमो गुण की कला ।
मेल में अनमेल का होता नहीं बिलकुल भला ॥ ३
प्रेम ही सौंदर्य है सौंदर्य ही सब स्वर्ग है ।
देव दुर्लभ प्रेम से ही प्रेम पद अपवर्ग है ॥
प्रेम हीन हृदय अहो सचमुच उजाड़ मशान है ।
प्रेम जिसमें है नहीं प्रत्यक्ष वो शैतान है ॥ ४
प्रेम कर दुनियां सुजलदी भला तेरा होयगा ।
मतकर किसी से दुश्मनी दोजक में तू ही रोयगा ॥
और के मारें छुरी उसके छुरा लग जायगा ।
और से कहता बुरी उसका बुरा हो जायगा ॥ ५

देखो प्रेम से ही परमात्मा मिलता है

इस प्रेम ही के हाथ से गर्दन हजारो कट गईं ।

हा छातियां अघात के ही बिन हजारों फटगईं ॥
यहां कोन कह सकता भला इस प्रेम नदका पार है।
प्रेम ही सब प्राणियों के जीव का आधार है ॥ १
इस दीन भारत में कहीं जो प्रमु का संचार हो।
तो भला क्या पूछना सब भाँति बेड़ा पार हो ॥
महिमा प्रताप जु प्रेम की कुछ भी कही जाती नहीं।
मधुरता इसकी किसी के ध्यान में आती नहीं ॥ २
खोज करके प्रेम का पाता न कोई पार है।
प्रेम ही सब प्राणियों के जीव का आधार है ॥
प्रेम ही से गुणरु धन विद्या विभव सतकार है।
प्रेम ही से दया पूजा शान्ति नीति विचार है ॥ ३
मोर जो फूला हुवा था रूप के अभिमान में।
नाचता वहु मग्न होकर बादलों की तान में ॥
जो पतंगा चपलता से मग्न फूलों पर रहा।
वह विचारा तन बदन दीपक शिखा में दे रहा ॥ ४
चंचल चपलता से भरी निर्भय सुखी वह मीन है।
प्रेम के वश प्राण देती नीर के आधीन है ॥
चातक विचारा प्रेम के वश औंधे मुख लटका रहा।
स्वांति की इक बूंद खातिर कई दिनों अटका रहा ॥ ५
चौकड़ी सब भूलकर उन्मत्त होता नाद में।
प्राण देता है हिरण इस प्रेम ही के स्वाद में ॥
इस प्रेम के आगें बड़े बलवान भी झुकते रहे।
जल पवन पावक भी इसके प्रेम से रुकते रहै ॥ ६
वत्सा के ऊपर गायका जो प्रेम कितना है यहां।
प्रेम से वो सिंह सन्मुख जाती है लड़ने को तहां ॥
प्रेम से ही शेरनी गैंदू का बच्चा पालती।

प्रेम ही से खलक दिल से वैरभाव निकालती ॥ ७
जो तुम अपना भला विचारौ, तौ यह सिद्धांत हृदय में धारौ।
प्रेममंत्र जिसने मन धारा, उसने विजय किया जग सारा ॥ ८
प्रेम रज्जु सिंहों को बांधै, प्रेम मन्त्र सब कारज साधै।
प्रेम अग्नि पत्थर पिगलावै, प्रेम वायु ब्रह्मांड हिलावै ॥ ६
हिन्दू मुसलमान ईसाई, चखो परस्पर प्रेम मिठाई।
प्रेम कर दुनिया सूं जलदी भला तेरा होयगा।
मत कर किसी से दुश्मनी दोजक में तू ही रोयगा ॥ १०
और के मारे छुरी उसके छुरा लगि जायगा।
और से कहता बुरी उसका बुरा हो जायगा ॥ ११

देखो इस असार संसार में सुख होने का उपाय क्या

दयाधर्म—इस असार संसार बीच मे सुख होने का उपाय क्या।
लख चौरासी योंनि छूटना दुख मिटने का उपाय क्या ॥
सब जीवों से मैत्री प्रीतरु वशीकरण का उपाय क्या।
जंग जीवों का सुधार क्या है प्राणों का उद्धार जु क्या ॥ १
सर्व मतों को सार जु क्या है जीवों का उपकार जु क्या।
पुण्य प्राप्त का उपाय क्या है असल धर्म आचार जु क्या ॥
सबक दिल में प्यार जु क्या है स्वर्ग लोक उपाय जु क्या।
सबका उत्तर जीवदया है इससे वैहैतर जवाब क्या ॥ २
इस असार संसारवारि में दया से ज्यादा सार जु क्या।
जिसके मत में जीवदया नहिं उससे अधिक निःसार जु क्या ॥
जीवदया ही श्रेष्ठ धर्म है और सनातन धर्म जु क्या।
दयामार्ग पर चले जाइये फेर जगत में डर है क्या ॥ ३

श्लोक—यस्मिन् धर्मेदया नैव, सधर्मो दूषितो मतः।
दया विना न विज्ञानं, न धर्मो ज्ञान मेव च ॥ १
तस्मात्सर्वात्मभावेन, दया धर्म सनातनः। २

जीव दया ही जगत में माता पिता देवता है

दया ही माता दया ही ताता दयाहि भ्राता दया सनम् ।
दयाहि नाता दयाहि साता दयाहि दाता दया धनम् ॥
दयाहि त्राता दयाहि ज्ञाता दयाहि ध्याता दया धरम ।
दया विधाता दिवशिव दाता दया विख्याता जग त्रयं ॥ १
दयाहि सत्यं दयाहि शौचं दयाहि दानं दया धर्मं ।
दयाहि समिती दयाहि प्रीती दयाहि नीती दया यमं ॥
दयाहि यज्ञं दयाहि तीर्थं दया समाधिं दया चमं ।
दयाहि कीर्ति दयाहि लच्मी दयाहि सोभा दया शर्मं ॥ २

देखो संसार में दया समान और कोई जीव का उपकार नहीं सर्व मतों में दया माता ही सरदार है

दया सम इस भूमि में कोई अन्य नहिं उपकार है ।
सर्व धर्मों में दया ही धर्म की सरदार है ॥
चार वेद पुराण अष्ट दश में दया ही सार है ।
वाईविल पुराण हदीस में भी दया ही सुखकार है ॥ १
दया जन को सिंह आदिक सदा करते प्यार है ।
दया सम नहि कोइ जग में जीव का हितकार है ॥
दया जन को गवर्नर देते सदा उपहार है ।
निर्दयी को दंड दे करते उदधि के पार है ॥ २
जिनकैं नहीं उर में दया तो सब क्रिया निसार है ।
दान पूजा यज्ञ शम दम स्नान सब वेकार है ॥
इस दीन भारत में कहीं पर करते दया सूं प्यार जी ।
तो भला क्या पूछना यहां अन्न घी का पार जी ॥ ३
दया नहीं करने से भारत हो गया वेकार जी ।
भूखों मरते है यहां पर लाखोंहि शिशु नर नार जी ॥
दया सूं जब प्यार था घी तीन पैसे का जु सेर ।
दोय पैसे सेर सक्कर दूध धेले का जु सेर ॥ ४

चार दमड़ी सेर चांवल ढाई दमड़ी में गेंहूँ सेर ।
चार दमड़ी सेर गुड़ खाके प्रजा रहती थी जु सेर ॥
दया के जो फायदे में कहि नहीं सकता हूँ कुछ ।
कहै तो यो ही कहै कुछ जिसने जाना सर्व कुछ ॥ ५

आगे दान पूजा रोजा नमाज आदि सब दया ही के लिये है

दयाहि मंदिर दया शिवालय दयाहि पूजा दयाहि दांन ।
दयाहि संध्या दयाहि तर्पण दयाहि वेदरु दया पुराण ॥
दयाहि काशी दया संन्यासी दया तीर्थ हरि गंगा स्नान ।
दया श्राद्धरु यज्ञ दक्षिणा दया श्रेष्ठ है सर्व जहांन ॥ १
दयाहि मक्का दया मदीना दयाहि कावा दया नयाज ।
दयाहि रोजा दयाहि मसजिद दयाहि सिजदा दया नमाज ॥
दया हदीसरु दया कुरानरु दया इवादत दया रियाज ।
दया तसव्वुर दया फकीरी दयाहि नेकी है सरताज ॥ २

देखो दया ही सब धर्मों का मूल है तिस पर लावणी मे चाल वर्णनं

दया ही परम धरम गाया, वेद पुरान कुरान वाइविल सबनें बतलाया। उन्हों में यही हुकम आया, सब जीवों की जान बराबर समझ करो दाया ॥ शैव अरु वैष्णव ने भी कही, जैन बौद्ध अरु महंम्मद ईशा सब की राह यही । नीति यह सबनें सिखलाई, सब धर्मों का मूल दया है, पालो तुम भाई ॥ १ दया के बहुत भेद गाये, संध्या पूजा नमाज रोजा तीरथ दरसाये । दया विन सर्व शून्य जानों, एक दया ही सर्व सुखों की माता तुम मानों ॥ दया ही स्वर्ग मुक्ति दाता, एक दया को छोड़ किसी के काम न कुछ आता । दया पर लोक साथ जाई, सब धर्मों का मूल दया है पालो तुम भाई ॥ २ दया ही सब के मन भाती, रंज न करतो सर्व प्रजा को राजा कहलाती । दया ही दंड नीति धरती, न्याय धर्म से सर्व

प्रजा का पालन वह करती ॥ दया सद्धर्म निशाना है, तीन लोक के सुख देने कों दयाहि मानी है । दया ही कीर्ति जगत छाई, सब धर्मों का मूल दया है पालो तुम भाई ॥ ३

श्लोक—यस्मिन् देशेदया नैव सधर्मो दूषितोमतः ।
दयाविना न विज्ञानं नधर्मो ज्ञान मेव च ॥
तत्मा त्सर्वात्मभावेन दयाधर्मः सनातनः ॥ १

देखो रहम करने का बड़ा भारी दर्जा है वड़े बड़े पदस्थ मिलते है सो वर्णन करते हैं

रहम का रुतबा बड़ा होवै रहम से गवर्नर ।
रहम से होवे कमांडर, रहम से हो मिन्स्टर ॥
रहम से होवे जु विकटर और जज हो कमिश्नर ।
रहम से होवे कलक्टर और बैरिस्टर मास्टर ॥ १
दुनियां मे जितने वड़े ओहदे सबी मिलते है रहम पर ।
रहम के करने में यारो मत करो तुम कोई उजर ॥
रहम से मिलता खुदा अरु रहम से मिलती वहिस्त ।
जितनी खुशी दुनियां में हैगी रहम सब की है निशस्त ॥ २

सर्व मतो का सार जगत का प्यार जीव दया ही है

सब मत का सारं जीवोपकारं जगत सुधारं सुख कारं ।
सब जन मन प्यारं दुक्ख निवारं आपद टारं भय हारं ॥
संपति दातारं कुमति विदारं प्राण उधारं दिवि द्वारं ।
यह दया प्रचारं व्याख्या सारं कृपा व तारं उर धारं ॥ १

देखो दया विना सब क्रियाकांड जप तप सब व्यर्थ ही है सो वर्णनं

न्हाना धोना भक्तिरु पूजा संध्या तर्पण वेद पुराण ।
शम दम जप तप होम जनेऊ तीर्थरु पुष्कर गंगा स्नान ॥
ब्रह्मचर्य शिर जटारु मुंडन क्षमा सत्य व्रत मौन सुध्यान ।
दया विना ये सर्व व्यर्थ है श्रुति विदया यम श्राद्धरु दान ॥ १

जैसा अपने चित्त में सुख दुख मालूम पड़ता है तैसा ही पर जीवों पर जान कर दया करो सो वर्णनं

सुख दुख जिम लागै आपनें चित्त जैसा ।
पर ऊपर जानो लागता ठीक वैसा ॥
नहिं करत दया जो आपने चित्त मांही ।
यश कुसुमन फूले पूज्य पद होत नांही ॥ १

देखो निर्दयता से बढ़कर यहां कोई भयानक शब्द नहीं

निर्दयता से बढ़ कर के यहां कोई भयंकर शब्द नहीं ।
जिसका अर्थ पराये दुख में सुख का अनुभव करै यही ॥
पशु तड़फते देख सजन जन करैं दिल्लगी हँसी कहीं ।
अन्य प्राणि को दुखी देखि जो सुखी होय निर्दयी वही ॥ १

देखो ऋषभदेव के कहे हुए जैन ग्रंथानुसार जैनियों के लक्षण वर्णनं

जैनी लक्षण ग्रंथ जैन मत कहे श्री गुरु ने समझाय ।
पर ब्रह्म चैतन्य रूप को जाने सो जैनी सु कहाय ॥
जन्म मरण चतुट् भय तृष्ना रोग शोक तन मोह न लाय ।
उत्तम कुल वा जाति कर्म तप वल विद्या को मद न कराय ॥ १
सर्व प्राणि में सम बुद्धि अरु तन धन में आपा पर त्याग ।
ईश्वर प्रेम भक्ति प्रेमी संग प्रीति प्रतीति शांति चित लाग ॥
भगवद्भक्ति गुरूजन सेवा साधू संग विषय वैराग ।
शौच नम्रता वृथा बोलना क्षमा अहिंसा सत्यनुराग ॥ २
हर्ष शोक नहीं सुख दुख में अभिमान रहित मौनी गुण ग्राह ।
प्राणी दया शास्त्र श्रद्धायुत भजन दान पूजन उर चाह ॥
गुण श्रवण भगवत यश वर्णन आज्ञा पालन धर्मोत्साह ।
मन वचकाय दंड शम दम यम जप तप कीर्तन ध्यान धराह ॥ ३
प्रीति नहीं अनुकूल जनों से दोष नहीं प्रतिकूल जनं ।
भोजन मे संतोष सरलता सदा चार धर्मात्म जनं ॥

तीन लोक का राज्य देय तोउ एक समय भी नहिं त्यजनं ।
भगवत नाम सदा उरधारे ये लक्षण जैनी सजनं ॥ ४

गौ बैलों की हिंसा का निषेध वर्णनं

आगैं दया तो सर्व ही जीव जाति की करनी चाहिये । परंतु वर्तमान काल में दया नहीं पालने से गाय भेंस बकरी की हिंसा बहुत कुछ हो रही है । इस वास्ते गाय बैल की हिंसा का निषेध वर्णन । इस व्याख्यान से परमती लोगों पर दया धर्म का बहुत बड़ा असर पड़ता है । देखो गौ बैल के रक्षा के विषय में किंचित् व्याख्यान यहां पर लिखते हैं । सर्व सज्जनों को समझना चाहिये । यह चार वर्ग का दाता महान उत्तम धर्म क्षेत्र भारत जिसमें देवता भी उत्पन्न होना चाहते हैं । ऐसे भारत में आज दिन जो प्रजा वर्ग को दुख हो रहा है उसे कौन कहने कूं समर्थ है । जहां दो सेर का अन्न और तीन छटांक का घी बिक रहा है । जहां ३३ करोड़ प्रजा अन्न घी वस्त्रादि से दुखित हो रही है । इसका कारण क्या है । सिर्फ जीवो का हिंसा । आज के सात सौ वर्ष पहिले गाय भेंस वगैरह की हिंसा नहीं होती थी । तब एक रुपये को अन्न आठ मन का और घी २६ सेर का बिकता था । यही जीव दया पालनें का कारण है । इस वास्ते इन जीवों से हमारे सर्व गृह के कार्य का उपकार होता था । उन जीवों की दया हिन्दू तथा मुसलमानों को अवश्य करना चाहिये । भारत के सर्व कारोबार गाय बैलों पर ही निर्भर है । इनका दिया हुवा अन्न दूध खाकर के फिर कसाई के बेचना और कटवाना कितनें बड़े भारी अन्याय की बात हैं । अपनी माता को छुरियों से कोई भी नहीं कटवाता । गाय को कटवाओ वा अपनी माता को कटवाओ बैल को कटवाओ वा अपने बाप को कटवाओ ये एक ही बात है ऐसा वेदशास्त्र में लिखा है ॥ भारत में ६६०००००० ॥ गाय बैल संवत् १९८० ॥ में बाकी और रह गये हैं । जिसमें साल भर में

साठ लाख ६०००००० गाय वैल काटे जाते हैं। कुछ देशांतरों में जाते हैं। जब गाय वैल नहीं रहेंगे तब अन्न दूध कहाँ से मिलैगा। इस वास्ते सर्व भारत वासियों को चाहिये जैसा अकबर वादशाह के वक्त में गाय वैलों पर रहम किया गया वैसा ही रहम राजा वा प्रजा को अवश्य करना चाहिये ॥ ७

देखो जैसा अकबर वादशाह् ने किया

अकबर वादशाह के राज्य में नर हरी कवि रहते थे। वह कविता भी करते थे और सभा चतुर भी थे। एक बार एक गाय कवि के दंत धावन करते वख्त कसाई के डर से कांपती हुई नरहरी के घर में घुस गई। कसाइयों ने वहुत बार मांगी, आपने नहीं दीन्हीं। और यह कहा अब तौ यह गाय हमारे प्राणों के साथ है। फिर कसाइयों ने न्यायाधीश से कहा। न्यायाधीश ने कहा कवि ने अनुचित कार्य किया। परन्तु हम वादशाह की आज्ञा विना कुछ कर नहीं सकते। फिर कसाइयों ने वादशाह से अरजी करी। वादशाह ने कविजी को बुलाकर कहा, कि मेरे लिये नीति सिखाते हो। अर आप अनीति करते हो, उसके उत्तर में कविजी नें एक छप्पै कहा ॥

छप्पय—तृणहि दंत तर धरहिं तिन्हें मारत न सबल कोई।
हम नितप्रति तृण चरहिं वैन उच्चरैं दीन होईं ॥
हिंदूहि मधुरन देंय कटुकतुर कें न पिलावहिं।
पैंसु विसुद्ध अति श्रवहिं वच्छ महिथंभन जावहि ॥
सुन शाहि अकब्बर अरज यह कहत गऊ जोर करण।
सो कौन चूक मोह मारय त मूये चाम सेवहि चरण ॥ १

वादशाह इतनी सुन करकें संपूर्ण राज्य भर में गाय वैल मारना वंद करवा दिया।

फिर देखो अकबर बादशाह नें रहम कर गायों की अरजी सुनकर गाय बैलों का काटना भारत भर में बन्द करवा दिया उसका बयान नीचे देखो

गौवें पुकार करती सुनि अरज हमारी।
हे दीन बन्धु अकबर हम गायें तुम्हारी ॥
बे गुनाह हम सब क्यों काटो जाती हैं।
यह बात अकलमंदों के मन में न भाती है॥ १
बे कसूर कोई कों कहिं दंड है नहीं।
यह बात वेदशास्त्र औ कुरान में कहीं ॥
क्या कसूर हम से हुआ सो बताइये।
नहिं तौ हमारी गर्दन कटते बचाइये ॥ १
न तोड़ो दिल जो चैंटी का लिखा कुरान में।
सो हजार का बे है दिल के मकान में ॥
इस वास्ते हमारे दिल को न सतावो।
हम देंगी दुआ आपको कटनें से बचावो ॥ ३
हमने तौ कभी कोइका नहिं दिल को सताया।
हिन्दू मुसलमान सबको दूध पिलाया ॥
मलाई दधि माखन श्रीखंड खिलाया।
फल फूल अन्न मेवा तन चीर उढ़ाया ॥ ४
मंदिर मकान मसजिद गढ कोट बनाया।
हल रथ मझोली गाढ़ी में बहुबोझ ढुवाया ॥
सरकारी तोप खींचने में कंधा लगाया।
दिन रात किसी काम में नहिं उजर कराया ॥ ५
जनतेहि मां के मरते पय पान कराया।
एवज में घर कसाई के खूंटे से बंधाया ॥
मार बांध शीत घाम भूखे सताया।
गरमी में प्यासे मरते को पानी न पिलाया ॥ ६

जिस मा का जिसने दूध पिया उसको कटाना।
उस मा के हड्डी गोश्त को फिर बेच के खाना॥
है बड़ेहि जुल्म की यह बात खुदा घर।
मालूम पड़ैगी सख्त सजा होगी जहां पर॥ ७
काटै कसाई हमको दे त्रास अपारा।
लोहा भी पिघल जायगा दुख देख हमारा॥
मालूम नहीं है सख्त दिल कितना तुम्हारा।
आंखों में एक बूंद भी नहीं आंसू की धारा॥ ८
जो कुछ भी लाभ भारत ने हमसे उठाया।
क्या क्या करूं बयान सबके दिल मे समाया॥
राजा प्रजा को हमने धनवंत बनाया।
इतने भी फायदे पर वे जुल्म कराया॥ ९
इक बार कोई सेर को जो पानी पिलावै।
वो शेर उसकी जान को कभी ना सतावै॥
हमनें पिलाया दूध को जो बार बार बार।
तिस पर भी काटी गर्दन छुरी धार धार धार॥ १०
दौलत मकान खान पान जाचती नही।
हम जांचती है मत काटो कोई कहीं॥
भारत में बड़ी हानि है कटने से हमारे।
घी दूध अन्न खाने को तरसोगे पियारे॥ ११
हे बादशाह अरजी पर ध्यान दीजिये।
दुखड़ा हमारा सुनने में कांन दीजिये॥
कटनें से हो रिहाई फ़रमा दीजिये।
हम मागती है ये ही वरदान दीजिये॥ १२

इस तरह गायों की अरजी पर अकबर बादशाह ने गाय बैलों की रिहाई करने का हुक्म दिया

गौओं की अरजी पर हुक्म अकबर नें खुद लिखा यही।

अटक से अरु कटक तक गौ बैल कोइ मारै नहीं ॥
सेतु से हेमाद्रि तक यह हुक्म भेजा शीघ्र ही ।
इस हुक्म को जो नहीं माने प्राण दंड मिलै सही ॥ १

देखो आगें गौ बैलों की पुकार राजा प्रजा से कि हमारा दूध पीकर के फिर रुधिर क्यों पीते हो क्या ये ही न्याय है सुनो हमारा हाल

गौ बैल पशु यों अरज करते सुनौ राजा प्रजागण ।
क्या कसूर किया जो हमनें घर कसाई बेंचना ॥
घी दूध करके तुम्हें पाला शीत उष्ण जु नहिं गिना ।
भूखे प्यासे रथ अरु गाढ़ी बोझ ढोये निश दिना ॥ १
सब फायदे दुनियां के हमनें किये वय यौवन दिना ।
वृद्ध वय में बेचते क्यों दान देते दुर्ज्जना ॥
वो बेचते कसाई घर कटवादे बहु दे त्रासना ।
हे दीन बन्धु पुकार मेरी कोई सुनें नहिं सज्जना ॥ २
हर वखत सेवा करी हमनें उजर कुछ भी नहिं किया ।
घास खाया पानी पिया और कुछ भी नहिं लिया ॥
जो कुछ किया हमने हित तुम्हारा किया सब जानै मही ।
मरणे पर पाद त्राण वा बाजे जो चर्म दिये सही ॥ ३
तिस पर भी तुमनें रुधिर पीया रहम कुछ किया नहीं ।
पत्थर की छाती क्या तुम्हारी आंख में आंसू नहीं ॥
लोहा भी गले संताप से तुम सख्त दिल पिगला नहीं ।
हे दीन बंधु पुकार मेरी अरज कोई सुनता नहीं ॥ ४
मक्का मदीना अरब काबुल में मुझै मारै नहीं ।
क्यों मारते मुझको इहां इसमें खुदा राजी नहीं ॥
इस बात को सखती से हजरत ने जु फरमाया यही ।
हरगिज न मारो गाय को जो हो मुसलमां तुम सही ॥ ५
कुरान और हदीस में गो मारना लिक्खा नहीं ।

फरमाया हजरत से खुदा नें मारो मत गौ को कहीं ॥
दूध इसका है सिफा और घी दवा जानों सही।
गोश्त सख्त बीमारीयों का है जु वायस है सही ॥ ६
शोचो वा समझो अपने दिल में जिसका तुमने पिया शरीर।
वो हो चुकी अम्मा तुम्हारी काटते नहिं आई पीर ॥
दुनिया में कोई इन्सान हीं जो गोश्त खावै मा का चीर।
अये मोमिनो मत काटो गौ को नहि कटोगे तुम अखीर ॥ ७

आगे देखो एक गाय के मारने से ८० आदमी पेट भर सकते हैं और गाय के पालने मे १३४१८० आदमी पेट भर सकते हैं

एक गाय के घात करन में असी मनुष्य का उदर भरान।
एक गाय के पालन सेती कितना हो उपकार जहान ॥
एक लाख चौतीस सहस अरु इस सौ अस्सी नर पय पान।
तातैं गौ को घात करो मत तरसोगे घृत पय अन्नान ॥ १

आगे देखो गाय कहती है कि मेरी रक्षा करने के फायदे सुनो

जिस जमाने में हमारी होत रक्षा थी यहां।
पैसे पसेरी गेंहूं विकतें दूध पांच आने मन वहां ॥
घी तीन पैसे सेर विकता डेढ़ पैसे की शकर।
तीन पैसे सेर वरफी पेड़े मोहन भोग तर ॥ १

आगे देखो खिलजी अलाउद्दीन के वख्त मे हमारी रक्षा और अन्न घी का भाव

खिलजी अलाउद्दीन का जो जब जमाना था इहां।
घी रुपये का सेर छबिस दूध छह मन का वहां ॥
एक पैसे सेर फी पेड़े विकते थे जहां।
इक आदमी का पेट भरता पौंन पैसे में तहां ॥ २

आगे देखो फीरोज वादशाह के वख्त मे गाय वैलों की रक्षा थी तब अन्न घी गुड़ तेल का भाव

साढ़े सात पैसे मन गेंहूं जो मन भर के पैसे चार।

उर्द रु मूंग चना मन भर के पैसे पांच तीन की ज्वार ॥
सक्कर सेर डेढ़ पैसे की दोय तेल घी तीन विकार।
तीन सेर गुड़ इस पैसे का बादशाह फीरोज प्रचार ॥ १

आगे देखो अकबर बादशाह के वख्त में अन्न घी दूध आदि का भाव क्या था सो लिख्यते

आठ आने मन चांवल गेहूँ पांच आने मन नो पाई।
सात आने मन दाल उर्द की घी ढाई अरु छह पाई ॥
ज्वार बाजरा हूँठ आने मन जो तीन आने अर दो पाई।
डेढ़ रुपये मन तेल खांड़ मन बाइस आने छह पाई ॥ १

दोहा—हलदी धनिया दूध अरु, मिरच जु मन पांचान।
बादशाह अकबर समय, यही भाव तुम जान ॥ २

आगे देखो तैमूर बादशाह के जमाने में अन्न घी का भाव और पंचम-जार्ज पंचम बादशाह के जमाने में अन्न घी दूध के भाव कितना अन्तर है सो विचार कर गौ बैल अन्य जीवों की रक्षा करो अरु आनंद के साथ उदर पोषण करो

हे भारत के नेता जन हौ पान सौ वर्ष पूर्व तुम हेर।
कैसा जमाना था जो यहां पर देखो अब जब कितना फेर ॥
अब बिकता घी छह छटांक का गेंहूँ बिकते हैं छह सेर।
जब बिकता घी असल गाय का इक रुपया का तेतिस सेर ॥ १
उसी समय में इक रुपये के गेहूँ दोन अड़तिस सेर।
जौ बिकते जब एक रुपये के तोल पांचमन चौबिस सेर ॥
उर्द चना अरु चांवल मिलते तोल चारमन उन्निस सेर।
ज्वार बाजरा साढ़े पांचमन मोठ सातमन सोलह सेर ॥ २
स्वेत खांड चौबीस सेर की लाल खांड इकमन चतु सेर।
इक रुपये मन तेल जु बिकता बूरा बिकता सोलह सेर ॥
इक रुपये का छहमन दूधरु खोवा इकमन चौबिस सेर।
पांच आने मन हलदी धनिया नोन मिरच का लगता ढेर ॥ ३

दोहा—अन्न के जन्न के भाव में, कितना अंतर आय।
कारण यह महंगाइ का, पशु रक्षा न कराय॥ ४

इसलिये गौ आदि पशुओं की अवश्य रक्षा करनी चाहिये

हे भारत के राजा प्रजागण गौ हिंसा को बंद करो।
मूक पशू की जान बचा के सब भारत को सुखी करो॥
जो गौओं की रक्षा करोगे तो घर तुम धन ऋण सु भरो।
नहिं तो ऐसा वक्त आयगा अनकण को घर घरहि फिरो॥ १

जो गाय बैलों का काटना बन्द नहीं होयगा तो एक एक कण की भिक्षा मांगेंगे

इस भारत में गौ कटने का काम बंद नहिं होवैगा।
तो ये हिन्दू तथा मोहमिडन अपने सुख को खोवैगा॥
गौ वध से महंगाई अधिक हो अन्न वस्त्र को रोवैगा।
आखिर भूख प्यास के दुख कर मरघट में जा सोवैगा॥ १

देखो हमारी रक्षा करने से घी दूध अन्न खाने को पेट भर कर मिलेगा और हमारे कट जाने से सदा भूखों मरोगे अकाल उपर अकाल पड़ेगा आगे देखो गायों के फायदे एक गाय को अठारह वर्ष पालने से उसकी संतानादि से ४८२४६१ चार लाख बियासी हजार चार सौ इक्यानवे रुपये का फायदा होता है उसका सर्व हिसाब लिखते हैं

एक गाय की अठारह साल में नसल होय चतुसत सन्तान।
तिन में गौ दो सै अठतालिस बैल जु दो सैं उनचासान॥
एक गायत्रय सेर रोज का दुग्ध देय छह मास प्रमान।
अठारह साल में दुग्ध सहसपट् सात सैं नो मन होय महान॥१
इसी दूध को जो बेचो दश सेर निरख पर समय विचार।
रुपये सहस छब्बीस आठ सै छतिस का होवै कल दार॥
सेर दूध से छटांक मक्खन जो निकले तो करो शुमार।
सोलह सहस सात सैं पौने चौहतर सेर होय विस्तार॥ २
रुपये सेर का जो बेचो तो इतने ही होवें कलदार।
अब दोसैं अठतालिस गौ की फी गऊ कीमत पनरह सार॥

सब गौ कीमत सहस तीन और सात सै वीस होय कलदार।
जो कुछ कंडा गोबर होवै सो हिसाब नहिं किया लगार ॥ ३
दोहा—दूधरु कीमत गाय की, ठारह साल मभार।
तीस हजार रु पानसै, अरु छप्पन कलदार ॥ ४

अब बैलो का फायदा देखो

रहै बैल दो से उनचासरु फी जोड़ी बीघा पंचास।
जो जमीन जोतें फी बीघा अन्न चार मन उपजै रास ॥
अठारह साल में दोय लाख चौबीस सहस सौ मन पैदास।
बीस सेर के निरख जु बेचैं कितना धन आवै तुम पास ॥ ५
चतुलक्ष अड़तालीस सहस अरु दोसै रुपया होय कलदार।
अब बैलों की कीमत लिखता फी बैल पनरह सुविचार ॥
तीन हजार सात सै पैंतिस कुल बैलों की कीमत सार।
अठारह साल में गाय बैल अरु अन्न दूध का द्रव्य सम्हार ॥ ६
दोहा—च्यार लाख ब्यासी सहस, और चार सै इक्यान।
एक गाय के पलन में, इतना द्रव्य प्रमान ॥ ७

देखो और भी गाय बैलों के फायदे कितने होते हैं सो देखो और गिनो

जिन गायों से मंदिर मसजिद बनते गिरजे महल मकान।
न्यायालय वा विद्यालय वा किला कोट वा राजस्थान ॥
भोजनशाला नाटग्रह वा कुवा तलाव देवता स्थान।
खेती बाग बगीची बंगले अस्पताल होटिल दूकांन ॥ १
गेहूँ चना जौ ज्वार बाजरा उर्द मूंग मकई तिल धान।
रुई ईख फूलफल मेवा शाक मसाले भोजन पान ॥
दूध दही माखन मलाई घृत रबड़ी बरफी खुरचान।
सबको भोजन वस्त्र अरथरु देवै सब घर का सामान ॥ २
बालक बाला रोगी शोकी युवा वृद्धरु कोई महिमान।
हिन्दू इंगलिश मुसलमान वा हत्यारे को भी पदयान ॥

ऐसी सबकी माता पर जे पापी जन छुरी चलान ।
हाय हाय परभव में उनका क्या हाल हो अये रहमान ॥ ३
जे पापी जन बैल वापरु गौ माता को लेकर दान ।
फिर कसाई घर बेचैं जाकर तिनसम पापी और न जान ॥
गाय बैल से दुग्ध दही घृत तथा अन्न खा फिर कटवान ।
जितने रोम वृषभ गौ ऊपर तितने काल नर्क ज्वलनान ॥ ४

देखो भारतानुशासन पर्व्व अध्याय ७३ मे लिखा है

विक्रियार्थंहियोहिंस्या द्भक्षयेवापि घातिकः ।
यावंति तस्यरोमाणि तावद्वर्षाणि मज्जति ॥ १

देखो शिव पुराण धर्म संहिता अध्याय २८ में

योर्द्धयामात्प्रहाराद्वा संयतान्न विमुंचति ।
योभाराक्रांत रोगार्तान्, गो वृषाश्चक्षुधातुरान् ॥६
वृषाणां वृषणान् येच पापिष्टागालयंति च ।
न पालयंति यत्नेन गो घ्नास्ते नारकास्मृताः ॥ ७

देखो गरुड़ पुराण सरोद्धार अध्याय १२ में

वृषभं ताडयेद्यस्तु निर्दयो मुष्टियष्टिभिः ।
सनरः कल्प पर्यंतु भुनक्तिर्यमयातना ॥ ८

आगें देखो भारी बोझ लादने में बैलों की पुकार राजा प्रजा वा मेंवर लोगों से अरजी है

राजा प्रजा वा मेंवर सुनों अरज हमारी ।
हम बैल दुखी होयकैं आये शर्ण तुम्हारी ॥
इस दर्द भरी अरजी पर ध्यान दीजिये ।
इजहार दुख का सुनकैं इन्तजाम कीजिये ॥ १
हे दयाल बेशुमार बोझ लादते ।
बेतहास मार और छेद हांकते ॥
खिंचता नहीं है बोझा ताकत से हमारी ।

ऊपर से पड़े मार बड़ी भारी भारी ॥ २
हम पशु जो बे जबान कहते नहीं कुछ ।
जी चांहै जितना लादो मारो मरोड़ो पूछ ॥
खाने को घास पानी पूरा न देते हैं ।
दिन रात बोझ खींचने में जान लेते हैं ॥ ३
किससे कहै कोई दुख दर्द हमारा ।
सुनता नहीं है कुछ भी नहीं देता सहारा ॥
सरकारी कर्मचारी यह हाल जानते ।
तो भी हमारे दुःख में नहिं ध्यान ठानते ॥ ४
बाजारि लोग सख्त दिल हमको न बचाते ।
पिटते भी देख फिर भी पूछ मोड़ते जाते ॥
लोगों के दिल में है नहीं दया का कुछ असर ।
बेशुमार लादते बोझ खोफ नहिं खतर ॥ ५
इस वास्ते हमारी सरकार से पुकार ।
बोझा हमारा हलका करदीजे न्यायकार ॥
हम देंगे धन्यवाद तुम्हैं राज दुलारे ।
आबाद रहो राजा सरताज हमारे ॥ ६
इक्कों में सवारी का दिया तीन का हुकम ।
इस तरह से हम पर भी कीजिये रहम ॥
दुख देख के हमारा जल्द कीजिये यह काम ।
होय जाय मुल्कमुल्कों में सरकार ही का नाम ॥ ७

आगें देखो बैल गायों ने वृटिश भारत के पंचम जोर्ज बादशाह से अरजी करी

नीति निपुण धर्मज्ञ न्यायवर प्रजापाल जोरज महाराज ।
क्षमावान बलवीर्य प्रतापी राज्य ब्रटिश भारत सरताज ॥
कीर्ति क्रांति चहुँदिश में फैली ज्यों चंदा की चादनि राज ।

हे नृप आशिर्वाद आपको हम पशु मिलकर देवें आज ॥ १
न्याय करो राजा महाराजा क्यों हम सब पशु काटे जांय ।
दूध दही घृत हमने खिलाया हल रथ माहीं काम कराय ॥
इतनें फायदे दैनें पर भी क्यों कसाई घर वेचें जाय ।
हे दयाल नृप न्याय जु करके जल्द हमारी जान बचाय ॥ २

आगें देखो राजा चंद्रगुप्त मौर्य के राज्य मे अन्न दुग्ध घृत का भाव तथा गाय बैल घोड़े की कीमत और नौकर का महीना

वर्ष पानसै प्रथम यिशू चन्द्रगुप्ति मौर्य का न्याय ।
क्या भाव था सब चीजों का कहा परी शिष्ट मूलाध्याय ॥
सीसा लोहा तांवा चांदी सोने का सिक्का चलवाय ।
हाथी घोड़ा अन्न दूध घी इनहीं से विकते पशु गाय ॥ १
श्रेष्ठ गाय के वत्तिस पैसे सादा गौ दस पैसे जान ।
बछड़ा मूल्य चार पैसे का बैल मूल्य दस पैसे मान ॥
भैंस मूल्य आठ पैसे की घोड़ा पनरह पैसे आन ।
हाथी मूल्य पान सौ पैसे वकरी पैसे ढाई जान ॥ २
सब वस्त्रों का मूल्य जु वकरी तथा ढाई पैसे में सेर ।
इक पैसे का दूध जु मनभर घी पैसे का पौंने दो सेर ॥
इक पैसे का नाज जु तीस सेर चांवल विकते छब्बिस सेर ।
नौ सेर गुड़ इक पैसे का उरद चना का लगता ढेर ॥ ३
नौकर की तनखाह जु मिलती इके पांच जु पैसे माह ।
भोजन वस्त्र सहित का महिना पैसा सवो जु मिलता ताहि ॥
सवा सेर चांवल इक दिन में दाल पावभर मिलै जु ताहि ।
ढाई छटांक घी वा सर्व वस्तु मिलैं रोज खाने को ताहि ॥ ४

आगें देखो गरीव वकरी की पुकार मारनें वाले कसाई से और कुरवानी करने वाले मुसलमानों से तथा देवी देवता पर चढ़ाने वाले हिन्दू जाति से वकरी कहती है

अपने गले में लटके फूलों का हार जी ।

मेरे गले पै सख्त छुरी की धार जी ॥
क्या कसूर मैंने किया मेरे यार जी।
बेगुनाह मुझ को क्यों डाला मार जी ॥ १
मैंने तो कुछ लिया दिया नहिं माल आपका।
जंगल में खाया घास पानी पिया ताल का ॥
अनबोल बेगुना को नहिं चाहिये सताना।
यह हुक्म खुदा का जो सबको मन में लाना ॥ २
अपने बच्चे के जरा दुख में मा पुकार।
मेरे बच्चे के गले पे छुरी की धार ॥
सुख दुःख मौत जान में क्या हूं तुम से कम।
आहार भय जु निद्रा मैथुन में कम न हम ॥ ३
हिन्दू मुसलमान सुनों वेद या कुरान।
लिखा है मजहब सब में सताओ न कोई जान ॥
न तोड़ो दिल किसी का दिल हज्जे अकबरस्त।
सौ हजार कावै रहै अंदरे दिलस्त ॥ ४
इस लफ्ज के मायने तुम शोचो बार बार।
नातर पड़ेगी मालूम दोजक में पड़ेगी मार ॥
वहां कोई नहीं सनम जो तुम्हारी सुने पुकार।
जो अमाल किये तुम वहां होंगे पेशकार ॥ ५
इस वास्ते पुकारती यह बकरी बार बार।
बंदे खुदा के मुझ पे मत फेरो छुरी की धार ॥
मैं हाथ जोड़ अरज करूं हिन्दू जाति को।
मत काटो देवि देवतों पे दीन गात को ॥ ६
मेरा तो दूध है दवा अनेक रोग की।
तिस पर भी मेरा खून पीते यह बात शोक की ॥
कर कर कुरबानी क्यों देते मुझको त्रास।

न पहुँचे गोश्त खून का कतरा खुदा के पास ॥ ७
जी जान के बचाने का परहेज बड़ा खास।
नेकी नमाज यम नियम पहुँचे खुदा के पास ॥
रहमानि रहीम की ताकत को न जाना।
इसलिये ही जो गुरुओं के दिल को दुखाना ॥ ८
चेंटी के सताने का गुना होगा नहीं माफ।
मेरे जु काटने का गुना कैसे होगा साफ ॥
आता नजीक वखत जहां इन्साफ होयगा।
आखिर को अपनी करनी पर आप रोयगा ॥ ९

आगे पक्षियों की पुकार पींजरे में डालने वाले सज्जनों से और पकड़ने वाले दुर्जनों से

गीता छंद—शुक सारिका बुल बुल बया अरु लाल मैना पींजरे।
दुखित हो अति शोक कर अपराध विन क्यों दुख भरे ॥
आनंद सूं वन में विचरते स्वजन मिल होते सुखी।
निर्दयी. होकर दुख हमारे छीन क्यों कीने दुखी ॥ १
अगर तुमको कैद करदे राज महलों में कहीं।
क्या तुम्हें सुख रंच भी होगा वहां शोचो सही ॥
इस वास्ते हम पक्षीगण अति दुखित हो अरजी करैं।
हे कृपासिंधु दया कर मत डालो हमको पींजरे ॥ २

आगे देखो नवाव बहावलपुर की मा सहिव ने एक किताव में दो सेर लिखे देखकर सव पक्षियों को पींजरे मे से निकाल दिया परंद कहते हैं

आता है याद मुझको गुजरा हुआ जमाना।
वो डालियां चमन की वह मेरा आशियाना ॥
वो डालियों के धौंसले हमें याद आते हैं।
आजाद मुझको करदे औ कैद करने वाले।
मैं वे जवान कैदी तूं छोड़ कर दुवाले ॥ १

देखो मा साहवा ने परंद भी सब छोड़ दिये और मांस खाना भी छोड़ दिया आगे खंडेलवाल श्रावक के ८४ गोत तिनकी उत्पत्ति संवत् विक्रम एक की साल में कैसे हुई सो वर्णन लिख्यते

प्रथम आदिनाथजी सूं लगाय और महावीर स्वामी पर्यंत जैन धर्म के साधक जैनी कहलाते रहै। फिर महावीर स्वामी को मुक्त पधारें ६८३ छः सौ तिरासी वर्ष होगये। ता पीछे उज्जैन नगर में विक्रम नामा राजा सूर्यवंशी पंवार चक्रवे मंडलीक राज्य करके आपको संवत् चलायो। तदनंतर संवत् एक की साल अपराजित मुनि का सिंघाड़ा में से जिनसेना चार्य ५०० पान सौ मुनिराज साथ लेकर विहार करते करते संवत् एक में मिती माघ शुक्ल ५ पंचमीं को खंडेले आये। तहां पर खंडेला नगर का राजा खंडेलगिरि सूर्य वंशी चौहान राज्य करे। ता खंडेलानगर की अमलदारी में गांव ८३ तिरासी लगे। वहां कई दिनों से संपूर्ण राज्यधानी में। महा-मारी विशूचिका रोग अत्यंत फैल रहा था। जा रोग करके हजारों मनुष्य खंडित हो गये थे। तब राजा खंडेलगिरि रैयत की यह व्यवस्था देख अति दुखित हुआ। और मृत्यु आगमन जान कर सविनय प्रार्थना करी और कह्यौ। अहो भूदेव यह उपद्रव काहै कर मिटे। तब द्विज ज्योतिष पुराण रमल वेद स्मृत्यादिक षट् शास्त्र और शांतिक ग्रंथ विचार कर कह्यौ। हे राजन् नरमेध यज्ञ कर ताकर शांति होवैगी। तब यथोचित कह कर राजा यज्ञ को आरंभ करतो भयो। और यज्ञ हेतु मनुष्य मंगावने की आज्ञा दीन्हीं। ता समय एक मुनिराज समस्थान भूमि में ध्यान लगाय खड़े हुते तिन को नृप के किंकर पकड़ कर ले गये। और यज्ञशाला में लायकें मुनिराज को न्हवाय कर वस्त्रा भूषण पहराय। पीछें राजा के हाथ से तिलक कराय। हाथ में संकल्प देकर हवन की वेदी कुंड में स्वाहा करते भये। देखो राजा ने कैसे अविवेक से मूर्खता की। सो

प्रथम तो मुनिराज का व्रत खंडन किया। और चौकस नहीं करी। केवल अंधपने की बात कर कैसा अनाचार किया। देखो अव्वल तो मुनिराज के ध्यान में विक्षेप पड़ा। वस्त्र भूषणादि पहराने से व्रत खंडित किया। पुनः साधू को जीते जी होम दिया। ता पाप करके देश में असंख्यात गुणा क्लेश और उपद्रव होता भया। और महाभयंकर घोर समय वर्तने लगा। अग्नि दाह अना वृष्टि प्रचंड वादिक कष्टतें प्रजा पीडित होकर राजा के पास गये। तब नृपति महा शोच में अंधाधुंध होकर मूर्छागत होगया। ता समय स्वप्न प्राप्त भया। और मुनिराज का दर्शन होता भया। तब राजा को शांति भई। और मूर्छा दूर होकर पीछे नेत्र खुले। तब राजा उठ कर रैयत और ठाकुर उमराव भाई और बेटा समेत वन में विचरते भये। यहां पर पांच सौ मुनिराज ध्यान धरते हुवे। तिनको दृष्टि से देख राजा जाय महामुनि के चरणारविंद में मस्तक दे और नाना प्रकार से रुदन कर प्रार्थना करता भया। तब मुनिराज बोले हे राजन् दया पालो तब राजा पूछता भया। हे महाराज मेरे देश में उपद्रव बहुत फैल रहा है सो काहे तैं। अरु कैसे निरवर्त होय तब मुनिराज कहते भये हे राजन् यह नरमेध यज्ञ तेने किया। ताका फल तत्काल तेरे कूं प्राप्त हुवा है। तूंने विना विवेक मुनि को होम दिया। तातैं दुःख कों प्राप्त भया है। पुनः और भी पावैगा। तब राजा बहुत लहचार होकर मान मोड़ हाथ जोड़ कर प्रार्थना करता भयो। तब महा मुनिराज कों दया आवती भई। तब राजा को प्रति वोध करने लगे। हे राजन् पाप में पुण्य धर्म कहां। देख तेने भी देवों के कहने से नर मेध यज्ञ का आरंभ कर अविवेक से मुनिराज को होम दिया। तातैं हे राजन् जरा समझना चाहिये कि तेरे को तेरा जीव कैसा प्यारा लगता है। जैसा सर्व जगह जान ले। ये ही ज्ञान का मूल है। अब तुमको यह जैन

धर्म रुचता होय तो अंगीकार करो और इसे पालो और जिनधर्म के मंदिर वा चैत्यालय कराके ग्राम ग्राम और देश देशांतर पर्गनों में प्रतिमा पधरावो तो शांति होवेगी। तब राजा भावतें पूजन करवाई और अपने उमराव ८३ तिरासी ठाकुरां समेत श्री गुरां से श्रावक धर्म अंगीकार कियो। क्षत्री तो ८२ बयासी और दोय गांव का सुनार हाजर हा। ती का सारा राजा राणां मिलकर श्री जिनसेना-चार्यजी महामुनि के चरणारविंद लागते भये। ता पीछे संपूर्ण देश में शांति भई और जिनधर्म की महिमा वधी। तहां पर शिव वैष्णव धर्म छोड़ कर जिनधर्म सगले देश में आचर्यो। ता समय मुनि विहार करने की इच्छा करी। तब राजा हाथ जोड़ कर कह्यो। हे महाराज अब हमारे कूं क्या आज्ञा होय सो हुक्म कीजै। तब श्री जिनसेनाचार्य महा मुनि राजा कों यह वकसीस करी और साहा गोत ठहरायो। सो डीला राजा तो साह। वाकी गांव के नाम गोत हैं साह की देवी चक्रेश्वरी वाकी का ठाकुर ८३ तिरासी की देवी आप आपकी राजकुली की और गांव के नाम गोत्र इसी तरह चौरासी गोत्र ठहराया और खंडेलवाल श्रावक याने सरावगी जाती प्रगट भई। अब इन चौरासी गोत की वंशावली अरु नाम गांव वा गोत लिखते हैं सो नीचे लिखे हैं।

संख्या	गोत्र	वंश	गांव
१	साह	चौहान	खंडेलो
२	पाटणी	तवर	पाटणी
३	पापड़ीवाल	चौहान	पापड़ी
४	दोसा	राठौर	दोसा
५	सेठी	सोम	सेठानियो
६	भौंसा	चौहान	भौंसाणी
७	गोधा	गोधड़	गोधाणी

संख्या	गोत्र	वंश	गांव
८	चांदूवाड़	चंदोला	चंदूवाड़
९	मोठ्या	ठोमर	मोठ्या
१०	अजमेरा	गौड़	अजमेरयो
११	दरधौधा	चौहान	दरडौद
१२	गदइया	चौहान	गदइया
१३	पहाड्या	चौहान	पहाड़ी
१४	भूंच	सूर्य	भूछड़
१५	वज	हेम	वजयाणी
१६	वज्जमहाराया	हेम	वजमासी
१७	राऊ का	सोम	रारोली
१८	पाटोद्या	तवर	पाटोदी
१९	गंगवाल	वछावा	गगवाणी
२०	पाघडा	चौहान	पादणी
२१	सौनी	सोलंकी	सोहनी
२२	विलाला	ठीमरसोम	विलाला
२३	विरलाल	कुरु	छोटी विलाला
२४	विन्यायक्या	गहलौत	विन्याय की
२५	वाकलीवाल	मोहिल	वाकली
२६	कासलीवाल	मोहिल	कांसली
२७	पापला	सौढा	पापली
२८	सौगाणी	सूर्य	सौगाणी
२९	जांझसा	कछाया	जांझरी
३०	कटारया	कछावा	कटारयौ
३१	वेद	सोरडी	वदसाहा
३२	ढ़ोंग्या	पमार	ढ़ोंगानी

संख्या	गोत्र	वंश	गांव
३३	वोहरा	सोढा	वोहरी
३४	काला	कुरु	कुलवाड़ी
३५	छावड़ा	चौहान	छावड़ा
३६	लौग्या	सूर्य	लगाणी
३७	लुहाड्या	मोरठ्या	लुहाड्या
३८	भंडशाली	सोलंखी	भंडशाली
३९	दगड़ावत	सोलंखी	दरडोद
४०	चौधरी	तवर	चौधत्या
४१	पोटल्या	गहलोत	पोटला
४२	गिंदौड्या	सोढा	गिन्होडी
४३	साखूराया	सोढा	साखूणी
४४	अनोपड्या	चंदेला	अनोपडी
४५	निगोत्या	गौड़	नागोती
४६	पांगुल्या	चहुवाण	पांगुल्यो
४७	भूल्पाराया	चहुवाण	भूलाणी
४८	पीतल्या	चहुवाण	पीतल्यो
४९	वनमाली	चहुवान	वनमाला
५०	अरडक	चउहान	अरडक
५१	रावत्या	ठीमर	रावत्यो
५२	मोदी	ठीमरसोम	मोहदसी
५३	कोकणराज्या	कुरु	कोकणराज
५४	जुगराजा	कुरु	जुगराज्या
५५	मूलराज्या	कुरु	मूलराज्या
५६	छहड्या	कुरु	छाहड्या
५७	दुकड़ा	दुजाल	डूकड़ा

संख्या	गोत्र	वंश	गांव
५८	गौती	दुजाल	गौतडा
५९	कुलाभाराणा	दुजाल	कुलभाणी
६०	वौरखंड्या	दुजाल	वोरखंडी
६१	सरपत्या	मोहिल	सरपती
६२	चिरडक्या	चौहान	चिरडकी
६३	निर्गंद्या	गौड़	निरगद
६४	निरपौल्या	गौड़	निरपाल
६५	सरवड्या	गौड़	सरवड्या
६६	कडवडा	गौड़	कडवगरी
६७	सांभरया	चौहान	सांभरचौ
६८	हलद्या	मोहिल	हरलौद
६९	सौमगसा	गलहोत	सोमद
७०	वंवा	सौढा	वंवाली
७१	चौवाणा	चौहाण	चौवरत्या
७२	राजहंस	सौढा	राजहंस
७३	अहंकारा	सौढा	अहंकर
७४	भुसावड्या	कुरु	भसवड्या
७५	मौलसरा	सौढा	मौलसर
७६	भांगडा	खीमर	भांडगड
७७	लौहाड्या	मौरठा	लौहट
७८	खेत्रपाल्या	दुजाल	खेत्रपाल्या
७९	राजभद्रा	साखला	राजभद्र
८०	भुंवाल्या	कछाया	भुंवाल
८१	जलवाण्या	कछाया	जलवाणी
८२	वेदाल्या	ठीमर	वनवौडा

संख्या	गोत्र	वंश	गांव
८३	लठीवाल	सौढा	लटवाडा
८४	निरपाला	सौरठा	निपती

॥ इति चौरासी गोत्र सम्पूर्णम् ॥

दश बोल के छन्द जिसमें प्रथम एक बोल का छन्द वर्णन

लोक अलोक अधर्म धर्म इक आकाशरु इक केवल ज्ञान ।
देव गुरु निग्रंथ धर्म इक दया एक जिन वच सुख दान ॥
तीर्थंकर नारायण चक्री एक समय इक शुक्ल ध्यांन ।
एक प्राण चोधम जिन तेरम वंध एक रिजुगति निर्वाण ॥ १

दो बोल के छन्द

दो जिन राज जीव संसारी सैनी परजापत गंधान ।
दया परिग्रह भेद धर्म तप शास्त्र निगोदरु पुद्गल ज्ञान ॥
अरु प्रमाण प्रत्यक्ष परोक्षरु परमारथ लक्षण शुभ ध्यांन ।
गोत्र भव्य व्यवहाररु श्रेणी आर्यभोग भू नय अरु मांन ॥ २

तीन बोल के छन्द

पात्र आत्मा काल लोक सम्यक्त वेद विल पल्य अज्ञान ।
वात वलय रुक गर्भ भेद सत परणत रत्नत्रय मूढान ॥
गुप्ति गुण व्रत लक्षण भासरु चेतन गिणती उपयोगान ।
योंनिमकारल खोटा योगरु कर्ण कर्म मात्रा अंगान ॥ ३

चार बोल के छन्द

देव संघ आराधन संज्ञा विकथा वंध चतुष्टय ध्यान ।
निक्षेपा घाती अरु अघाती शील भेद उपसर्ग रुदांन ॥
पुद्गल गुणरु कषाय भावना वादित्ररु गति दर्शन प्राण ।
मंगल शर्णरु उत्तम वर्गरु आयु दिशा अरु अनुयोगान ॥ ४
वर्ण त्रस आहार लिंग चतुर्हिंसा भेद जीव गत्पान ।
सम चतुरस्र क्रोध मद माया लोभ योग वचमन सु कथान ॥
पुद्गल खंध आर्त चतुरौद्ररु धर्म शुक्ल चतु सिद्ध प्रमान ।

समुद् घात केवल दीर्घाचर आस्रव मूलक्षयोपशम ज्ञान ॥ ५
वन सुमेर गजदंत नामि गिर जमक स्नान शिलइष्वाकार ।
उदधि द्वार दीरघ पाताला विदिशादधि मुख चतुव्यवहार ॥
सरसों कुंड प्रशस्त प्रकृति चतु अप्रशस्त पुरुषारथ चार ।
नीतिभेद सेन्या नृप विद्या कनक मनुष्य परीक्षा चार ॥ ६

पाच बोल के छंद वर्णनं

इन्द्री लब्धि प्रमादरु निद्रा समिति महाव्रत पंचार ।
स्वाध्याय चारित्ररु मिथ्यातन अणुव्रत गोलक विस्तार ॥
अंतराय पंचास्तिकायरू भाव मरण नारक दुखधार ।
सिद्ध भाव पैताला ज्योतिष थावर पाप परा वर्त्तार ॥ ७

छह बोल के छंद

काय द्रव्य मत तप अनायतन हानि वृद्धि आवश्यक काल ।
पुद्गल मंगल संहनन सेन्या लेश्या अवधि कर्मपट् भाल ॥
परजापति संस्थान ऋतु रसखंड भेद सामायिक पाल ।
पट्कारक निक्षेप कुला चल पट् देवी सा सादन काल ॥ ८

सात बोल के छंद वर्णनं

नर्क विसन स्वरशील संयम घातोपघात तत्व भय शाल ।
क्षेत्र प्रकृति सैन्यारुदात्रि गुण रतन अचेतन चेतन टाल ॥
मौन भंग अरु काय योग अरु समुद घात अंतराय विडाल ।
ईति भीति नय उदधि स्नानभव वर्षा सप्त जु परलय काल ॥ ६

आठ बोल के छंद वर्णनं

अष्ट मूल गुण ऋद्धि जुगल महिं मंगल द्रव्य प्रहर अर ज्ञान ।
प्रवचन योगभेद सपरसके मद अरु अंगरु उपमा मान ॥
अंगुलादि लौ कांति कर्म अरु प्रात हार्य अरु द्रव्य गुणान ।
गुण सम्यक्त सिद्धि गुण सिद्धी राजा भेदरुनि मती ज्ञान ॥ १०

नव बोल के छंद वर्णनं

नव पदार्थ अरु दर्शन वर्णी नैगम भेदरु निधि नाराण।
नारद वलदेव प्रति नारायण नवधा भक्ति आयु बंधान॥
समकित भेद योनि ग्रीवक नव अनुत्तर प्रायश्चित विधान।
शील वाड़ि अरु अङ्क गुरुत्तर अनुभय वचनरू नव रसमान॥ ११

दस बोल के छंद वर्णनं

दशावतार दशलक्षण जन्मरू केवल सूत्र परिग्रह प्राण॥
भवन वासिदिग पाल निर्ज्जरा पुद्गल भेदरु वंधु कुदान॥
कामवेग अरु वैया वृत्यरु जिनवाणी द्रव्य गुण सामान।
दुष्ट वचन आलोचन सत्यरू समाचार दशदिशा वखान॥ १२

सागर के तथा अद्धापल्य के वनाने में व्यवहार पल्य के रोमों की गिणती

चार एक तीन चार पांच दो छै तीन ले।
शून्य तीन शून्य आठ दोय अग्र सुन्नदे॥
तीन एक सात सात सात चार नो करो।
पांच एक दोय एक नो सम्हार दो धरो॥ १

दोहा—सात बीस जे अङ्क लिखि, और अठारह शून्य।
प्रथम पल्य के रोम की, यह संख्या परि पुन्न॥ २

जल चर थल चर नभ चर जीवों की संख्या वर्णनं

जल चर थल चर नभ चरा, पंचेन्द्री तिर्यंच।
असंख्यात श्रेणी सहित, जानूं विन पर पंच॥ १

मनुष्यों की संख्या वर्णनं

मनुष्य अढाई द्वीप में, उत्कृष्टे उपजाय।
होत अङ्क उनतीस लों, पर्ज्यापत समदाय॥ १

मनुष्य संख्या के अंक वर्णनं

सात अरु नो दो दो वसु, इकषट् दो अरु पांच।
एक चार दो षट् चतु, त्रिक त्रिक सातरु पांच॥ १

अंक रचना लिखते हैं वर्णनं

७६ २२ ८१ ६२ ५१ ४२ ६४ ३३ ७५ ६३ ५४ ३९ ५० ३३६

इन मनुष्यों मे स्त्री कितनी वर्णनं

चौपाई - जो मानुष संख्या परमान, नार तीन वढ़ता में आन।
एक भाग के पुरुष जु आन, भाषें ढाई द्वीप प्रमान॥ १

देव गति संख्या वर्णनं

गिन पचास लख कोडि युत द्वादश कोडा कोडि।
येती पलके रोम सम अमरा संख्या जोड़॥ १

व्यंतर देवों की संख्या वर्णनं

वर्ग तीन सै योजन तना, लैं परदेशा संख्या गिना।
जगत्प्रतर को ताको भाग, सो व्यंतर की संख्या जाग॥ १

ज्योतिषी देवों की संख्या वर्णनं

अंगुल दोसै छप्पन ताका वर्ग प्रदेश लीजिये जाका।
जगत्प्रतर को भाग जु देहि ता प्रमान ज्योतिषी गिन लेहि॥ १

भवनवासी देवों की संख्या वर्णनं

वर्ग मूल प्रथम घन अंगुर जग श्रेणी तें गुनें जु मुनिवर।
ता प्रमान संख्या गिन लेव भवन वासि के एते देव॥ १

सौ धर्म और ईशान दो स्वर्गों के देवों की संख्या वर्णनं

तृतिय वर्ग्ग घन अंगुल मूल तातें गुन जग श्रेणी तूल।
ता समान संख्या भणि लेव सौधर्मरु ईशानी देव॥ १

सातों नर्कों के नारकीन की सर्व सख्या का वर्णनं

द्वितीय वर्ग घन अंगुल मूर तामें गुण जे श्रेणी पूर।
ताहि प्रमान नारकी जीव सात नरक में रहैं सदीव॥ १

सर्व जीवों का अल्प बहुत्व प्ररूपणा वर्णनं

अधिक अधिक अनुक्रम लियें असंख्यात गुनमान।
मानुष ते सब नार की नारक ते सुरथांन॥ १

तुरतें पशु पंचेन्द्रिया तातें वेन्द्री होय।
वेंद्री तें तेन्द्री अधिक त्यौं चौंइन्द्री जोय ॥ २
चौं इन्द्री ते तेज के तेज थकी भूकाय।
भूतें अधिकी जीव अप अपतें अधि के वायु ॥ ३
अनंत गुणे हैं सबन तें शिव में सिद्ध सदीव।
सिद्ध रासिते अनंत गुने वनस्पती में जीव ॥ ४
अल्प वहुत इम वरनियां जियके तेरह थान।
अव विशेषावधि जानियों लिख जजों गुनथांन ॥ ५

गुरूपट्टावली महावीर स्वामी सूंहुवे तिन के नाम वर्णनं लिख्यते

प्रथमहि गौतम भये केवली द्वितीय सुधर्मा चार्य महान।
तीजे जंबू स्वामी नामी संवत्सर वासठ में जान ॥
विष्णु नंद अपराजित जानों गोवर्द्धन भद्र वाहु बखान।
शतक एक संवत्सर मांही भये पांच श्रुत केवल ज्ञान ॥ १
एकादश पूर्वनके पाठी प्रथम विशाखा चार्य महान।
प्रोष्टि लक्षत्रिय जयसेनहि अरु नागसेंन सिद्धार्थहि आन ॥
धृतसेनहि अरु विजय देव है बुद्धिमान गंगदेव बखांन।
धर्मसेन भये शतक एक में और तिरासी ऊपर जान ॥ २
नक्षत्रा चारज जयपाला पांडु और ध्रुवसेंन रसाल।
कंशा चार्य ज्ञार अंग धारा वर्ष दोय सै वीस मझार ॥ ३
एक अंगके पाठी चारा सुभद्रय शोभद्रहि अवधारा।
भद्र वाहु अरु लोहा चारा शतक अठारह वर्ष मझारा ॥ ४

यहां से अंग पूर्वों का ज्ञान विच्छिन्न हो गया मूल संघ
आचार्यों के नाम वर्णनं

कुन्दकुन्द शिव कोटि देव मुनि पुष्पदन्त भुजवलि गुरुदेव।
कानभिक्ष अरजटाचार्य है वट्टकेर योगींदर देव ॥ पूज्यपाद अकलंक
देव हैं उमास्वामि गणधर हिम देव। हस्तनाग उद्धरन नयंधर

वज्रपात केशरि जिनदेव ॥ ५ ॥ वीरसेन सिद्धसेन जयसेन सिंहसेन देवसेन धरसेन जिनसेन मानिये। महासेन रविसेन देवनंदि पद्मनंदि विद्यानंद वीरनंद यशोनंद आनिये॥ माणिक्यनंद वसुनंद प्रभाचंद्र अमृतचंद्र वादिचंद्र नेमिचंद्र कुमुदचंद्र मानिये। शुभसचंद्र गुणभद्र समंतभद्र वादभिंह देवसिंव श्रीदत्त ठानिये॥ ६ ॥ माघमन्दि वज्रनन्दि अरु कुमार वीरनन्द भानुनंदि रत्ननंदि विश्वनंदि जानिये। ज्ञानानंदि भावनंदि नयननंदि श्रीनंदि धर्मनंदि शिवानंदि चारुनंदि मानिये॥ रामचंद्र अभयचंद्र महीचंद्र माघचंद्र लक्ष्मीचंद्र लोकचंद्र त्रिशवचंद्र आनिये। भावचंद्र योगचंद्र मेघचंद्र सूरचंद्र जैनचंद्र नागचंद्र धर्मचंद्र ठानिये।

साधून के भोजन के ४० दोष ३२ अन्तराय तिनमें प्रथम १६ उद्गम दोष दातार के आश्रय तिनके नाम वर्णनं

अध्यदि पूत उदिष्ट मिश्रावलि स्थापित प्राभृत प्रादुःकार।
परावर्त ऋण दोष क्रीततर माला रोहण अभिघट धार॥
आछाद्यासन अरु उदभिन्नरु अनीशार्थ षोडष मविचार।
उद्गम षोडश दोष कहे यह दाताराश्रय करो विचार॥ १

सोलह उत्पादन पात्र आश्रय दोष तिनके नाम वर्णनं

धात्री दूत निमित आजीवन वैनेयिकरु चिकित्सा आन।
पूर्व स्तुति पश्चात् करै स्तुति विद्योत्पादन क्रोधरु मान॥
चूर्णोत्पादन मंत्रोत्पादन माया लोभरु मल कर्मणा।
षोडश दोष कहे उत्पादन पात्राश्रय कर दृष्टि प्रमान॥ २

एषणा दोष १० तिनके नाम तथा महादोष च्यार तिनके नाम वर्णनं

दश एषणा ये दोष क्षिप्त अरु संकित मृक्षित अपर नित धार।
दायकत्य जनपिहित उन मिश्रं अरु व्यवहार निक्षिप्त विचार॥
महादोष ये चार जानिये संयोजन धूमरु अंगार।
अप्रमान चौथौ जु भेद है इन्हें सर्वथा करो विचार॥ ३

चौदह मल के दोष वर्णनं

रुधिर अस्थि नख चर्म पल, राध विकल त्रय बाल।
कफ मल मूत्ररु बीज कुंड, कन्द दोष ये टाल ॥ ४

साधून के बत्तीस अन्तराय के नाम

काकादिक पक्षी अमेध्य अरु छिर्द रुधिर रोदन अश्रुपात।
पिंड पतन काकादि पिंड हर त्याग वस्तु सेवन जियघात ॥
नीच ग्रह प्रवेश निष्टीवन उच्चार अव मूत्र श्रवात।
भाजन गिरन गमन पंचेन्द्री मूर्छा पात भूमि छुई जात ॥ १
स्नानादिक काठनक्रम निसरन पाद ग्रहन अरु हस्त ग्रहान।
नाभि निर्गमन उपरिव्यति क्रम अधः परामर्श न तिष्ठान ॥
वन्हिदाह शास्त्र प्रहार अरु पाणि जन्तु वध अर विन दान।
मृतक देख पंच्येंद्री प्राणी अन्तराय उपसर्ग महान ॥ २

चौरासी आछादन दोष जिन मंदिरजी में नहीं लगाना चाहिये सो नाम वर्णनं

थूल गालि अस्नान कलह अरु रोवन वमनरु भोजन पान।
हांसी हट्टा मल मूत्तर अरु दंत सीक अरु औषधि खान ॥
शयना शयनरु फस्त अंगमल इन्द्रीमल अरु वायुसरान।
आलस पांव पसारन चौपड होड अशुच क्रिया न करान ॥ १
कला चतुरता कुरला चौररु नख तृणपाटी पान जु खांन।
कुंड्व सुश्रुषागार वारता वस्तु भांग अंगुली चटकान ॥
क्रयविक्रिय शृंगार काच मुख शस्त्र बांध अविनय जु करान।
माला कलगी भांग पीयकर झूठ छींक अरु चमर ढुरान ॥ २
कपड़ा धोवन कंडाथापन निश पूजन गौ भैंस बंधान।
निर्मालय वा वस्तु मोल ले वस्तु परख उपकर्ण ग्रहान ॥
मूछ मोड़ चित्राम तापना विकथा मंत्ररु पाट विछान।
भीत सहारा प्रतिमा सन्मुख पंचायत अरु पाद त्रान ॥ ३

व्याह सगाई पगड़ी बांधन पंखा वेश्या नाच जु हार ।
कौड़ी शंखरु रोम चर्म अरु रिस्वत लेंन जु देंन उधार ॥
पग पर पग अरु तेल लगावन अंग दवावन अश्व सवार ।
खाज अधो अंग वस्त्र विछायत चढ़ी वस्तु क्षेपण भंडार ॥ ४

॥ इति चौरासी आछादन दोष संपूर्णम् ॥

चौंसठ ऋद्धिन के नाम वर्णन

दोहा—बुद्धि क्रिया अरु विक्रिया, तप बल औषधि ऋद्धि ।
रस अरु क्षेत्र जु अष्ट हैं, मूल भेद पर सिद्धि ॥ १

बुद्धि ऋद्धि के भेद नाम लिख्यते

केवलि अवधि और मन पर्यय बीजकोष्ट अष्टांग निमित्त ।
पादानुसार संभिन्न श्रोत्र है बुद्धि प्रत्येक प्रज्ञाश्रवणत्व ॥
दूरास्वादन दूरास्पर्शन दूरादर्शन दशपूर्वित्व ।
दूराश्रवण दूरघ्राणा जुत चौदह पूर्व और वादित्व ॥ २

क्रिया ऋद्धि के नाम वर्णनं

क्रिया ऋद्धि दो भेद हैं, चारणत्व आकाश ।
चारण जल जंघा शिखा, तंतु पत्र फलवास ॥ ३
हस्त पाद हालन विना, चले जात आकाश ।
ऊभें बैठे पौंढते, सर्वासन प्रतिवास ॥ ४

विक्रिया ऋद्धि के नाम

अणिमा महिमा लघिमा जान, गिरमा प्राप्ति प्राकामव खान ।
ईशत्व वशित्व अप्रतीघात, अन्तरधान काम रूपात ॥ ५

तप ऋद्धि के भेद नाम वर्णनं

उग्र तपो पहिली ऋद्धि है, द्वितीय दीप्त दीपत कर्तार ।
तृतिय तप्त ऋद्धि उर आनौ महातप्त चौथी अविकार ॥
पंचम घोर तपो ऋद्धि है, घोर पराक्रम अष्टम धार ।
ब्रह्मचर्य है ऋद्धि सप्तमी, ये तप ऋद्धि सात परकार ॥ ६

वलऋद्धि के भेद नाम वर्णनं

भेद तीन बल ऋद्धि के, मन वच काय बखान।
पढ़ते अर्थ विचारते, तन तें बल न घटान ॥ ७

औषधि ऋद्धि के भेद नाम वर्णनं

औषधि ऋद्धि अष्ट परकार, आमर्षौषधि प्रथम वखान।
च्वेलौषधि जल्लौषधि तीजी, मलौषधी दुख हरै महान ॥
विडौषधी विष्टातें सब ही, सर्वौषधि सर्वाङ्गी जान।
आश्यविषा बोलैं विष उतरै, दृष्टि विषा देखैं दुखभान ॥ ८

रस ऋद्धि के भेद गुण नाम वर्णनं

आश्यविषा पहिली ऋद्धि है, दृष्टि विषा दूजी उरधार।
चीरा श्रवी तृतीय ऋद्धि है, मध्वाश्रवीं चतुर्थी सार ॥
सर्पिराश्रवी पंचम ऋद्धी, अमृताश्रवी छटी है सार।
षट् प्रकार रस ऋद्धि भेद है, नाममात्र मे कहै उचार ॥ ९

चेत्र ऋद्धि के भेद नाम वर्णन

चेत्र ऋद्धि दो विधि उर आनौ, ऋद्धि अचीण महानस जानौ।
ऋद्धि अचीण महालय सोई, कटक रथांगन बाधा होई ॥ १०

॥ इति चौसठ ऋद्धियों के नाम सम्पूर्ण ॥

देखो कर्मो ने बड़े बड़े पुरुषों को दुःख दिया तिनके नाम

सवैया— आदिनाथ पार्श्वनाथ भरत और बाहुबलि सगर औ सुभूमि अरु श्रेणिक जी गाये हैं। इन्द्र सम विद्याधर रावण औ राम हरि कृष्ण और पांडव प्रद्युम्न भी बताये हैं॥ सनत्कुमार गजकुमार चारुदत्त श्रीपाल सेठ जु सुदर्शन शूली पर चढ़ाये हैं। सीता अरु अंजना चंदना सुलोचना द्रोपदी सोमा इत्यादि कर्म नें सताये हैं ॥ १ ॥

आराधनासूं कष्ट पाये भी नहीं चिगते तिन्हों के नाम वर्णनं

श्री सुकमाल सुकौशल पांडव धर्म घोष अरु सनत्कुमार।
गजकुमार श्री द्युति विद्युच्चर आभय घोष अभिनंदनसार ॥

वृषभसेन अर ललित घटादिक चाणिक दंडक अग्निकुमार।
श्री आनंद देश कुल भूषण संजयंत अपराधन सार ॥ १

स्त्री के निमित्त जिन २ पुरुषो ने दुख पाया है तिन्हों के नाम लिख्यते

श्लोक—अश्व ग्रीव स्वयं प्रभा दशमुखा जनका सुता जानकी।
अर्क कीर्ति सुलोचना शनघुसा राज्ञी सुता रोसती ॥
मधु सूदन पद्मावती रुक्मी चक्र द्रुपद सुता द्रोपदी।
द्विज सुत कमठ वसुन्धरी रुक्मिणि शिशुपाल मृत्युर्लहात् ॥ १

भगवान तीर्थंकर के एक सै आठ १०८ लक्षण वर्णनं

श्री वृक्ष स्वस्तिक अंकुश पुरशंख पमसिंहासन चंद्र।
ध्वजामच्छ कच्छप नर नारि वान धनुष वनमेरु सुरेंद्र ॥
तोमर चमर छत्र गोपुरनिधि उदधि सरोवर भवन अहेंद्र।
कुंभ कलश रवि घोटक माला वस्त्राभरणरु वृषभ मृगेंद्र ॥ १
चक्र वज्र पृथ्वी ताराग्रह राजमहल नक्षत्र विमान।
जम्बू वृक्ष अशोक सरस्वति कामधेनु चूडामणि आन ॥
कुंडल वीणा मृदंग वेणु अरु लक्ष्मी गरुड़ रत्न की खान।
क्षेत्र वेल अरु ऊरध रेखा ये अष्ट प्रातिहार्य उर आन ॥ २

चौदह धारन के नाम वर्णनं

दोहा—सर्वधार समधार है, विषमधार कृतिधार।
अकृतिधार घनधार अरु, अघनधार अविकार ॥ १
कृतमात्रिक धारा कही, अकृत्तमात्रिका धार।
घनमात्रिका धारा अरु, अघनमात्रिका धार ॥ २
है द्विरूप धारा वरग, अर द्विरूप घन धार।
रूप घना धन धार द्वि, ऐसे चौदह धार ॥ ३

लेश्यान के सोलह भेद नाम वर्णन

वर्णन करूँ भेद लेश्या का ताके षोडश है अधिकार।
है निर्देश वर्ण पर नामं संकर्मण परिकर्म विचार ॥

लक्षण गति स्वामी अरु साधन संख्या क्षेत्र स्पर्शनधार।
कालांतर अरू भाव अल्प वहु कहे नाम गोमट अनुसार ॥ ४

जिनवाणी के बीस भेद नाम वर्णनं

पर्यायत्तर पद संघात, प्रतिपत्तिक अनुयोग विख्यात।
प्राभृत प्राभृति प्राभृतक जान, वस्तु पूर्व दश भेद वखान ॥ १
दश जगह समास पद लगा लैना २० हो जायंगे।

पुद्गल वर्गणा तेइस जाति की तिनके नाम

अणु संख्या संख्यानंताणु, अरु आहार अग्राह्य वखान।
तैजस अरु अग्राह्यरु भाषा, अरु अग्राह्य मनोवर्गान ॥
है अग्राह्य कार्माणुरु ध्रुव, अरु है निरंत शांत वर्गान।
शून्य प्रत्येक देह ध्रुव शून्यरु, है निगोद वादर वर्गान ॥ १
दोहा—नभो वर्गणा शून्य अरु, सूक्ष्म निगोद वखान।
महा स्कंध पुद्गल द्रव्य, भेद बीस त्रय जान ॥ २

डेढ़ से अंक प्रमाण गिनती के नाम वर्णनं

वर्ष और पूर्वांग पूर्व और परवांग परव अरु नयुतांग। नयुत कुमुदां गहै कुमुद और पद्मांगपम और नलिनांग नलिन अरु कमलांग कमल तुटितांग है॥ तुटित और अटटांग और अममांग अममहा हांग हा हा हू हू गहै। हू हू विदुलतांग विंदुलता महालतांग महालता शीर्ष प्रकंपित जो होत है॥ १॥
दोहा—हस्त प्रहेलिक जानिये, अरु अचलात्मक अंत।
लख चौरासी चौरासी लख, गुणित डेढ़ सै तंत ॥ २

संस्कृत के छन्दों के नाम वर्णनं

श्री सार्दूलरु स्रग्धरा द्रुति विलंवित छंद शुभ मालिनी।
त्रोटक श्लोक उपेंद्र वज्र हरणी भुजंग प्रयात स्रग्विणी।
पंचा चामर छंद इन्द्र वज्रा नाराच शुभ शालिनी।

पृथ्वी विद्युन माल दोधक वसंत तिलका शिखरिणीसिनी ॥ १
मंदा क्रांति रथो द्रुतारु हंसी मणि मध्य केकीरवा।
काम क्रीडन छंद इन्द्र वज्रा गीतारु आर्यामहा ॥
चंपक मालिन नगस्वपिन कही वंशस्थ अरु मानवा।
तोमर स्वागत पुष्पिता अपथ्या उप जाति प्रहर्षिनी ॥ २

भाषा के अनेक छन्दों के नाम

गाहा श्री सार रमणा कमल तरु निजा सोमराजी त्रिभंगी।
चित्राबंधु चतुष्पदी चसुखदा कोमारललितास्तथा ॥
हरिगीता पद्मावती चरोलासा मानिका मल्लिका।
शशि वदना पादा कुला ननपदी विजयास्तथा शोभना ॥ १
प्राज्झटिका मधुभार सुप्रिय प्रिया अमृतगती मालती।
कुडंलिया मरहट्ट रूपमाला मदिरा मदन मोदिका ॥
हाकलिका गंगोदकश्च गौरी सुमुखीस्तथा चंचला।
मौक्तिक दाम मनोरमा मनहरण विजयास्तथा मंथना ॥ २
हरिलीला वारिधारा विजय विजोदा ब्रह्मरूपाच तंत्री।
मोहन मोटन चंद्र वर्त्म घत्ता ऋपि दोधका सुन्दरी ॥
पंकज त्राटिक काव्य हंस छप्पै कलहंस निशि पालिका।
पद्धटिका अनुकूल छंद मधुदा आभीर वैशेपिका ॥ ३

शुभ स्वप्नों के नाम वर्णनं

साधू मित्र देवता पूजन तीर्थ उदधि गौ वृषभरु चन्द्र।
शत्रु देश जीतनरु महल वन पर्वत जल घट भवर मृगेन्द्र ॥
स्वेत पुष्प अरु घोटक कन्या रत्न राशि मछलीरु मृगेन्द्र।
लाभ निरोगरु भिष्टा मुरदा जौंक सूर्यरू रूदन नरेन्द्र ॥ १

अशुभ स्वप्नों के नाम

के खर ऊँट अजा अरू रोज चढ़े महिपादिक दक्षिण जावै।
रुंडरू मुंड लिये करमें जु गदा उर पात्रत मारत आवै ॥

पडन कूप जल विपति अग्नि में लोह तेल पका नहिं भावै।
तिल जीमन अरू अंधा कोढ़ी दीपक बुझनरू मदिरा प्यावै॥ १

देश में वा प्रजा में उपद्रव तथा राजाओं में भारी संग्राम होने के अशुभ सूचक लक्षण तिन्हों के नाम वर्णनं

गीता छंद—भूकंप उल्का पात प्रतिमा रूदन वृक्षों का गिरन।
नभ गर्जना पय वारि सोखन स्याल कुत्तों का रुदन॥
दिग्दाह लोही धूल वर्षा घोंसले पक्षी गिरन।
प्रलय उलटी नदी केतु काक उल्लू खर बुलन॥ १

जैनियों की ८४ जातिन के नाम वर्णनं

सवैया खंडेलवाल ओसवाल दसोराव घेरवाल पुष्करवाल जैसवाल सिरीवाल करैया। अग्रवाल पल्लीवाल गुनावाल रायकवाल अचीतवाल करनवाल कनसिया वरैया॥ दीसावाल मंगलवाल पुरवार सूरीवार ठठतरवाल मेठतवाल सहलवाल सरहिया। पद्मावति पोरवार सोरठिया पोरवार भटनागर जंबूसरार डेढग्रह पतिया॥१॥ नारायण शडवड हरसोरा दूसर अटसर अर परवार। गोलापूरव मोठ सठेरा श्रीमाली जागर पोरवार॥ सिंहोरा कठवरेल भेंचू धारक वाजिव गोलालार। गगनारी श्रीगोढ़ खडायत लाडहरोदर गोलसिंगार॥२॥ नरसिंहपुरा नागदह हूमड़ वघनोरा काथड गुरुवाल। अनोदरा नागरियानी वागागर डाससरा पुरवाल॥ माडाहाथ चतुर्थवायडी सजेपाल पंचम कुरुवाल। कोलापुरी अजोधा पूरव गोठभटे राजायावाल॥३॥

दोहा—वाचन गिरिया वायडा, सावोडा श्री साल।
वैसजला अरु मझकरा, गोलापुरी कपाल॥ ४
यह चौरासी जाति है, जैनी की अवदात।
इनको धर्म दया मयी, है जग में विख्यात॥ ५

खंडेलवाल जैनियों के चौरासी गोत्र तिनके नाम वर्णनं

चौधरी गिदोडि़ा भडसाली वन मारी वंव जग राजा गोत वंशी मोदी अजमेरा है। पोटल्या अनुपडारु भागड्या।रु भूसावड राजभद्र-सरवाड्या भू च अर्हंकारा है॥ पिंगुल्यारु पीतल्यारु भूलल्यारु अरड करावत्या सुरपत्यारु हलद्या मोलसारा है। साखुन्यारु दगड्यारु षेत्रपाली कोरु राजा दुकड्यारु कुल भान्या सांभस्या चौवारा है॥ १ साह पाटनी दोसी सेठी वैद कटारया वज गंगवाल। भैंसा मोठ्या वज्र मोहिन्या गदह्या सोनी वाकलीवाल॥ सोगानी गोधारु लुहाड्या दर डोधारु कासलीवाल। पाटोदी पांड्याविंदायका लुहाड्या टोंग्या चांदुवाल॥ २॥ रावकार झांझड़ी पहाड्या वेनाडा कालारु बिलाल। चिर कन्या छावड़ा निगोत्या निरपोल्यारु पापड़ी-वाल॥ कर वागर नरपत्या निगद्या नगड्या रारा अरु लटिवाल। वोर खंड छाहड जल वान्या राजहंस लोवट भूवाल॥ ३

दोहा—मूल राज अरु वोहरा, वज्र हथ्या शुभ गोत।
जिन सेना चारज किये, श्रावक कुल उद्योत॥ ४
खेंत्र खंडेला देश में, चौरासी शुभ ग्राम।
सुन वृप जिन जैनी भये, गोत्र चौरासी नाम॥ ५

नेक पुरुष स्त्रीन की अनेक प्रकार की कलाओं का समुच्चय जोड़
तिनके नाम वर्णनं

छंद – वणिक कला चौंसठ स्त्री चौंसठ फिर विशेष चौंसठ उर आन।
सत चरित्र शीला की चौंसठ फेरि चौंसठ नारि कलान॥
चौंसठ धूर्त धर्म की चौंसठ कामीजन की चौंसठ मान।
वेश्या चौंसठ स्वर्णकार की चौंसठ अर गणिका की छतिस जान॥१
कला अर्थ की हैं जु छहतर तथा बहत्तर चौंसठ धार।
शुक्राचार्य कला चौंसठ हैं तथा वहतर वहतर सार॥
कला शतक सत् पुरुष विनिर्मित्त योग कला तेईस विचार।

स्त्री जात की बावन जानों चोर कला छत्तीस निहार ॥२
जुवारी षोडश कायथ सोडस सोलह कला मद्य पी जान।
कपट सत्य षोडश ग्रहस्थ की है पचीस षोडश दीवान ॥
गायक द्वादश विद्या चौदह मद लच्चण की बतिस मान।
स्वातम बुद्धि की पांच दरिद्री द्वादश एक अमर हो जान ॥३

सत्पुरुषों की कला कौन कौन सी तिनके नाम

लिखन पढ़नरु गीतरु नृत्यरु ताल पटह वीणारु मृदंग।
भेरी वंश रतन नर नारी धातु शकुन दंतीरु तुरंग ॥
दृष्टि मंत्र कवि नीत तत्वरस ज्योतिष वैद्य छंद गणि तंग।
अंजन योगाभ्यासरु भाषा लिपि अष्टा दश अच्चर भंग ॥ १
इन्द्र जाल वाणिज्यरु खेती सेवा राज्य सुस्वप्न विचार।
वायु अग्नि स्तंभनरु विलेपन मेघरु मर्दन लोकाचार ॥
खड्ग छुरी घट वंधन मुद्राविधि घट भ्रमणरु दंत सुधार।
वाहु मुष्टि अरु दृष्टि खड्ग अरु वाग्दंड युध औषध सार ॥ २
जल आकर्षण पत्र च्छेदन रंजन लोकरु चित्र सवार।
सर्प दमन अरू भूत उतारन मर्म भेद अरू लोह विचार ॥
वर्ष ज्ञान अरू गारूड मंत्ररू लच्चण कालरू तर्क चितार।
अफल वृच्च को सफल करन वल पलित विनासरू द्रव्य विचार ॥३

दोहा— नाम माल ऊरध गमन, कला वहत्तर धार।
नर विद्या अभ्यासते, इनको करो विचार ॥ ४

स्त्री जनों की चौसठ कला तिनके वर्णनं

नृत्य चित्र औचित्य कर्मवर वेष धान्य रंधन विज्ञान।
गीत ताल मुख मंडन वीना अंजन चूर्णरू हय गय जान ॥
मंत्र तंत्र वादित्र स्वर्णविधि काव्य कोष व्याकर्ण जु ज्ञान।
रत्न परख श्रृंगार काच मुख लीला चालरू कुसुम गुथान ॥ ५
जल स्तंभ अरू मेघ वृष्टिफल वृष्टि शकुन लोक व्यवहार।

धर्म नीति नर नारी लक्षण वस्तु सिद्धि अरू ग्राह्याचार ॥
भोजनविधि वाणिज्यविधी अरू वैद्यक्रिया अरभृत्य पचार ।
वचन पक्षत्वरू कथा कथनरू भाषा सकलरू अंक विचार ॥ २
दंभ और आरामा रोपण शाठ्य करन अरू परिश्रम सार ।
क्रिया कल्प आकारा रोपण अंत्याक्षरक पहेली धार ॥
वात वितंडा लिपि अष्टादश केशजु बंधन घट भ्रमकार ।
संस्कृत वचन तैल सुरभीकृत शालिछड़न अरू धर्म विचार ॥ ३
लाघव हस्त खनिज वृद्धि अभिधान परि ज्ञान ।
ततक्षिण बुद्धि प्रसाद नय निरा कर्म परिमाण ॥ ४

शुक्राचार्य की कही ६४ कलान के नाम वर्णनं

नाराच छंद - गीत वाद्य नृत्य नाट्य उदक वाद तैरनं ।
वेष बदल पाक शास्त्र मालिकारू सीवनं ॥
तर्क वाद प्रल्हे काशिलावटं सुमार्जनं ।
धातुवाद औ सुतार काव्य कोष वाचनं ॥ १
रत्न परख छंद ज्ञान पढ़ विदेश भाषणं ।
वृक्ष आयु वेद वेत्र पट्टिका रिझावनं ॥
मेष कुक्कुट छलित सुवा सारिका प्रलापनं ।
अलेप्य वीण इंद्र जाल अस्व गजा रोहनं ॥ २
दसन वसन शयन द्यूत मुष्टिका सु अक्षरं ।
क्रिया विकल्प पुष्पतरण कर्ण पत्र आकरं ॥
सुगंध औ श्रृंगार होउ यंत्र तंत्र वशकरं ।
रत्नभूमि यंत्र मात्र धारणं कृषी करं ॥ ३
शब्द वेध ज्योतिषं रसायन सु वैद्यकं ।
शास्त्र समर अलंकार. लाघवं सुहस्तकं ॥
गांधर्व राजनीति नारि नर परीक्षकं ।
कही कला सु साठ चार शुक्र नीति पुस्तकं ॥ ४

ये सब विद्यायें पच्चीस सौ बतीस वर्ष पहिले सब थीं रेल तार कलों के काम ये यंत्र थे।

वणिक की चौंसठ कलानि के नाम वर्णनं

छंद चाल— घटती देना बढ़ती लेना भूल मारना लोभ छुपान।
भजन वावला भोलापन अरू रति में ढौंग दान प्रगटान॥
घर में शूर मौनपन माया धर्मीपन पेटा वश जान।
मतलब सधे बाप लंपटपन झूंठी शपथ सत्य वैरान॥ १
जमा खर्च में फर्क स्त्रियों में वार्ता जगत की बात बनान।
दो अर्थी भाषा ढीलापन अपने को समझे सावधान॥
प्रीति अपूरण भीम अहारी सर्व शास्त्र में निपुण बतान।
विषय अंध निद्रा लू निर्लज वात उड़ावन लोभ बतान॥ २
कूटाचार निष्ठुर अभिमानी वाह्य दरिद्री उद्यम काम।
ठगविद्या में निपुण जुवारी स्थान सिंह जंबुक परग्राम॥
क्रोधाभ्यंतर विश्वासघाती महाकृतघ्नी चाहै नाम।
गूंगा बहिरा पागलपन पराु कार्य कुशल चाहै खुदनाम॥ ३
धन होते निर्धनी दुःख में धीरज मित्र रहित वर्ताव।
वैर सत्य सूं अधिक बोलना सदा उद्यमी ईर्षा भाव॥
देव पीर की करैं मानता पड़ै बीच लैंने में चाव।
अरुचि दैन में मतलब पक्का रुदन कुशल बंदर वर्ताव॥ ४

विद्याधरों की विद्याओं के नाम वर्णनं

दोहा—काल सुपाकरू पर्वता, वंशालय मातंग।
पांशुमूल अरू पांडुका, वृत्त मूल वसु अंग॥ १
मनुमाणव अरु कौशिका, गौरिक अरु गंधार।
भूमितुंड मलवीर्य अरू, संकुक विद्या सार। २

चाल छन्द—प्रज्ञप्ति रोहणि अंगारणि, महा गौर महास्वेत मायुरी हारी कूष्मांड्नी। गांधारी दंड भूति सहस्र का त्रिराजिता

अच्युतारु आर्यवती आर्य कूष्मांडनी। दंडाधिक्य गण निवृत्ति अनिलगति सांडिल्य जयंती मंगला अमृत संजीवनी। इक पर्व द्विपर्व त्रियातिनी त्रिवर्गा छाया धारिणा प्रहारिणी अन्तर विचारिणी ॥ ३ ॥ संक्रामनि गौरी शतपर्वादश पर्वारु सहस्र पर पर्वान। सर्व विघ्न अपकर्षण असिजा जलगति सर्वारथ सिद्धान। तिरस्कारणी उत्पत्तिन जय संक्रामणि लखपर्वामान। राधिन सर्व विघ्न निरवज्ञा वृण संरोहन विषमोचान ॥ ४ ॥ संचारिन अरु कामदायनी कामगामिनी दूर निवार। भानुमालिनी मनस्तंभिनी सुविधाना दहना को मार। सुरध्वंश वज्रोदर अमरा गिरदारिनि अवलोकन सार। जगत कंप आश्विम्पारु भास्करी वारही विजयाचो मार ॥ ५ ॥ विपुलोदरी समाकृष्टी दिन रात्रि विधायनिवश्य करान। रजो रूप अजरा भुजंनी चितोद्ध वाधीरा ऐरान। सुभप्रभा लघिमा कौवेरी योगेश्वरी घोराजृंभान। चंडा चपला जयना वेगा आदर्शनी शत्रुदमनान ॥ ६ ॥ अग्नि स्तंभनी उदकस्तंभनी कामरूपनी अरु महाज्वाल। नभगामिनी अप्रतिघातनी विश्वप्रवेशनी अरु चांडाल। महावेगा भंजन प्रमोहनी सारभोगनी अरु वैतालि। शीतोस्ना सावरि प्रलापनी अरु प्रमोदनी विद्याकाल ॥ ७ ॥

वर्तमान विद्याओं के नाम वर्णन

कविता भाषा संस्कृत प्राकृत सौरसेन अरु शास्त्र विचार।
वैद्यक ज्योतिष अरु सामुद्रक तंत्र मंत्र अरु यंत्र प्रचार ॥
भौम अंग स्वर व्यंजन लक्षण स्वप्नरु छिन्न अंतरिक्षसार।
युद्ध शास्त्र अरु मल्लउडन नटहास्य रुदन वास्तुक शृंगार ॥ १
उच्चाटन अरु वशीकरण अरु जल अरु अनलवल स्तंभान।
इन्द्रजाल रसकर्म यक्षनी भूत पिशाचरू अंजन मान ॥
भोज विद्य अरु विद्याछेदन सर्पदमन विष मारन जान।
आकर्षण लांगलिक शिल्प कृषि लिखन तर्क वाणिज्य विधान ॥ २

जलतैरन अरु अग्नि प्रवेशन वृक्षारोपन शकुन विचार।
धातु मारण स्वर्णकार अरु बीज गणित रेखा लंकार॥
द्यूत विनोद नाट्य वादित्ररु विततरू ततधन सुखिर प्रचार।
बाण रसायन और रसोई चूर्णरू कोक स्वरोदय धार॥ ३

दश प्रकार सत्य के भेद तिनके नाम वर्णनं

दोहा—जन पद संमति स्थापना, नाम रूप विवहार।
परती तरू संभावना, भावोपम दश धार॥ १

दश प्रकार असत्य वचन के भेद तिनके नाम वर्णनं

चौपाई-कर्कश कटु का निष्ठुर जाना, पुरुषा परकोपिन अभिमाना।
भूत घात अनर्थ कर जाना. मध्य कृशा छेदं कर माना॥ १

नौ प्रकार के अनुभय वचन तिनके नाम

दोहा—आमंत्रण आज्ञापनी. याचन संपृच्छान॥
इच्छा अनुलोमन कही. पष्टम प्रत्याख्यान॥ १
प्रज्ञापन अन अक्षरी, संशय वचनी जान।
नौ प्रकार अनुभय वचन. ताके भेद बखान॥ २

बारह भाषा के नाम वर्णनं

अभ्याख्यानरु कलह पै. शून्य प्रलाप उपाधि।
निकृति अपरनति रति अरति, मोच संम्यक्त मिथ्यात॥ १

देखो ऐसे जीवों के धर्म वालना न होय तिनके नाम लिख्यते

दुष्टी पापी चोर कली हठ ग्री जिह्वा लंपट मद्पान।
मूढ कुलाचारी गुरद्रोही व्यसनी निर्लज असत्य बखान॥
पाप निपुण अति लोभी निर्दय क्रोधी नास्तिक कलह करान।
वेश्या शक्त अभरहि भक्षक द्रोही धर्म विसंवादान॥ १
कौटर ग्राही हीनाचारी दुष्ट पर धारक अभिमान।
बालचार भेद रहित अविनई मूर्ख कृतघ्नी दोष बखान॥

नीच जीविका मित्र द्रोही अरू विश्वासघाती दुरध्यान।
इन जीवों के धर्मवासना होय नहीं निश्चय उर आन ॥ २

ऐसे जीवों के धर्म रुचि होती है तिन जीवों के लक्षण नाम वर्णनं

जपी तपी संयमी धैर्य गुण दमी सत्यवादी गुणवान।
शूरवीर कौमलजिय मौनी सब जिय जानें आप समान॥
धर्मी देव गुरु श्रुत पूजक दुष्टों के दुर्वचन सहान।
मृदुभाषी ज्ञानी अद्वेषी उपकारीरू रहित अपमान ॥ १
सत्संगी हित वच तत्वज्ञी पुरूषार्थी बहुश्रुत कुलवान।
संतोषी लज्जा गुण पंडित विनयी त्यागी बुद्धि निधान॥
धर्मोत्साही शौच नम्रता दया क्षमा गुण ग्राहक दान।
इन जीवों के धर्मवासना होय सही निश्चय उर आन ॥ २

इस पंच परावर्तन मे अनेक दु:ख सहे जीव नें तिनके नाम वर्णनं

अग्नि सर्प विष सिंह व्याघ्र नर शस्त्र नदी जल नग भेदान।
शीत उष्नवर्षारू पवन भय मारन ताडन अंग गलान॥
भूंख प्यास बंदीग्रह दारिद रांधन छेद विदारन प्रान।
वृक्ष बीजली फांसी अटवी इष्ट वियोग काम अपमान ॥ १

सप्तईत के नाम वर्णनं

दोहा—अना वृष्टि अति वृष्टि शुक मूषक टीडो जान।
निज चक्ररू पर चक्र भय, इति सप्त ये जान ॥ १

सप्त भीत के नाम वर्णनं

गज मृगेन्द्र अहि अग्नि गद, जल भय अरू संग्राम।
महा क्लेश कारण कहै, सप्त भीत ये नाम ॥ २

प्रलय काल के भयंकर वर्षाओं के नाम

पवन अग्नि विष शीत रज, धूम्र क्षार जल जान।
वर्षे सातहि सप्त दिन, प्रलय काल अवसान ॥ १

सप्त प्रकार शुभ वर्षान के नाम वर्णनं

दोहा—जल घृत दुग्धरू ईक्षुरस, अंमृत मधु मद मेह।
वर्षे दिन उनंचास तक, फिर जीवन सुख देत ॥ १

साधून के दश प्रकार समाचार तिनके नाम वर्णन

इच्छा कारं मिथ्या कारं तथाकार आषी निशिधान।
प्रति उष्ण पृच्छानुरूप है आमंत्रण आपृच्छन जान ॥
अरू संत्र्यय के भेद पांच हैं मार्ग विनय सुख दुख चेत्रान।
पंचम सूत्र संशयी जानो समाचार दश साधु वखान ॥ १

देखो लोभकर वड़े वड़े पुरुषों ने दु:ख पाये तिनके नाम

रामचंद्र मृग लोभ खोय सिय सिया लोभ हारे लंकेश।
पांडव द्यूत लोभ देशाटन धरा लोभ हारे भरतेश ॥
राज्य लोभ दुर्योधन हारे धातुकि लोभ भूमि चक्रेश।
द्रव्य लोभ नृप नंदराय अरु वेश्या लोभ चारु दत्तेश ॥ १

चौदह कुल करों के नाम

प्रति श्रुति सन्मति चेमंकर अरु चेमंधर सीमं कर जान।
सीमंधर अरु दत्त विमल है चचुष्मान यशस्वी आन ॥
अभिश्चंद्र चंद्राभ ग्यारमां मरू देवरू प्रसेन जित मान।
चौदम नाभि राज कुल कर है जाति स्मरणरु अवधि धरान ॥ १

चौदह कुल करों के नाम तथा आयु काय और कौन कौन से काम किये सो सर्व वर्णनं

दोहा—प्रथम प्रति श्रुति ने कियो, सूर्य चंद्र भय दूर।
आयु पल्य दश मास है, तन दश वसु शत पूर ॥ १
सन्मति भय दूरहि कियौ, ग्रह तारा नचत्र।
आयु अमम वर्षान की, वपु दश त्रिक शत तत्र ॥ २
चेमंकर भय नाश किय, मुख सिंहादिवि कार।
अढषठ वर्ष की आयु है, धनु अठशत तनु धार ॥ ३

चेमंधर सिंहादि भय, नाशनल कुटि धराय।
तनु शत सप्त पिचहतरा, तुटित वर्ष की आयु ॥ ४
सीमं कर वच कर कही, कल्प तरून की सीम।
आयु कमल वर्षान की, तउ पंद्रह सै नीम ॥ ५
सीमंधर झगड़ो सुन्यों, हद कल्प तरू कीन।
तनु शत सप्त पचीस की, आयु नलिन की लीन ॥ ६
नाम विमल वाहन मनु, वाहन चढ़न बताय।
आयु पद्म की जानिये, धनुप सात सै काय ॥ ७
चक्षुष्मान के समय में, छिनेक पुत्र मुख जोय।
आयु कही पद्मांग तनु, छैसे पिचहतर होय ॥ ८
मनु यशस्वी समय चिर, सुत मुख देख असीश।
तनु छहसै पचास धनु, आयु कुमुद अब नीश ॥ ९
अभिश्चंद्र लखि सुत रुदन, कहिं जल कमल दिखाय।
तनु शुभ छसै पचीस धनु, कुमुद अंग की आयु ॥ १०
चंद्राभान मनु समय चिर, पिता पुत्र मुख जोय।
आयु न युत की है सही, तनु धनु छहसे होय ॥ ११
मरुत देव कहि पिता सुत, लाड़ प्यार व्यवहार।
उप समुद्र जल मेघ नदि, तरणी पोत विहार ॥ १२
शतक पांच पिचहत्तरा, काय तुंग अब धार।
आयु वर्ष नयुतांग की, बारम कुल कर सार ॥ १३
प्रसेन जित से कर्म्म भू, बालक पटल जराय।
शतक पांच पचास तनु, पर्व वर्ष की आयु ॥ १४

चौदह कुल करों का वर्णनं

चौदम कुलकर नाभिराजनें बाल नाल काटन विधिसार।
कल्प वृक्ष विघटे सबही फलधान्य औषधी हुई अपार ॥
खावन पीवन की विधि सबही नाभिराज ने कही विचार।
आयु कोडि पूर्व जानों तनु धनु सवा पान सै धार ॥ १५

ये चौदह कुलकर विदेह में वड़े वंश के पुरुष प्रधान।
दान सुपात्रन कूं वहु देके भोग भूमि को वंध करान॥
पीछे क्षायक समकित धरकैं यहां आय अव तरे महान।
इनमें केयक अवधि ज्ञानी केयक जाती स्मरण धरान॥ १६

तीर्थङ्कर चौबीस के पिताओं के नाम वर्णनं

नाभिराज जितशत्रु दृढ़ रथ संवर पिता मेघ रथ मान।
धारन सुपरतिष्ठ महा सेनरु नृप सुग्रीव दृढ़रथ जु महान॥
विष्णु पिता वसु पूज्य और कृत वर्मा सिंह सेन नृप भान।
विश्व सेन नृप सूरसेन नृप अष्टा दशम सुदर्शन आन॥ १

दोहा – कुंभ सुमित्र पिता विजय, समुद् विजय गुण धाम।
अश्वसेन सिद्धार्थ नृप, तीर्थंकर पितु नाम॥ २

चौवीसौं तीर्थङ्करों की मातासों के नाम वर्णनं

छंद चाल—मरु देवी अरु विजय सुषेणा सिद्धारथ सुमंगला मात। छठी सुसीमा पृथ्वी सेना लक्ष्यमणा जय रामा अवदात मात सुनंदा विजिया श्यामा जयशर्मा सुप्रभामात। ऐरा श्री कांता मित्र जु सेना प्रजावती सोमा विख्यात॥ १

वारह चक्रवर्त्तिन के नाम

दोहा – भरत सगर मघ वास नत, शांति कुंथ अरहनाथ।
है सुभूमि महापमहर, सेन जय सेनरुदत्त॥ १

नव नारायण के नाम वर्णनं

तृपिष्ट द्विपिष्ट स्वयंभू, पुरुषोत्तम सिंहेश।
पुंडरीक दताधि पत्ति, लक्ष्मण हरि मिथु लेश॥ १

नव वलिभद्र के नाम

दोहा – विजय अचलवर धर्म धर, सुप्रभु सुदर्शन नाम।
नंदि मित्र नंदि षेण अरु, रामचंद्र वलिराम॥ १

नव प्रति नारायण के नाम

अस्वग्रीव तारक मरुत, मधु निशुंभ प्रल्हाद।

वलि राजा रावण जरासिंधु प्रति हरि वाद ॥ १

नव नारद के नाम

दोहा—भीम महाभीमरु रूद्र, महारुद्र अरु काल।
महाकाल धन मुख सही, नर मुख उन्मुख भाल ॥ १

ग्यारह रुद्रों के नाम

भीमवली जित अरिविश्व, नल सु प्रतिष्ठ अचाल।
पुंडरीक अजितंधरा, जित नभ पीठ कपाल ॥ १

चौवीस कामदेवों के नाम वर्णनं

सवैया—बाहुवल अमित तेज श्रीधर अरु देशभद्र प्रसन्न चन्द्र चंद्र वर्म अग्नेयु सु जानिये। सनत्कुमार श्रीवत्स कनक प्रभ मेघ प्रभ शांति कुंथ अरहनाथ विजय देव मानिये। श्री चंद्र वलराज हनूमान नलराज वासुदेव प्रद्युमन इक्कीस में वखानिये। नाग कुमार श्री कुमार चौवीसम जम्बू स्वामी कामदेव नाम कहै आगम प्रमानिये।

सोलह सतीन के नाम वर्णनं

ब्राह्मी सुन्दरी और वालिका भगवति राजमती उर आन।
द्रोपदि कौशल्यारू मृगावति सुलसा सीता दशमी जान॥
सती सुभद्रा शिवारू कुन्ती शीलवती चतुदशमी जान।
नर्ली सदैत्य चूला उर आनो षोडश सती कही परमान ॥ १

आगामी काल में चौदह कुलकर होंयगे तिनके नाम वर्णन

कनक कनक प्रभु कनकराज और कनकध्वज अरू कनकः पुंग।
नलिन नलिन प्रभु नलिनराज और नलिन पुंग नलिनध्वज तुंग॥
पद्मप्रभु और पद्मराज अरू पद्मध्वज और पद्मः पुंग।
आगामी ये चौदह कुलकर धीधारी होंगे सर्वज्ञ ॥ १

तीन चौवीस तीर्थंकरों के नाम वर्णनं

निर्वाण अरू सागर अरू महासाधु विमल प्रभु शुद्ध प्रभु श्रीधर जिनेश्वर नमीजिये। सुदत्त और अमल प्रभु उद्धर अरू

अग्निनाथ संयम पुष्पांजलि के चरण चित दीजिये। शिव गण उत्साह अरू ज्ञानेश्वर परमेश्वर विमलेश्वर यथारथ नाम नित लीजिये। यशोधर कृष्ण अरू ज्ञानमति शुद्धमति श्री क्रांति शांति जुत चरण नमस्कार कीजिये ॥ १ ॥

अनागति चौबीस तीर्थङ्करों के नाम वर्णनं

महा पद्म सूरदेव सुप्रभु अरु स्वयं प्रभु सर्वायुध जयदेव चित्त में चितारिये। उदय देव प्रभा देव श्री उत्तंग प्रष्म कीर्ति जय कीर्ति पूर्ण बुद्धि हिरदे में निहारिये। निःकषाय विमल प्रभु वहुल अरु निर्मलजी चित्र गुप्ति समाधि गुप्ति नाम नित धारिये। स्वयंभू अरु कंदर्प जयनाथ विमल दिव्य बाद अनंत वीर्यजिन चौवीस निहारिये ॥१

आगामी चौबीसी में कौन कौन से जीव कौन कौन से तीर्थङ्कर होयगें तिनके नाम वर्णनं

श्रेणिक महापद्म तीर्थंकर अस्वग्रीव प्रति होय सुर देव।
तारक प्रति केशव वसु प्रभुजी तथा द्विपिष्ठ स्वयं प्रभ देव॥
मेरु प्रतिसर वायुधजी हो तथा स्वयंभू होय जय देव।
मधु केशव प्रति उदय देवजी पुरुषोत्तम तीर्थ प्रभ देव॥ १
प्रति निशुंभ केशव उदंकजी प्रश्न कीर्ति पुरुष सिंह होय।
जय कीर्ति हों सुभूमि चक्री केशव कृष्ण पूर्ण बुद्धि जोय॥
प्रहरन प्रति निःकषायजी हों पुंडरीक विमलेश्वर होय।
वलि प्रति वहलदेवजी होंगे पुरूषदत्त निर्मलजी होय॥ २
चित्र गुप्ति हरिषेण जु चक्री समाधि गुप्ति रावण जिय जान।
चक्री जय सेन होय स्वयंभू जरासिंधु हों कंदर्पान॥
श्री बलभद्र होय जयनाथहि चक्री ब्रह्म श्री विमलान।
समंत भद्र हों दिव्य वादजी सात्यकिरूद्र अनंत वीर्यान॥ ३

आगामी काल में बारह चक्रवर्ति होयगें तिनके नाम वर्णनं

अडिल्ल छंद — भरतराय दीरघ दत्त जय दत्त जु सही।
गूढ दत्त श्रीषेण श्रिभूत श्री कांतही॥

पद्म और महापद्म चित्रवाना कहा ।
विमल वाहन अरिष्ट सेन बारम लहा ॥ १

आगामी काल मे नव नारायण होयगे तिनके नाम वर्णनं

नंदी नंद मित्र नंदन अरु नंद भूत महा बल उर आन ।
अति बलभद्र बली जु द्विपिष्टं और तृपिष्ट नवम नाराण ॥ १

आगामी काल मे नव बलभद्र होयगे तिनके नाम

चंद्रबली महाचंद्र चंद्रधर सिंहचंद्र अरु हरिचंद्रान ।
श्रीचंद्र पूर्णचंद्र शुभचंद्ररु बालिचंद्र नव बलिभद्रान ॥ १

आगामी काल मे नव प्रति नारायण होंयगे तिनके नाम

अडिल्ल छंद—श्रीकंठ हरिकंठ नीलकंठ जु सही ।
अश्वकंठ सुकंठ शिष्यकंठ जु कही ॥
अश्वग्रीव हयग्रीव मयूरग्रीव है ।
प्रति नारायण नाम आगामी जीव है ॥ १

जे पुरुष जनेऊ धारण करे उसमें नव गुण होना चाहिये तिनके गुणों के नाम वर्णनं

दोहा—क्षमावान विज्ञानता, समिति अदत्त अलोभ ।
शील मूल गुन त्याग गुण, शुभाचार कर सोभ ॥ १

अन्तःकृत केवली महावीर स्वामी के वारे दश हुवे तिनके नाम वर्णनं.

नमि मतंग सोमिल वलिक विष्कं वल यमलीक ।
राम पुत्र थालं वृपी पुत्र सुदर्शन ठीक ॥ १

साधु दश उपसर्ग सह करकें अनुत्तर विमान मैं प्राप्त हुवे महावीर स्वामी के वारे तिनके नाम

कार्तिकेय ऋजुदाश धन्य, वारपेण भय नंद ।
शालि भद्र नंदन सुन, चत्र चिलाती वृन्द ॥ १

सत्रह प्रकार मरण के भेद भगवति आराधनानुसार तिनके नाम वर्णनं

छंद—अवी चीतद्भवरु अवधि अरु आद्यंत आसन्नरु वाल।
ग्रद्ध पृष्टवाल पंडिग अरु भक्त प्रत्याख्यान विशाल॥
विप्रासन पंडितरु विसारत मरण प्रलाप इंगिनी भाल।
अरु सल्य प्रायोप गमन अरु केवल मरण भेद यह काल॥ १

बड़े बड़े राज प्रलय कूं प्राप्त हुवे परन्तु यह पृथ्वी किसी के भी साथ नहीं गई तिनके नाम वर्णनं

काव्य—पांडव लक्ष्मण रामचंद्र जनकं सुग्रीव वाली नृपाः।
पवनं जय हनुमान कुंभकरणं रत्नश्रवा माल्यवान्॥
खरदूषण श्रीकंठ कैटभ मधु प्रद्युम्न भामंडलाः।
अर्क कीर्ति अकंप नाश नघुषो मधुसूदना कीचकाः॥ १

मारीच का जीव जो महावीर स्वामी हुवे तिन्हों के कोडाकोडी सागर में थोकवंद कितनी पर्याय पाई तिसका व्योरा नाम वर्णनं

सवैया—साठ हजार आकमांहि अस्सी हजार सीपमांहि नीबू में हजार बीस नौ हजार केवड़ा। धतूरे में कोड पांच चंदन में तीस लाख मच्छ तीस कोड स्वान तीस कोड भव खरा। गणि का भव हजार साठ सिया भव किरोड़ पांच गज बीस गधा साठ भव जो धरे खरा। नपुंसक साठ लाख त्रिया भव किरोड़ बीस धोबी भव नव्वै हजार आठ कोड अस्वरा॥१॥

दोहा—साठ लाख गर्भ जु खिरे, सुख भव अस्सी लाख।
साठ लाख राजा धरे, विबुध जान अस्सी लाख॥ २
तीस कोड मार्ज्जार के, भव जानो मारीच।
फिर तपकर भव नाशकर, पहुँच्यै शिव के बीच॥ ३

पृथ्वी काय के भेद तिनके नाम वर्णनं

माटी वालू कंकर पत्थर शिला लवण अभ्रक हरताल।
खड़िया गेरू सुरमा पारा जस्ता तांवा शीसा भाल॥

रांगरु लोहा चांदी सोना हीरा पन्ना माणिक लाल ।
कारोलिक गौमेधरु चक मणि स्फाटिक वर्वर मोच प्रवाल ॥ १

दोहा – अंजन किंकिन सूर्य प्रभ, चंद्र क्रांति जल क्रांति ।
या प्रकार भू भेद पर, करो भाव उप शांति ॥ २

चावलों की जाति अनेक प्रकार है तिसका प्रमाण ४६१४२१ । जाति के चावल होते हैं तिनके कुछ नाम वर्णन करते हैं

राघा वालम चिनोर चींगा रानी काजर कोसम सार ।
गांजा कली विनोर कक्रहरी सूरज जोति धोड दुधसार ॥
आमा गोही मकुवा मोटा सोठ चीपड़ा कपूर सार ।
रूई वूटा लाटा करका चिरई गोंडा सामा सार ।' १
दिलवखसा सुनखिरचा जीलोकंद भोग ढोढा तिल सान ।
तुलसा अमृ'त ककड़ी वीजा कौवा कैनी कासीधान ॥
कारीसाह लायची झुरई रामकेर करधना झिलान ।
वेग वागडी पसई टेडी समुदर सोख चौखटा धान ॥ २
चित्रकोट पसई वसुमतिया भोरा कावर राजा धान ।
अंतर भेद सुहारस करकंद सुरिया कुन्दर साहिव धान ॥
झिरई चतुर्भुज गट्टा लालो पांडर पीसो वूढा धान ।
आमागौर कटांग काटला भटा फूल डोगर वगवान ॥ ३
तुलसी मंजरि रीछ करंजा सोला सामर पूछक माल ।
उडत पंखनोनगा परेवा हंसलो चिंगली वादर वाल ॥
हीरनखी सुहारी पापड़ जामुन पथर चटारु . फुलाल ।
सौंफ जुमेरा गुरुमटिया अरु चंद्रजोति मनकी महियाल ॥ ४
वाघमूछ श्रीकवल चंगेरा स्यामा जीरोझाल कछार ।
वासमती औ गौरीशंकर जगन्नाथ भिरकुल गंगवार ॥
रकर चीनी रामा जीवन करको गोवा कुंदर सार ।
कारी कुटिल तिला सीसाख्या माहर टेडी कूडो सार ॥ ५

वृक्षों के नाम वर्णनं

सहकार श्रीफल ताड़ केला लवंग जाति कटहरं ।
खर्जूर पिंड खजूर पुंगी तूत ऐलावटहरं ॥
जंबु छुहारे विल्व कुचला नीम पीपल अटहरं ।
देवदारु कदंब चंदन आल अर्जुन गूंगरं ॥ १
बादाम खिरनी सहजना अंकोल इमली मद फरं ।
ताली सगोंदी सिरस धात्री कैंथ चर्वस पाकरं ॥
लकुच पीलू तेंदु रीठा बैंत पर्नस छोंकरं ।
किरमाल स्वर्णतमाल शालस निर्मली रुद्राक्षरं ॥ २
अखरोट किर्कल नागवल्ली सल्लिकी गिर कर्णिका ।
बीजपूर पलास उपन सयागधी मधु पर्णिका ॥
सालूरधवकन बीर वकलरु सीसम उंबररा।इणा ।
सागौन हरडै आमलारु वृक्ष चंदन बारणा ॥ ३
दाडिम नारंगी अरु विजोरा आम्र निंबू सदाफल ।
करना जंभीर चकोतरा अरु रासफल बदरी फलं ॥
पुन्नागहीं गहिंगोट पाटल भूर्जव कुलरु नागरं ।
राजपूर अशोक नाग इत्यादि वृक्ष वनं तरं ॥ ४

पुष्पों के नाम उर्दू जवान में जो इस वक्त मिल सकते हैं तिन्हों के नाम वर्णन

गुलपेंचा गुलरख गुलपिस्ता गुलसोहन मखमल गुलनार ।
गुलशत वर्ग तुरंज काशनी गुडहर परमल देव गंधार ॥
पांडर जोही कदंब निवारी जाथिन्नी पनडी करनार ।
गुलमच कुंद सुहागिन चुनरी गुलनूरी अतलस संभार ॥ १
गुल्लाला गुलखेरू गुडहल गुलतुर्रा चंपा कचनार ।
गुलसब्बो गुलमहली कलगा गुलनौशिक गुलहार श्रृंगार ॥
गुलफरंग गुलनौरंग नरगिस गुलदाइरी गेंदा सार ।
गुलसोहन गुल बंगला मरूआ गुलाब्बास गुल मुंडी हार ॥ २

गुलचींनीरु अगस्त केवड़ा रायवेल सेवति मलवान।
गुलदुपहरिया कनेर दोनों गुलचांदनी गुल जाफरान॥
कुंद केतकी गुल गुलाव गुलरता चमेली जुही जान।
गुल वावूना कमल मोगरा शिर्स सूर्य मुख कोयल आन॥ ३

अनेक प्रकार के सुगंधित इतरों के नाम

रूह गुलाव गुलाव मोतिया हिना केवड़ा खस जफरान।
जुही चमेली चंपा पनड़ी मौलसिरी गेंदा दौनान॥
मद नमस्तदिल चश्म चांदनी महकपरीरु मुश्क फितनान।
शाहनाज केतकी सेवती नारंगी सुहाग मोगरान॥ १

वाग वृक्ष तरकारी के नाम

केला आम .नारंगी निम्बू मीठे करना सेव अनार।
चकोतरा जंभीर विजौरा खट्टा लीची आलुबुखार॥
जामन आड़ू वेल फालसे लकोट खिरनी आलूचार।
सीताफल अंगूर जामफल कमरख तूत रामफल सार॥ १
कैंथ आमले वेर रसभरी नासिपाति इमली अंजीर।
खरबूजा तरबूज काकड़ी पेठा अरिया फूंट अरु खीर॥
सेंध सिंगाड़ो ईंपरु पौंडा भुट्टा कचरी श्रीफल खीर।
काजू मूंगफलीरु करोंदा तेंदु लिसोड़े गोंदी शीर॥ २
घिया करेला भिंडी तोरई चौला टिंडे फली गुवार।
सेम सैंगरी कदुवा परमल मिरची मटर वूंट कचनार॥
घिया तोरई मूली मेथी कोथमीर सोवा वथुवार।
पोदीना कुलफारु तूंमडी टेंटी सेंगर साग चनार॥ ३

विकलत्रय जीवों के नाम वर्णनं

चैंटी चैंटा दीमक मकड़ी खान खजूरा भ्रमर पतंग।
जुंवा लीख वीछू लट खटमल मक्खी भींगर मच्छर भृंग॥
भुनगा ईली जोंक कैंचुआ डांस गिजाई पिस्सू चंग।

घोंघा सीप गिंडार कुंथुवा वीर वहोट्टी टीडीरग ॥ १

वन के जानवरों के नाम

श्लोक—सिंह शार्दूल वाराह प्लवंगोरीच्च जंबुकः ।
महिषोखङ्ग गौधेया गवयो शंवरो मृगः ॥ १
वृक गौ मायुमार्जार कृष्णा चमृग तैंदुक ।
गज अश्व खरो गौर चमरीगोह अजगरा ॥ २

भाषा छन्द में जानवरों के नाम

हस्ती घोटक उष्ट्र वृषभ गौ महिष मेष अज गर्दव स्वान ।
खिच्चर रोज वराह तेंदुवा व्याघ्र सिंह चीता गेंडान ॥
रीछ भेड़िया जरख गैंदुवा मृग सावर कपि खरगोशान ।
ऊदविलाव लंगूर कैंगरू सूसा लोमड़ी आख मुकान ॥ १

सर्पों की जाति और नाम लिख्यते

श्लोक—कर्कोटक मणि नाग वामनसुरा मुखदधि मुखापिंगला ।
तक्षक वासुक हेमगूहन हुषा कर वीर कुष्मांडका ॥
कालीयक अपराजिता पिठरकाधृतराष्ट्र वहुमूलका ।
कंदोदर कुमुदोच्च कुंजरमहा पद्मा च निष्टानका ॥ १
आर्यक उग्रत नील आस्र कवला संवर्त का क्षेमका ।
मुद्गरपिंडक हस्तिपाद सवला हारिद्र कात्रिल्व का ॥
ऐरावत कष्माष शंख ज्योतिक वालीशिखा लोहिका ।
कर्दम कर्कर तितरा कर्करा कौरव्य गजपिंडका ॥ २
एलापत्रधनं जयापिरजका विरजा सुवाहु फणी ।
विल्वरपांडुर मूषका दशमुखं कुठरप्रभा कर महा ॥
शालीपिंड महोदरा च कुमुदा अनिला कलश पोतका ।
कोनः पाशन शंखपिंड क्रोटक व्रत पद्म पिंडारका ॥ ३

छंद चाल—ऐरावंशी पारावत अरु पारिपात्र पांडव कुशकाल ।
हरिन विहंग मेद परमोदरु सरभ संहृतापन शुकुमाल ॥

कौरव वंशी एरक कुंडल वेणि स्कंध वाणिक शलपाल ।
शृंगवेर वाहुक कुमार का धूर्तक ओतर आतक भाल ॥ ४
धिरत राष्ट्रवंशी विषधारी वेग वायुवत् मुंड विदांग ।
संग कर्णपिठरक सुख सेचक पूर्णांगद मानस रक तांग ॥
भैरव सुकुनि प्रहासपूर्ण मुख ऋषभ नाग व्यय सर्व सरांग ।
पारासर तरुन कहाली मकमानिस्कंध समृद्धिपि शांग ॥ ५
चित्र वेग का वाराहक हरि आमाहठ वारानक जान ।
उद्रपार का महा हनूसुचिचित्र सुखेन कुठार महान ॥
वेगवान पठवासक आढणि पुष्प दंष्ट्र अरु शंखशिरान ।
पूर्णभद्र का माठकशंखरु श्री वह शंखमुखा सर्प्पान ॥ ६

पच्छीन के नाम वर्णनं

मोर कबूतर तीतर शिकरा वाजपिंडकी कौवा चील ।
गृद्ध क्रौंच कोयल उकावशुक वागल नीलकंठ अववील ॥
सारस हंस वदक मुर्गावी चकवा बुगला टटी हरील ।
बुलबुल मैंना खंजन श्यामापिद्दी वया चिड़ी हरियील ॥ १

मिठाई पकवानों के नाम वर्णनं

लाडू मोदक पेड़ा बरफी नुकती फेनी चंद्र कलान ।
खुरमा पेठा लोज इमरती घेवर गूझा खाजा आन ॥
स्वाल कलाकंद और जलेवी गुपचुप मोहन भोग बखांन ।
सकट सगोनी गुलावजामन खुरचन गट्टे दहीवड़ान ॥ १
मिश्री मावा तंतू फेणी मोतीपाक लायची दान ।
दोयठा इंदरसे मूंग चूरमा मेवा बरफी गुलेरि कान ॥
मगद रसभरी खजला लच्छे मठरी गुझिया हलुवासान ।
गजक रेवड़ी नुकल तिनगिनी कुस्ती खील सठेली जान ॥ २
नानखताई शक्करपारे मालपुवा खरजूर कसार ।
हलुवा छाक गिंदौड़ा पूवे गुना बतासे फैना सार ॥

सेव कचौड़ी पापड़ पपड़ी वेढई सांके वखतादार।
दालमोंठ तिरखूंट पकौड़ी मिरचौनी मोगर भुजियार ॥ ३
वड़े मगोड़े साग वड़े अर टिकिया पूड़ी लुचई वतान।
दूध दही श्रीखंड मलीदा खीर शिखिरनी केशर भात॥
चांवल दाल चूरमा मांडे कड़ी पितोड़ माड़िया भात।
वाटी खिचड़ी रोटी चटनी मुरवा तरकारी वहुजात ॥ ४

लाडून की भी अनेक जाति है सो वर्णनं

लाडू तुकती बूंदी वेसन मगद मूंग चांवल पचधार।
उर्द कांगनी दल मैंदा तिल चौलामेंथी खोकसार॥
कीटी गाल दूध मिश्री के खरबूंजा छोला मेवार।
सिंघाड़े मक्का गुड़धानी राजगिरा मुरमुरा जुवार ॥ १

स्त्री जनों के गहनों के नाम वर्णनं

चूड़ामणि बोरला रखड़ी वीज चुड़ीला झूमर चंद।
शीशफूल अरु तिलकवंदनी वैणा आड़ कतक मुडवंद॥
टीकीभेला घूंघट ग्राटा वाला वाली सांकल वंद।
पीपलपत्ता करणफूल झिवझिवी ओगन्या झुटनेमंद ॥ १
झुमका बिजली कांटा नथ वुल्लाक भोगली चौंप सम्हार।
हसली माला दुलड़ी तिलड़ी और पचलड़ी कठला हार॥
पचमनिया मोहन जौमाला ठुस्सी तनकी चंदर हार।
गुलूवंद तावीज वजट्टी सतदानीरू तिमनिया सार ॥ २
चंपाकली चीर पट्टी अरू जुगुनू तोक हमेल वखान।
वाजू कड़ा वांक तुलवंदी जोसन वट्टा वाहू ठान॥
गेंद अनंत डाल छन पौंहची जौ पौहची गुजरी गजरान।
कंकण कड़ा सांकला वंगड़ी और पटेलि गोखरू मान ॥ ३
बंगली दोहरी और पछेली तथा नोगरी जवल्या जान।
चूड़ी चुड़ली छाप अंगूठी छल्ला मुदड़ा अंगुस्तान॥

वांकदमामा अरु हथफूलरु बेड़ा बोर दामन्या मान ।
कांची दाम कणगती लटकन कड़ा सांकले पाइल जान ॥ ४
सांठ नेवरी छडै पैंजना झिञ्ची छेलकड़े रसभूल ।
पाजेवरु छागल अरू झांझन बोरा जेहर लच्छे भूल ॥
घुनसी और आंवला पैरिया बिछिया अनवट अर पगफूल ।
छल्ले और फोलरी छिटकी ये सब स्त्री गहने अनुकूल ॥ ५

देखो जीवों की अनेक नातेदारियों के नाम

माता पिता बाबा दादा सुत दादी सुता पुत्र पौत्रान ।
काका काकी ताऊ ताई भैंन भतीजी सहोदरान ॥
फूफा बुवा भतीजा दुहिता दोहित मामा मामी नानि ।
नाना और भानजी भानिज शाला शाली जेठ जिठानि ॥ १
सासू ससुरा नंद भौजाई नंदेऊ देवर दिवरानि ।
स्त्री भर्तारु जमाई जीजा बहनेऊ समधी समधानि ॥
मोसा मोसी साढ़ू सलहज सखा सखी दासी दासान ।
सेवक स्वामी नाते येह सब याजिय को संसार भ्रमान ॥ २

ढोल नगारा ढोलादिक बाजोन के नाम जो इस वक्त मे पाइये हैं
तिनके नाम वर्णन लिख्यते

ढोल नगारा ढोलक ढपला डफ डमरू डुगडुगी मृदंग ।
तबला तासे मुरज तोमडी घडा खंजरी चौकी चंग ॥
नौवत डांक पौमबई दौरा खोल दायरा उदई सिंग ।
गिरकट्टी संतोर गोथलम खोल तुमक नारी बाद्यंग ॥ १

फूंक के बाजों के नाम बर्णन

भेरी मुंज मुरलि अलगोजा तुरही भेर शंख मुहचंग ।
सिंगी नादा नफीरी मुहबर सेनाई भोपू रन सिंग ॥
नैरी वैणू कमल वेगचिन कर्ण नग संरम सुरना शृंग ।
पुंगी खरी शाखा थूथी गोमुख पंचम सरला पुंग ॥ १

तार के बाजों के नाम

नादेश्वरी शौक्तिकी वीणा महती रुद्रासुरशृंगार ।
प्रासारणी तृंतंत्री किनारी स्वरवीणा आनंद लहार ॥
तरवदार कानून कमाची गोपीयंत्र रौद चौतार ।
सारिंदी सुरसंग अलाबू सुरवहार मीना दोतार ॥ १
वीन सरोद रबाब तंबूरा चिकारा कच्छप इकतार ।
नस तरंग करवाब सारंगी मंडलि कुंडलि अरु षटतार ॥
विजय घंट अरु जलतरंग घड़ियाल झांझ झालर करतार ।
घंटा घुंघरू और मंजीरा चद्दर खदंडा अरगन तार ॥ २

रागिनी के ध्वनि तिनके नाम वर्णनं

पीलू ईमन तिलक जंगला भीमपलासी मंजू गौर ।
परज सोहनी मांड अडाना जिला झमौटी ध्वनि सिंदूर ॥
कजली ठुमरी पुर्वी छाया ध्वनि खम्माच शंकरा दौर ।
गजल विहाग लावणी काफी ध्वनि हमीर इत्यादिक और ॥ १

सैन्या तथा संग्राम में फौज की किलेबंदी करना जिसमें वैरी प्रवेश न कर सकै उसे व्यूह रचना कहते हैं तिन व्यूहों के नाम वर्णनं

वज्र व्यूह सूची मुख मंडल अचल व्यूह अर सकट व्यूह ।
सैन्य देव पैशाचरु राक्षस गांधर्व मानुष दृढ़ व्यूह ॥
मंडलार्द्ध अरु शत्रु निवर्हन अर्द्धचंद्र अरु दुर्ज व्यूह ।
चक्र सर्वतोभद्र मकर अरु गरुड़ स्येन अहिक्रौंच व्यूह ॥ १

महा उत्तम अरु वहुमूल्य अनेक उत्तम जाति के घोड़ों के नाम वर्णनं

चित्रवर्ण अरु स्वर्ण वर्ण अरु रक्त स्याम अर्जुन वर्णान ।
पिंगल नील पीत रंग सवलरु भस्म हरिद्र वर्ण अश्वान ॥
वादल वर्ण मल्लिका लोचन चाषु पत्र आकाश समान ।
शश लोहिता दधि वर्णरु पुष्कर मणि वैडूर्य स्यामग्रीवान ॥ १
चात्रक वर्णरु तीतर पक्षी क्रौंच मयूर ग्रीव वर्णान ।

चक्रवाक शुकवर्ण शशांकरु वाज पक्षि पारावत जान ॥
कुक्कुटांग रंग वीर वहोटी पिंगल हस्तिदंत वर्णान।
पद्म पत्र अरु मांष पुष्प अरु शाल पुष्प पाटिल पुष्पान ॥ २

अनेक जाति के शस्त्रों के नाम जो प्राचीनकाल के संग्राम में काम आते थे तिन्हों के नाम वर्णन करते है

ऐंद्रास्त्र ब्रह्मास्त्र प्रमोहन सौम्पास्त्र अरु आदित्यास्त्र।
अग्नेयास्त्र वारुणास्त्र अरू पर्जन्यास्त्र प्रजापत्यास्त्र ॥
परस्वध वत्सदंत शैलास्त्ररु अंजुलीक प्रज्ञामालास्त्र।
ज्योतिअस्त्र अरु क्षुद्रकास्त्र अरू दीक्षुशस्त्र अरू वायव्यास्त्र ॥ १
शक्ति शतघ्नी पट्टिस ऋष्टी भिंदपाल अरक्षुर प्रवाण।
अस्थि संधि वाराह कर्ण अरु चक्र विशिख मुद्गर मुखलान ॥
गदाक्षुरास्त्र विपाटरू तोमरशूल प्रास परिधी शल्यान।
अर्द्ध चन्द्र नाराच परशु अर भाला चक्र खड्ग धनुवाण ॥ २

स्त्री जनों के स्वभाव के भेद अर अनेक जाति की नायकान के भेद नाम अर्थात् सर्व वर्णन

मुग्धा प्रौढ़ा स्वक्रिया गर्वित प्रेमा लक्षिता विप्रलब्धा।
मध्या धीरा अधीरा गणिका वाला प्रेम गर्भित विदग्धा ॥
उत्कंठा लघुमाननी परक्रिया मुदिताच अभिसारिका।
सामान्या संभोगिता क्रिशोरी गुप्तास्तथा पंडिता ॥ १

देखो इस संसार मे वहुत से मत हैं जिनमे से कुछ मत जाननें में आये तिनके नाम वर्णन करते हैं

जैन सांख्य मीमांसा जैमिन नैय्यायिक पातांजलि जान।
क्षणक वाद ब्रह्म द्वैत है वैयभाषिक सूत्रांतर आन ॥
शेखर शांख वैद्यमत वौद्धरू योगाचार माद्यमिक मान।
पातांजलि अद्वित वाम अरु चार्वाक शिव कपिल वखान ॥ १
रामसनेही दादू पंथी भक्ति कवीर नारायण पंथ।

चक्रांति अर रास विलाशि कूंका रोरख निर्मल पंथ ॥
वीजा कडवा ढूँढ कूवामत काल वाद सन्मूर्छन पंथ।
श्वेताम्बर लूका लूम्पक मन ढूँढ्या देवी मसकर पंथ ॥ २

और भी मतों के नाम

बौद्ध शैव अद्वैत भागवत वैखानस मन्मथ मल्लार।
महागणपती उच्छिष्ट गणपति कापालिक मत वामाचार ॥
विश्वक सेन हरिद्रा गणपति यम कुवेर मत योगाचार।
चार वाक हैरण्य काश्यमत शाक्ति इन्द्र वैस्नव पितृधार ॥ १
महालक्ष्मी शौगव तत्त्वपत्नक मत वाग देवता पीलूवाद।
शेष गरुड़ गंधर्व सिद्ध वाराह शऊर राहु वरनाद ॥
चंद्रभूत वैताल शांख्यमत कर्महीन वैष्णव शून्याद।
कर्मवाद मत लोकधर्म मत ये मत करते सदा विवाद ॥ २

आगे और भी मत देखो

रामानुज निंवार्क वल्लरी हरि-व्यासी मत राधे स्वामि।
रामानंदी राधा वल्लभ ब्रह्म समाजी विष्णु स्वामि ॥
माध्वी गौड़ सिंह मत नानक जंगम गूदड़ चकला नाम।
रविभानू शत नाम नाथ मत लिंगायत नारायण स्वामि ॥ १
एक नाथ मत गोपीनाथरु संतराम कुंभी मत आन।
महानुभाव भैरव चोलीमत बीज मार्गी भारत मान ॥
साधुमार्गी निरंजनी मत सनातनी धामी मत ठान।
ऊदा मत मटिया मत मरुवा धेनुमत आपा मत जान ॥ २

देखो मुसलमानों के मजहब के अनेक मतों के नाम वर्णनं

मेंजाई अलहाविया यहूदी ईशाई केरामिया।
आशारी जावेरिया मुजम्मिस्सी मत वाइदी ॥
मोरजी हायेती सेवियन्स मतन जेरीते हामिया कादरी।
मुजदारी च शिफातिया खारजी सुन्नत शिया अलशफी ॥ १

देखो इस पंचम काल में जैनमत में भी बहुत से भेद मत हो गये हैं

इस वास्ते जैन श्रद्धानी लोगों कूं मूल संघ सरस्वती गच्छ वलात्कार गण कुन्द कुन्द आम्नाय के मूजब चलाना चाहिये यह बात मैंने परीक्षा करके लिखी है। जैनमत में जैनाभास मतों के भी नाम है।

मूल संघ काष्ठा संघ द्राविड़ पुच्छ सेन निपुच्छ संवान।
नंदिसंघ अपसंघी माथुर महासंघ पुन्नाट गणान॥
गोप्य संघ अरु क्रिया संघ अरु आर्यासाढ़ पुनमिया जान।
गंगदत्त जामालिक संघी तिष्य गुप्त आगमिया मान॥ १

श्लोक—दिगम्बरा रक्तवस्त्रा, स्वतांवरमलिनाम्बरा।
पीताम्बरा चकत्थांच, टाटाम्बर समयांवरा॥ १

इन सर्व में मूल संघ छोड़कर सर्व ग्रहीत मिथ्याती है अब आगे चौरासी जाति के रत्नों के नाम वर्णनं

पद्म राग पुष्प राग लक्षिताक्ष त्रिपहरं।
मसार गलूम हंस गर्भ विद्रुमं प्रभाकरं॥
सूर्य क्रांति चंद्र क्रांति अंजनं प्रियं करं।
वींत शोक मरकतं इन्द्र नील ज्वर हरं॥ १
रोग हार शत्रु हार स्वेतरुचि शिवं करं।
वज्र अंक महा नील पुष्टि कार धृति करं॥
हंस मालि अंशुमालि सिरी कांति मद हरं।
ज्योति रसं कौस्तुभं सर्प्प मणिविभा करं॥ २

प्रभानाथ चंद्र प्रभुरिष्टाभद्र प्रभ आभंकर जान।
अपराजित सौभाग्यकार अरु चिंतामणि सौगंधित आन॥
शुभग नील करके तन पुलकर कर कोटक स्फाटक पुलकान।
गुणमाली गंधोदक रुचिकर क्षीर तैल वैडूर्य सुगान॥ ३

देखो इस संसार में सैकड़ों तरह के रंग हैं तिनमें तें कुछ रंगों के नाम अरु जो द्रोपदी के चीर बढ़ने में निकले सो वर्णन करते हैं

लाल कशूमल अरु अब्बासी तर गुलाबि गुल्लानि अनार।
सफतालू उन्नावि बेंगनी ककरेजी सोशनि फालसार ॥
नारंगी केशरी बसंती गेंदई पीत और हरतार।
कृष्ण नील कापोत ताड़सी नीलकंठ तोतइ जंगाल ॥ १
हराफाकता इरु कंटई जस्तर नीला अरु आसमानि।
कापूरी प्याजूरु शरबती शिजरफीरु मोतिया धानि ॥
कासनीरु खसखसीरु दूधिया कंजई संदलि नाफर्मानि।
तम्माखू खाखीरु तुरंजि किशमिसी रंग के नाम बखांन ॥ २

आगे अनेक जाति के शुभाशुभ हाथियों के नाम तिनमें शुभ हाथी धन संपदा का देने वाला होता है

श्लोक—ऐरावतः पुंडरीको, वामनः कुमुदो जनः।
पुष्पदंतः सार्वभौम सुप्रती कश्चदिग्गजाः ॥ १
इत्पमरः रम्पाभी माधुजाधीरा शूरावीराष्ठ मंगला।
सुबंद सर्वतो भद्र स्थिरगंभीर वरारूहा ॥ २
महा मृगो स्तूपकर्ण सिंदूर सामलः कटी।
भद्रो मंदो मृगोमिश्नः श्रृंगारी गज जातियः ॥ ३

धन हानि करने वाले अशुभ हाथियों के नाम वर्णनं

दीना क्षीणा महाविष्मा विरूपा विमला खरा।
विमदा ध्यात काकाकः अंजनी मंडलीशिखी ॥ ४
राष्ट्र हामूशली माली हतावर्ता महाभया।
निःसत्वा जटिलाधूम्रा हस्ता दोषा महाधमाः ॥ ५

आगे जिनधर्म को प्राचीन बताने वाले बडे बड़े विद्वान अंग्रेजों के नाम वर्णनं

विलसन् वेबर बार्थ ब्रुक मौंट स्टुवर्सन् पीटरसन्।
ज़ेकोबी लाइसन् अरु बुल्लूर ओल्डिन बर्गरु ऐडरसन् ॥
क़ोलगिन् कनिंग फ्यूरर ओरटी बोंटो और टोमसन्।

ये विद्वान् लोग सब कहते प्राचीन है जिनदरसन् ॥ १

पश्चिमी अनेक भाषाओं के नाम वर्णनं

जरमन वरमन रशियन प्रशियन वा अहेवियन अमेरिकन ।
कोमोरियन वाट्टिपोलियन वा केपत्रिटिन वारियूनियन ॥
ओस्ट्रेलियन आरमिननियन वा इटेलियन साइवेरियन ।
यू यूरेशियन महम्मडिन रोमेन अविस्सिनियन एलजीरियन ॥ १

आगे देखो पश्चिमी लोगों की अनेक देश भाषाओं के नाम वर्णनं

जरमन वरमन रशियन प्रशियन वा अटेवियन अमेरिकन ।
कोमोरियन वाटिपोलियन वा केपवृटिन वारियुनियन ॥
ओष्ट्रेलियन आरमिनियन वाइटेलियन साइवेरियन ।
यूरेशियन मोहोम्मडन रोमेन अविस्सी एलजीरियन ॥ १

आगें देखो भारत मे पूर्व काल

३२००० हजार देश लगते थे जिसमें ३१९७४ देश तो अनार्य थे और पच्चीस २५ देश आर्य थे जिसमे श्री आदिनाथ स्वामी ने विहार किया। परन्तु इस वक्त तक कोडा कोडी सागर काल व्यतीत हो गया हजारों तरह की रचना भी होगई। इस तरह से पूर्व काल मे जलादिक वर्षने से तथा समुद्र के घटने वढ़ने से, तथा भूकंपादिक होने से पृथ्वी कई देशों में वंटगई जिनके नाम यूरप एशिया एफ्रिकादिक हो गये ये सर्व भारत में ही थे। आदिनाथ स्वामी ने विहार किया था सो वर्णनं।

दोहा—देश सहस वत्तीस में, कीना ऋषभ विहार ।
अष्टा पदतें शिव गये, हनि अघातिया च्यार ॥ १

आगे देखो एक एक देश मे हजारों ग्राम लगते थे यहाँ ७४ आर्य देश जिनको कितने कितने ग्राम लगते हैं सो सर्व सम्हार कर वर्णन करते हैं

मगध देश छ्यासठ लख ग्रामरू अंग देश पनलाख जु ग्राम ।
वंग देश मे सहस पचासरू कलिंग देश इक जो है ग्राम ॥

काशी इकलख सहस वानवै कौशल सहस निन्यानव ग्राम ।
कुरूदेश में सहस सतासी शतक तीन पच्चीस जु ग्राम ॥ १
कुशावर्त चौदह सहस तिरासी देश विदेह आठ हज्जार ।
जांगल इकलख सहस पैंतालिस वत्स देश ठाईस हजार ॥
देश सौराष्ट्र ग्राम्य अति उत्तम अठसठ लाख पांच हज्जार ।
मलय देश में ग्राम सातलख शांल्यि में है दश हज्जार ॥ २
वरूणदेश चौवीस सहस अरू वत्सादेश अस्सी हज्जार ।
देश दशार्ण जु लाख अठारह सहस वानवै ऊपर धार ॥
सिंधुदेस लख अठसठ पनसत चेदिदेश अठसठ सै सार ।
सौ वीर अरसठ हजार है सूरसेंन छत्तीस हजार ॥ ३

भारत के प्राचीन देशों के नाम वर्णनं

श्लोक—तत्रमे कुरुपांचाला शाल्वा माद्रेय जांगला ।
शूरसेना पुलिंदाश्च वोध मालाश्च कुक्कुरा ॥ १
मत्स्या कुशल्या सौशल्या कुंतयः कांति कौशला ।
चेदि गोधा करूषाश्च, भोजासिंधु प्रवाहका ॥ २
दशार्ण मेकला मद्रा, कलिंगा काशयोस्तथा ।
गोमंता मंद का संडा, विदर्भा रूप वाहका ॥ ३
अश्मका पांडु राष्टाश्च, गोप राष्टाकिरीतय ।
अधिराज्य कुशाद्याश्च, मल्ल राष्ट्रं च केवलं ॥ ४
वारवास्पाय वाहाश्च, चक्राश्चक्रा स्तयः शका ।
विदेहामलजा स्वचा, मगधा विजया स्तथा ॥ ५
अंगा वंगा कलिंगाश्च, कुंतयो पर कुंतयः ।
मल्ल सुदेष्णा प्रल्हादा, माहि का शशि कास्तथा ॥ ६
वान्हिका वाटधानाश्च, अभीरा काल तोयका ।
अपरांता परांताश्च, पांचाला चर्म्म मंडला ॥ ७
कुंदा परांता माहेया, कच्चा सामुद्र निष्कुटा ।

अंध्राश्च शिखिराश्चैव, स्वराष्टा केक यस्तथा ॥ ८
दुर्गाला प्रति मत्स्याश्च, शूर सेना अकुंतला ।
तिलभारामसीराश्च, मधु मंतः सुकंद का ॥ ६
काश्मीरा सिंधु सौवीरा, गंधारा दर्शका स्तथा ।
अभी सारा उलूताश्च, शैवला वाल्हि कस्तथा ॥ १०
दार्वी चा वहुवाद्यश्च, कुलिंदोपत्य का स्तथा ।
वध्राकरीपि का आपि, कौरव्याश्च सु मल्लिका ॥ ११
किराता वर्वरा सिद्धा, वैदेहास्ताम्र लिप्तका ।
औंडाम्लेच्छा सैसिरिंध्रा, पार्वतीयाश्च मारिषा ॥ १२
द्राविडा केरला प्राच्या, मूषिका वन वासिका ।
कर्णाटका महिष का, विकल्या मूषका स्तथा ॥ १३
झिल्लिका कुंतला श्चैव, सौहृदा नभ कानना ।
कौकुंद का स्तथा चोला, कोंकणा माल वानरा ॥ १४
समंगा कार काश्चैव, कुकुरांगारि मारिषा ।
व्यूका कोक वका प्रोष्टा, संकेता शाल्वसेनय ॥ १५
चंपायां ताम्रलिप्तं च, राजपुर्यां च टेकणं ।
पद्म खंडं प्रियंगुश्च, उशीरा गजपुर स्तथा ॥ १६
साकेता पुर कौशांवी, सिद्धार्था विजयापुरी ।
ब्रह्मस्थलं विश्वपुर्यां, ताराख्य कांचनापुरी ॥ १७
श्री वासन गरा शूरा, वसंता कमलापुरी ।
हर्ष पुर्यां आद्रपुर्यां, चंद्र पुर्यां सुदर्शना ॥ १८

भारत क्षेत्र की प्राचीन नदियों के नाम वर्णनं

गंगा सिंधु सरस्वती च यमुना गोदावरी नर्म्मदा ।
कृष्णा वेत्रवती विपाशवेणा ऐरावती वाहुदा ॥
त्रिदिवा वेदवती विपापनि चितावेद स्मृती देविका ।
धुत पापा शतद्रु चित्रसेना दश द्रुती निम्नगा ॥ १

शत कुंभ शर्यू पयोष्णि भीमा पाशाशिनी चंद्ना ।
शतवेला चर्म एवती वितिस्ता कारीषणी गौमती ॥
वाणी भीमरथी रहस्य कृत्या पूर्वाभि रामादिर्शि ।
महितां मोघवती च हास्तिसोमा चुलुकाचपुर मालिनी ॥ २
नीवारा च शरावती कौशिकी कृमि इच्लिला राजनीम् ।
कावेरी माहेंद्र लोहतरणी पाटलवती कंपिनाम् ॥
चित्रावाह मनुष्गा हेमावीरा सुप्रयोगापवित्रां ।
कुशचीरा विनदी चतुंग वेणास हिरण्वती पिंजलां ॥ ३
विश्वामित्रा उपेन्द्रा वहुला मेंना पंचमी कृष्णा च वेणा ।
रथचित्रा कपिंजला च प्रवरा वस्त्रां सुवस्त्रां वरां ॥
सेन्यां कापीसधुस्वां गौरि मकरां नीरंकरा मस्किनीम् ।
कुशधारा पापाहरां महानदी पारावती महा पगाम् ॥ ४
पर्णासा वाराणसी धृतवती हारि श्रवापिच्छला ।
भारद्वाज वृहद्वतीच कपिला शीघ्राच शेणाशिवा ॥
नीला ज्योतिरथा च चित्र शैला ताम्रा चमंदाकिनी ।
वृषभाजाम्बु नदी च ब्रह्मवेद्या सुनसानदी मानवीम् ॥ ५
लोहित्या करतोय अम्बुवाहिन मद वाहिनी मंदगा ।
महागौरी चित्रोत्पला दुर्गा शुक्तीमती मानवी ॥
वैतरणी तमसा जनाधिप नदी कृष्णा कुवीरा स्तथा ।
रोहीचित्ररथा मनंग पुण्या कोशां तथा ब्राह्मणी ॥ ६

भारत के म्लेच्छ खंड के देश तथा पहाड़ों के नाम तिसमें यूरप खंड के देश वड़े वड़े तिनके नाम वर्णनं

इंगलैण्ड स्कोट अयर स्वीडन नोरवे डेनमार्क प्रशियापुरी ।
एशिया होलेंड आइस फ्रान्स वेलजियम स्वीटजरलेंड जरमन ॥
टर्की ग्रीस रोमेनिया सरविया स्पेन पोच्युंगेल ओस्ट्रिया ।
नोर्वे इटलीच मालटा सिसली कोर्सिका सार्डेनियां केंडिका ॥ १

नोवाजिमला स्पिटजिवर्गा फ्रांज जोजफ विगाटसा ।
लोफोडन कोलग्यू एजोर्स फेरोजीलेंड लालेडिका ॥
डेगो ओलेंड फ्यूनन तथा वोर्नहोम आई ओनियन् वलयरिक ।
एलेंड साइक्लेंड सईसल बृटेन आईलेंड पेनिन्सुला ॥ २

एशिया के देशों के नाम

चाइना जापान रशिया एनम बरमा अबेरिया इंडिया ।
टर्की श्याम च परशिया च तुरकिश अफगान बेलोचिस्तान ॥
फोरमोसा हैंनन सिलौन साइप्रस वेरियन एंडिमन ।
आरमिनियां मंगोलिया च तिव्वत मंचूरिया कोरिया ॥ १

एफ्रिका के देशों के नाम वर्णनं

दी न्युविया ईजिप्ट ट्यूनिश तथा इलजीरिया जिनिया ।
मोराको एविस्सीनिया ट्रिपोली सहरा सडन् वारवरी ॥
कोलोनी सेनिगेंविया चनैटाल कोगोंजुलू पोर्च्युगीज ।
कोमोरो मेडिगेमकरा सोकोटरा हेलना सिशन रियुनियन ॥ १

अमेरिका के देशों के नाम नौर्थ और सौथ अमेरिका के नाम वर्णनं

यूनाइटेड ग्येटमेला बृटिशमेरिका मेक्सीको सालवाडोर ।
कोष्टारीका निकारेग्युश कोकवर्न मैलविली होडुरासा ॥
नियुफौंडलेंड प्रिंसएवर्ड सौथ एमपटन् कोपवृटिन ग्रीनलेंडो ।
वेनकोवर एलवर्ड प्रिंस आफवेल्स आइलेंडश क्यूकारोलोट ॥ १
कोलंविया ब्रेजिस लापलाटा वेनएजुवीला चिल्ली ओंरोग्वे ।
पेटेगोनियां इक्काडोरपीरु पेर ग्वेग्वियाना दीवोलिया ॥ २

म्लेच्छ खंड की देशों की बड़ी बड़ी नदी के नाम और यूरप की नदियों के नाम वर्णनं

डीनाडवूना पेचोरा वेसर अल्वी विसचुला म्यूज राहिन ।
ओडर आर टेंमस मोसिल लोवर डोरो सीनमेन गेंडियाना ॥
गाडरनक्की वरगेरोनी इब्रोरोहिन टेगस डेन्यू निकारा ।

नीपर थीस म्रूथ यूरल नीष्टर पोइन डेवडोंन लैच वोल्गा ॥ १

ऐशिया देश की नदियों के नाम

लीना यनीसी इरटिस च ओरवी यंसीकियं एमूर रावडी यलो ।
केंवोडिया इंडस गंग यूफ्रेटीज एमू सरडर्या ब्रह्मपुत्र टाइग्रीज ॥१

एफ्रिका देश की नदियों के नाम

वाइढ नाइल सनेगाला जेंवीसीं गेविया निगर ।
चादा आरेंजजो लीवा कोंगो कोरो लुवा लवा ॥ १

नोर्थ अमेरिका देश को नदियों के नाम वर्णनं

मेकंजी सेसक्ट चवन सुनैलसम हेडसन रिवरग्रेटफिस ।
टेन्नोसी सक्किहिन्ना मिस्संसीपी सेंटलेवेरेंस यूकन ॥
ओरकेशस कोलोरे डोरिवोग्रेंडिडीज नोरटी सेक्रेमेंटो ।
कालंवीया मिसोरी इलीनोयज रेडरिवर ओहियोच ॥ १

सौथ अमेरिका देश की नदियों के नाम वर्णनं

ओरीनेको एमेजन तथा यावुरा लापलाटाच नीग्रो ।
यूकायाली मेडीरा इसिक्कीरोरि ओडिया प्लाटप रेना ॥
टोंकेटिंसा युरूगे कोलोरेडो मेगडेलिन परंगे ।
थरटीफोर इज ग्रेट रिवर्स यूनो एस एन एमेरिका ॥ १

यूरप देश के पहाड़ों के नाम

कोकेशस इलवुर्ज यूरप ओपिनाइन्स केरपेथियन ।
वालकेंन केंटब्रियन सुहलकेन पीकश्च स्कोंडियन वियन् ॥
वाल्केनो गाल्डहोपिंग एल्पस कोरलो ग्राम पियनल्वेंल सेविन् ।
वेंनेविंजं चरडाग मोंटपेरे निजहेकला चवैस्नवियस् ॥ १

ऐशिया के पहाड़ों के नाम

एलवुर्ज टोरस क्यूनलेंन कोकेशस । अलटाई हिन्दुकुश कारा-
कोरम । यूरलथिएन शान् स्टेनवो ईहिमालया ॥ १ ॥

अफ्रीका के पहाड़ों के नाम

सहरा लुपाटा एटलिश्च कोंगो, नियुवेल्ड मिलसन् दीकेमिरुन्स ।
एबिस्सीनियन् टेबिल मौंटकीनियां, किलिमंजरो डेकंबर्ग एफ्रिका ॥ १

अमेरिका के पहाड़ों के नाम

पोपोकेटि पिटलरोकी, सेंटइलिया सएलेगनी ।
निस्सीस्सी पीओरिजावा, एकोंकेगुवाच सौराटा ॥
केंवोराजो चएंडीस्च कोटोपेक्सीच एटिसान ॥ १

समुद्रों के नाम वर्णनं

अरेवियन मैडिट्रेनियन रैड, जापान चाईना वहिरिंग गल्फकसी ।
केस्पेनियन वालटिक नौर्थ सौथसी, करेबियन ह्वाइटसी एडरियेटिक ॥ १
ओखोटस एरल सीमारमोरा आइरिश्च केमेसकेट कायलोसी ।
सीअर्चिपेलोगो सीडेडसिप्लाटन, शीसोर्ट एवोज साएंडसेलवस ॥ २

आगें जीते वा मरे हुये मनुष्यों के मांस खाने वाले ऐसे अनार्य असभ्य देशों के नाम वर्णन लिख्यते

वरवर गालाच गानची तलावालसी मौनव हूकनोरी ।
दावल्ला बीनाय कोचहिनका पंगोइ ओंगोस्तथा ॥
दानाकेल नयानयाम अक्काडमरा मनीमास्तथा ।
लाटोकाच शलूक देशढामी देशा अनार्याफ्रिका ॥ १
पापुवाद्वीप सौमाट्टा, न्यूब्रिटेन न्यूहेब्रीडीज ।
न्यूजीलेंड फिजीद्वीपा, फार्मोसाच असाभ्यका ॥ २

देखो वहुत से देशों में दिन रात्रि भारत की तरह नहीं होती कमती वढ़ती होती है सो वर्णनं

आइसलेंड में चौविस घंटे दिन हो चौविस घंटे रात ।
इंग्लेंड में दिन सोलह घंटे सोलह घंटे की हो रात ॥
मेडरिड में पनरह घंटे का दिन हो नव घंटे की रात ।
पेलिस्टाइन दिन साढे तेरह घंटे साढ़े दश की होवै रात ॥ १

उत्तर दक्षिण केन्द्र स्थान में छह महीने दिन का परमान।
छह महीने की रात्रि जु होवै इसमें संशय कुछ मत मान ॥
स्पिटजिवर्ग दिन चतु महिने का रात जु महीने चार प्रमान।
नोर्थ केप दिन दो महिने का दो महिने की रात्रि सु जान ॥ २

इतिहासक वार्ता, यादगारी रखने लायक संवत् १६५८ में जो मनुष्यों की संख्या हुई तथा नगर ग्राम घरों की संख्या इस भारत में हुई सो सर्व वर्णन लिखते हैं

संवत उगनीस सै अट्ठावन जन संख्या भारत उरधार।
उनतिस कोड लाख तेतालिस बासठ सहस छसै छहतार ॥

इनमें सर्व स्त्री कितनों हैं सो वर्णन

स्त्री इनमें चौदह किरोड़ है लाख चवालिस आठ हजार।
नौसै ग्यारह ऊपर धारो आगें नर संख्या उच्चार ॥ १

इनमें पुरुष कितनें

चौदह कोड लाख निन्यावन त्रेपन सहस सात सै जान।
अरु पैंसठ संख्या नर जानौ इनमें कितने ग्राम रहान ॥ १

इनमे से ग्रामों में रहने वाले कितनें

छब्बिस कोड लाख इक्यावन छतिस सहस तीन सै जोन।
अरु बासठ ऊपर उरधारौ आगें नगरी जन सु कहान ॥ २

इनमें से नग्र में रहने वाले कितने

दोय कोड अरु लाखजु बावन छब्बिस सह तीन सै जान।
अरु चौदह नगरी जन संख्या आगे नगरी ग्राम वखांन ॥ १

देखो नगर कितने और ग्राम कितने इस भारतवर्ष में सो सर्व वर्णन

दोय सहस इक सौ सैंतालिस नगर कहे भारत दरम्यांन।
ग्राम सात लख सहस जु उनतिस आठ शतक त्रय कहै वखांन ॥ २

आगें भारत में सर्व घर कितनें

भारत के जु घरों की संख्या पांच कोड अट्ठावन लाख।

इकतालीस हजार तीन सै पनरह ग्रेह पत्र की साख ।' ३

इनमें से ग्रामों के घर कितनें

इनमें ग्राम घरों की संख्या पांच कोड दो लाख सुभांख ।
सहस पचास चार सै छप्पन कहूँ नगर घर घर अभिलाख ॥ ४

इनमें से नगरों के घर कितने

दोहा—लख पचपन नव्वै सहस, वसु शत उनसठ जान ।
घर संख्या नगरी कहै, भारत सजट प्रमान ॥ ५

आगें भारत मे पाठशाला और पढ़ाने वाले अरु पढ़ने वाले और भाषायें कितनी हैं सो सर्व वर्णन लिख्यते

चाल छंद — इकलख पचपन सहस मदरसे सात सै इकसठ ऊपर जान ।
चार लाख अरु सहस सत्तावन पांच शतक नवशिक्षक जान ॥
चालीस लक्ष सहस चौरासी इकसत तेरह शिष्य पढ़ान ।
भारत में भाषा अरसठ बोली जाय देश परमान ॥ १

देखो इस भारतवर्ष में संवत् ,९५० मे ३१ इकतीस कोड़ प्रजा में एक दिन मे तथा १ साल में इतना अन्न खाया जाता है उसका हिसाब आध सेर रोज के प्रमाण से वर्णनं

उनतालिस लाख अरु सैंतिस सहस पान सै मन तुम जान ।
एक दिन में खाया जाता है भारत में इतना मन धान ॥
एक अरव इकतालिस कोडरु लाख पिचहत्तर मन उर आन ।
एक साल में खाया जाता राज प्रजा में इतना धान ॥ १

देखो एक मनुष्य आध सेर रोज अन्न खावे दो सेर जल पीवे तो पचास वर्ष मे कितना अन्न खायगा अरु कितना पानी पीवेगा तिसका हिसाव वर्णनं

एक मनुष्य पचास वर्ष में नव हजार सेर अन्न खाय ।
छत्तीस हजार सेर जल पीवे छहसै सेर घृत खा जाय ॥
ढाई सै सेर लवण खा जावे और अलाय वलाय ।
तो भी पेट रहै नित भूखा विधना कैसा खड़ा वनाय ॥ १

देखो जिनवाणी पढ़ने के स्थान की कितनी शुद्धता है तो जिनवाणी के लिखने की कितनी शुद्धता चाहिये सो वर्णनं

शास्त्र पढ़न की भूमि खुदाकर सात हाथ तक शुद्ध कराय।
अस्थि चर्ममल आदि दूर कर शास्त्र पढ़न मंदिर बनवाय॥
शास्त्रालय की इतनी शुद्धि तो कैसे शास्त्रनि कूं छपवाय।
हे कलि पंडित तुम्हरी महिमा कहां तक कहूँ कही नहिं जाय॥ १

देखो मुसलमानों के छापे के कुरान का अदब और बिनय

मुसलमान जो देव शास्त्र की मूरति को नहिं पूजे मान।
ते भी बिना वजह नहीं छूते कमर से ऊपर रखें कुरान॥
हों कतार इक सहस ऊंट की प्रथम ऊंट पर रखा कुरान।
बिन न्हायें पिछले जु ऊंट को नहिं छूना यह लिखा कुरान॥ १

देखो कलियुगी अल्पज्ञ पंडितों की महिमा का वर्णनं

केई अल्पज्ञ कलियुगी पंडित पढ़कर न्याय तर्क लंकार।
वैयाकर्ण काव्य साहित्यरु चढ़े मान पर्वत वैभार॥
वीरनाथ के वचन खंड के करते मिथ्या धर्म प्रचार।
धरते द्रोह देव गुरु आगम साधर्मिन सूं वैर चितार॥ १
घर में कौड़ी पास नहीं है कर नहिं जाने कुछ व्यापार।
बन उपदेशक सुना कहानी दे धोका धन ठगें पुकार॥
केई प्रतिष्ठा यंत्र मंत्र कर ठगें धनी को दे फटकार।
केई पेटार्थी जैन शास्त्र को छपा छपा वेचैं बाजार॥ २

देखो भारत अनुशासन पर्व अध्याय १११, १३५, १५३ में शूद्र ब्राह्मण के लक्षण में लिखा है कि वेद वेचे वो भी शूद्र हैं और अन्य मत अनेक पुराणों में तथा स्मृति मे लिखा है

वेद शास्त्र को क्रिय विक्रिय कर ये द्विज पेट भराते हैं।
या देवल के होय पुजारी देव द्रव्य को खाते है॥
धिक् धिक् उनके मनुष्य जन्म को मर कर नर्कहि जाते हैं।

उनको छूकर नहाना चाहिये वे द्विज शूद्र कहाते हैं ॥ १
जो पंडित जन वेदशास्त्र को बेचै उसका पाप वही।
माता कन्या के बेचै जो कुछ पाप लगै जु सही ॥
वही पाप बेचैं शास्त्रन को इसका प्राश्चित नहीं।
जो कुछ दुख हो उन्हें नर्क में कहने कौन समर्थ मही ॥ २

श्लोक—मातु विक्रियने पापं कन्याविक्रियने तथा।
वेदविक्रियने पापं प्राश्चितंन लच्यते ॥ १

यह श्लोक भारत का है।

आगे देखो वेदशास्त्र के बेचने का कितना बड़ा पाप है
स्कन्द पुराण प्रभास खंड अध्याय २८७ मे

वेदविक्रियकर्तारं, पृष्ठ्वास्ननंविधीयते।

अर्थ—जो वेदशास्त्र कूं बेचता है उसको छूकर नहाना चाहिये।

ब्रह्म हत्या समं पापं, न भूतं न भविष्यति।
वरंकुर्वभ्रुचंदेवि, न कुर्याद्वेद विक्रयम् ॥ १

अर्थ—हे देवी ब्रह्म हत्या बराबर कोई पाप हुआ न होयगा। इसके करने से भी वेद के बेचने वाले कूं बड़ा पाप होता है इस वास्ते वेद कूं नही बेचना।

हत्वागांश्च वरंमांसं, भक्षयीत द्विजाधमा।
वरंजी वेत्समंम्लेछे, नकुर्या द्वेद विक्रियम् ॥

अर्थ—गाय का मांस खाने से भी वेदशास्त्र के बेचने का पाप ज्यादा है। देखो अन्य मतावलंबियो के भी पुराणों में वेदशास्त्र के बेचने का बड़ा भारी पाप है इसलिये जैनियो के वास्ते भी शास्त्र का बेचना ठीक नहीं है।

जैन महोत्सव मे अन्य मतावलंवियों से तकरार क्यों

हम जैनी लोग भागवत ग्रन्थ के अनुसार उनके लिखे मूजब ऋषभदेव की मूर्ति मानते हैं। फिर वह लोग जैन लोगों से झगड़ा क्यों करते हैं।

देखो खुलासा हाल नीचे लिखे मूजब बड़े आश्चर्य की बात है

श्री भगवान् नारायण ने श्री नाभिराजा की रानी मरु देवी के गर्भ में आकैं संसारी जीवों को सर्व दुख से छुड़ाने को और मोक्ष-धर्म अर्थात् पूर्ण सुख मार्ग बताने को ऋषभनाम धार के अवतार लिया। वो ऋषभदेव ने संसार को असार जान के नग्न दिगम्बर मुद्रा धार के धर्म अर्थ काम मोक्ष का उद्योत किया जिस ऋषभदेव की कीर्ति नाभि खंड किंपुरुष खंड हरि वर्ष इलावृतखंड रम्यक है रएय श्री भद्राक्ष कुरु खंड केतुमाल खंड नोखंड के लोग गाते है। जिनकी मल की सुगंध ४० कोस तक फैलती थी। ऐसे श्रीमान दिगम्बर ऋषभदेव की मूर्ति का भागवत अनुसार जैनी विमान निकाल के उत्सव करते हैं। उस उत्सव में अनेक जाति के लोग मिलकर सरकारी राज मार्ग में बड़ा भारी झगड़ा और विघ्न करते है। क्या वह लोग नहीं जानते कि ये ऋषभदेव की मूर्ति साक्षात् विष्णु की मूर्ति है। साढ़े बाइस कोड़ मनुष्य भागवत का नाम जानेते है। फिर भी ऋषभदेव की मूर्ति जो विष्णु की मूर्ति है उसे देखकर उस पर पत्थर फेंकते है दंगा फिसाद करते हैं यह बड़े आश्चर्य की बात है। क्या उन लोगों को नारायण का भय नहीं जो जल थल नभ में व्याप्त हो रहा है।

ऋषभदेव ही मोक्षमार्ग का ईश्वर है ऐसा भागवत पांचवे स्कंध में लिखा है

छंद—नारायण नैं मरुदेवी के गर्भ मांहि अवतार लिया।
ऋषी तपस्वी ब्रह्मचर्य अरु धर्म दिगम्बर प्रगट किया॥
ऋषभदेव भगवान साक्षात् ईश्वर होके दर्श दिया।
धर्म अर्थ काम मोक्ष का घर घर में उद्योत किया॥ १
ऋषभदेव ही मोक्षमार्ग विधि दर्शावन अवतार लिया।
कोइ योगि नहिं ऋषभदेवसम नग्न होय तन शुष्क किया॥
जिसके मल की दश योजन तक उड़ै गंध सुख होय जिया।

जे जिय ऋषभदेव गुण गावैं तिनही का है धन्य हिया ॥ २
ऋषभदेव अवतार विष्णु का जैनी पूजैं हर्ष हिय धार।
उसी ऋषभ का उत्सव करते सब मिल जैनी सरे बजार ॥
कोई बात अनुचित नहीं करते ऋषभाज्ञा को उर में धार।
ऐसे ऋषभोत्सव में क्यों सब अन्य लोग करते तकरार ॥ ३
जिस मार्ग में सर्वजातिगण निजनिज उत्सव करै अपार।
उसी मार्ग में जैनी जन भी ऋषभोत्सव करते रुचिधार ॥
उस ऋषभोत्सव में हे सज्जन क्यों झगड़ा करते विस्तार।
क्या तुमने नहीं सुनी भागवत ऋषभदेव का चरित अपार ॥ ४
ऋषभदेव अवतार अष्टमा लिखा भागवत ग्रन्थ निहार।
नग्न होय श्री ऋषभदेव ने मोक्षमार्ग का किया प्रचार ॥
ऋषभदेव भगवान साक्षात ईश्वर हो लिया अवतार।
नो खंड में ऋषभदेव का उत्सव करते हर्ष अपार ॥ ५
पूर्वकाल में बड़े बड़े ऋषि नृप ब्राह्मण नमते रुचि धार।
श्री शुकदेव ऋषी ने भी स्तुति नमन किया ऋषभा अवतार ॥
जैनीजन भी उसी देव का उत्सव करते हर्ष अपार।
ऐसे ईश्वर उत्सव में अब तुमको नहिं चाहिये तकरार ॥ ६
दुनिया में कोई ऐसी जाति नहीं अपने देवगुरू अपकार।
तिस पर भी श्रीमन्महाराजा क्या हुक्म देते दरबार ॥
कोई जाति में कोई मजहब में कभी न झगड़ा करै प्रचार।
अगर हुक्म को जो नहिं मानैं कठिन दंड दे न्याय विचार ॥ ७

जैनमत के माफिक ही परमत मे लिखा है फिर आपस में लड़ते क्यों

धर्म ग्रहस्थी का जु जैनमत वैसा ही भारत स्मृति जान।
जो साधू का धर्म जैनमत वैसा ही है वेद पुराण ॥
जो उपाय संसार तिरण का जो जिनमत सो परमत जांन।
क्यों तुम लड़ते जैन जाति से देखो अपना शास्त्र महान ॥ १

जो जैनी के त्याग ग्रहण है वा दशलक्षण धर्म महान।
जो अभक्ष है जैन शास्त्र में वैसा ही अठ दश जु पुराण ॥
जो जैनी के लक्षण जिनमत वैसे ही वैष्णव जान।
क्या दूषण है जैन मार्ग में सोचो अब तुम कृपा निधान ॥ २

दुर्जन लोग और के सुखकूं देख अपने दिल में दुख मानते हैं

सज्जन को देखकर दुर्जन करत कोप ब्रह्मचारी देख कामी कोप करै मनमें। निशि जगैया कों देख कोप करै जार चोर धर्मवंत देख पापी जल उठै मनमें। सूरवीर देखकर कायर करत कोप कविता को देख मूढ़ हांसी करै जनमें धनके धनी को देख निर्धन करत कोप विना ही निमित्त खाक डारै तिहुँ पन में ॥ १ ॥

दुर्जनों का कैसा सुभाव है गुण कूं छोड़ औगुण ग्रहण करते हैं

दुर्जन कालिम ना तजै यद्यपि राख्यौ प्यार।
दूधजु धोया कोयला, होय न उज्वल यार ॥ १
दुजन हृदौ शुद्ध नहीं, लाख करौ जो कोय।
जैसे पानी पंथ को कभी न निरमल होय ॥ २
दुर्जन गुण गण छांड़ कै, औगुण पकड़ै धाय।
द्राक्षा वायस छोड़ कै, जाय निंबोली खाय ॥ ३
दुर्जन गुण गण छांड़ि कै, औगुण पकड़ै धाय।
शूकर षट् रस छांड़ कैं, विष्ठा भखे अघाय ॥ ४
दुर्जन जन संसार सो, मन वच जानौं एहि।
अपनी चाल उपाड़ कैं, पर बंधन जु करेहि ॥ ५
क्यारी करो कपूर की, मृग मद वरहा बंध।
लेय सुधा रस सींचिये, लेहसन न छोड़त गंध ॥ ६
जैसो फूल कनैर को, तैसो दुर्जन जान।
दीखत तो सुभसो लगै, अन्तर औगुन खान ॥ ७
नीम कड़क दुर्जन जिसो, सज्जन अंबु समान।

तातैं सज्जन सेव मन, ज्यों पावो सुख थांन ॥ ८

आक दूध सम दुष्ट है, आंख लगे दुख होय।
तातैं मन तज संग तू, दुर्जन भलो न होय ॥ ६

करै बबूल सुगंध हैं, चंदन संगत पाय।
तोपन सहज सुभाव की, कंटकता नहिं जाय ॥ १०

ब्रह्मा ने सब उपाय दुनियां मे बनाये पर दुर्जन की दुष्टता छुड़ाने का कोई उपाय न किया

वारिथ के तिखे कूं बोहित विधाता कियो। सरिता उतरिवे कूं नवका बनाई है। तम के नशायवे कूं दीपक सम्हार धरो रोग के नशायवे कूं औषधि बनाई है। धाराधर ध्वंसवे कूं मन्दिर अटारी धाम। और अशुभ से राखवे कों कीनी शुभ ठाई है। एती विध दुर्जन के चित्त वृत्ति हरवे कूं उद्यम भगन भयो विधना की दुहाई है ॥ १ ॥

संसार में सब मतलब के आदमी हैं

मतलब के सब आदमी मतलब विना न कोइ। जब जाको मतलब हुये तबहि दूर है सोइ ॥ १ ॥ मतलब तब लग होत है, जब लग करमें दाम। पीछे कोइ न आवही, ज्यों सूके सर ग्राम ॥ २

सब पुष्पों मे नारायण हैं अये माली हार किसके लिये बनाता है

विश्व वाटिका की प्रति क्यारी में क्यो नित नित फिरता माली।
किसके लिये सुमन चुन चुन कर सजा रहा सुन्दर डाली ॥
क्या नहीं देखता इन सुमनों में इसका प्यारा सुन्दर रूप।
जिसके लिये सुमन चुन चुन कर हार गूंथता तू अयरूप ॥ १

बीजांकुर शाखा प्रति शाखा क्यारी कुं जलता पत्ता।
कण कण में है भरी हुई उस मोहन की मधुरीसता ॥
कमलों का कोमल पराग विकसित गुलाब की यह डाली।
सनी हुई है उसमें सारे विश्व बाग की हरियाली ॥ २

हार गूंधकें कहां जायगा उसे ढूंढ़ने तू माली।
देख इन्हीं पुष्पों के अन्दर उसकी सूरत मतवाली॥
रूप रंग सौरभमय राग में भरा उसी का प्यारा रूप।
जिसके लिये सुमन चुन चुन कर हार गूंथता तू अय रूप॥ ३

स्त्रियों का शृंगार है तो पति ही है

आधार नारियों का जो अगर है तो पती है।
शृंगार नारियों का अगर है तो पती है॥
सुख वर्ग स्वर्ग स्त्रियों का अगर है तो पती है।
जो कुछ भी स्त्रियों का सर्वस्व पती है॥

मरने के पीछे रोना धोना सब व्यर्थ है

होनी थी वह हो चुकी, अब व्यर्थ ही के लिये अब यह रोना धोना है। आँसू से भिगोना वस्त्र खोना समय का वृथा यही गति एक दिन सब ही का होना है। बिना सीक देह के वास्ते न रोना इष्ट यह तन मानौं मट्टी का खिलौना है। मूर्तिकार मूर्ति को बिगाड़े योंही नित्य प्रति बनाता नमूना नित्य दूसरा सलौना है॥ १

होली वोही ठीक है जिसमें अज्ञान अविद्या की धूल उड़ाई जाय

होली जली तो क्या जली पापिन अविद्या नहिं जली।
आशा जली नहिं राक्षसी तृष्णा पिशाचन नहिं जली॥
ममता जली नहिं आह की, दुषकरन ईर्षा नहिं जली।
माया जली नहिं जिगर की होली जली तो क्या जली॥ २
नहिं धूल डाली दंभ पर नहिं दर्प में पनहा दिये।
अभिमान की दुर्गतिन की नहिं क्रोध में घूंसे दिये॥
अज्ञान को गर्दभ चढाकर मुख नहीं काला किया।
ताली न पीटी काय की तो खेल होली क्या किया॥ २
होली हुई जब जानिये, संसार जलती आग हो।
सारे विषय फीके लगैं नहिं लेश उनमें राग हो॥

सुख शान्ति कैसे प्राप्त को निस दिन यही चितलाग हो।
संसार दुख कैसे मिटै किस भांति दिल बेदाग हो॥ ३
होली हुई तब जानिये, श्रुति वाक्य जल में स्नान हो।
विक्षेप मल सब जाय धूल निश्चित मन अमलान हो॥
शोकाग्नि बुझ निर्मूल हो शुभ बोधि निरमल शांति हो।
शीतल हृदय आनंदमय तिहुँ ताप की पूर्णान्ति हो॥ ४
होली हुई तब जानिये सब दृश्य जल कर छार हो।
अज्ञान की भस्मी उड़ै विज्ञान मय संसार हो॥
हो मांहि हो लवलीन हो तब अर्थ होली सार हो।
बाकी बचै सो तत्व अपना और सब बेकार हो॥ ५
ये ही असल होली हुई, भ्रम भेद कूडा बह गया।
नहिं तू रहा नहिं मैं रहा था आप सो ही रह गया॥
अद्वैत होली चित्त देकर नित्य जो नर गायगा।
निश्चय अमर हो जायगा फिर गर्भ में नहिं आयगा॥ ६

सुख को कहां ढूंढता है तू, तेरा सुख तुझमें ही है तू देख

सुख को कहां ढूंढ़ता है तू आप सुख भंडार है।
तेरेहि सुख आभास को सुख मानता संसार है॥
तज दे विषय सुख यदि तुझे कल्याण अपना इष्ट है।
हे श्रेष्ठ से भी श्रेष्ठ तू पर चाह करके भ्रष्ट है॥ १
धन किस लिये चाहता है तू आप मालोमाल है।
सिक्के सभी तुझसे बने तू वह महा टकसाल है॥
ऐश्वर्य क्यों चाहता है तू ईश का भी ईश है।
तेरे चरण की धूल पर ब्रह्मा झुकाता शीश है॥ २
क्यों तू प्रतिष्ठा चाहता है, तू खुद प्रतिष्ठारूप है।
सुर सिद्ध मुनि जितने प्रतिष्ठित सर्व का तू भूप है॥
इस देह के अभिमान कर तू होयगा पापिष्ठ है।

है श्रेष्ठ से भी श्रेष्ठ तू ही पर चाह करके भ्रष्ट है ॥ ३

अन्तरंग का भाव इन आँखों में ही मालूम पड़ता है

जिस मन को मैं ढूँढ़ रहा था मिला न मुझको लाखों में।
वह मूर्तिमान हो दिखता है बस एक तुम्हारी आंखों में ॥
जो भाव भरा रहता है अंदर वह लक्षित होता लाखों में।
छिपता नहीं छिपाये भी जो रंग झलकता आखों में ॥ १

स्त्री कहती है संसार में बड़े अवतार तथा पैगंबर ऋषी और राजा मुझसे हुये

अवतार सब मुझ से हुये नवी सब मुझसे हुये।
पंडित मुनी ज्ञानी कवी गुणी कृवि पेट मेरे से हुये ॥
मम उदर से हुये दानी धीर वीर वृती हुये।
सिद्धांत ज्ञाता चक्रवर्ती शूर वीर वली हुये ॥ १
जो मुझे स्त्री जानता वो तीन तेरह होयगा।
नारी मुझे जो जानता वह नर्क दुख में रोयगा ॥
वामा मुझे जो जानता उलटा उसे लटकावती।
स्वनादि नीची योनि में वहुभांति में भटकावती ॥ २
माता मुझे जो जानता सुखशांति से वह सोयगा।
भगनी मुझे वह जानता वो भाग्यशाली होयगा ॥
बेटी मुझे जो जानता सबका जनक हो जायगा।
वो श्रेष्ठ उत्तम होयगा संसार से तिर जायगा ॥ ३

ब्राह्मण के क्या लक्षण हैं वेद पुराण अनुसार

ब्राह्मण के मायने है ब्रह्म ज्ञान जानना।
चैतन्य रूप आत्मा को ब्रह्म मानना ॥
सत्य वचन बोल जीव दया पालना।
काम क्रोध लोभ मोह शोक टालना ॥ १
शम दम शील दान विनय जु करना।
निंदा स्तुति में न राग द्वेष न धरना ॥

गाली न देना कोइ को नहिं कोइ सताना ।
परोपकार करने में नहिं दिल को हटाना ॥
इस राह पर चलने से ब्रह्मजाति कहाना ॥ २
विद्याध्ययन करना सन्तोष धरना ।
क्षमा धर्म भक्ति प्रीत गुण विचारना ।
मद्यमांस मधु अभक्ष न खाना न खिलाना ॥
जुवा कुशील चुगली नहिं करना कराना ।
इस राह पर चलने से ब्रह्म जाति कहाना ॥ ३
अज्ञान पापियों को धर्म मार्ग बताना ।
निंदा न करना कोइ की पर रोब छुपाना ॥
दुखियों को दुखी देख उनके दुखको मिटाना ।
यह धर्म ब्राह्मण का फिर मुशकिल से मिलाना ॥
इस राह पर चलने से ब्रह्म जाति कहाना ॥ ४

हिन्दू किसे कहते हैं हिन्दू के क्या माइने

हिंसा को दूर करते वह हिन्दू कहाते ।
हिन्दू के माइने हैं हिंसा न कराते ॥
कटते छिदते देख जिय के प्राण बचाते ।
तन धन भी खरच करके उनक दुख से छुड़ाते ।
इस राह पर चलते हैं वो ही हिंदू कहाते ॥ १
मंत्रौपधि यज्ञ में नहिं जीव वधाते,
कुर्बानियां शिकार में नहिं जीव सताते ।
कोई देवी देवता पै कभी चैंटी न मराते ॥
अपने हि प्राणके समान सब जियको बताते ।
इस राह पर चलते हैं वोही हिंदू कहाते ॥ २
अहिंसा की बराबर न कोई धर्म बताते,
दया परोपकार में सब धन को लगाते ।

सभ्यता गुणज्ञता वो सबको सिखाते ॥
नम्रता कृतज्ञता की राह बताते ।
इस राह पर चलते है वोही हिंदू कहाते ॥ ३
हिंसारु झूठ चोरी नहिं करते कराते,
जुवा कुशील मद्य नहिं पीते पिलाते ।
आपस में प्रीत करते नहिं झगड़ा कराते ॥
परमात्मा की आज्ञा में मन को लगाते ।
इस राह पर चलते हैं वोही हिंदू कहाते ॥ ४

देखो पराधीनता तथा चाकरी में बड़ा दुख है

नौकरी खांड़े की धारा करना पड़ता पेट वास्ते बेचै सुख सारा ।
लाख काम अच्छा करने पर मिलती फटकारा ॥
मालिक की हां में हां निश दिन करते मनु हारा ।
नोकरी खांड़े की धारा करना पड़ता पेट वास्ते बेचै सुख सारा ॥ १
ना करदे तो जाय चाकरी हां में अपकारा ।
सांप छछूंदर की सी गति होवै दुख दे अतिभारा ॥ नौ० ॥२
काला अक्षर भैंस बराबर हो गये सरदारा ।
पेट के खातिर कहना पड़ता जी हां सरकारा ॥ नौ० ॥३
धोबी के घर की ज्यों मेहनत करते दिन सारा ।
तो भी त्योरी बदली रहती हरदम ललकारा ॥ नौ० ॥४
काम पड़ै खरच जु मांगै उत्तर इनकारा ।
रात दिन चिंता में कटता नौकर पर चारा ॥ नौ० ॥५
पराधीन नौकर का जीवन धिक धिक संसारा ।
जहां तक बनै हुनर तुम सीखो अथवा व्यापारा ॥ नौ० ॥६

जो कुछ काम करो सो विचार कर करना चाहिये

बिना विचारे जे करैं, ते पाछे पछताय ।
काम बिगाड़ै आपनो, जग में होत हंसाय ॥ १

खाना पीना विचार करकैं, लैना दैना विचार कर।
जाना आना विचार करकैं, कहना सुनना विचारकर ॥ २
जगना सोना विचार करकैं, हंसना रोना विचारकर।
क्रोध जु करना विचार करकैं, क्षमा जु करना विचार कर ॥ ३
शत्रु मित्रता विचार करकैं, दान मान कर विचार कर।
क्रिय विक्रय कर विचार करकैं आमद खरची विचार कर ॥ ४
धर्म कर्म कर विचार करकैं, त्याग ग्रहण कर विचार कर।
जपतप करना विचार करकैं, देह कार्य कर विचार कर ॥ ५

संवत् १९८८ की मनुष्य संख्या का वर्णन

संवत उन्नीस सै अट्ठासी जन संख्या भारत दरम्यान।
पैंतीस कोड लाख उनतीसरु सहस छब्बीस आठ सौ आन ॥
और छिहत्तर ऊपर धारौ ये स्त्री पुरुषों की संख्या जान।
अब स्त्री पुरुषो की भिन्न भिन्न कर संख्या लिखूं गजट परमान ॥ १
स्त्री इनमें सतरा करोड़ है लाख जु खट चौंसठ सहस्रान।
नौ सै बासठ ऊपर धारो आगे लिखूं पुरुष परमाण ॥
पुरुष अठारह कोड लाप उन्नीस सहस इकइस उर आन।
नौ सै चौदा ऊपर जानौं ये स्त्री पुरुषों की संख्या जान ॥ २

हिन्दू मुसलमानों की अलग अलग संख्या कितनी सो वर्णन

इस भारत में हिन्दू तेईस कोड तिरासी लाख सुजान।
तीस सहस नौ सै बारह हैं, आगे मुसलिम संख्या आन ॥
सात कोड़ अरु लाख सतहत्तर सहस ब्यालिस नौ सै मान।
अरु अठाइस ऊपर धारौ, इतने हिंदू और मुसलमान ॥ ३

॥ इति० ॥

श्री वाल ब्रह्मचारी पंच कुमार श्री वासु पूज्य स्वामी मल्लनाथ, नेमनाथ, पार्श्वनाथ, महावीर पूजा लिख्यते। प्रथम स्थापना छंद इकतीसा

त्याग के विमान स्वर्गलोक के सु यहां आन। गर्भ के छै मास पूर्व वरसी मणिधार जी। जन्मोत्सव समय जान इन्द्रादि देव आन ले गये सुमेर स्नान क्षीरोददि वार जी। सची कियो शृङ्गार आन फेर लाय पिता स्थान इन्द्र कियो नाट्य आन सभा चमत्कार जी। राज भोग अथिर जान वन में जाय धरो ध्यांन। ऐसे यह कुमार पंच करो मोहि पार जी ॥ १ ॥

ॐ ह्रीं श्री वासुपूज्य मल्लिनाथ नेमनाथ पार्श्वनाथ महावीर जिनेन्द्रेभ्यो अत्रावतरावतर संवौषट्‌ह्वाननं अत्र तिष्ठ. तिष्ठः ठः ठः। अत्र मम सन्नि-हितो भव भव वषट् सन्निधीकरणं। गीता छन्द। अष्टक।

पद्मद्रह कौ नीर निर्मल कनक झारी मैं भरूं।
जन्म मृत्यु जरा विनाशन पूज त्रय धारा करूं॥
वासु पूज्य सुमल्लि स्वामी नेम पारस वीर जी।
संसार पारावार सु मोहि तारिये प्रभु तीर जी ॥ जलं ॥१
संसार ताप दहंत मोकूं क्षणक सुख नहिं देय ही।
ताके नशावन पूज्य मैं घनसार चंदन ले यही॥ वासु० चन्दनं ॥२
अंजुली के नीरवत संसार सुख क्षय जान के।
अक्षय सुख के प्राप्तकारण पूजूं अक्षत आन के॥ वासु० अक्षतं ॥३
अन अंगनै अतिवली योधा जैर कीने चरण मैं।
ताके नशावन पुष्प ले आयो तुम्हारी शरण में॥ वासु० पुष्पं ॥४
यह क्षुधारोग सुप्रवल जग में अहर्निश दुख देत है।
ता सुधा चरूं से चरण पूजूं क्षुधा नाशन हेत है॥ वासु० नवेद्यं ॥५
मोहांधतम कर जगत प्राणी स्वपर भेद न जान ही।
तम मोह पटल उड़ायवे कौ दीप पूजा ठानही ॥वासु० दीपं ॥६
संसार में यह करम ईंधन ताहि दुखदा जान कैं।
वसु कर्म काष्ठ जलावने कूं धूप खेऊं आनकैं॥ वासु० धूपं ॥७

फल पक्क प्रासुक लेय के तुम चरणन के आगै धरूं।
हे नाथ अविचल स्थान दीजै जगत के दुखसूं डरूं ॥वासु० फलं ॥८

अंबु चंदन शालि उज्जल पुष्प चरु ले दीप ही।
धूप फल मिल अर्घ कीजे नाय कर मस्तक मही ॥वासु० अर्घं ॥६

दोहा—पंच कुमार जिनेन्द्र के पंच कल्याणक सार।
तिन को मैं वंदन करूं हृदय हर्ष उर धार॥

जा प्रभू गर्भ छह मास प्रथम ही नगरी शोभा कर अपार।
वरसाई मणिधार इन्द्र नें राजमहल कीने शृंगार॥
माता षोडस स्वप्ने देखे तब आये प्रभु गर्भ मझार।
वासु पूज्य श्री मल्लिनाथ श्री नेम पार्श्व महावीर कुमार॥

ॐ ह्रीं श्री पंचकुमार वासु पूज्य मल्लिनाथ श्री नेमनाथ पार्श्वनाथ श्री महावीर जिनेन्द्राय गर्भ मंगल प्राप्ताय अर्घं ॥ १

जब जन्मे प्रभु तीन लोक सुख, इन्द्रासन कंपे तिह वार।
सर्व देव सज धज कर आये लेय गये पांडुक वन धार॥
क्षीरो दधि स्नान करा हरि पिता सौंप नाटक विस्तार।
वासु पूज्य मल्लिनाथ श्री नेम पार्श्व महावीर कुमार॥

ॐ ह्रीं श्री पंचकुमार जिनेन्द्राय जन्म मंगल प्राप्ताय अर्घं ॥ २

कोइ कारन कर राज भोग सूं प्रभु उदास हुये तत्कार।
देव ऋषीस्वर आय नाय सिर स्तुति कीनी संसार अपार॥
तबहि देवगण लेय गये बन त्याग परिग्रह दृढ़ तप धार।
वासु पूज्य श्री मल्लिनाथ श्री नेम पार्श्व महावीर कुमार॥

ॐ ह्रीं श्री पंचकुमार जिनेन्द्राय तप मंगल प्राप्ताय अर्घं ॥ ३

तप दुर्द्धर धर ध्यान खड्ग कर, घाति चतुक घाते तत्कार।
तबही केवल सूर्य प्रगट हुए लोकालोक प्रकाशन हार॥
समोसरण दिव्य ध्वनि करकैं संबोधे सुर नर पशु मार।
वासु पूज्य श्री मल्लिनाथ श्री नेम पार्श्व महावीर कुमार॥

ॐ ह्रीं श्री पंचकुमार जिनेन्द्राय केवलज्ञान मंगल प्राप्ताय अर्घं ॥ ४

आर्य देश में कर विहार प्रभु भव्यन को कीने भव पार।
योग निरोध अयोग स्थान चढ़ पंचलघु अक्षर स्थिति धार॥
शेष पिच्यासी प्रकृति नाशकैं हुये सिद्ध अपरं पार।
वासु पूज्य श्री मल्लिनाथ श्री नेम पार्श्व महावीर कुमार॥

ॐ ह्रीं श्री पंचकुमार जिनेन्द्राय मोक्ष मंगल प्राप्ताय नमः अर्घं ॥ ५

पंचकुमार गुणानुवाद स्तुति

अडिल्ल छंद—पंचकुमार महान बालवय तप लिया जगत्स्वरूप विचार राज तिन नहिं किया। भोग उरग सम जान नेह तन तज दिया। ऐसे तीर्थ महान नमत तिनको मैं हिया॥ ६॥

चाल छंद—वय कुमार ब्रह्मचर्य धारियो महान जी। अनंग मद प्रहारियो सुज्ञान बान तान जी। या अनंग ने किये महान अंग जेर जी। सो अनंग भस्म कियो तनक दृष्टि फेर जी॥ ७॥ संसार को असार जान त्याग बालकाल में। भोग सूं विरक्त होय रक्त मुक्ति चाल में। ये कुमार चित्त उदार भावणा विचारिया। मुक्ति की सणी निहार इन सूं प्रीत धारिया॥ ८॥ राज भोग धन सुधान्य इष्ट मित्र सर्व को। अनित्य जान त्याग कैं सुभ्रातृ मित्र वर्ग को। अंबु बुदबुदा समान तीन लोक संपदा। काल पाय नाश हो रहे हैं नहीं कभी कदा॥ ६॥ अशर्णं तोहि शर्णं नांहि तीन लोक में कहीं। इन्द्र चन्द्र औ फनेन्द्र कोई बचा सकै नहीं। कहाँ गये वह चक्रवर्ती विश्नु से महा वली। काल सिंह भक्षियों तो कोई कला नहीं चली॥ १०॥ चतुर गती अपार दुख पाये जीव नेसदा। जन्म मरण आधि व्याधि रोग शोग आपदा। स्वर्ग नर्क नर पशू में भोगे दुख एक ही। मात तात सुत कलित्र साथ कोई तहाँ नहीं॥ ११॥ जन्म मरण त्रास रोग एक ही सहे जहाँ। सब कुटुम्ब इष्ट मित्र देखते रहे तहाँ। तनरु चेतना स्वभाव अन्य अन्य हैं सही तो कलित्र पुत्र धाम कैसे होय एक ही॥ १२॥ सप्त धातु मांस रुधिर मूत्र मल झरै जहाँ। कैसे होय तन पवित्र गंग स्नान से तहाँ। जगत मूल आश्रवा सो कर्म बंध कारणं। पनरह बारह पण पच्चीस योग त्रय विचारनं॥ १३॥ कर्म बंध रोकने को संवर सतावनं। गुप्ति समिति चरित वृष परीषहं सुभावणं। निर्जरा विपाक होय आत्मध्यान ध्याय कै। तप कर अविपाक होय आत्म ध्यान

ध्याय कै ॥ १४ ॥ लोक है अनादि सिद्ध चौदह राजु अक्षयं। कोई कर्ता हर्ता नाहीं द्रव्य पट् चिर स्वयं। बोधि रतन दुर्लभं चतुर गती महार्णवं इस बिना न मुक्ति होय जीव की भवार्णवं ॥ १५ ॥ वस्तु को स्वभाव धर्म सोहि मुक्ति कारणं। धर्म के अनेक भेद चिन्ह दश विचारन। अहमिन्द्र इन्द्र औ खगेन्द्र तीर्थ चक्रि संपदा। ऋद्धि सिद्धि मुक्ति सुख धर्म सूं मिले सदा ॥ १६ ॥ या प्रकार वय कुमारभावना विचारिया। देव ऋषी आय पुष्प चरण शीश धारिया विनय वच कहे सुनाथ व्रत महान धारिये। शुक्ल ध्यान खड़ा लेय घातिया संहारियै ॥ १७ ॥ स्वय बुद्ध हो प्रभु पे हम नियोग कारणं। सूर्य की प्रभा समीप दीप की उजारन। देव ऋषी कर प्रणाम गये सुआप धामकों। फेर चतु प्रकार देव आय किय प्रणाम कौ ॥ १८ ॥ बैठाय पालकी प्रभु को ले गये उद्यान मे। त्याग सब विकल्प को लगे सुआत्म ध्यान में। शुक्ल ध्यान खड़ा धार घाति चतुक नाशनं। दशाष्ठ दोप भस्म करके केवलं प्रकाशनं ॥ १९ ॥ समवशर्ण की सभा में दिव्य ध्वनि प्रभापणं। लोक त्रय त्रियकाल द्रव्य सप्त तत्त्व शासनं। धर्म के स्वरूप सुनकैं सर्व जन प्रफुल्लितं। केई हुये महाव्रती मुके ई धर अणुव्रतं ॥ २० ॥ अनेक आर्य देश मे विहार आपनें किया वच पियूष वृष्टि करकै प्राणी तृप्त कर दिया। योग को निरोध फिर अयो पद प्रकाशिया। कर्म की पिच्यासी शेप प्रकृति सर्व नाशिया ॥ २१ ॥ समय एक मांहि आप अष्टमी धरा गये। निराकार निर्विकल्प सुख अनन्त परनये। हे कुमार गुण अपार पारावार हुये सही। इन्द्र शी समर्थ नांही कौन कहि सकै मही। २२ ॥ तातैं हे कृपाल अर्ज मेरी सुन लीजिये। जबलूं न होय मुक्ति हृदय पूर्ण भक्ति दीजिये। याचे वरदान रमाचंद्र शीश नाय कै। दीजिये दयाल नाथ उरमें हर्षाय कै ॥ २३ ॥

घत्ता छंद—श्री पंच कुमारं शीलागारं मदनविदारं भयहारं। शिव तिय भर्तारं सुख कर्तारं अमित अपारं गुणधारं। जग भ्रम हर्तारं अरि संहारं धर्माधारं दातारं। क्षमावतारं दोप प्रहारं दया प्रचारं शिवकारं ॥ २४ ॥ महार्घं ॥

सोरठा

ऐसे पंच कुमार, जे भविजन पूजें सदा सुरनर सुख अपार। भोग मुक्ति स्थानक लहैं। आशीर्वाद।

❀ इति संपूर्ण ❀

षट लेश्या

दोहा—भव बन भटकत पथिकजन, हाथी काल कराल। पीछे लागो हो दुखित, पड़ो कूप विकराल ॥ पकड़ शाख वह वृक्ष की, लटको मुह फैलाय। ऊपर मधु छत्ता लगा, पड़ी बून्द मुँह आय ॥ निश-दिन दो चूहे लगे, काटत आयू डाल। नीचे अजगर फाड़ मुख है निगोद भव जाल ॥ चार सर्प चारों गति, चारों ओर निहार। है कुटुम्ब माखी अधिक, चाटत तन हर बार ॥ श्री गुरु विद्याधर मिले, देख दुखी भव जीव। हो दयाल टेरत उसे, मत सह दुख अतीव ॥ बूंद मधू हैं विषय सुख, ताके लालच काज। मानत नहीं उपदेश को, कर रह्यो आत्म अकाज ॥ आयु डाल कुछ काल में, कट जावेगी हाय। नीचे पड़ बहु काल लों, भुगते फल दुखदाय ॥ माया क्रोध अरु लोभ मद, है कषाय दुखदाय। तिनसे रंजित भाव जो, लेश्या नाम कराय ॥ षट् लेश्या जिनवर कही, कृष्ण नील कापोत। तेज पद्म छटी शुक्ल, परिणामहिं ते होत ॥ कठियारे षट भाव धर, लेन काष्ट को भार। वन चले भूखे हुए, जामन वृक्ष निहार ॥ कृष्ण वृक्ष काटन चहै, नील जु काटन डालु। लघु डाली कापोत उर, पीत सर्व फल डाल ॥ पद्म चहे फल पक्व को, तोड़ खाऊं मैं सार। शुक्ल चहे धरती गिरे, लू पक्के निरधार ॥ जैसी जिसकी लेश्या, तैसा बांधे कर्म। श्रीसद्गुरु संगति मिले, मन का जावे भर्म ॥ २

कुदेव वन्दन का फल

दोष रहित सर्वज्ञ प्रभु, हित उपदेशी नाथ। श्री अरहंत सुदेव हैं, तिनको नमिये माथ ॥ रोग दोष मलकर दुखी, है कुदेव जग रूप। तिनको बन्दन जो करे, पड़े नर्क भव कूप ॥

कुगुरु वन्दन फल

अंतर बाहर ग्रन्थ नहिं, ज्ञान ध्यान तप लीन। सुगुरु छोड़ कुगुरु नमे, पड़े नर्क में दीन ॥

कुशास्त्र वन्दन फल

आत्मज्ञान वैराग सुख, दया क्षमा सत शील। भाव नित्य उज्वल करे, है सुशास्त्र भव लीन ॥ राग द्वेष इन्द्री विषय, प्रेरक सर्व कुशास्त्र। तिनको जो वन्दन करे, लहै नर्क विट जाय ॥

मद्यपान का फल

जो मतवाले होत हैं, पीपल मधु दुखदाय। उन्हें पिलावत नर्क मे तातो लाल तपाय ॥ और चढ़ावत शूली पै, नरक निवासी क्रूर। इस भव पर भव मद्य हैं, दुखदाई भरपूर ॥ ३

मांस भक्षण का फल

आज अंगन से यह करे, औरन के तन खण्ड। तिन अंगन को नरक में करहिं असुर शत खण्ड ॥ मांस प्राणि भंडार है, निर्दय घात सदीव। तन रोगीकर मरत है, होवे नारकी जीव ॥ ४

मधु सेवन का फल

मधु भक्षण के पापते, पड़े नरक में जाय। भोग दुख चिरकाल लौं, लहै अधिक संताप ॥ मधु भक्षणते जीव की, दया दूर भगि जात। पाप थके संयोग ते, सम्यकदर्श नशात ॥ ५

नशीली वस्तुओं के सेवन का फल

अग्नि के अंगार ले गांजा, तम्माखू चर्स। धर भरी पीयी चिलम, हुका पै धर हर्ष ॥ ते नारकीन की भूमि में उपजे घृणित अघोर। तावो खूब तपाय के पाये असुर कठोर ॥ ६

आत्म घात का फल

आत्म घाती को लखो कैसो होत हवाल। हनवे को हुँ करत है नारकी अति विकराल ॥ ७

मनुष्य घात का फल

विष दे अथवा और विधि, करके क्रोध प्रचण्ड। जिन मानुष मारें यहां, तिनके है शत खण्ड ॥ ८

गर्भ पात का फल

कामी हो जिसने करो, पर नरते व्यभिचार। गर्भ भयो तब

लाजवस, कियो पात अधिकार ॥ तिनकी देखो नरक में, होत दशा है कौन । ले त्रिशूल तन छे दियो, हाय २ दुख भौन ॥ ९

मेंढा वध का फल

मेढा पै जिसने यहां, छुरी चलाई क्रूर । ले करोत काटें लखे, तिनको दुख भरपूर ॥ १०

जलचर मारने का फल

अग्नि कुंड में रोप के, गले में साकर डाल । दंड खडग ले हाथ में, मारे तह भयकार ॥ निर्दयी जाल बिछाय के, पकड़ मछ अति दीन । चरित ताको हो मगन पड़ते नर्क कमीन ॥ पंखी मार पड्यो नरक, कुम्भी पाकन माहिं । ऊपर को ये नोचते, भीतर पीड़ा पाहिं ॥ हिरन शशादिक निर्बल जे, जंतु दीन अति भूर । तिनसे दिल बहलाय के, करत शिकार जो क्रूर ॥ तिन पुरुषन की नरक में, लखो दुर्दशा होय । व्याघ्रादिक हिंसक पशु, नौच-नौच के खाय ॥ करे कसाई क्रूर जेहिं, सकर्म आघोर । कुम्भत्रमेते उपजे, करे भयंकर शोर ॥ बीवो अन्न अशोध के, जो कूटे दिन रात । अर खावे होकर मगन, नर्क महा दुख पात ॥ भट्टी रात्रि जलाय के, करे विविध पकवान । जीव अनंतागिर मरे, बांधे पाप अजान ॥ नर्क पड़त दुख वहु सहित, जलत कड़ाई बीच । अर्ध दग्ध होकर करे, हाय हाय वे नीच ॥ निज कुटुम्ब के हेतु जिन, परको बंधन कीन । माया कीन्ही अति घनी, बांधे पाप अहीन ॥ अशुभ कर्म के उदय ते, कुगति लहे ते जीव । छेदन बंधन ताड़ना, वेदन सहे सदीव ॥ परको ताड़न मारन, करे अधर्मी होय । नरक में जै जायगे, मोक्ष कहां से होय ॥ नरकन के दुख है घने, कहै कौन से जाय । वेही आपही भोगेंगे, और ना दूजो उपाय ॥ पंचेन्द्री को छेदते, पीड़ा होत-अपार । इम कारण से नरक में, पावे दुख अपार ॥ तिर्यंच यौनि को धरे, घास फूस वो खाय । नहिं सातवें कोई को, देख दूर भग

जाय ॥ अधिक लोभ से लादते, बोझा बहुत अपार । जाने किया पर वेदना, बनते अवश्य अपार ॥ या कारण से नरक में, बोझा ढोवे आय । सिर पे पड़े जो वेदना, खुद भुगते आप ॥ बालक वृद्ध पशु वधू जो अपने आधीन । खान पान कम देत है, समय टाल अति दीन ॥ इस हिंसा के पापते, पड़े नर्क दुख पात । नारकी बहु विधि मारते, देवे छाति लात ॥ अन छानो पानी पीयो, तिनकी गति लख यार । उल्टा कर शीश पे धरयो, तापे मुद्गर मार ॥ हंसत हंसत निशि में भखी, कंद मूल मद मांस । नरकनि में देवे तिनहिं, बुरी वस्तु को ग्रास ॥ झूठ वचन बोले घने, क्रूर कपट की खान । तिनकी जिव्हा असुर गन, काटे छेदे जान ॥ देय भरोसा जिन यहां, कीना कपट अपार । नर्क पड़े नारकि तिनमें, पटके मारे मार ॥ झूठी सौगंध खाय जे, चुगली करे बिगाड़ । नरकन में जोरा वरि, भू पे देत पछाड़ ॥ वस्तु खरीदी अल्प में, कहै अधिक हम दीन । घोर झूठ कहिं पाप ले, पहुँचे नर्क के मीन ॥ देत गवाही झूठ जो, अपने स्वार्थ के काज । पाप बंध नरकहिं पड़े, करते आतम अकाज ॥ लोह मई कंटकनि की, शय्या पे पौढाय । मारे खडग स्वहस्त ले, हाय हाय चिल्लाय ॥ दगा द्रोह करि जिन यहां, राज सत्व को पाय । पंडित कीने दीननें, नर्कन पहुँचे जाय ॥ अग्नि माहिं तिनको तहां बैठावे दुख दाय । और करोति लेय के, चीरे मस्तक हाय ॥ सज्जन की चुगली करी, अर निन्दा अति घोर । नरक मांहिं तिस पापते, परसत भूमि कठोर ॥ मार पड़त वहां बहुत विधि, देख थर हरे आप । हा हा करि तहां बहुत है, अब ना करेंगे पाप ॥ जिन चुगली कीनी यहां, किये घनेरे पाप । नरक गये ते देख लो, काटे बिच्छू सांप ॥ बिन देखी अरु बिन सुनी, करे पराई बात । पाप पीण्ड जे मरत है, ते चण्डाल कहात ॥ दे उपदेश सु पाप के आप कराये पाप । तिनको चिथत स्व है देवे बहु संताप ॥

परके ठगने करने झूठी लेख लिखाहिं। तीव्र लोभ से नर्क जा अधिकहिं दुख लहाय ॥ कर विश्वास सुद्रव्य वहु राखे कोई पास। झूठ बोल कमती दिया सहे नर्क वहु त्रास ॥ दो जन बाते करत है देख सैन से कोय। कर प्रकाश हानि करत पड़त नर्क दुख होय ॥ रस्ते चलते जिन्होंने लूटे लोग अपार। नरक जाय कोन्हू पिले और सही बहू मार ॥ चोरी जिन दुसरन तै करवाई घर व्यार। देखो मुद्गर मारते नरक मांहि वहु बार ॥ जो चोरी के माल को जान बूझ के लेहिं। उल्टे लटकावत तिन्हें और त्रास वहु देहिं ॥ बैठ भूप दरबार में न्याय धर्म कर हीन। बिन अपराधी दण्डिया पड़ा नर्क हो दीन ॥ उल्टो मस्तक रोप के रस्सी ते कसवाय। ताऊपर मुद्गर की मार पड़े अधिकाय ॥ चोखी में खोटी मिला कह चोखिका दाम। बेचत पाप कमाइया पड़े नर्क दुख धाम ॥ छेदत शिर भाला लिये दिखा काय विकरोल। पाप कियो भव पिछले अब उदयागत काल ॥ कम देना लेना अधिक कपट रचा धर लोभ। तीव्र पापते नरक जा सहन करे चित क्षोभ ॥ धकधकात आगी में पड़ा हाय हाय चिल्लाय। तापे ले मुद्गर कठिन मारे दिया बिहाय ॥ श्रीजिन सेवा कारणे तीर्थ धर्म के काज। पैसा रुपया द्रव्य जो रक्षक जैन समाज ॥ रक्षक यदि भक्षक भये तीव्र लोभ लहिं पाप। नर्क जाय बहु काल लौ भुगते वहु संताप ॥ निज नारी अर्द्धाङ्गिनी दुख सुख में सहकार। तासो प्रेम निवार के डोलत परतिय द्वार ॥ भोग परस्त्री रक्त हो घोर नर्क में जाय। तप्त लोह की पूतली तिनते दई सहाय ॥ वेश्या-विषय विकार से कर व्यभिचार बिहार। नरक भूमि में उपज कै पावत कष्ट अपार ॥ माया चारी हाय यहां धन लूटे भरपूर। सो वेश्या पड़े नरक में सहे दुःख अति क्रूर ॥ कीन्हें बहुत घिनावनें काम रूप अविचार। तिनकी देखो वेदना नरकनि का भवकार ॥ निशदिन काम कथा करे धरे चित अति काम। न्याय अन्याय गिने

नहिं पड़े नरक के धाम ॥ रज्जू पाशते बांधि के अग्नि चिता में डारि। सहते पीर घिनावनी जलत अंग दुखकारि ॥ मोहित है पर पुरुष संग कीनो जो व्यभिचार। ता नारि की दशा को देखो सुजन विचार। अग्नि शिखा बीच डारि के छेदत अंग उपंग। देत दुख नहिं कह सकत ऐसे करत कुढङ्ग ॥ पुत्र जन्म के कारण प्रगट काम के अंग। तिन्हें छाड़ कामांधजन राचे और कूअंग ॥ महा पाप से नर्क जा होते नित्य अधीर। अंग छेद पीड़ा अधिक सहते विक्रय शरीर ॥ होय लोलुपी जगत में वहु आरंभ वढ़ाय। हिंसा कीनी उपजे ते नरकनि में जाय ॥ देत देख के दान को दुखी होय जो भूल। नरकिन में ताकी दशा देखो मुख में शूल ॥ जुआ चोरी मांस मद वैश्या रमण शिकार। पर रमनी रत व्यसन ये सात सेय दुखकार ॥ पड़े नरक में नारकी तायों पिलावे ताप। मार मार-के खडग से करे दुर्दशा आप ॥ जे नारी अति दुष्ट चित स्वामी को दुख देय। तीव्र भाव ते नरक लहि वहुत ही कष्ट सहेय ॥ हितकारी पति के वचन करे निरादर जाय। नर्क वास भयभीत लहिं मार धाड़ तह होय ॥ दया रहित जे नारही वालक सौत निहार। द्वेष बुद्धि से कष्ट दे पहुँचे नर्क मझार ॥ छेदन भेदन दुख घना तहं पावत दिन रैन। जो परको दुख देत है कैसे पावे चैन ॥ जग में हितकारी वड़े मात पिता के वैन। करे निरादर दुष्ट सुत पावै नर्क अचेन ॥ मात पिता ने मोह वश पाले पोशे पुत्र। ते नारिन के वश परे दुखदाई भये ऊत ॥ तिनकी छाती लात दे भाले मारे शूर। मात पिता के द्रोह ते पावे दुख भरपूर ॥

अथ ज्ञान बहत्तरी प्रारम्भ्यते

वीतराग को नमन कर, धरि सत गुरु का ध्यान।
ज्ञान बहत्तर बोल को कहूँ स्वपर हित ज्ञान॥

१—यह मनुष्य जन्म महादुर्लभ है। इसे पाकर आलस्य प्रमाद और मोह में दिन न गवाना चाहिये। जो दिन गंवाता है वह महामूर्ख है।

२—धर्म की सब सामग्री पाकर आत्मा का हित साधन करना चाहिये न करने वाला मूर्ख है।

३—जो पुण्यरूपी पूंजी तो साथ में लाया नहीं और सुखी होने के लिये रात दिन परिश्रम करता है, अधिक तृष्णा बढ़ाता है वह मूर्ख हैं।

४—पूर्व पुण्य के उदय से ज्ञानावर्ण कर्म के क्षयोपशम से ज्ञान प्राप्ति हुई लोभ शत्रु को दुखदाई समझा फिर भी संतोष न रक्खे वह महा मूर्ख है।

५—किसी सद्गुरु की कृपा से ज्ञान रत्न पाय, उससे अधीरज को बुरा समझा, अतः संसार सम्बन्धी कष्ट आजाने पर धीरज रखना चाहिये न रखे तो महामूर्ख है।

६—ज्ञान की प्राप्ति होने से संसार को असार जाना फिर संसार में फंसाने वाले झूठ को न बोले, माया न करे, क्लेष की वृद्धि न करे यदि करे तो वह महामूर्ख जानना चाहिये।

७—आत्मा को शक्ति के अनुसार सौगंधव्रत (पच्चखाण) करना चाहिये। न करे तथा सौगंध लेकर भंग करे तो वह महामूर्ख है।

८—पूर्व जन्म के पाप के उदय से दुःख आजाय, उस समय आत्म-ज्ञान के बल से शांति धारण करना चाहिये, न करे तो वह महामूर्ख है।

९—साता वेदनीयकर्म के उदय से सुख पाकर अभिमान न करना चाहिये, अभिमान से धर्म को भूल जावे तो वह महामूर्ख समझना चाहिए।

१०—ज्ञान आदि गुण बढ़ाने का प्रयत्न करना चाहिये यदि प्रयत्न न करे और संसार बढ़ाने के खोटे काम करे तो वह महामूर्ख है।

११—उत्तम ज्ञानी की संगति पाकर अपनी आत्मा को राग द्वेष से दूर रखना चाहिये, यदि दूर न रखे आत्मा को निर्मल न करे अथवा उसके लिये उपाय न करे तो वह महामूर्ख है।

१२—ज्ञानवान की सगति सेवाभक्ति करके अपनी आत्मा को उज्वल पाप रहित करना चाहिये। न करे तो वह महामूर्ख है।

१३—व्रत पच्चखाण में दृढ़ता रखनी चाहिये, न रक्खे कष्ट आ जाने पर धर्म छोड़ दे तो वह महामूर्ख है।

१४—सांसारिक कामों में तो नियमों का पालन करता है अर्थात खाने कमाने आदि के कामों को समय पर अवश्य करता है लेकिन जो धार्मिक कार्य करने के लिए सारे दिन मे दो घण्टे का भी नियम न रखे वह महामूर्ख है।

१५—कोई उत्तम मनुष्य धर्म का उपदेश देवे, हित की शिक्षा देवे तो उस पर क्रोध न करना चाहिए, करे तो मूर्ख है।

१६—ज्ञान सूर्य का उदय हुआ, संसार को असार समझ लिया मोह ममता को दुःख देने वाली और हिंसा आदि पापों को संसार वृद्धि का कारण जान लिया, फिर दुखदायी मोह आरम्भ परिग्रह आदि संसार के कारणों को नहीं वढ़ाना चाहिए। यदि वढ़ावें तो वह महामूर्ख समझना चाहिए।

१७—थोड़े से जीवन के लिए आरम्भ करता है, कपाय करता है दूसरे जीवों को दुःख देता है, भय उत्पन्न करता है वह महामूर्ख है।

१८—अपनी आत्मा अनादिकाल से काम क्रोध माया लोभ मोह अज्ञानरूप वंधन मे पड़ा है उससे छूटने का उपाय करना चाहिए। जो दुर्ध्यान करता है वह महामूर्ख है।

१९—परकी ऋद्धि मुझे क्यों नहीं मिलती इसे क्यों मिली, इत्यादि दुर्ध्यान न करना चाहिए।

२०—दुष्ट जीव परके औगुण देखता है लेकिन अपने औगुण नहीं देखता तथा उत्तम गुणवाले पुरुप मे दोप निकालता है वह मूर्ख है।

२१—सुखी होने के लिए जिव्हा के स्वाद के लिए काम भोग का सेवन न करना चाहिए, छल कपट से परिग्रह इकट्ठा न करना चाहिए।

२२—देह का पोपण करने व रसना इन्द्रिय के विषय को पूरा करने के लिए तथा काम भोग सेवन करने के लिए जीवों का घात न करना चाहिए।

२३—सब जीवों को अपने समान जानकर अपने हृदय में दया का भाव रखना चाहिए।

२४—सोच विचार कर वचन वोलना चाहिए और पाप सहित हास्य सहित भय सहित अन्याय अयोग्य और हानिकारक वचन न वोलना चाहिए वोले तो मूर्ख है।

२५—मनुष्य जन्म का एक पल भी वहुमूल्य रत्न के समान है उसे व्यर्थ की गप शप में न गवांना चाहिए।

२६—ज्ञानवान होकर पांचों इन्द्रियों के विषय भोग की इच्छा को न

बढ़ावें, मन को वश में रखे यदि न करे तो वह महामूर्ख समझना चाहिए।

२७—ज्ञानी अभिमान न करे, पाप कार्य करते हुए मन में शंका भय रखे न रखे वह मूर्ख है।

२८—बिना मतलब मन को ऊँच नीच जगह न दौड़ावे रूपवती स्त्री को देखकर उसकी चाह न करे मन में बुरे विचार न करे।

२९—निरोग शरीर पाकर यथाशक्ति तपस्या आदि उत्तम कार्य करना चाहिये।

३०—पूर्व जन्म में पैदा किये हुए अशुभ कर्म को भोगते समय हृदय में विलाप और रौद्र ध्यान न करना चाहिये।

३१—मनुष्य जन्म पाकर आत्मा के स्वरूप का विचार करे, धर्म के कामों का चिंतवन करना चाहिये।

३२—धर्मात्मा पुरुष को आत्मा का साधन करते हुए देखकर उसकी निन्दा न करनी चाहिए, द्वेष व ईर्ष्या न करनी चाहिए, उसके अवगुण प्रगट न करना चाहिए, हंसी न करना चाहिए यदि करे तो वह महामूर्ख है।

३ —वीतराग अरहंत देव के वचन में श्रद्धा प्रतीति करनी चाहिए, शंका कांक्षा आदि उत्पन्न कर जन्म नहीं गंवाना चाहिए यदि उसके विपरीत करे तो वह मूर्ख है।

३४ - गुणवान महापुरुषों को देखकर अति आनन्द मानना चाहिए उनकी सेवा भक्ति तथा गुण कीर्तन करना चाहिए।

३५—संसाररूपी वन काम क्रोध लोभ मोहरूपी दावानल से जल रहा है मनुष्य इस जलते हुए संसार को शांति क्षमा निर्लोभता आदि जल से शान्त कर इसमें से सारभूत धर्मरूपी रत्न को निकाल ले न निकाले वह मूर्ख है।

३६—संसाररूपी वन में अनंतकाल भटकते २ भारी पुण्य के उदय से सुखकारी मनुष्य जन्मरूपी विश्राम पाया, इसे पाकर विश्राम की जगह क्लेश न करना चाहिए आत्मा को फिर दुख में न पटकना चाहिए।

३७—बीते हुए काल में अनंतानत जन्म मरण किये अनंत दुख भोगे इसे न भूलना चाहिए जो भूले वह मूर्ख हैं।

३८—मनुष्य जन्म पाकर अच्छे २ काम करना चाहिए, यथाशक्ति उपकार अवश्य करना चाहिए नहीं करे वह मूर्ख है।

३९—आयु को अंजुली के जल समान अस्थिर जानकर संसार में लीन नहीं होना चाहिए तेरा मेरा न करना चाहिए।

४०—विना घृत डाले ही तृष्णारूपी अग्नि की ज्वाला उठती रहती है उसमे फिर परिग्रह रूपी घृत डालकर शीतल होने की आशा न रखनी चाहिए जो शीतल होने की आशा रखता है वह महामूर्ख है।

४१—शास्त्र मे कही गई नरक की अनंत वेदना को सुनकर और अच्छी तरह समझकर आत्मा को समझाना चाहिए और पाप से डरना चाहिए जो न डरे वह महामूर्ख है।

४२—वृद्धावस्था आ जाने पर शक्ति नष्ट हो जाती है हाथ पाव शिथिल हो जाते है नेत्र की शक्ति क्षीण हो जाती है ऐसी हालत मे धन की लालसा न रखनी चाहिए वृद्धावस्था में भी जो धन की तृष्णारूपी अग्नि में नित्य जलता रहता है वह मूर्ख है।

४३—अज्ञानी जीव सारे दिन हाय धन हाय धन करता हुआ धन्धे में मग्न रहता है, रात्रि प्रमाद में विताता है लेकिन दो घण्टे भी समता धारण कर धर्म साधन,नहीं करता वह महामूर्ख है क्योंकि वह ६० हाथ रस्सी कुए मे डालकर दो हाथ रस्सी भी अपने मे नहीं रखता है।

४४—झूठा तथा पाप का उपदेश न देना चाहिए आत्मा को हानि पहुँचाने वाली कुविद्यायें लोगों को नहीं सिखानी चाहिए अनर्थ नहीं करना चाहिए क्योंकि इन कामों से आत्मा नरक गति पाकर अनंत दुख भोगता है।

४५—संसार में जीवों को मरते हुए प्रत्यक्ष देखकर मरने का भय रखना चाहिए, अपने को अविनाशी न समझना चाहिए लक्ष्मी को चंचल तथा कुटुम्ब आदि सब परिवार को क्षण भंगुर समझना चाहिए जो न समझे महामूर्ख है।

४६—ज्ञानी पुरुष संसार के निकम्मे काम नहीं करते किन्तु अनंतकाल का दुख दूर करने के लिए निज ज्ञान प्रगट करने का श्रेष्ठ कार्य करते हैं लेकिन अज्ञानी लोग इससे उल्टा करते हैं अर्थात संसार के निकम्मे २ कामों को अच्छा समझते हैं और उसी में परिश्रम करते है तथा निज ज्ञान के प्रगट करने वाले श्रेष्ठ कामों को व्यर्थ समझते हैं और उसमे परिश्रम नहीं करते वे महामूर्ख है।

४७—अज्ञानी जीव अपना नाम करने के लिए कीर्ति विस्तारने के लिए अनेक आरम्भ करते हैं, बड़े २ पाप करते हुए भी भय नहीं खाते लेकिन वे ऐसा नहीं समझते कि इसका फल हमे अनेक भवों मे भोगना पड़ेगा।

४८—पूर्व जन्म के पुण्य उदय से लक्ष्मी पाकर पाप कार्य से डरना

चाहिए जो पाप कार्य से नहीं डरें वह मूर्ख है।

४६—अज्ञानी जीव शक्ति होने पर भी धर्मकार्य नहीं करते आत्मा का कल्याण नहीं करते किन्तु जब इन्द्रिय शिथिल और बलहीन हो जाती है, तब धर्म पालन की इच्छा करते हैं, वे महामूर्ख हैं क्योंकि आग लगने पर कुआ खोदना मूर्खता है।

५०—हर एक प्राणी को क्षमा, दया, विनय, शील सन्तोष धैर्य गम्भीरता आदि उत्तम गुणों को बढ़ाने का अभ्यास करना चाहिए।

५१—हिंसा, झूठ, चोरी, कुशील, दुराचरण, निन्दा, ईर्षा, कपट कुसंगति इत्यादि अनेक दुर्गुणों और कुकार्यों को छोड़ देना चाहिए जो नहीं छोड़ता है वह महामूर्ख है।

५२—धर्म पर श्रद्धा रखनी चाहिए, धर्म की प्रभावना करनी चाहिए कालचक्र सिर पर घूम रहा है इसलिए एक क्षण को भरोसा न करके निरन्तर धर्म सेवन करने का नियम करना चाहिए. जो नहीं करता वह महामूर्ख है।

५३—अभव्य जीव दूसरों को उपदेश देता है लेकिन अपनी आत्मा को नहीं समझता। इस तरह अज्ञानी लोगों को ठगने तथा प्रसन्न करने के लिए धर्मोपदेश देता है, अपनी प्रशंसा के लिए धर्म ध्यान क्रिया आदि का आचरण करता है वह महामूर्ख है।

५४—अपने को और दूसरों को सुखी बनाने का प्रयत्न करना चाहिए जो मनुष्य अपने को सुखी और दूसरों को दुखी देखकर खुश होता है दुखी जीवों की हंसी करता है, दुर्वल अपंग तथा दरिद्र को देखकर करुणा नहीं करता वह महामूर्ख है।

५५—ज्ञान पाने का सार अपनी आत्मा का कल्याण करना दूसरे जीवों को उपदेश देना ज्ञान के साधन पुस्तक कलम आदि देना ज्ञान दान देना और दिलाना धर्म का कार्य करना उपकार करना आदि है लेकिन जो ज्ञान शक्ति होने पर भी परोपकार में नहीं लगाता, ज्ञान वृद्धि करने वाले कामों में नहीं लगाता वह महामूर्ख है।

५६—धर्म ध्यान व्रत नियम पच्चखाण दान तपस्यादि धर्म कार्य करते हुए किसी मनुष्य को नहीं रोकना चाहिए, जो अज्ञानी अपने कुटुम्ब को मोह से मना करता है वह मूर्ख है।

५७—कुव्यसनी हिंसक, झूठा लवार कपटी चोर अन्यायी चुगलखोर ईर्ष्यावान क्रोधी मानी मायावी लोभी धीरज रहित आदि दुर्जनों की संगति न करना चाहिए। जो इन दुर्जनों की संगति करके अपने ज्ञाना-

दिक गुण की इज्जत आवरू बढ़ाना चाहता है वह महामूर्ख है।

५८—क्रोध लोभ भय हंसी इन चार कारण से झूठ बोला जाता है और झूठ बोलना महा पाप है इसलिए हे चेतन जो तू अपनी आत्मा का कल्याण चाहता है तो असत्य वचन का त्याग कर दे इससे उक्त सब पाप टल जायंगे जो मनुष्य उक्त बात को समझ कर भी उपयोग नहीं रखता वह मूर्ख है।

५९—क्लेश, हंसी, मैथुन, खाज, शोक, चिन्ता निद्रा वैर तृष्णा निन्दा ये दस बाते घटाने से ही घटती है और बढ़ाने से बढ़ती है ज्ञानी को इन्हें घटाना चाहिए।

६०–ज्ञान बढ़ाने के निम्न लिखित दस उपाय हैं आहार थोड़ा करना निद्रा थोड़ी लेना, थोड़ा बोलना, पंडित के पास रहना क्रोध नहीं करना पूर्ण विनय करना, पांच इन्द्रियों को वश मे करना अनेक शास्त्र वांचना ज्ञानवान से पढ़ना पूर्ण उद्यम करना इन दस उपायों से ज्ञान की वृद्धि करनी चाहिए जो ज्ञान की वृद्धि नहीं करता वह मूर्ख है।

६१—जीव को निम्नोक्त दश सामग्री मिलना महादुर्लभ है मनुष्य जन्म, आर्य देश, उत्तम कुल, लम्बी आयु, इन्द्रियों की पूर्णता, निरोग शरीर, साधु सन्तों की सेवा, सूत्र सिद्धांतों का सुनना, धर्म की श्रद्धा, प्रतीति करना काय क्लेष करके धर्म ध्यान करना ऐसी सामग्री अपूर्व पुण्य के उदय से मिलती है, इसे पाकर जो धर्म साधन नहीं करता वह मूर्ख है।

६२—अत्यन्त दुर्लभ वस्तु को पाकर उसकी बड़े यत्न से रक्षा करनी चाहिये, इस बात को अज्ञानी नहीं समझते, वे मोहवश अपने कुटुम्ब परिवार ऐश्वर्य आदि मे फंसे रहते हैं, मेरा तेरा करते हैं परन्तु यह नहीं समझते कि यह सब यहीं रह जावेगा कोई भी साथ नहीं जावेगा, एक धर्म ही साथ जानेवाला है, अज्ञान तथा मोह को छोड़ना चाहिये।

६३—धर्म-धर्म सब कहते हैं लेकिन धर्म का मर्म नहीं समझते। संसार के दुख से छुड़ाकर असली सुख मे पहुँचाने वाले को धर्म कहते हैं, वह धर्म, क्रोध, मान, माय, लोभ का त्याग करने से प्रगट होता है, त्यों-त्यों चारित्र धर्म बढ़ता जाता है इस चारित्र धर्म से ज्ञानावरणादिक कार्मों का क्षय होकर अनंत ज्ञान आदि गुण प्रकट होते हैं क्रिया दो प्रकार की है शुभ और अशुभ। शुभ क्रिया से पुण्य बंध होता है और अशुभ क्रिया से पाप बंध होता है। निवृत्ति क्रिया संवर तथा निर्जरा रूप होती है, इसे समझकर ज्ञानवान को पालन करना चाहिये।

६४—सांसारिक सब जीव विषय वासना में लग रहे हैं, जहाँ देखो

वहीं अपने स्वार्थ की बात बताने वाले मिलते हैं परमार्थ का शुभ मार्ग दिखाने वाले बहुत थोड़े हैं इसलिये हे चेतन परीक्षा करके परमार्थी ज्ञानवान महापुरुष की सेवा कर जिससे संसाररूपी समुद्र में अनादिकाल से पड़ा हुवा यह जीव मनुष्य जन्मरूपी नांव और परमार्थी महापुरुष रूपी खेवटिया को पाकर नहीं डूबने पावे अर्थात् संसाररूपी समुद्र से पार हो जावे इसिलिए संसाररूपी समुद्र पार होने का उपाय करना चाहिये, जो नहीं करे वह महामूर्ख है।

६५—जो चेतन धर्म करने का अवसर चला जा रहा है आयु क्षण-क्षण में घटती जा रही है परन्तु तू कुछ परवाह नहीं करता मनुष्य जन्म को पाकर वृथा खो रहा है, अरे मूर्ख गया अवसर फिर हाथ आने का नहीं, पीछे पछताना पड़ेगा, तू प्रतिदिन दुख देनेवाली तृष्णा को बढ़ाता जा रहा है, सुख संतोप में है इसलिये तृष्णा को घटाने के लिए संतोष धारण करना चाहिये जो तृष्णा को बढ़ाता है वह महामूर्ख है।

६६—संसार में कोई प्राणी सुख. नहीं है जहां देखो वहॉं जीव कर्मों के कारण दुखी ही दिखाई देते हैं, कितने ही अज्ञानी जीव संसार में ही सुख मान रहे हैं परन्तु यह मानना ठीक नहीं है। यदि अग्नि से शीतलता हो तो ससार में सुख हो, सुख तो संतोष मे है. इसलिये मन को व्याकुल करने वाली विषय वासना को त्याग कर संतोष धारण करना चाहिये।

६७—हे चेतन तू इस संसार मे क्यों लुभा रहा है, अज्ञान दशा में पड़ा हुआ तेरा मेरा क्यों कर रहा है, संसार में कोई किसी का नहीं है, जिसका स्वार्थ सिद्ध होता है वह प्रसन्न और जिसका स्वार्थ सिद्ध नहीं होता वह नाराज होता है। अरे भोले जीव मोह का नशा चढ़ा हुआ है इसलिए तुझे कुछ नहीं सूझता, लेकिन फिर बहुत दुख भोगना पड़ेगा इस पर विचार कर मोह को घटाना चाहिये। जो नहीं घटाता वह मूर्ख है।

६८—अरे जीव तूने पूर्व जन्म में अच्छा पुण्य उपार्जन नहीं किया, इसलिये इस समय तू दुखी हो रहा है तेरी आजीविका पराधीन है यदि इस समय भी इस जन्म में भी सुकृत के काम नहीं करेगा तो आगे के जन्म में भी दुःखी होगा इसलिये अब शुभ काम करना चाहिये जो न करे वह मूर्ख है।

६९—अरे जीव तू अनेक पाप करके लक्ष्मी इकट्ठी करता है और सोचता है कि यह मेरे दुख के समय काम आवेगी, ऐसा समझना तेरी भूल है जिस समय पाप का उदय होगा उस समय लक्ष्मी भी तीन तेरह हो जावेगी क्योंकि लक्ष्मी तो पुण्य के उदय से रहती है और पाप का

उदय होने पर नष्ट हो जाती है, ऐसा विचार कर मूर्खता न करके आत्म-हित करना चाहिये। जो न करे वह मूर्ख है।

७०—अरे भोले जीव तू पेट भरने के लिये अनेक अनर्थ करके क्यों कर्मो का बंध कर रहा है, भाग्य के अनुसार तुझे अवश्य मिलेगा कितने ही पाप करने पर भी भाग्य से अधिक नहीं मिल सकेगा। ऐसा विचार कर आत्मा को स्थिर करना चाहिये। जो स्थिर न करे वह महामूर्ख है।

७१—संसार में सव जीव अपनी इच्छानुसार वात वनाकर झगड़ते हैं लेकिन तत्व की वात को नहीं समझते, काम, क्रोध, लोभ, मोह को छोड़ने से आत्मा निर्मल होती है। इनको छोड़े विना मुक्ति की चाह रखना वालू से तेल प्राप्त करने के समान है काम क्रोध आदि दोप वाले जीव के नियम व्रत पच्चखाण आदि सव निष्फल हैं, इस वात को समझ कर व्यर्थ वाद विवाद करके जन्म नहीं विताना चाहिये।

७२—दीपक सव जीवों को प्रकाशित करता है किन्तु अपने नीचे हमेशा अंधेरा रखता है। इसी तरह अज्ञानी जीव दूसरों को अच्छे-अच्छे उपदेश देता है लेकिन आप कुमार्ग पर चलता है, अपना अज्ञान अंधकार दूर नहीं करता, हे चेतन जव तू सव कर्मों का क्षयकर केवल ज्ञान आदि प्रगट करेगा तव मोक्ष नगर मे पहुंचेगा। इसलिए क्षमा, विनय, शील संतोप आदि गुणों को धारण करना चाहिए, नहीं करता वह मूर्ख है।

इष्ट प्रार्थना

भावना दिन रात मेरी सव सुखी संसार हो।
सत्य संयम शील का व्यवहार घर-घर वार हो॥टेक
धर्म का परचार हो अरु देश का उद्धार हो।
और ये विगड़ा हुआ भारत चमन गुलजार हो॥१
ज्ञान के अभ्यास से जीवों का पूर्ण विकाश हो।
धर्म के परचार से हिंसा का जगसे ह्रास हो॥२
शान्ति अरु आनन्द का हर एक घर मे वास हो।
वीरवाणी पर सभी संसार का विश्वास हो।३
रोग अरु भय शोक होवें दूर सव परमात्मा।
कर सकें कल्याण ज्योति सव जगत की आत्मा॥४

आत्म-कीर्तन

हूं स्वतन्त्र निश्चल निष्काम।
ज्ञाता दृष्टा आतम राम ॥टेक

मैं वह हूँ जो हैं भगवान।
जो मैं हूँ वह हैं भगवान॥
अन्तर यही ऊपरी जान।
वे विराग यहँ राग वितान॥१

मम स्वरूप है सिद्ध समान।
अमित शक्ति सुख ज्ञान निधान॥
किन्तु आश वश खोया ज्ञान।
बना भिखारी निपट अजान॥२

सुख दुख दाता कोई न आन।
मोह राग ही दुख की खान॥
निज को निज पर को पर जान।
फिर दुख का नहिं लेश निदान॥३

जिन शिव ईश्वर ब्रह्मा राम।
विष्णु बुद्ध हरि जिसके नाम॥
राग त्याग पहुंचू जिन धाम।
आकुलता का फिर क्या काम॥४

होता स्वयं जगत परिणाम।
मैं जग का करता क्या काम॥
दूर हटो पर कृत परिणाम।
ज्ञायक भाव लखूं अभिराम॥५

लक्ष्मी विलास के रचयिता पं० लक्ष्मीचन्दजी के सुपुत्र

पं० पद्मचन्दजी द्वारा रचित

मंगला चरण--वृषभ आदि महावीरलों चौबीसों जिनराय।
स्याद्वाद वानी नमों गुरु के लागूं पांय॥
ॐ ह्रीं श्री परमेष्टी का ध्यान कीजिये।
श्री कुन्द कुन्द स्वामी मुझे ज्ञान दीजिये॥
श्री शारदा माई मेरे कंठ विराजो।
भक्तों की कर सहाय मुझे वेग उबारो॥

दशलक्षण धर्म के पद, उत्तम क्षमा धर्म, राग झूला में

क्षमाधर्म तुम धारिये सुनिये बुध जन भाष क्षमाधर्म तुम धारिये। क्षमा धर्म ॥ आचली॥ सरस्वती शारदा अरिहन्त देव मनाय, कुन्द कुन्द महाराज ने झुक २ शीश नवाय ॥क्षमा धर्म १ ॥ क्षमाधर्म सब धर्म में सोहै तिलक समान। धर्म बड़ो उत्तम क्षमा धारो मन वच आन ॥ क्षमा धर्म० २ ॥ प्रथम धर्म उत्तम क्षमा धारे जे मुनिराय। ते भविदधि सिन्धु सूं तिरे पावे पद निर्वाण ॥ क्षमा० ३ ॥ सात सात लख गाइये भूजल तेज अरु वाय। नित्य निगोद सु जानिये, इतर निगोद बखान ॥ क्षमा० ४ ॥ प्रत्येक की दशलाख है, नारकी चौदा लाख नारक सुर तिरयंच की चतु चतु लाख प्रमाण ॥ क्षमा० ५॥ द्वेतिय चो इन्द्री कहैं द्वै द्वै लाख बखान। पदम क्षमा उर धारिये, हिरदे धर सरधान ॥ क्षमा० ६ ॥

पद २—मार्दव धर्म। चाल लावनी

मान तुम तज देना भाई मान से दुर्गति को जाई ॥ टेक
छहो खंड को जीत भरतजी चक्री भये नरेश।
नाम लिखन को गये मेर पे, रह्यो मान नहिं लेश ॥मान० १
लंकापति रावण बहुमानी कियो मान अति सोय।
गिरि कैलाश को लग्यो उठावन गयो मान तहां खोय ॥मान०२
देव धर्म गुरु की सरधा कर ये तुझ तारण जान।
मान त्याग कर जे नर ध्यावे पावें पद निर्वाण ॥मान० ३
अरहंत सिद्ध और आचारज उपाध्याय मुनिराज।
साधु वंधना मान त्याग कर कीजे निज हित काज ॥मान० ४
कृत्रिम और अकृत्रिम जिनथल तीन लोक में सोय।
मान त्याग कर नमन करो तुम पदम सुगति जब होय ॥मान० ५

पद ३—आर्जव धर्म। राग गोपीचन्द भरथरी

कपट तुम त्याग दो प्राणी राखो सरल सुभाव ॥कपट तुम ॥टेक

रावण सिरसा अधिपती कांई कपट कियो तिन सोय।
कंचन मिरग बताय के कांई सीता हरीये सु जोय ॥कपट० १
कपट थकी ग्रह लक्ष्मी कांई छिन में जाय पलाय।
सरल सुभावी जीव के कांई बाढे अधि की आय ॥कपट० २
पृथवी का दोय बीस है कांई जल का सात प्रमान।
अगन का पक्का तीन है कांई सात पवन का जान ॥कपट० ३
वनसपती का जानिये कांई बीस आठ परमान।
द्वे तिय चो इन्द्री कहे कांई सात आठ नव .जान ॥कपट० ४
श्री सर्प नव जानिये कांई नारक का पच्चीस।
चौदह लाख मनुष्य का कांई सुरका है छब्बीस ॥कपट० ५
साढ़े बारह जानिये कांई जलचर जीव प्रमाण।
नभचारी बारा कहै कांई चौपद दशलख जान ॥कपट० ६
पांच घाट लख जानिये कांई दो लख कोडा कोड।
सरल भाव इन जीव पे कांई पदम करो मद छोड ॥कपट० ७

पद ४—सत्य धर्म। राग जैपुरी गोपीचन्द छकड़ी

मुख से तज दीजे मिथ्या बोलना सतधर्म पाल जे॥ मुख से तज० ॥टेक

सत्य शिरोमणि धर्म जगत में और न दूजो जान।
सत्य धर्म प्रभाव से सिने जीव लहे शिव थान॥
सत्य धर्म ने सब जन पालो पावो अविचल थान ॥सत्य० १
नारद परवत झगड़ो जी कीनो अजा शब्द के ताई।
तुमरा हमरा न्याय करावे बसु राजा पे जाई॥
राजा वसु झूंठ नहिं बोले कीरत जग में छाई ॥सत्य० २
फटिक मई सिंहासन ऊपर राजा वसु विराजे।
पर्वत कहे वही सत जानो सुनिये सकल समाजे॥
झूंठ बोल वसु नर्क सिधारे दुख पावे अघ काज जी ॥सत्य० ३
झूंठ वचन ने त्यागि कर सुजी सत्य कहो परवीन।

राज पंच की सभा मायने आदर मान सु लीन ॥
सत्य धार मुनि जेशिव पावे तिन पद मस्तक दीन ॥सत्य० ४

पद ५—शौच धर्म

शौच धर्म हिरदे धरो, त्यागो लोभ कषाय ॥ शौच धर्म० ॥टेक
देव सुरग गति पाय के भोगे भोग अपार ।
तेतिस सागर आयु है सुख पावे अधिकाय ॥ शौच० १
चक्रवर्ती की संपदा छै खंडराज अपार ।
तो तुझ तृष्णा ना मिटी डूब्यो उदधि मंझार ॥ शौच० २
नारि बहुत घर के विषैं पुत्री पुत्र अधिकाय ।
मित्र सहोदर बहु मिले तृष्णा नहिं तुझ जाय ।' शौच० ३
लोभ पाप का मूल है हिरदे धरि सन्तोष ।
न्याय अन्याय विचार के उद्यम कर निरदोष ॥ शौच० ४
सुख संपति अरु लक्ष्मी पूर्व पुण्य लहाय ।
पदम धरो सन्तोष ने भव भव धर्म सहाय ॥ शौच० ५

पद ६—संजम धर्म

संजम धारो न जीया जी हित के कारने ॥टेक
दया धर्म सब धर्म में सिने और न दूजा भाई ।
सब जीवन पर दया भाव कर यो श्री गुरु समझाई ॥१
पांचो इन्द्री वश करो सिने दयाधर्म ने ध्यावो ।
चारों गति का नाश जु करके पंचम गति जब पावो ॥२
सेठ सुदर्शन संजम धारयो देवों करी सहाय ।
सूली को सिंहासन कीनो जग में कीरत छाय ॥ ३
पृथ्वी जल और अगन वायु मिल वनस्पती तुम जान ।
इन थावर पे दया करो तुम हिरदे धरि सर धान ॥ ४
जंगम जात जीव जे प्राणी तिन पर दया विचारो ।
आलस छोड़ दया तुम पालो पदम सीख उर धारो ॥ ५

पद ७—तप धर्म

उत्तम तप सब धर्म शिरोमणि करम वली चकचूर करे ॥टेक

मैना सुन्दर व्रत पालियो सिद्धचक्र को सोय।
श्रीपाल को कोढ गयो जब कंचन वर्ण सु होय ॥१
द्वादश तप उर धार मुनीश्वर सहै परीस्या घोर।
वन में जाय ध्यान जे धारे तिने नमूं कर जोर ॥ २
अनशन ऊनोदर व्रत परि संख्या रस परित्याग सुजान।
विविक्त शय्यासन कहो सने काय कलेश पिछान ॥ ३
प्रायश्चित विनय वैयावृत स्वाध्याय तुम करना।
व्युत सर्ग ध्यान कहे बाराविध इनको चित में धरना ॥ ४
व्रत के भेद अनेक है सिने कहे जिनागम मांहि।
तपकर साधु मुक्ती जे पावैं पद्म तिने सिरनाय ॥ ५

पद ८—त्याग धर्म

दान नित दीजिये प्राणी दान दिया सुख होय ॥ टेक
दान दियो श्रेयांस ने कांई आदीसुर ने जोय।
तीज सुकल वैसाख ने कांई पंचाश्चर्य सु होय ॥ १
औषध दान सु कीजिये प्राणी रोग दोष सब जाय।
कौसल्या के नन्हनतें कांई सकती गई छै पलाय ॥ २
अभै दान सब जीव पे प्राणी करि है सज्जन कोय।
तरस सु दुखियां देख के कांई दया कीजिये सोय ॥ ३
शास्त्र दान महिमा घनी प्राणी जानत है सब कोय।
केवल ज्ञान उपाय के कांई शिव पद पावे सोय ॥ ४
धन्य वही नर नारि है कांई करत दान नित सोय।
सुख सम्पति अरु लक्ष्मी कांई बाढ़े अधिकी जोय ॥ ५
दान तनी महिमा घनी प्राणी को करि सके बखान।
दान सु नित प्रति दीजिये कांई पद्म सीख उर आन ॥ ६

पद ९—आकिंचन धर्म। राग मांड

थारो नरभव वीत्यो जाय जिया अब चेतो क्यों ना जी ॥ टेक
परिग्रह पोट उतार सिरेजी लीजे चारित पन्थ।

वन में जाय ध्यान तुम कीजे धर मुद्रा निर ग्रन्थ ॥ १
भेद परिग्रह जानिये जी बीस चार परवान ।
त्याग करे मुनिराज जी कांई हिरदे धरि सरधान ॥ २
मात पिता सुत दारा ये सब राग बढ़ावन हार ।
जब लग मोह घटे नहीं इनसे तू रुले है संसार ॥ ३
त्रेपन क्रिया धारके जी सात त्रिषन निरवार ।
तज बाईस अभक्ष ने जी तीन मूढता जार ॥ ४
सब परिग्रह सूं ममित छांडि कै धर जिन मुद्रा सोय ।
केवल पाय जाय शिव पहुँचे पदम नमे तिन सोय ॥
जिया अब चेतो क्यों ना जी ॥५

पद १०—ब्रह्मचर्य तप । रागझूला

शीलवरत तुम पालिये हिरदे धर सरधान ॥ टेक ॥
शील शिरोमणि जगत में सकल धर्म सिरमोर ।
धारो मनवचकाय ते, पावो जग विचलठोर ॥ शील० १
चीर बढ़ो द्रोपदि तनो, अगनी जल जब होय ।
सीता सती के कारने, निश्चय जानो सोय ॥ शील० २
मैनासुन्दर जानिये, और गुणवंती नार ।
चन्दन श्याम सुलोचना, राख्यो शील विचार ॥ शील० ३
सेठ सुदर्शन को सही, सूली दीनी राय ।
देव आय रचियो तबै, सिंहासन सुखदाय ॥ शील० ४
शील कथी नव वाढ़ने; राखौ चित में जोय ।
धन्य वही नरनारि है, पदम जांन तुम सोय ॥ शील० ५

॥ इति दशलक्षण धर्म के पद संपूर्णम्

भजन सोनागिरिजी का चंद्रप्रभु भगवान का

अरजी सुन लीजे चंदजिनंदजी शिव पद मोय दीजै ॥ अरजी ॥ टेक ॥
चन्द्रपुरी नगरी कही सिने पिता नाम महासेन ।
मात लक्ष्मणा कूख में सुजी आये सब सुखदेन ॥

पांचै वदी चैत महिना की नमन करूं दिनरैन ।जी शिव०१
पोस वदी एकादशीसने जनमे त्रिभुवनराय ।
इन्द्र आय अभिषेक जु कीनो मेरु शिखर लेजाय ॥
श्वेतवर्ण शशि चिन्ह जानकर धनुष डेढ़सोकाय । जीशिव० २
राज सिंहासन बैठ प्रभू ने दिया शील उपदेश ।
कुछ कारनकर अथिर जान जग धरयो दिगंबर भेष ॥
वदी एकादशि पोस महीना पूजे सुर अमरेस । जी शिव०३
ज्ञान पंचमी प्रगट भयो वदि सातैं फागुन मास ॥
सोनागिर परवत पर सौहै समोशरण परकास ॥
नरसुर पशु होय इकट्ठे सब सुनते धर्म हुलास । जी शिव० ४
दशलख पूर्व आयु क्षय कीनी मास रह्यो इकशेस ।
योगधार सम्मेद शिखर पर ज्ञान तिथी लखलेश ॥
कर्मकाटि पंचम गतिपाई जै जै चंद जिनेश ॥ जी शिव० ५
समन्तभद्र मुनिराज गुरू के भस्मव्याध उपजई ।
शिवकौटि राजा के ढिंह पहुँचे शिव मंदिर के मांही।
भोजन करे देवये तेरा निश्चै जानौ राई । जी शिव० ६
चरित देख राजारिस करके पिन्डी नमन करावै ।
रच्यो स्वयम्भू जबै ध्यांन धरि चन्द्रनाथ प्रगटावै ॥
जैजै धुनि जब भई नग्र में पदम चित हुलसावे । जी शिव ७
गढ़ गोपाचल के निकट, लशकर शहर अनूप ।
राजा सिंधिया जानिये, माधोजी तहां भूप ॥ १
प्रथम मेर सम जानिये, पारस प्रभु को धाम ।
दर्शन पूजन नित करैं; भविजान आठो याम ॥ २
पदम लेश्या नाम मम, पिता सु लक्ष्मीचंद ।
दशलक्षण पद को सुने, होय परम आनन्द ॥ ३
आदि अन्त में ब्रह्म लख, सात तत्व तुम जान ।
नव पदार्थ सुद पंचमी, महिना भादों मान ॥ ४ ॥इति०॥

लक्ष्मी विलास के छपाने में जिन महानुभावों ने द्रव्य को सहायता दी उनकी शुभनामावली

२०१) हीरालालजी कन्हैयालालजी गंगवाल
२०१) गुप्त दान में
१७१) चन्दरलालजी गप्पूलालजी वाकलीवाल
१००) जादुरामजी सुखलालजी गंगवाल
१०१) रामचन्दजी फुन्दीलालजी जैसवाल
५१) गारसीलालजी कुन्दनलालजी जैसवाल
५१) फतेचन्दजी जी गोधा की माँ साहाब
५१) भोगीरामजी गवालियर वाले
५१) मोतीलालजी सीखरचन्द जी
३६) सुन्दरलालजी छगनमलजी पांड्या
३१) हरीचन्दजी कलकत्तावाला
३१) कजोड़ीमलजी मूलचन्दजी पाटनी
३१) रामदयालजी जैसवाल
३१) गप्पूलालजी मानकचन्दजी जैसवाल
२५) छोटेलालजी उनेरवाले
२५) पूनमचन्दजी कनयालालजी
२१) मिसरीलालजी पाटनी
२१) छोटेलालजी जैन
२१) जवाहरमलजी फुलचन्दजी पाटनी
२१) मुनीलालजी बरैया सुमावलीवाले
२१) फूलचन्दजी मिलापचन्दजी राजा
२१) राडामलजी जैन एकाउन्टेंट दफ्तरवाला
२१) छगनलालजी किसतूरचन्दजी गंगवाल
२१) चीनीबाई बरैया
२१) फोगुलालजी जोहरीलालजी वैद्य
२१) लक्ष्मीनारायणजी पनधार वाले
२१) उत्तमचन्द जी जैन